सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

(महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में)

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

दिसम्बर 2002

शोधार्थी

कु. ऋतु यादव

निर्देशक

डॉ. वी.पी. अग्रवाल

प्राध्यापक एवं अध्यक्ष

शास. मानकुँवरबाई कला एवं वाणिज्य

स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर

निर्देशक

डॉ. लता श्रीवास्तव

स्थापत्य वेद व्याख्याता

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक

श्री गणेश ताम्रकार

इंजीनियर, वास्तुविशारद

पिरामिड एवं ऊर्जा विज्ञान विशेषज्ञ

जबलपुर (म.प्र.)

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ॐ

मूल्यांकन हेतु अग्रसारित

Chetanand.
30.12.05
Asst. Director
Research Dept
Maharshi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya
JABALPUR (M.P.)

परीक्षा विभाग

यह पुस्तक देय नहीं है।

सन्दर्भ पुस्तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

(महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में)

विद्यावारिधि (पी--एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

दिसम्बर 2002

शोधार्थी

कु. क्रतु यादव

निर्देशक
डॉ. वी.पी. अग्रवाल
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
शास. मानकुँवरबाई कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर

निर्देशक
डॉ. लता श्रीवास्तव
स्थापत्य वेद व्याख्याता
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक
श्री गणेश ताम्रकार
इंजीनियर, वास्तुविशारद
पिरामिड एवं ऊर्जा विज्ञान विशेष
जबलपुर (म.प्र.)

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन

(महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में)

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

दिसम्बर 2002

शोधार्थी

कु. ऋतु यादव

निर्देशक
डॉ. वी.पी. अग्रवाल
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
शास. मानकुँवरबाई कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर

निर्देशक
डॉ. लता श्रीवास्तव
स्थापत्य वेद व्याख्याता
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

निर्देशक
श्री गणेश ताम्रकार
इंजीनियर, वास्तुविशारद
पिरामिड एवं ऊर्जा विज्ञान विशेष
जबलपुर (म.प्र.)

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डॉ. वी. पी. अग्रवाल
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष

भूगोल विभाग
शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य
स्वशासी महिला महाविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ, कि कु. ऋतु यादव, शोध छात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय परिसर, जबलपुर ने अपना शोध प्रबंध "सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" (महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में) को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध–प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय में शोध–प्रबंध पूर्ण कर लिया है।

अतः शोध प्रबंध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षा हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थान : जबलपुर
दिनांक : 30/12/02

निर्देशक
डॉ. वी. पी. अग्रवाल
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गणेश ताम्रकार
इंजीनियर, वास्तुविशारद

पिरामिड एवं ऊर्जा विज्ञान विशेषज्ञ
जबलपुर (म.प्र.)

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि कु. ऋतु आदव, शोध छात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर–जबलपुर ने अपना शोध प्रबंध *नागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन* (महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में) को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध–प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचना नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय में शोध–प्रबंध पूर्ण कर लिया है।

अतः शोध प्रबंध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थान : जबलपुर
दिनांक : 30/12/10

निर्देशक
गणेश ताम्रकार
इंजीनियर, वास्तुविशारद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डॉ. लता श्रीवास्तव
स्थापत्यवेद व्याख्याता

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

❀ प्रमाण पत्र ❀

मैं प्रमाणित करता हूँ, कि **कु. ऋतु यादव,** शोध छात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर--जबलपुर ने अपना शोध प्रबंध **"सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन"** (महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में) को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध – प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय में शोध–प्रबंध पूर्ण कर लिया है।

अतः शोध प्रबंध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थान : जबलपुर
दिनांक :

निर्देशक
डॉ. लता श्रीवास्तव
स्थापत्यवेद व्याख्याता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

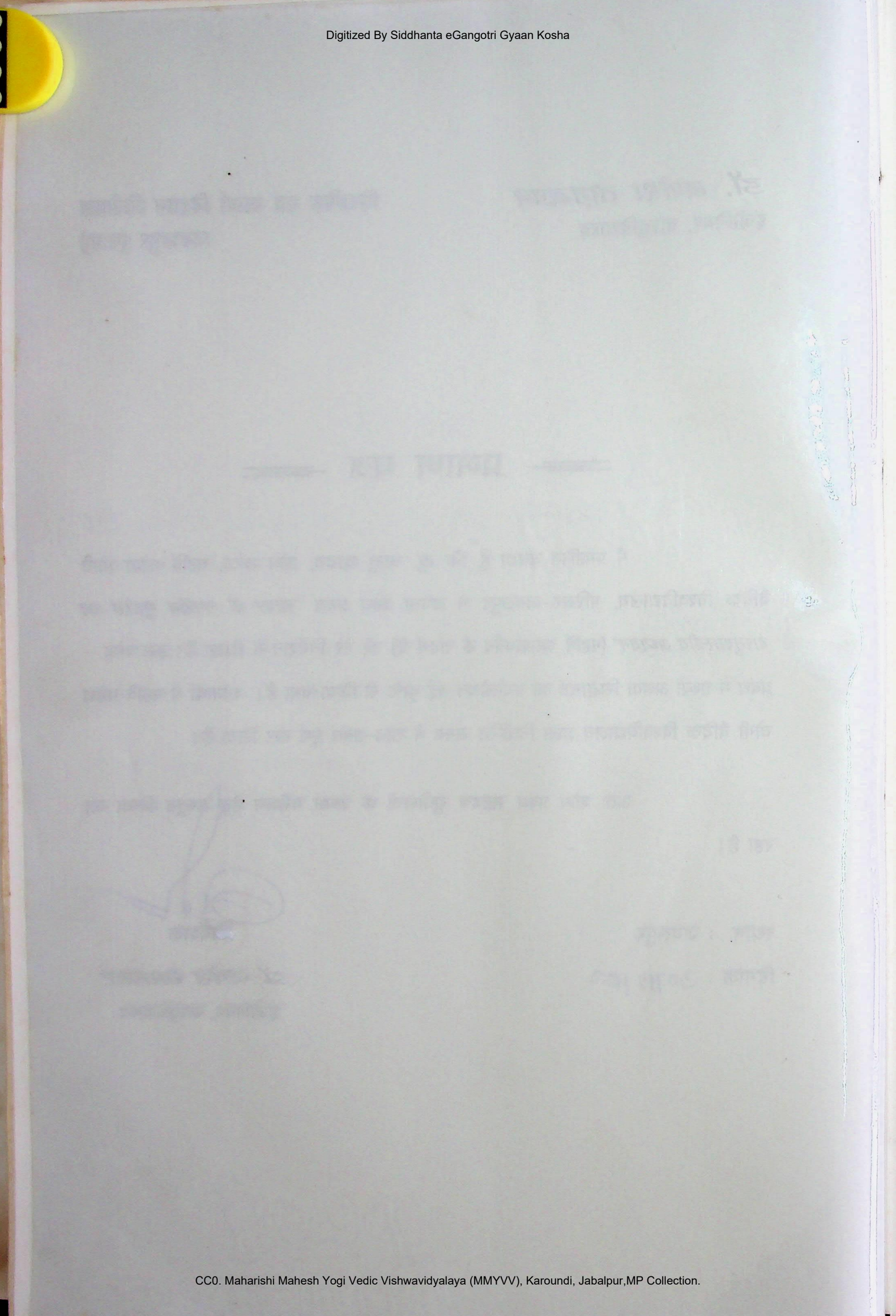

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डॉ. लता श्रीवास्तव
स्थापत्यवेद व्याख्याता

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

❀ प्रमाण पत्र ❀

मैं प्रमाणित करता हूँ, कि **कु. ऋतु यादव,** शोध छात्रा, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर–जबलपुर ने अपना शोध प्रबंध **"सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन"** (महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में) को मेरे निर्देशन में लिखा है। इस शोध – प्रबंध में तथ्यों अथवा सिद्धान्तों का पर्यालोचन नई दृष्टि से किया गया है। शोधार्थी ने महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित समय में शोध–प्रबंध पूर्ण कर लिया है।

अतः शोध प्रबंध सहृदय सुधीजनों के समक्ष परीक्षण हेतु प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्थान : जबलपुर

दिनांक :

निर्देशक
डॉ. लता श्रीवास्तव
स्थापत्यवेद व्याख्याता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घोषणा पत्र

मैं कु. ऋतु यादव यह घोषणा करती हूँ, कि "सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन" (महर्षि स्थापत्यवेद के सदंर्भ में) शीर्षक पर वास्तुशास्त्र एवं भूगोल के अन्तर्गत किया गया शोध कार्य डॉ. वी. पी. अग्रवाल, श्रीमान् गणेश ताम्रकार एवं डॉ. लता श्रीवास्तव के निरीक्षण व मार्गदर्शन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर शोध केन्द्र से किया गया व शोध उपाधि समिति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है।

मैं यह घोषणा करती हूँ, कि मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार पी-एच.डी. शोध उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध में समाहित समस्त कार्य उचित दृष्टान्त के साथ किये गये हैं। यह मेरा मौलिक शोध प्रबंध है।

शोध छात्रा

कु. ऋतु यादव

स्थान : जबलपुर

दिनांक : 30-12-02

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❋ कृतज्ञता ज्ञापन ❋

कोई भी प्रदत्त कार्य मात्र किसी व्यक्ति विशेष के प्रयासों का परिणाम नहीं होता । वस्तुतः वह निर्देशक, मार्गदर्शक व सहयोगियों मित्रों एवं शुभचिंतकों के सहयोग तथा शुभकामनाओं का प्रतिफल होता है इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना नैतिक एवं आत्मिक कर्त्तव्य मानती हूँ ।

सर्वप्रथम मैं उस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, परब्रह्म परमात्मा एवं **परम पूज्य गुरूदेव महर्षि महेश योगी जी** के चरण कमलों में पुष्पांजलि अर्पित करती हूँ; जिनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से मुझे अपनी सफलता के सोपान तक पहुँचने में सहायता प्राप्त हुई है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के निर्देशक मार्गदर्शक व सहयोगियों को कृतज्ञता ज्ञापित करते हुये मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है, परंतु कृतज्ञता का संबंध तो हृदय की भावनाओं से होता है, हृदय की उन भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिये कठिन है, क्योंकि भावनाओं के समुद्र में शब्द जहाँ एक बूंद के समान है, वहाँ मैं कैसे शब्दों के माध्यम से कृतज्ञता ज्ञापित कर सकती हूँ। फिर भी प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिये मुझे कृतज्ञता ज्ञापन की इस औपचारिकता को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना ही होगा ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के निर्देशक **डॉ.वी.पी. अग्रवाल**, प्राध्यापक एवं अध्यक्ष (भूगोल विभाग) शासकीय मानकुँवरबाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर के प्रति मैं कोटि–कोटि कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने मुझे विवेकपूर्ण प्रेरणामय सम्यक मार्गदर्शन प्रदान किया । उन्होंने जो अमूल्य समय इस शोध विषय के चयन एवं शोधकार्य के मार्गदर्शन में लगाया, इसके लिये उनके

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रति कृतज्ञता प्रकट करना, मैं अपना परम कर्त्तव्य समझती हूँ, जिनका उत्साहवर्धन एवं स्नेह मुझे मनोबल प्रदान करता रहा ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के निर्देशक परम् सम्माननीय **श्री गणेश ताम्रकार** (वास्तुविशारद एवं पिरामिड, ऊर्जा विशेषज्ञ जबलपुर) के प्रति विनत्भाव से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने इस शोधकार्य की पूर्णता में अपना अप्रतिम योगदान व मार्गदर्शन प्रदान कर मुझे कृतार्थ किया। सहनिर्देशिका **डॉ. लता श्रीवास्तव** (स्थापत्यवेद व्याख्याता महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर) की मैं आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मार्गदर्शन प्रदान किया।

डॉ. भुवनेश्वर शर्मा (कुलपति), श्री दीपक वर्मा (कार्यकारी कुल सचिव) एवं समस्त आचार्यगण, महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर के प्रति मैं आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने समय–समय पर उत्साहवर्धक आशीर्वचनों से मुझे अनुग्रहीत किया । मातृतुल्य समादरणीय **डॉ. चन्द्रा चतुर्वेदी** (प्रवाचक वेद विज्ञान संकाय) एवं **डॉ. सीमा श्रीवास्तव** (अनुसंधान विभाग) की मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने वात्सल्य एवं प्रेमपूर्ण सत्प्रेरणा प्रदान कर शोधकार्य को पूर्णता प्रदान कर मुझे कृतकृत्य किया ।

मैं अपने पिता **स्व. श्रीरामस्वरूप यादव जी** को अश्रुपूरित एवं विनम्र श्रृद्धांजलि उनके पावन चरण कमलों में समर्पित करती हूँ। उनकी जीवान्त तपस्या एवं सपना साकार करने का मैंने मरसक प्रयत्न किया, जिनकी छवि मेरे अन्तर्मन में सदैव दीप्त रहीं, जो मुझे हमेशा धैर्य, संबल, प्रेरणा प्रदान करती रही।

ममतामयी माँ **श्रीमती भागवती यादव** की, मैं चिरऋणी रहूँगी, जिनकी प्रेरणा और उन्हीं से आहरित धैर्य का सुपक्व परिणाम यह शोध प्रबंध है एवं सदैव उनके आशीष को आकांक्षी रहूँगी । परम आदरणीय मेरे दोनों दीदी जीजा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जी श्री रेखा कैलाश यादव एवं श्री रश्मि रतन यादव तथा सखा स्वरूप भाई भावज श्रीमान् सतीश स्वरूप जी यादव की मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे न केवल शोधकार्य हेतु प्रेरित किया, वरन् प्रतिकूल परिस्थितियों में साहस बढ़ाकर सतत् मार्गदर्शन प्रदान किया, एवं श्री काशीराम यादव जी व समस्त मामाजी की मैं हृदय से आभारी हूँ जिनके संरक्षण में मैंने यह शोध कार्य पूर्ण किया तथा मैं श्री केदारनाथ जी यादव की आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर मुझे कृतज्ञ किया। मैं इन सभी की चिरकृतज्ञ हूँ, जिनके सुझाव समय-समय पर मृदुलता व स्नेहशीलता के साथ यथोचित सहायता करने में सक्षम रहे । साथ ही मैं आशुतोष, शुभांगी, शाम्भवी और ईशान के प्रति सहृदय आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय एवं सहयोग प्रदान किया ।

मेरी प्रेरणा के स्थायी उत्स मेरे सखा एवं मित्रगण जिनका इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में बीज से लेकर वृक्ष व फल तक साथ रहा । मैं चिरन्तर काल तक उनके इस ऋण से उऋण नहीं हो पाऊंगी ।

श्री तुलसी राम रजक, श्री सर्वेश्वर दुबे एवं श्री निरंजन पाठक ग्रंथालय सागर की मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने शोध कार्य की सफलता हेतु शोध प्रबंधों एवं विभिन्न पुस्तकों की सहायता प्रदान कर मेरे शोधप्रबंध को सफल, सुबोध एवं उच्चकोटि के निर्माण हेतु ग्रंथालय की सहायता प्रदान की । इसके साथ-साथ मैं अपने समस्त स्टाफ एवं शिक्षा विभाग, देवरी की आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे शोध कार्य हेतु सहयोग एवं अनुमति प्रदान की।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय एवं विभागीय पुस्तकालय सागर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, नगरपालिका निगम पुस्तकालय, केन्द्रीय ग्रंथालय, जबलपुर एवं महर्षि महेश योगी वैदिक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वविद्यालय, जबलपुर, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोधग्रंथों एवं शोधपत्रों तथा आंकड़ों के संग्रहण हेतु समस्त कार्यालयों के कर्मचारीगणों की मैं कृतज्ञ हूँ। इस शोध प्रबंध के टंकण हेतु मैं **रिसर्च मैनेजमेंट ग्रुप** की तत्परता, लगन व सहयोग की मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने श्रमसाध्य सहयोग प्रदान किया । पुनश्च मैं अपने परिवार के समस्त सदस्यों, निर्देशकों, गुरूजनों, समस्त स्टाफ, मित्रगणों, कार्यालयों के सदस्यों, शुभचिंतकों एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से शोधकार्य की पूर्णता में सहयोग प्रदान करने वाले प्रत्येक सदस्य के आशीर्वाद का यह पुष्प सुधीजनों की सेवा में सादर समर्पित कर आपके स्नेह एवं आशीर्वाद की आकांक्षी हूँ ।

— ऋतु यादव

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन (महर्षि स्थापत्यवेद के संदर्भ में)

भूमिका

मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताओं–भोजन, वस्त्र एवं आवास में से आवास मानव अधिवास के सांस्कृतिक भूदृश्य का एक प्रमुख घटक है । मानवीय आवश्यकताओं ने उसे इस विषय पर उचित सोचने के लिए विवश किया, कि शरीर की सुरक्षा एवं विकास की दृष्टि से उचित व्यवस्था की जाना चाहिए । सर्वप्रथम मनुष्य को जंगलों में भटकने एवं जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए वृक्षों पर रहने के लिये मजबूर होना पड़ा, किंतु यह पर्याप्त नहीं था । प्रारंभिक मानव ने प्राकृतिक प्रकोप यथा सर्दी, गर्मी एवं वर्षा आदि से बचने के लिये चट्टानों, गुफाओं और कन्दराओं के रूप में अपने प्रारंभिक घर बनायें। इस प्रकार मानव जीवन में निवास की परिकल्पना प्रारंभ हुई । विकास के क्रम में मनुष्य ने क्रमशः नवीन पद्धतियां और साधन विकसित कर स्थायी जीवन–यापन हेतु साधन खोजना प्रारंभ किये और मानव ने कृषि प्रारंभ कर स्थायी निवास हेतु घर बनाने की कला को विकसित किया । इस प्रकार सभ्यता के विकास क्रम में मनुष्य द्वारा भवन निर्माण कला का विकास प्रारंभ किया । सभ्यता के विकास के साथ–साथ मात्र सुरक्षा के लिए बनाये गये इन छोटे अधिवासों ने वृहद् रूप धारण करना प्रारंभ किया । तकनीकी विकास से इसके स्वरूप और निर्माण सामग्री में विविधता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है । कालान्तर में ये अधिवास वैभव प्रदर्शन कलात्मकता और विलासिता के साधन बना गये है। नगरीय,बस्तियों के विश्लेषणात्मक अध्ययन का विज्ञान है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगरीय भूगोल, भूगोल की एक नूतन शाखा है; जिसका अध्ययन 19वीं शताब्दी के पूर्व तक मानव भूगोल के अंतर्गत किया जाता था । परिवर्तन प्रकृति का नियम है, के अनुरूप विश्व में अनेक परिवर्तनों के साथ ही साथ नगरीय भूगोल एवं उसके स्वरूप, परिभाषा, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक व्यवस्था एवं नगरीय समस्याओं आदि में भी परिवर्तन हुये । इस प्रकार नवीन नगरीय व्यवस्था के समग्र अध्ययन हेतु नगरीय भूगोल का उद्‌भव हुआ । नगरीय भूगोल नगरों का व्यापक अर्थ में अध्ययन करने का विज्ञान है । नगर और उसके भौगोलिक पर्यावरण के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करना ही नगरीय भूगोल है । नगरीय भूगोल में नगर के अंदर की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को ढूंढने ओर उनकी व्याख्या करने का प्रयत्न किया जाता है । साथ ही साथ नगरीय भूगोल नगर से संबद्ध समस्याओं के कारणों और उनके निदान का भी प्रयत्न करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि नगरीय भूगोल वह कला एवं विज्ञान है; "जिसके अन्तर्गत नगर से संबंधित समस्त मानवीय एवं भौतिक पर्यावरण और भविष्यगत सम्भावनाओं आदि का समग्र रूप से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है।"

वर्तमान में नगरीय बस्तियाँ अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हैं । इसके विपरीत वैदिक कालीन नगर पूर्णतः नियोजित एवं समस्या विहीन होते थे, क्योंकि समस्त नगर स्थापत्यवेद के सिद्धांतों का पालन करते हुए बसाये जाते थे । भारतीय स्थापत्यवेद एक विशुद्ध विज्ञान है । यह विज्ञान है– "अव्यक्त से व्यक्त होने का सूक्ष्म ऊर्जा के सचेतन ऊर्जा में परिवर्तन का , निराकार ऊर्जा के साकार ऊर्जा में परिवर्तन का एवं वस्तु के वास्तु रूप में आकार लेने का।" वास्तुशास्त्र स्थापत्यवेद की एक शाखा है । वास्तुशास्त्र प्राचीन कला और विज्ञान है, जिसमें परिमित भूमि को अपरिमित विश्व शक्ति में परिवर्तित किया जाता है। इससे व्यक्ति और प्रकृति के मध्य एकरूपता एवं संतुलन स्थापित सुनिश्चित किया जा सकता है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अधिकाधिक सुख, शांति, लाभ, स्वस्थता एवं समृद्धि प्राप्त हो सके । वर्तमान काल में भवन, ग्राम एवं नगर नियोजन में वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों और भौगोलिक सिद्धांतों की पूर्णरूपेण उपेक्षा की जाती है । इसका प्रमुख कारण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्तमान समय में भूमि का अधिकतम व्यवसायिक उपयोग, जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, दूरदर्शिता विहीन नगरों का अनियंत्रित विकास, मानव एवं प्रकृति के बीच सत्तात्मक संघर्ष एवं उचित जानकारियों के अभाव में नगरों का स्वरूप निरंतर अनियमित एवं आकार विहीन होता है । जिससे वर्तमान नगर अनेक समस्याओं से ग्रसित है । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी प्राचीन कला की धरोहर 'वास्तु' को उसके सूक्ष्म रूप में समझें। 'वास्तु' का अर्थ है'समन्वय'। समन्वय प्रकृति का मनुष्य के साथ जब तक मनुष्य प्रकृति के साथ सामन्जस्य स्थापित करके चलेगा, तो भवन, ग्राम व नगर में निवास करने वाला प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक सुखी, शांत, स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रहेगा ; किन्तु जैसे ही वह प्रकृति से दूर होकर कृत्रिम जीवन जीने का प्रयत्न करेगा वैसे ही दुःखी, अशान्त, अस्वस्थ्य एवं अप्रसन्न रहेगा।

चयनित अध्ययन क्षेत्र में सागर नगर का भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। सागर बुंदेलखंड का प्रमुख नगर होने के साथ–साथ बुंदेलखंड का प्रवेश द्वार एवं राजस्व संभाग का मुख्यालय है। सागर नगर को शिक्षा के क्षेत्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है । देश एवं राज्य के प्राचीनतम विश्व–विद्यालयों में से सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एक है, जिसके कारण सागर नगर देश में अपनी पृथक पहचान बनाये हुये है । वर्ष 1906 में पुलिस प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना होने से एवं उसके विस्तार से नगर का महत्व और अधिक बढ़ गया है । अन्य नगरों की तुलना में सागर नगर का विकास जिस गति से होना चाहिए, उस गति से नहीं हो रहा है इसके लिये जितनी भौगोलिक परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं, इतनी ही वास्तुशास्त्रीय भी इन्हीं समस्त कारणों को दृष्टिगत रखते हुये विषय का चयन किया है । सागर नगर मध्यप्रदेश के उत्तर मध्य भाग में स्थित है । सागर नगर $23^0$50' उत्तरी अक्षांश और $78^0$45' पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है । समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 540 मीटर है । वर्तमान नगर निगम सीमा के अन्तर्गत 3375 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित हैं, जिसमें 48 वार्ड है। सन् 1991 की जनगणना अनुसार नगर की कुल जनसंख्या 1,95,346 है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का उद्देश्य :**

प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य निम्नानुसार है–

1. नगरीय भूगोल और वास्तुशास्त्र में सह संबंध स्थापित करना ।
2. सागर नगर की भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय समस्याओं का अध्ययन करना। साथ ही सागर की नगरीय समस्याओं का वास्तुशास्त्र से संबंध स्थापित कर, इन समस्याओं का निराकरण करके सामान्य जनता को इन समस्याओं से अवगत कराना ।
3. सागर नगर को आदर्श नगर के रूप में विकसित करने हेतु भैगोलिक सिद्धांतों के साथ ही साथ वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों का विवेचन करना ।
4. नगर के विकास की भावी सम्भावनाओं का वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन करना ।
5. इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के पर्यावरण एवं वास्तुशास्त्र में संबंध स्थापित कर समस्याविहीन नगर का निर्माण करना ।

- **शोध विधि तन्त्र :**

प्रस्तुत शोध प्रबंध की रचना के लिये विभिन्न प्रकार के साहित्यों पत्र–पत्रिकाओं, शोध ग्रन्थों व अन्य प्रकार के ग्रन्थों का अध्ययन किया गया है । साथ ही विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त द्वितीयक आंकड़ों का भी सहयोग भी लिया गया है । प्रस्तुत शोध कार्य की विधि निम्नानुसार है–

1. तुलनात्मक एवं वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया है
2. मानचित्रों, आरेखों एवं छायाचित्रों आदि के माध्यम से परिस्थितियों को दर्शाया गया है।
3. तथ्यों को तालिकाओं के माध्यम से दर्शाया गया है ।
4. भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा स्वीकृत स्थलाकृतिक मानचित्रों, दैनिक समाचार पत्रों,प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं, की शोधकार्य में सहायता ली गई है ।
5. क्षेत्र के भौतिक स्वरूप, भूमि उपयोग एवं कृषि संबंधी आंकड़ों का संकलन, सागर जिला गजेटियर, भूअभिलेख कार्यालय सागर एवं जनसंख्या (1991) संबंधी आंकड़ों का आधार जनगणना पुस्तिका है । नगर नियोजन से संबंधित आंकड़े ग्रामीण तथा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर नियोजन कार्यालय, सागर से प्राप्त किये गये हैं । साथ ही प्रश्नावली का निर्माण कर 10 प्रतिशत घरों का सर्वेक्षण कर भौतिक आंकड़े प्राप्त किये गये हैं ।

6. वास्तुशास्त्रीय जानकारी महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर में वैदिक ग्रंथों के अवलोकन व अध्ययन, वैदिक विद्वानों के साक्षात्कार एवं प्राचीन तथा आधुनिक नमूनों को देखकर उन स्थानों का अवलोकन करके शोधकर्त्ता ने स्वयं प्राप्त किये हैं ।

7. जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय एवं विभागीय पुस्तकालय सागर, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, नगर पालिका निगम पुस्तकालय, केन्द्रीय ग्रंथालय एवं महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोधग्रंथों व शोधपत्रों का अध्ययन किया गया है ।

8. इसके अतिरिक्त समय–समय पर होने वाली राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में हुये विचार विमर्श का प्रयोग भी इस शोध प्रबंध में किया गया है ।

- **विषय एवं क्षेत्र का चुनाव :**

शोध कार्य हेतु "सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन ",का चयन किया गया है। यह विषय भूगोलवेत्ताओं से पूर्णरूपेण अछूता था। अतः भूगोल का वास्तुशास्त्र से कैसे सबंध स्थापित किया जाये ? यह जिज्ञासा मनोमस्तिष्क में रखेते हुये मैंने इस विषय का चयन किया कुछ पूर्ववर्ती मेरे साथियों के हिन्दी साहित्य मनोविज्ञान अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र आदि विषयों का वैदिक विषयों से संबंध स्थापित कर शोध प्रबंध देखकर मेरे मन में भी यह जिज्ञासा बनी रही, कि भूगोल का वास्तुशास्त्र से क्या संबंध है ? वर्तमान नगरीय समस्याओं से परिणामस्वरूप नगरीय जीवन दिन प्रतिदिन कष्टप्रद क्यों होता जा रहा है? क्या इन समस्याओं का समाधान वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों द्वारा संभव है ? अर्थात् आधुनिक नगरों का वैदिक कालीन नगरों के आधार पर अध्ययन कर, समस्याओं के समाधान हेतु प्रतीकात्मक रूप में अध्ययन हेतु ,अध्ययन क्षेत्र का चुनाव किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मैंने सागर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में इसलिए चुना, क्योकि मैं देवरी तहसील की निवासी हूँ । सागर शहर से देवरी की दूरी 65 किमी. है इसलिये मुझे सागर आने जाने की सुविधा उपलब्ध थी । साथ ही मैंने स्नात्तकोत्तर उपाधि डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्राप्त की इसलिए सागर से विशेष संपर्क में होने के कारण मैंने सागर नगर को अपने अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना सागर बुन्देलखण्डी भाषा का क्षेत्र है, मुझे बुन्देलखण्डी समझने की समस्या नहीं थी। सागर म. प्र. के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है, किन्तु आज तक सागर नगर का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन नहीं हुआ इससे प्रेरित होकर भी मैंने अपने अध्ययन हेतु सागर नगर को चुना इसके साथ ही साथ मझे सागर नगर से साहित्य व आंकड़ों के संग्रह की पूर्ण सुविधायें उपलब्ध थी।

- **शोधकार्य संबंधी समस्यायें :**

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पूर्ण करने में अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ा नगरीय भूगोल संबंधी अध्ययन जहां श्रमसाध्य है, वही दूसरी ओर उतना खर्चीला भी। इसके अतिरिक्त वर्तमान मे वास्तुशास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध होना भी कठिन, श्रमसाध्य एवं व्ययसाध्य है, क्योंकि एक तो चयनित नगर मेरे निवास (देवरी) से दूर, दूसरे मैं महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर से विद्यावारिधि कर रही थी जहॉ मरे शोध निर्देशक थे । सागर जाकर शोधविषय का संग्रहण एवं सर्वेक्षण करना और फिर संग्रहित शोधविषय को जबलपुर में शोध निर्देशकों के पास लेकर जाना श्रमसाध्य एवं व्ययवसाध्य थां। इसके साथ ही साथ विभिन्न कार्यालयों से आंकड़ो के संग्रहण हेतु बार–बार जाना आना बड़ा ही कठिन जान पड़ता था। कहीं निवास क्षेत्र कहीं अध्ययन क्षेत्र कहीं निर्देशकों का निवास एवं कहीं विश्वविद्यालय होने से आवागमन की समस्या थी। इनमें से जहां कही भी बिना सूचना के जाती थी काम नहीं होता था और निराशा का सामना करना पड़ता था।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **आद्यावधि के प्रांगण में किया गया अध्ययन :**

नगरीय बस्तियों का अध्ययन अनेक विषयों ने अपने –अपने दृष्टिकोण से किया है। नगरीय भूगोल का साहित्य इतना अधिक विस्तृत हो चुका है कि, आद्यावधि तक किये गये सम्पूर्ण अध्ययन का विवरण देना कठिन है, किन्तु प्रस्तुत शोध प्रबंध में पूर्व अध्ययन का यथा संभव ध्यान रखा गया है। आधुनिक नगरों की स्थिति के बारे में सर्वप्रथम 1826 में वानथ्यूनेन द्वारा A theoty of location for cities' नामक आधुनिक सिद्धान्तों से किया गया । इसके अतिरिक्त इस समय अनेक व्यक्तिगत नगरों पर भी अध्ययन हुये जैसे सी. एफ. एठम ने बोस्टन एवं शिकागों नगरों का तुलनात्मक अध्ययन (1966) जॉन एस. राइट द्वारा शिकागो पर (Chicago - past, present and future chicago, 1868) "एल. यू. रेविस लुइस (Saint Louis the future great city of the world , saint Louis, 1875)"एफ. बेबर द्वारा पेरिस नगर पर (The grouth of cities in the ninteent century A study in statistics, 1899) अध्ययन प्रस्तुत किया।

20वीं शदी के प्रारंभ में अनेक विद्वानों ने शोध पत्रों , लेखों सिद्धान्तों तथा ग्रन्थों की रचना की। कुमारी ऐलेन सेम्पुल ने American Hostory and its Geographic conditions (1903), एम. हार्ड ने Principles of city lend values (1903), गिडीस ने cities in Envalution (1915), होमर हायट ने खण्ड सिद्धान्त (Sector Theory , 1930), बर्गेस ने Urvan community (1933), आर.ई. डिकिन्सन ने city region and regionalism (1927), मैकेन्जी ने The matropolitan communeity (1933), मम्फोर्ड ने The cultural of cities (1938), डिकिन्सन ने Scape and status(1948), and The scope and mathod (1951), ग्रिफिथ ने Urban Geography (1967), विडाल डीला ब्लास मानव भूगोल के सिद्धान्त (1962), एच.एम. मेयर ने Urban Geography (1954) and survay of Urban Geography (1965), इडियन एवं हार्टन फेंक ने Geographic perspective on Urban systems (1970), बी.जे. एल. बेरी Research,Frontiers in Urban Geography (1965), आर. मरफी Urbanzation in Asia (1966) आदि प्रमुख रचनायें है। इसके अलावा इमरसन ने न्यूयार्क (1908–9) , पैट्रिक गेडिर ने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एडिनवर्ग (1911), ग्रिफिश टेलर ने कैनबेरा (1914) हेरीस राठट में अमेरिकी नगरों (1916), मम्फोर्ड स्टीम और हेग ने न्यूयार्क (New York, Regional plan, 1925), एवर कम्बी ने लंदन, (Thgreat Londan plan), डी मर्तोने ने व्यूनोज आयर्स (1935), डी व्हिटलसी ने सूडानी नगर कानों (1937) ,डिकिन्सन ने मध्य जर्मनी के नगरों Development and Distribution of the medievel German Town Gography, 1942 तथा The morphology of the Medievel German Town, (1945), ओ.एच. के. स्पेट ने रंगून (1942), जियरर ने मेलबोर्न तथा ब्रिसबोर्न (1942) एवं सिडनी (1945), पियरी जार्ज ने पेरिस (1961), में अपना अध्ययन प्रस्तुत किया।

भारत वर्ष में नगरीय भूगोल का वास्तविक विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हुआ, किन्तु दक्षिण भारत (मद्रास) में सी.एस. श्री निठासचारी के शोध पत्र Grouth of the city of madras (1927) ही में नगरीय भूगोल की नींव पड़ चुकी थी। इसके पश्चात कुछ और विद्वानों द्वारा व्यक्तिगत नगरों का अध्ययन किया गया। जैसे – ए.एल.सुन्दर ने कारूर नगर जिला त्रिचनापल्ली (1933), बी.ई.एन.राव ने कांजीवरम (1937), ए.बी.एम. पेरियारा ने मगलोर (1938), में सी.एम.आर. चेट्टियार ने कोयम्बटूर सुब्राह्मणयम स्वामी ने तमिलनाडू के नगरों (1941), जार्ज कुरियन ने मद्रास (1941) आदि पर अपना अध्ययन कार्य प्रस्तुत किया।

1950 में ओ.एच. के स्पेट तथा इनायत अहमद ने गंगा के मैदान के पांच नगरों, एच. हर्ट हावर्ड ने अलीगढ़ (1955), योजना आयोग शोध कार्यक्रम समिति ने हैदराबाद सिकन्दराबाद (1957), जमशेदपुर (1957), बड़ौदा (1958) , एस.एन.सेन ने कलकत्ता (1960), मेमफील्ड ने An Urban Research study in narth India Urban systems and Econmic Development (1962), आर. मरफी ने The city in the swamp aspects of the site and Early Grouth of Calcutta (1964), व्ही.एल. एस. सी. वी.राव. ने Towns of Maysor, ए.के. सेन ने बाकुरा नगर के सांस्कृतिक भू दृश्य (1956), डी एन.मुखर्जी ने सिलीगुड़ी नगर, की कार्यात्मक पेटियों एवं प्रभाव प्रदेश (1956) ए.आर. कर महोदय ने कलकत्ता नगर के. बागची ने हावड़ा सन्नागर का एक भौगोलिक अध्ययन (1966) निर्मल कुमार बोस ने कलकत्ता नगर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की सामाजिक संस्कृति 1962 में जॉन ई. ब्रस के द्वारा चण्डीगढ़ नगर की सामाजिक संरचना का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

1955 में आर.एल.सिंह ने Banaras and its Umland, (1962) में उजागर सिंह ने Allahabad A study of Urban Geography (1958) में आशीष बोस ने The process of Urbanization of India (1964) , में एन.बी. सेवानी ने An Analysis of our Urbanization, एम. गुहा ने कलकत्ता ए.बी. चटर्जी ने हावड़ा क`नगरीय भूगोल , वीणपाणी मुखर्जी ने हुगली और इसका प्रदेश विषय पर (1949), एम. एस. जौहरी ने 1964 में Grouth and development of Urban settlement in the sutlej-Yamunadivide, panjab, (1971) में बी.पी.राव. ने A study in Geography of port town, 1977 में ही कुसुमलता तनेजा ने Marphology of India cities तथा 1976 में कमलकान्त दुबे ने Use and misuse of land in Kaval नामक शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया। इनके अलावा सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने भागलपुर (1964), दीपा थापन ने भारत के स्पात नगर (1968), पर अपना शोध कार्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने व्यक्तिगत नगरों पर अध्ययन कार्य किया जैसे ए. रमेश ने उटकमंड (1964), सतीश चन्द्र सिंह ने आजमगढ़ (1963), एस.पी. सिंह ने लखनऊ (1959) 1972 में आर. सी.शर्मा ने राजस्थान के नगरों पर अपना अध्ययन किया।

मध्यप्रदेश में नगरीय भूगोल का अध्ययन 60 के दशक से ही प्रारम्भ माना जाता है। एस. एम. मिश्रा तथा प्रेमशंकर तिवारी ने क्रमशः 1961 एवं 68 में मध्यप्रदेश के नगरों का अध्ययन किया। के .एन. वर्मा ने 1962 में जबलपुर नगर , 1967 में ए.एन.सिंह ने इटारसी नगर का अध्ययन प्रस्तुत किया, इसके अतिरिक्त कुछ अप्रकाशित शोध प्रबंध भी प्रस्तुत किये गये जिनमें से वीरेन्द्र सिंह ने भोपाल शहर का नगरीकरण (1972) , अनुराधा गुप्ता ने भोपाल स्थित रोशनपुरा के झुग्गी बस्ती का एक भौगोलिक अध्ययन (1991), रूप नारायण चतुर्वेदी ने 1972 में भोपाल के झुग्गी बस्तियों का सामाजिक सर्वेक्षण, आराधना चौरसिया ने 1986 में भोपाल नगर की झुग्गी बस्तियों का भौगोलिक विवेचना 1988 में रूकमणी नायडू ने म. प्र. के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रमुख तीन नगरों (भोपाल, इन्दौर एवं जबलपुर) के नगरीकरण का एक अध्ययन , 1989 में लोकेश श्रीवास्त ने Jabalpur city: Urban Groth and Development नामक अपना शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त रेखा जैन ने Urban growth and Quality of life: AGeography study in cities of M. P. (1992), ज्योति तिवारी ने Dimendions of Bidi making Industry in sagar Region: A Geographyical study (1994), सुमन जैन ने Sagar city; A study in Urban Geography (1995) में नामक शोध प्रबंध प्रस्तुत किये।

स्थापत्य वेद प्राचीन भारतीय ज्ञान है, जो कि वर्तमान समय में पुर्नोदय की स्थिति में है। इसके व्यवहारिक रूप से प्राचीन सभ्यताओं नगरों की खुदाई से पर्याप्त प्रमाण प्राप्त होते हैं, जो कि स्थापत्यवेद के अनुरूप ही निर्मित थे जैसे मोहन जोदड़ो, हड़प्पा , मथुरा द्वारिका, लंका, इन्द्रप्रस्थ इत्यादि। इसके अतिरिक्त वर्तमान में कुछ प्राचीन ग्रंथ ही उपलब्ध हैं जिन्हें कुछ विद्वानों ने पुनः अनुवाद कर प्रकाशित किया है जैसे मयमतम (ब्रूना डंगस) मानसार (आचार्य प्रसन्न कुमार), समरांगण सूत्रधार (द्विनेन्द्र नाथ शुक्ल), वास्तु सौख्यम (कमलकान्त शुल्क), वास्तुराज वतभ (अनूप मिश्र), वास्तु रत्नाकर (विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी), विश्वकर्मा प्रकाश (गणेश दत्त पाठक), सूर्य सिद्धान्त (पंडित माधव प्रसाद पुरोहित), वृहत् संहिता(सुरेश चन्दे मिश्र), कौटिल्य अर्थशास्त्र (वाचस्पति गैरोल) आदि। इसके अतिरिक्त मत्स्यपुराण, स्कन्द्र पुराण, अग्निपुराण आदि पुराणें में भी स्थापत्यवेद का विस्तार पूर्वक वर्णन प्राप्त होता है। बाल्मीकि रामायण, महाभारत , ऋग्वेद , अर्थर्ववेद आदि में कुछ स्थानों पर स्थापत्यवेद का वर्णन प्राप्त होता है।

वर्तमान समय में स्थापत्यवेद पुर्नोदय की अवस्था में होने के कारण इसके अधिक मात्रा में आधुनिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं है किन्तु अल्प समय में ही इसके एक सुगठित ज्ञान की शाखा के रूप में स्थापित होने की सम्भावना है। इसके अलावा द्विजेन्द्र नाथ शुक्ल का भारतीय वास्तुशास्त्र (1965), तारपद भट्टाचार्या की Conons of art and study of vastu shastra, रविकान्त झा की वास्तुकला का इतिहास (1991) आदि है। इसके अलावा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

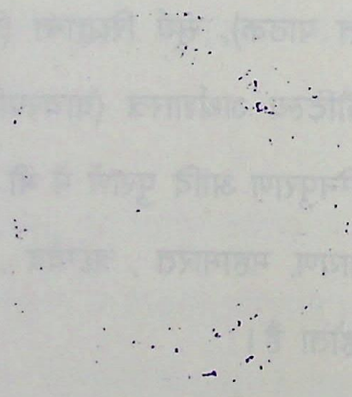

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परमेश्वरी लाल गुप्त ने भारतीय वास्तुकला (1977), उमेश शास्त्री वास्तुशास्त्रम तथावाणिज्यक वास्तुशास्त्र 1996, अनिल रामकृष्ण तारखेड़कर ने भारतीय वास्तुशास्त्र आदिकी रचना की। इसके अलावा वर्तमान में जयपुर नगर वास्तुशास्त्रानुकूल निर्मित किया गया है तथा चण्डीगढ़ नगर के निर्माण में भी आंशिक रूप से भारतीय वास्तुशास्त्र का पालन हुआ है।डॉ. प्रसन्न कुमार आचार्य ने अपना वृहद् कोष (Encyclopaedia of Hindu Architecture) प्रस्तुत किया। वास्तुशास्त्र की दिशा में ललित कुमार शुक्ल 1960 ने अपने अध्ययन का स्त्रोतमानसार को बनाया उसमें भी नगर नियेाजन क्षेत्र को खासतौर पर ध्यान दिया है। इसके अतिरिक्त वास्तुशास्त्र को अपने अनमोल विचारों से कृत करने वाले विद्वान् हैं – प्रभाकर आप्टे पुणे, पंडित अच्युतानंद मिश्र वाराणसी, पं. मिहिंरचंद खेमराज मुम्बई (विश्वकर्मा प्रकाश) डॉ, टी. गणपति जिनवेन्द्रम् (मयमतम्) पंडित ईश्वर चंदशास्त्री (युक्तिफल्पतरू), बलराम श्रीवास्तव(रूपमंडनम्), सरला अग्रवाल बीकानेर (वास्तुदर्शन) , डॉ . देवलोक शर्मा, झारसुगड़ा बिहार (वास्तुशास्त्र) डॉ भोजराज द्विवेदी (संपूर्ण वास्तुशास्त्र), डॉ. सी. एस. वैद्य नागपुर, निकेतन आनंद गौड इंदौर , प्रो. सुरेश्वर शर्मा, श्री गणेश ताम्रकार जबलपुर आदि सभी विद्वानों ने अपने शोध लेखें और शोध ग्रंथों के माध्यम से नगर नियोजन के स्वरूप के अनेक बिन्दुओं को दिशाबद्ध करके वर्तमान एवं प्राचीन नगर वास्तु में अंतर रेखांकित किया है।

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ग्रंथालय
17397
क्र.....
कटनी (म.प्र.)

- **शोधप्रबंध की रूपरेखा**

सुनियोजित अध्ययन की दृष्टि से शोध कार्य की योजना को नौ अध्ययों में विभक्त कर कार्य पूर्ण किया गया है।

शोध प्रबंध भूमिका के अन्तर्गत सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन एवं वर्तमान नगरीय समस्याओं का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य, शोध विधि तन्त्र, विषय एवं श्रेय का चुनाव, शोध संबंधी समस्यायें, आद्यावधि के प्रांगण में किया गया अध्ययन तथा शोध प्रबंध की रूपरेखा की विवेचना की गई है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम अध्याय में स्थापत्यवेद का विश्लेषण किया गया है।इसके अतंर्गत स्थापत्यवेद का अर्थ, परिभाषा, विकास ,शाखाएं विषय वस्तु का विवेचन किया गया है तथा वास्तुशास्त्र का अर्थ, परिभाषा, महत्व एवं वैज्ञानिक अवधारणाओं का विश्लेषाणत्मक अध्ययन किया गया है।

शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय में नगरी भूगोल का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है, जिसके अन्तर्गत नगरीय भूगोल का अर्थ, परिभाषा, उद्‌भव विकास, विषयवस्तु, संकल्पना, विधियॉ आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय में नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय एवं भौगोलिक सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन एवं स्थापत्यवेदानुरूप आदर्श नगर की संकल्पना प्रस्तुत की गई है ।

शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में सागर नगर का परिचयात्मक अध्ययन किया गया है, जिसक अंतर्गत सागर नगर की पृष्ठभूमि, उच्चावच, भूगर्भिक संरचना, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, जल प्रवाह, खनिज उद्योग, परिवहन, संचार, जनसंख्या एवं जनसंख्या संरचना, भाग, धर्म, संस्कृति, रीति–रिवाज, कृषि, भूमि उपयोग, उद्योग एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि आदि का अध्ययन किया गया है।

शोध प्रबंध के पंचम अध्याय में सागर नगर की आकारिकीय विशेषताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है ; जिसके अंतर्गत नगर की भौतिक स्थिति, ब्रह्म स्थान की स्थिति, आवास, यातायात, चिकित्सा जल व्यवस्था ,शिक्षा क्षेत्र, धार्मिक स्थल, प्रशासनिक केन्द्र, छावनी निर्माण संस्थानों की स्थिति, औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति, जलमल निकासी व्यवस्था, मनोरंजन के साधन, इत्यादि का भौगोलिक विश्लेषण दिया गया है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोध प्रबंध के षष्ठम अध्याय में सागर नगर की आकारिकीय का वास्तुशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषण किया है ; जिसके अंतर्गत स्थापत्यवेद के सिद्धांतों के अनुरूप सागर के प्रमुख संस्थानों प्रतिष्ठानों, ब्रह्म स्थान, आवास व्यवस्था, शिक्षा क्षेत्र, जल व्यवस्था, पूजा स्थल, प्रशासनिक क्षेत्र, औद्योगिक एवं व्यापारिक संस्थानों की स्थिति, जलमल निकासी व्यवस्था, मनोंरंजन के साधनों की स्थिति आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है ।

शोध प्रबंध के सप्तम अध्याय में सागर नगर की समस्यायें एवं स्थापत्यवेद के प्रतिकूल समस्यायें तथा उनकी रोकथाम के उपाय आदि विश्लेषण किया गया है ।

शोध प्रबंध के अष्टम अध्याय में सागर नगर को आदर्श नगर बनाने हेतु नगर नियोजन के सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

शोध प्रबंध के नवम अध्याय में उपसंहार का विश्लेषण किया गया है।

- **प्रमुख योगदान :**

नगरीय भूगोल तथा स्थापत्यवेद के संदर्भ में सागर नगर के अध्ययन से ऐसे अनेक सैद्धांतिक एवं अनुभाविक तथ्य सामने आये, जिनका उल्लेख अध्ययन क्षेत्र में प्रथम बार किया गया है । सागर नगर के नगरीय भूगोल का स्थापत्यवेद के संदर्भ में किये गये शोध अध्ययन में निम्नलिखित तत्वों का प्रमुख योगदान कहा जा सकता है–

1. स्थापत्यवेद के संदर्भ में सागर नगर के नगरीय भूगोल का अध्ययन प्रथम एवं मौलिक प्रयास है।
2. स्थापत्यवेद की सारगर्भित व्याख्या जैसे अर्थ, परिभाषा, शाखायें, विषय, वस्तु, वैज्ञानिक अवधारणा प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास है।
3. नगर नियोजन के भौगोलिक तथा वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों का विश्लेषण कर नवीन रूप में प्राकृतिक सिद्धांतों का विश्लेषण कर नवीन रूप में प्राकृतिक सिद्धांतों के अनुरूप संशोधित रूप में आदर्श नगर की परिकल्पना प्रस्तुत की गयी है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. सागर नगर की प्रशासनिक परिसीमाओं का प्रथम बार आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है ।

5. वर्तमान में नगरीय आवास समस्या विकराल रूप धारण कर रही हैं, जिसे इस शोध प्रबंध के माध्यम से सामने लाने का प्रयत्न किया गया है ।

6. शोध प्रबंध में कुल 15 मौलिक मानचित्रों, आलेखों एवं रेखाचित्रों का प्रयोग किया गया है ।

इसके अतिरिक्त भाषा को ग्राह्य बनाने हेतु भाषा का सामान्यीकरण किया गया हैतथा आवश्यकतानुरूप कोष्टक में अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । इसके साथ ही यथा स्थान संस्कृत भाषा के मूल उदाहरणों को भी प्रयुक्त किया गया है । शोध प्रबंध के अंत में ऐसे संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गई है, जिनका प्रयोग शोध प्रबंध को प्रमाणित स्वरूप प्रदान करने में किया गया है । प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से यह अपेक्षा की जाती है, कि यह शोध कार्य भूगोल एवं स्थापत्यवेद के उचित संतुलन के माध्यम से नवीन नगरीय व्यवस्था स्थापित करने में सहायक होगा, जिसमें निवसित समस्त नगरवासी शांत, सुखी एवं समृद्धशाली होंगे । इसके साथ ही साथ भूगोल एवं स्थापत्यवेद के साहित्य में यह शोध प्रबंध एक अभिनव कृति के रूप में अग्रणी शोधार्थियों को इस विषय पर और अधिक सूक्ष्म अध्ययन हेतु प्रेरित करेगा ।

❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुक्रमणिका

अध्याय १ : स्थापत्यवेद का परिचय 1-49

- स्थापत्यवेद का अर्थ एवं परिभाषा
- स्थापत्यवेद का उद्भव एवं विकास
- स्थापत्यवेद की शाखायें
- स्थापत्यवेद की विषय-वस्तु
- वास्तुशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा
- वास्तुपुरूष
- वास्तुपुरूष का महत्व
- वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणा

अध्याय २ : नगरीय भूगोल का परिचय 50-96

- नगरीय भूगोल का अर्थ एवं परिभाषा की अवधारणा
- नगरों की उत्पत्ति एवं विकास
- नगरों के उद्भव और विकास की अवधारणा
- नगरीय भूगोल की विषय-वस्तु
- नगरीय भूगोल की आधारभूत संकल्पनायें
- नगरीय भूगोल की उपागम (विधियाँ)

अध्याय ३ : नगर नियोजन से संबंधित सिद्धान्त 97-135

- नगर नियोजन का अर्थ एवं परिभाषा
- नगर नियोजन से संबंधित भौगोलिक सिद्धान्त
- नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त
- नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन
- स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप आदर्श नगर की संकल्पना

अध्याय ४ : सागर नगर की परिचयात्मक अध्ययन 136-194

- सागर नगर की स्थिति
- विस्तार
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- सागर सरोवर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- उच्चावच
- भूगर्भिक संरचना
- जलवायु
- अपवाह प्रतिरूप
- प्राकृतिक वनस्पति
- खनिज
- यातायात एवं परिवहन
- संचार
- जनसंख्या
- भाषा
- धर्म तथा जाति
- संस्कृति तथा रीति-रिवाज
- कृषि
- भूमि उपयोग
- उद्योग
- राजनीतिक पृष्ठभूमि

अध्याय ५ : सागर नगर की आकारिकीय अध्ययन 195-227

- सागर नगर की स्थिति
- आवास व्यवस्था
- चिकित्सा व्यवस्था
- जलव्यवस्था
- शिक्षा क्षेत्र
- धार्मिक स्थल
- प्रशासनिक केन्द्र
- सागर छावनी क्षेत्र
- औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति
- जलमल निकासी व्यवस्था
- मनोरंजन के साधन

अध्याय ६ : स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप सागर के प्रमुख संस्थानों एवं विभिन्न तथ्यों की स्थिति 228-241

- ब्रह्म स्थान
- आवास व्यवस्था
- चिकित्सा व्यवस्था
- शिक्षा क्षेत्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- जलव्यवस्था
- पूजा स्थल
- जलमल निकासी व्यवस्था
- मनोरंजन के स्थान
- प्रशासनिक व्यवस्था
- औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति

अध्याय ७ : सागर नगर की समस्यायें 242-251

- आवास समस्या
- जल समस्या
- यातायात समस्या
- असंगत भूमि उपयोग
- जल निकासी समस्या
- पर्यावरणीय समस्या
- स्वास्थ्य समस्या

अध्याय ८ : सागर नगर नियोजन 252-292

- भारत में नगर नियोजन
- सागर नगर नियोजन
- निवेश इकाईयाँ
- आवासीय
- वाणिज्यिक
- औद्योगिक
- आमोद-प्रमोद
- कार्यालय एवं प्रशासकीय केन्द्र
- पुलिस प्रशिक्षण संस्थान (महाविद्यालय)
- इकाईवार अनुमानित जनसंख्या एवं घनत्व
- प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना एवं नगरीय अधोसंरचना

अध्याय ९ : उपसंहार 293-317

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रन्थ सूची 318-330

प्रपत्र 1-6

प्रश्नावली 1-6

❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारिणी सूची

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
4.1	सागर : क्षेत्रीय यातायात (बस)	154
4.2	सागर : क्षेत्रीय यातायात (माल)	155
4.3	सागर नगर की जनसंख्या : 1991	162
4.4	सागर : जनसंख्या परिवर्तन	165
4.5	सागर नगर में लिंग अनुपात	167
4.6	सागर नगर की अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत	168
4.7	सागर नगर की अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत : 1991	170
4.8	सागर की नगरीय जनसंख्या का आयुनुसार	172
4.9	सागर : वर्तमान भूमि उपयोग 2001	181
4.10	सागर : औद्योगिक इकाईयाँ	188
5.1	सागर : वर्तमान आवासीय घनत्व	197
5.2	सागर : आवास गृहों की कमी	202
5.3	सागर नगर के साक्षरता स्तर 2001	212
5.4	शहर में शिक्षा का स्तर	214
5.5	शहर में शिक्षित–अशिक्षित अनुपात	215
5.6	सागर : कार्यालयों की सूची	220
8.1	सागर : निवेश इकाईवार भू – उपयोग वितरण	261
8.2	सागर भूमि आबंटन 2011 (क्षेत्रफल हेक्टेयर में)	262
8.3	आवासीय भूखण्डों के विकास मापदण्ड	270
8.4	सागर : निवेशइकाईवार जनसंख्या एवं आवासीय घनत्व	271

❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छायाचित्र की सूची एवं आलेख

१. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर
२. जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण संस्थान, सागर
३. केन्द्रीय ग्रंथालय सागर
४. जिला चिकित्सालय, सागर
५. सागर तालाब
६. सागर नगर (नया)
७. सागर नगर (पुराना)
८. रेल्वे स्टेशन, सागर
९. जिला न्यायालय, सागर (नया)
१०. जिला न्यायालय सागर (पुराना)
११. नगरपालिका निगम, सागर
१२. कलेक्ट्रेट कार्यालय, सागर
१३. आदर्श संगीत महाविद्यालय, सागर
१४. बस स्टैण्ड, सागर
१५. रवीन्द्र भवन, सागर
१६. डफरिन चिकित्सालय, सागर
१७. भारतीय जीवन बीमा निगम, सागर
१८. विश्राम गृह, सागर
१९. हनुमान मंदिर, गढ़पहरा, सागर
२०. रंगमहल, गढ़पहरा सागर
२१. राजारानी महल गढ़पहरा (नया प्रवेश द्वार)
२२. राजारानी महल, गढ़पहरा (पुराना प्रवेश द्वार)
२३. मंत्रीमहल, गढ़पहरा
१. सागर : वर्तमान भूमि उपयोग २००१

❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

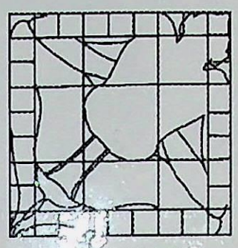

नु पुरुष

वास्तोः पते ध्रुवमया सदा ते
सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या
पाहि क्षेत उत योगे वरमं नः
यूयम् पात स्वस्ति भिः सदा नः॥
- ऋग्वेद सूक्त ५४ मण्डल ७

अध्याय प्रथम

स्थापत्यवेद का परिचय

- स्थापत्यवेद का अर्थ एवं परिभाषा
- स्थापत्यवेद का उद्भव एवं विकास
- स्थापत्यवेद की शाखायें
- स्थापत्यवेद की विषय-वस्तु
- वास्तुशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा
- वास्तुपुरूष
- वास्तुपुरूष का महत्व
- वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

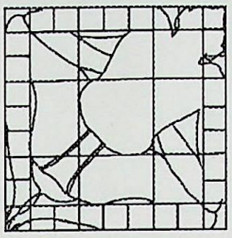

वास्तु पुरुष

वास्तोः पते गृभ्मय संसदा ते
सक्षमिहि रण्वया गातुमत्या
पाहि क्षेत उत योगे वरमं नः
यूयम् पात स्वाति भिः सदानः॥
- ऋग्वेद सूक्त ५४ मण्डल ७

अध्याय प्रथम

स्थापत्यवेद का परिचय

- स्थापत्यवेद का अर्थ एवं परिभाषा
- स्थापत्यवेद का उद्भव एवं विकास
- स्थापत्यवेद की शाखायें
- स्थापत्यवेद की विषय-वस्तु
- वास्तुशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा
- वास्तुपुरूष
- वास्तुपुरूष का महत्व
- वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

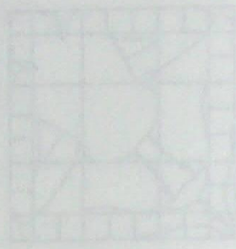

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1

स्थापत्य वेद का परिचय

मनुष्य के जीवन पर न केवल आसपास के वातावरण का ही प्रभाव पड़ता है, वरन् जमीन के उस भूखण्ड का तथा उस पर बने मकान का भी प्रभाव पड़ता है । मानव की विकास यात्रा में अधिवास मानव की प्राचीन अनुपम एवं बहुपयोगी कृति है । मनुष्य आज अपने जीवन को सुखी, शांत और सुरक्षित बनाने के लिये जितने साधन जुटाने का प्रयास कर रहा है, उनमें सफल होकर उनका उपभोग कर रहा है, उतनी ही उसके जीवन में दुःख, अशांति एवं असुरक्षा की भावना प्रगाढ़ होती जा रही है । मनुष्य अधिकाधिक उत्तम घर, वस्त्र, नगर और राज्य आदि से संबंधित व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास कर रहा है, परंतु वह जिस गति से प्रयासरत् है, उसी गति से भ्रष्टाचार, हिंसा, व्यभिचार, संघर्ष, छल–लूट, छीना–छपटी, तनाव, अत्याचार,विरोध एवं प्राकृतिक प्रकोप भी बढ़ते जा रहे हैं । इन समस्त बातों को ध्यान में रखते हुए मानव रूपी कदम लौट पड़े पुनः उस प्राचीन वैदिक काल की ओर जहां इन समस्त समस्या रूपी बेल को जड़ से समाप्त करने के नियम थे, आधार थे । वैदिक काल में ऋषि मनीषि इस तथ्य से भलि–भांति परिचित थे और तब वेद के ज्योतिर्मय अस्तित्व का अभिर्भाव हुआ, जिसे पुनः आधुनिक समाज ने समझा । जिसने आधुनिक काल में तो अपना उज्जवल अस्तित्व खो दिया था, फिर भी उसी वेद की पुष्पित पल्लवित कोंपले आज स्थापत्यवेद के एक अंग वास्तुशास्त्र के रूप में मनुष्य को पुनः उस गुजरे काल के खंडहरों व नगरीय सभ्यताओं की ओर ले जा रही हैं ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारतीय संस्कृति में मुख्यतः चार वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) माने गये हैं ; जिसमें स्थापत्यवेद, अथर्ववेद का उपवेद माना गया है ।[1]

स्थापत्य, भारतीय संस्कृति का एक बड़ा महत्वपूर्ण अंग है । जहां प्राकृतिक और भौतिक दोनों का संगम होता है । इस स्थापत्य विद्या के आधार पर ही हमारे प्राचीन मंदिरों एवं अन्य अनेक ऐतिहासिक भवनों की रचना हुई; जिसमें से अधिकांश अभी भी इसके साक्षी हैं । ऐसे निर्माणों में प्रवेश करने पर व्यक्ति को स्वयं अपरिमित सुख एवं शांति का अनुभव होता है; किन्तु परिवर्तन प्रकृति का नियम है, और मानवीय क्रियाओं में भी कालानुरूप परिवर्तन हुआ, परिणामस्वरूप भवन निर्माण कला में भी परिवर्तन हुआ । परिवर्तन के मौलिक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए सीमा में रहकर किया गया परिवर्तन जहां एक ओर मानव के विकास के लिये असीम सम्भावनाओं का मार्ग प्रशस्त करता है वहीं दूसरी ओर सीमाओं को लांघकर किया गया परिवर्तन विनाश का कारण भी बन सकता है । स्थापत्यवेद वस्तुतः भारतवर्ष का अत्यंत प्राचीन वेद है, जिसके ज्ञान के द्वारा हम अपने लौकिक जीवन में मानसिक शांति, स्वास्थ्य, धन, समृद्धि, सफलता एवं वैभव आदि लाभों को प्राप्त कर जीवन को भौतिक रूप से सुखी बनाते हैं ।

❑ **स्थापत्यवेद का अर्थ एवं परिभाषा :**

आयुर्वेदो, धनुर्वेदो, गन्धर्वश्रेचित ते श्रयः ।

स्थापत्यवेदमरमुपतेदश्रचतुर्विद्यः ।।[2]

भारतीय स्थापत्यवेद एक विशुद्ध विज्ञान है । व्याकरण की दृष्टि से स्थापत्य वेद का अर्थ – 'स्था' शब्द संस्कृत की 'तिष्ठ' धातु से बना है, जो कि बैठने के अर्थ में प्रयुक्त होता है; जिसका अर्थ है – स्थापित करना । और 'वेद' शब्द संस्कृत की 'विद्' ध ातु से बना है; जिसका अर्थ है – 'ज्ञान' । अर्थात् व्यक्त एवं अव्यक्त का पूर्ण ज्ञान ही वेद है । वेद जो कि शुद्ध, शाश्वत एवं सनातन है । अतः स्थापत्यवेद का शाब्दिक अर्थ है– 'स्थापित करने का ज्ञान ।'

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संस्कृत हिन्दी कोष के अनुसार – *'स्थापत्य क्रमशः स्थापत्यम् (स्थापित)+ष्यज (अन्तःपुर का रक्षक) से निर्मित है अर्थात् स्थापत्यम् , वास्तुविद्या और भवन निर्माण कला है'* ।[3]

द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल के अनुसार– *'भारतीय स्थापत्य भारतीय संस्कृति का बड़ा ओजस्वी अंग है यह वह अंग है, जहां पार्थिव एवं अपार्थिव दोनों का संगम होता है ।'*[4]

स्थापत्यवेद के सर्वव्यापी एवं बहुआयामी स्वरूप के कारण इसकी परिभाषा तथा विषय–वस्तु में समयानुरूप परिवर्तन होता रहा है । वास्तु विद्या और भवन निर्माण कला है।[5] आरंभकाल से ही प्रकृति में सतत् परिवर्तन होता रहा है। परिणामस्वरूप मानवीय क्रियाकलापों, आवश्यकताओं एवं रूचियों आदि में भी परिवर्तन होता रहा है, इसी आधार पर स्थापत्यवेद की परिभाषा एवं विषय–क्षेत्र में समयानुरूप परिवर्तन होना स्वाभाविक है । स्थापत्यवेद भारतीय ज्ञान की प्राचीनतम शाखाओं में से एक है । अतः स्थापत्यवेद की परिभाषा विषय–वस्तु आदि के संबंध में वैचारिक मतभेद होना स्वाभाविक है। अतः समय–समय पर विद्वानों ने काल व परिवेशानुरूप अपने–अपने दृष्टिकोण से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है । वर्तमान में सामान्यतया स्थापत्यवेद का आशय वास्तुशास्त्र से लगाया जाता है, लेकिन वास्तुशास्त्र स्थापत्यवेद का एक अंग मात्र है । कृष्णदत्त बाजपेयी जी के मतानुसार– *'स्थापत्य भवन निर्माण कला है ।'*[6] अव्यक्त को व्यक्त कर उसमें चेतना की स्थापना करना ही महर्षि स्थापत्यवेद है । भारतीय स्थापत्य अव्यक्त से व्यक्त होने का विज्ञान है । यह विज्ञान है, सूक्ष्म उर्जा के सचेतन उर्जा में परिवर्तन का यह विज्ञान है, निराकार ऊर्जा के साकार ऊर्जा में परिवर्तन का। यह विज्ञान है, वस्तु के वास्तुरूप में आकार लेने का।

आचार्य निकेतन आनंद के अनुसार – *' समस्त ज्ञान के बारे में जानना एवं समाज में व्यक्त हुई वस्तु में चेतना की स्थापना ही स्थापत्य वेद है ।'*

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्त विवरणानुसार स्थापत्यवेद मात्र निर्माण का पदार्थजन्य ज्ञान न होकर भवन निर्माण से संबंधित समस्त मानवीय एवं प्राकृतिक तथ्यों के सामन्जस्य का विज्ञान है, तथा इसे समस्त शिल्पकलाओं जिनका देश व कालानुरूप, मानव एवं प्रकृति के साथ उचित सामन्जस्य है, को ध्यान में रखकर निर्मित किया गया है । वर्तमान में स्थापत्यवेद के ज्ञान की सुरभि एवं सुगन्धि भी अब चारों ओर फैल चुकी है । स्थापत्यवेद के आदर्श नियमों का पालन करने के बाद उससे मिलने वाले प्रभावों को देखकर व्यक्ति आज के युग में आश्चर्य चकित है, कि जिस सुख–शांति एवं समृद्धि की खोज मानव को प्रारंभ काल से थी उन समस्त समस्याओं का कुछ हद तक निवारण वास्तुशास्त्र के नियम कर रहे हैं ।

❑ स्थापत्यवेद का उद्‌भव एवं विकास :

स्थापत्यवेद के उद्‌भव के संबंध में विभिन्न विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत हैं । भारतीय संस्कृति का पुरातन अतीत आध्यात्मिक ज्ञान की आभा से प्रदीप्त रहा है; जिसकी प्रकाश रश्मियां सारे विश्व में प्रकाशमान थीं । यहां के महर्षियों का पुरूषार्थ न केवल आत्मोत्कर्ष तक ही सीमित था; बल्कि मानवीय जीवन को भौतिक रूप से समुन्नत एवं सुन्दर बनाने में भी था । इसी के अंतर्गत उन्होंने अनेकों प्रकार की विधाओं व कलाओं का सृजन किया, इसमें से स्थापत्यवेद के ज्ञान विज्ञान की खोज उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि थी ।

• मानव सभ्यता के विकास के साथ स्थापत्य के इतिहास के बिम्ब :

स्थापत्य के उद्‌भव के संबंध में एक कथा मिलती है, जिसे भवन जन्म कथा भी कहा जाता है । इस कथा के अनुसार प्राणी सृष्टि के अनंतर यह पूर्णाजनाकुल प्रजा देवों के साथ ही साथ रहती थी । देवों के समान पहले कृतयुग में शोक, व्याधि, जरा, आतंक आदि से रहित मनुष्य स्थिर यौवन वाले होते थे । वे पर्वतों के निकुंजों, सरिताओं, सरोवरों और चित्र–विचित्र वनों में देवों के साथ खेला करते थे । एक बार वे यों ही अमरों के साथ उठकर स्वर्ग में पहुंचकर पूर्ण स्वतंत्रता से देवों के समान घूमने लगे । वे लोग देवताओं के समान चित्र–विचित्र वस्त्र पहने हुये और अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित दिखाई देते

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थे । उन लोगों के महलों के समान 'कल्पद्रुम' वृक्ष थे । उन विमानाकार कल्पद्रुमों में चित्र–विचित्र आभूषण पहने हुए सुन्दर स्त्रियों के साथ रहते एवं क्रीड़ा करते थे । वे सब क्षुधा, पिपासा और दुःखों से रहित दस हजार वर्ष की अवस्था वाले हो गये । उनके शरीर रत्नों के समान झलकते हुए दिखाई देते थे । उन्होंने कभी भूरस (ईख का रस) का पान कर लिया, तब से वे बहुत अधिक कामी होकर स्वेच्छापूर्वक आहार–विहार करने लगे । यहां पर न तो सूर्य उग्रता से चमकता था और न ही आंधी चलती थी । रात्रियों को पूर्ण चंद्रमा निकलता था एवं मेघों की छटा थी । यहां के वनालय सदैव फल एवं पुष्पों से युक्त थे । यहां पर केवल एक वर्ण ब्राहम्ण ही था । चारों वेदों में भी केवल एक ही वेद था। केवल एक बसंत ऋतु ही थी । यहां के सभी लोग रूप, शस्त्र, सुख ,ऐश्वर्य से सुशोभित थे । सभी लोगों में समानता थी, उनमें कोई उत्तम, मध्यम और अधम नहीं था । यहां पर खेट , नगर, पुर, क्षेत्र , खल आदि की कोई व्यवस्था नहीं थी और न ही राक्षसों का भय था यहां राजा एवं प्रजा की कोई बात नही थी। पूर्ण स्वराज एवं साम्यवाद था ।

इस प्रकार से उस सुदूर प्राचीनकाल में इस भारतवर्ष में देवों के साथ रहते हुये बहुत समय बीत गया । इस तरह साथ–साथ रहने के परिणामस्वरूप विधिवश उन लोगों की देवों के प्रति आदर–भावना कम होने लगी और वे पूजित देव अब उनके लिये अपूजित हुये, परिणामस्वरूप देवों ने कल्पतरू को स्वर्ग में डाल दिया इसके कारण उन भृत्यों की स्वर्ग जाने की शक्ति और दिव्य भाव नष्ट हो गये । अब कल्पद्रुम देवताओं के साथ की क्रीडाओं को याद कर विलाप करने लगे । इस प्रकार उनके विलाप करने पर उनके प्राणों की रक्षा के लिये पर्पटक (पाकड़) वृक्ष उत्पन्न हुआ । पर्पटक के अभाव में कल्पद्रुम अन्य वृक्षों पर अपना वास करने लगे । इसके पश्चात् विधिवश पृथ्वी से पर्पटक भी विलीन हो गये । पर्पटक के नष्ट होने पर पृथ्वी पर बिना जुताई वाले सांवांधान उत्पन्न हुए । इसके पश्चात् कहीं सांवाधान भी नष्ट न हो जाये इसलिये पेड़ों के नीचे सांवांधान के बड़े–बड़े ढ़ेर बनाये और उसके खेत बनाये । अब उन लोगों में धीरे–धीरे लोभ और कामदेव ने आकर पैर जमाये। स्त्री और पुरूष के सहवास से उनका धैर्य भंग हो गया और स्त्रियों में शीघ्र रति पैदा हो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गई। इसके पश्चात् अपनी आत्मा का उल्लंघन करने से उनका ह्रास हुआ और सांवांधान सूखकर भूसी पैदा हो गई और राजस प्रकृति के प्रकोप के कारण भूसी वाले धान्य के सेवन से मल प्रवृत्ति होना शुरू हो गई ।

अब उस तुष–धान्य के विलीन हो जाने पर और संचित धान्य के समाप्त हो जाने पर उनकी बड़ी दुर्गति हुई । चीर और वत्कल वस्त्र धारण करने वाले एवं कन्दमूल फल पर निर्वाह करने वाले उन लोगों की विधिवश एक ही बसन्त ऋतु के स्थान पर छः ऋतुयें हो गई । अब उनका शरीर दोष, रोग एवं शोक से व्याप्त होने लगा । उनका मन काम, क्रोध, ईर्ष्या, दीनता और घृणा के प्रभाव से दूषित होने लगा । ठंड, गर्मी और बरसात आदि के प्रभाव से अधिभौतिक दुःख भी उपस्थित हुआ । इस प्रकार आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभैतिक दुःखों से पीड़ित वे अपने कामवासनाओं को छिपाने के लिये एवं शीतल, नीहार, जाड़े, पानी, वर्षा और आंधी से बचने के लिये वृक्षावास से ऊबकर पत्थरों से वृक्षों को काटकर झोपड़ियां बनाने लगे । कल्पद्रुम के आकार वाले महलों का स्मरण करके एक, दो, तीन, चार, सात तथा दस साल (शाला) वाले उसी प्रकार के घरों का निर्माण कर एवं उनके परकोटे तथा पारिखाएं, घास आदि से ढंककर घर वालों की तरह सुख से रहने लगे । इस प्रकार शीत, वात, जल एवं ताप से बचने वाले उन घरों मे रहने लगे । हर्ष और प्रफुल्लित मन एवं दुःखों से छुटकारा पाकर आज तक इसी तरह रहते हैं ।[7] घर सामूहिक निवास का रूप धारण करते–करते नगर के रूप में परिवर्तित हो गये । इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि स्थापत्यवेद का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ हुआ ।[8] इस प्रकार सभ्यता के विकास के साथ–साथ नगर की आवश्यकता और उपयोगिता के विस्तार ने सुचारू निर्माण की भावना को उद्दीप्त किया और मनुष्य ने उसे वैज्ञानिक रूप दिया । तत्पश्चात् उसने अपनी प्रत्येक आवश्यकता के लिये अनेक प्रकार के स्वतंत्र भवनों का निर्माण किया तथा उनकी वास्तुकला ने स्वतंत्र रूप धारण किया । संक्षेप में वास्तुकला का क्रम–विकास यही है, जिसे विश्व के इतिहास के साथ सम्बद्ध कर सकते हैं ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **सिन्धुघाटी काल में स्थापत्य :**

प्राचीनकाल में सिन्धुघाटी में मोहन जोदड़ो व हड़प्पा, लोथल (गुजरात), रोपड़ (हरियाणा), कालीबंगा (राजस्थान) अति विकसित नगर थे । "सिन्धुघाटी की सभ्यता लगभग 5000 वर्ष प्राचीन है ।"[9] सिन्धुकालीन नगरों का विकास सुनियोजित योजना के तहत किया प्रतीत होता है; क्योंकि इन नगरों में सुविकसित सड़कें, नालियां, स्नानागार, एक मंजिल अथवा इससे बड़े भवनों के अवशेष प्राप्त हुये हैं । अनेक विद्वानों का मानना है, कि मोहना जोदड़ो के समान सुंदर नालियों की व्यवस्था अन्य किसी भी देश में नहीं थी ।[10] यहां चार प्रमुख सड़कें थीं । मुख्य सड़क की चौड़ाई 10 मीटर थी । ये सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं । इसी तरह मोहन जोदड़ो में एक स्नानागार मिला, जिसकी लंबाई 55 मीटर और चौड़ाई 33 मीटर थी । तालाब में पानी तक पहुंचने के लिये चारों ओर पक्की सीढ़ियां बनीं थीं । यह नगर आयाताकार भूखण्डों में बंटा था । सिन्धुघाटी की सभ्यता 5000 वर्ष पूर्व होने के कारण कुछ विद्वान इसे ही वैदिक काल की संज्ञा देते हैं ।[11]

- **वैदिक काल में स्थापत्य :**

स्थापत्यवेद शाश्वत् सनातन एवं प्राचीन वेद है। स्थापत्यवेद सर्वप्रथम लिपिबद्ध रूप में ऋग्वेद की ऋचा में दृष्टिगोचर होता है; जिससे इसकी प्राचीनता स्वतः ही स्पष्ट हो जाती है; जिसमें वास्तुदेवता का आह्वान किया गया है ।[12]

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ।। 1।।

जो मनुष्य सब ओर द्वार और बहुत अवकाश वाले घर को बनाकर उसमें बसते ओर रोग रहित होकर अपने तथा औरो के लिये सुख देते हैं; वे सबको मंगल देने वाले होते हैं ।।1।। इसी प्रकार –

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् ।
सखा सशेवे एधि नः ।। 1।।[13]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हे (वास्तोष्पते) घर के स्वामी जिस घर में सब रूप प्रवेश करते हैं, वहां हम लोगों के लिये रोग हरने वाले मित्र सुंदर सुख वाले होते हुए प्रसिद्ध होयिये ।।1।।

इसी प्रकार अथर्ववेद में भी इसका उल्लेख है – [14]

इहैव ध्रुवां नि मिनोमि शालां क्षेमे तिष्ठति धतमुक्षमाणा ।
तां त्वां शाले सर्ववीराः सुवीरा अरिष्टवीरा उप सं चरेम ।।1।

यहां पर ही ठहराऊ शाला को जमाकर बनाता हूं , वह घी सींचती हुई लब्ध वस्तु की रक्षा में ठहरी रही । हे शाला तुझमें आकार सब वीर पुरूषों वाले अच्छे–अच्छे पराक्रमी पुरूषों वाले और निरोगी पुरूषों वाले हम चलते फिरते रहें ।।1।।

इसी प्रकार श्रीमद्भागवत् में कहा गया है – [15]

आयुर्वेदं धनुर्वेदं वेदान्तः ।
स्थापत्य च सृजतवेदं कृमापूर्वा दिमिमुखे ।।

आयुर्वेद, धनुर्वेद, वेदान्त और स्थापत्य चारों क्रमशः ऋग्वेदादि के उपवेद हैं। वेदों के अतिरिक्त पुराणों में स्थापत्यवेद का उल्लेख पर्याप्त मात्रा में हुआ है– मत्स्यपुराण, स्कंदपुराण, अग्निपुराण, वृहत् संहिता इत्यादि में प्रमुख रूप से स्थापत्यवेद का विकास क्रम देखने को मिलता है । वास्तु के उद्भव के संबंध में वृहत् संहिता में वर्णन मिलता है [16]–

वास्तुज्ञानमथातः कमलभवान्मुनिपरम्परायातम् ।
क्रियतेऽधुना मयेदं विदग्धसांवत्सर प्रीत्यै ।।1।।

अब मैं ब्रह्मा जी द्वारा गर्गादि ऋषियों को बताया गया वास्तुज्ञान कहता हूं । इस वास्तु विद्या को जानने से बुद्धिमान व विद्वान दैवज्ञों को प्रसन्नता होगी । जैसा मत्स्य पुराण में वास्तुविद्या के 18 आचार्यों का वर्णन किया गया है [17]–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भ्रगुरत्रिर्वशिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा।
नारदो नग्नजिच्चैव विशालाक्षः पुरन्दरः।।
ब्रह्मकुमारो नन्दीशः शौनकौ गर्ग एव च।
वासुदेवादिषु पुनर्भलोकभक्तितोऽब्रवीत् ।।

भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजित, विशालाक्षा, पुरंदर, ब्रह्मकुमार, नन्दीश,शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरूद्ध, शुक्र, बृहस्पति ये 18 देव दानव ऋषि ही वास्तुशास्त्र के ज्ञाता और प्रवर्तक हैं । इसी प्रकार वृहद्वास्तुमाला में नारायणभट्ट, रामदैवज्ञ, केशवदैवज्ञ, माण्डव्य, लल्ल, श्रीपति, ब्रह्मशंभु, कालिदास, वराहमिहिर, टोडरानंद, भास्कर, शार्ङ्गधर इत्यादि दैवज्ञ भी वास्तुशास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान कहे गये हैं ।[18]

यह विद्या बहुत प्राचीन है । इस विद्या को ब्रह्मा या शिव ने सबसे पहले गर्ग मुनि को बताया था । गर्ग से पाराशर ने इसे प्राप्त किया था । पाराशर ने तब बृहद्रथ को बताया और इस विद्या को विश्वकर्मा (देव शिल्पी) ने प्राप्त किया था। विश्वकर्मा ने इस विद्या को अनेक लोगों को समझाया था । विश्वकर्मा ने इस विद्या के आदिदेव शम्भु हैं, ऐसा कहा है [19]—

इति प्रोक्तं वास्तुशास्त्रम् पूर्व गर्गाय धीमते।
गर्गत्पराशरः प्राप तस्मात्प्राय बृहद्रथः ।
बृहद्रथाद्विश्वकर्मा प्राप्तवान् वास्तुशास्त्रकम् ।
स विश्वकर्मा जगतो हितायाकथयत्पुनः ।
वासुदेवादिषु पुनर्भलोकभक्तितो ऽब्रबीत् ।।

इनमें विश्वकर्मा और मय सर्वाधिक प्रचलित आचार्य हैं; विश्वकर्मा देवस्थपति और मय असुर स्थपति थे । [20] वैदिककाल में अयोध्या, मिथिला, लंका, किष्किन्धा, जनकपुरी, हस्तिनापुर, मथुरा, वैशाली,मगध, द्वारिका, इन्द्रप्रस्थ, पाटलीपुत्र, कौशाम्बी, सांची, कांचीपुरम,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मदुरै आदि नगरों का निर्माण योजनाबद्ध रूप में किया गया । यहां पर नगरवासियों के उपयोग हेतु यथास्थान उद्यान, कूप, बाउड़ी, आवास मार्गों एवं सुरक्षा इत्यादि की उत्तम व्यवस्था थी । रामायणकालीन अयोध्या नगर लगभग 5500 मीटर लंबाई और 1370 मीटर की चौड़ाई में विस्तृत था । नगर में कई चौड़ी और सुंदर सड़कें थी, जिनके किनारे पेड़ लगे थे । नगर में पेयजल की समुचित व्यवस्था थी । [21] यथा–

कपाट तोरणवतीः सुविभक्तान्तरापणाम् ।
सर्वयन्त्रायुधवतीमुषिता सर्वशिल्पिभिः ।। [22]

इस काल में नगर निर्माण में नगरवासियों के उपयोग एवं व्यवहारिकता के साथ–साथ नगरों की सुन्दरता पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है । इसका प्रमाण रामचरित मानस एवं वाल्मिकी रामायण आदि ग्रन्थों में देखने मिलता है–

वप्रप्रकारजंघानां विपलाम्बुवनाम्बराम ।
शतन्धीशूलंकेशत्तामट्टालकावतंसकमा,
मनसेवकृतां लंका निर्मितां विश्वकर्मणा ।[23]

रामायण काल के समान ही महाभारत काल में भी द्वारिका का निर्माण श्रीकृष्ण के कहने पर विश्वकर्मा द्वारा किया गया, जो कि ईसा पूर्व 1400 में जलमग्न हो गई । [24] अर्थात् ई.पू. 1400 तक स्थापत्यवेद एक समुन्त्त विज्ञान के रूप में विकसित हो चुका था तथा इन्द्रप्रस्थ का निर्माण श्रीकृष्ण के आदेश पर विश्वकर्मा तथा मय ने किया था –

कुरूष्व कुरूराजाय महेन्द्रपुर सनियम् ।
इन्द्रेण कृतनामानमिन्द्रप्रस्थं महापुरम् ।। [25]

इसी प्रकार आचार्य शुक्रनीति में स्थापत्यवेद का बड़ा सूक्ष्म रूप से वर्णन प्राप्त होता है । [26] इसी श्रृंखला में कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में विकसित नगरों का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्लेषण बड़े ही सुंदर एवं वैज्ञानिक रूप में किया है । जैसे–

प्रवीरे वासतुनि राजनिवेशश्चत्वुर्वण्य समाजीवे।
वास्तुहृदयादुत्तरे नव भागे यथोक्तं विधानमन्तः पुरं प्राड्मुखमददमुखं वा कारयेत्। [27]

कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में वर्णव्यवस्थानुरूप आवास एवं उनकी माप, मार्गों की माप आदि का बड़ी सूक्ष्मता से विवेचन किया है । गंगा के तट पर एक नगर निर्माण का वर्णन है–

यथा परिच्छिन्नके स्थाने नगरं मापेतुं आरभि
नगर–करणं विचारेन्तु एतक इदं करोन्तुति
सर्वकम्मानि विभजत उम्मगे कम्मं पाटिथापेसु
महाडम्मगद्वारं गंगातित्थे अहोसि ।

1735

महाडम्मग जातक में वर्णित इस प्रासाद को पूर्व लेखकों ने सुरंग कहा है, पर वह एक नगर और राजमहल है। जैसा स्वयं जातक ने लिखा है, इसके निर्माता वास्तुविद्याचार्य को महावर्धकी कहा गया है । [28]

बौद्धकालीन पालि साहित्य में स्थापत्य से संबंधित अनेक ग्रंथ एवं जानकारियां प्राप्त होती हैं । उदाहरणस्वरूप ब्रह्म जाल सुत्त में वित्थुविज्जा दिया गया है । इसके पश्चात् मौर्यकाल में मौर्य सम्राटों ने स्थापत्य की दृष्टि से अनेक बौद्धमठ, राजमहल, कीर्तिस्तम्भ, शैलगुफायें आदि का निर्माण कराया । भुवनेश्वर के मंदिर, खण्डगिरि की शैल गुफायें इनके उदाहरण हैं । मौर्यकालीन नगरों में पाटलीपुत्र नगर का वर्णन करते हुए मेगस्थनीज ने कहा है– यह नगर साढ़े नौ सौ मील लंबा तथा दो मील चौड़ा है नगर के चारों ओर 600 फुट चौड़ी तथा 45 फुट गहरी खाई है । शहर के चारों ओर लकड़ी की दीवार में 570 बुर्ज तथा 64 द्वार बने हुये हैं । [29] शाही महल नगर के मध्य स्थित था, जो चारों ओर से पार्क, फब्बारों

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और पानी के तालाबों से घिरा था। यहां अलग–अलग प्रयोग हेतु अलग–अलग तरह की सड़कें बनाई गईं थीं जैसे राजमार्ग, बाजार मार्ग, स्वर्णकार मार्ग। नगर के मध्य में एक भव्य मंदिर भी स्थित था । [30]

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि वैदिक काल में जन्में वास्तुशास्त्र का रूप वेदान्त के समय स्थिर हुआ। पुराणों और आगमों में इसका विकास हुआ। बाद में वास्तुशास्त्र के आचार्यों ने इसे एक अलग शास्त्र का रूप दिया । महाभारत काल में रचित इस शास्त्र की दिशा व दशा 13 वीं शताब्दी तक अच्छी रही। इसके पश्चात् इसमें भटकाव आया और यह विद्या लुप्तप्राय सी हो गई । [31]

- **स्थापत्य और कालगणना :**

200 ई. पूर्व से 300 ई. तक का समय भारत के इतिहास में अत्याधिक उथल–पुथल का समय माना जाता है, क्योंकि इस काल में अनेक राजवंशों शुंग, कण्व, शक, कुषाण, सातवाहन, चोल पाण्ड्य और चेर का उत्थान एवं पतन हुआ। इस काल में सांची के वृहद् तथा प्रसिद्ध स्तूपों का निर्माण हुआ। सातवाहन वंश ने लगभग 450 वर्ष तक शासन कर स्थापत्य के सर्वोन्मुखी विकास में नासिक तथा अजन्ता में शैल गृहों तथा मूर्तियों का निर्माण कर अपना योगदान प्रदान किया। ईसा से चौथी सदी में एक नए भारतीय राजवंश का उदय हुआ; जिसने उत्तर भारत के एक बड़े भाग में विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जिसे गुप्त साम्राज्य कहा गया । इस काल में विभिन्न मंदिर, गुफा, चैत्य, बिहार स्तूप बनाए गए । झांसी स्थित देवगढ़ का दशावतार मंदिर, कानपुर स्थित भीतरगांव का मंदिर, भूमरा का शिव मंदिर अजन्ता एलोरा एवं उदयगिरि की गुफाएं इस काल की वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं । "गुप्तकाल को भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है ।"[32] इस काल में मूर्तिकला एवं चित्रकला में गान्धार शैली के स्थान पर भारतीय कला को अधिक महत्व दिया जाने लगा । गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् विदेशी आक्रमणों तथा राजाओं के आपसी युद्ध के परिणामस्वरूप स्थापत्य में विशेष उन्नति न होने का कारण पृथक–पृथक राज्यों में स्थापत्य का विकास भी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथक–पृथक हुआ; जिसके कारण देश में अनेक शैलियों के विकास में स्थानीय विशेषताओं का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । भारतवर्ष में स्थानीय शैलियों के अलावा, जिन तीन प्रमुख शैलियों का जन्म हुआ, उनका प्रभाव लगभग सभी शैलियों पर दृष्टिगोचर होता है, ये तीन शैलियां निम्नलिखित हैं–

1. नागर शैली :

ये मंदिर वर्गाकार अथवा चतुष्कोण होते हैं । इस शैली में शिखर ऊपर की ओर वक्र होते हुए होते हैं । इस शैली का प्रादेशिक विकास अधिकतम निखरे रूप में उड़ीसा में पाया जाता है। यदि कहा जाये कि उड़ीसा के मंदिर समूहों में नागर शैली का विशुद्ध रूप सुरक्षित है, तो अनुचित न होगा । उड़ीसा का लिंगराज मंदिर, नागर शैली का सर्वोत्तम उदाहरण है । कुछ शास्त्रों में नागर शैली को हिमालय और विन्ध्य के बीच बताया है इसके अलावा अयोध्या, खजुराहो, काशी, हरिद्वार, इलाहाबाद, गुजरात इत्यादि के मंदिर इसी शैली के हैं ।

2. द्रविण शैली :

द्रविण शैली को उसके नाम के अनुरूप ही कृष्णा और कन्याकुमारी के बीच बताया गया है । द्रविण शैली के मंदिर प्रमुख रूप से तमिलनाडु , उड़ीसा में देखने को मिलते हैं । इनके शिखर पिरामिड के रूप में होते हैं । इस शैली में आयताकार स्वरूप का हर स्तर बनाया जाता है । तन्जौर का वृहदीश्वर मंदिर द्रविण शिल्प कला की सर्वोत्तम कृति एवं वास्तुकला का मान है । दक्षिण के मंदिर द्रविण शैली के हैं ।

3. बेसर शैली :

यह शैली, नागर शैली एवं द्रविण शैली, के मिश्रित रूप में विकसित हुई है । कुछ शास्त्रों में विन्ध्य और कृष्णा नदी के बीच के प्रदेश के मंदिरों को बेसर शैली बताया है । यह शैली होयसल राजवंश के राजाओं द्वारा बनाये गये मंदिरों में दृष्टव्य है । दक्षिण पथ

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के मंदिर इस शैली में बने हैं । इस शैली में बने नागोद में स्थित नमूरा का शिव मंदिर, जबलपुर जिले में तिगवा का विष्णु मंदिर, देवगढ़ का दशावतार मंदिर तथा उदयगिरि(विदिशा) का विष्णु मंदिर प्रसिद्ध है । इसके साथ–साथ कर्नाटक के अधिकांश मंदिरों में बेसर शैली देखने को मिलती है ।

गुप्तकाल में हिन्दु मंदिरों की उपमा मानव शरीर से की जाने लगी । इस काल में "यथा देह तथा गेह" की उक्ति मंदिर में पूर्णतः चरितार्थ होती है। "हिन्दु मंदिरों की रचनायें मानव देह रचना और मंदिर रचना के बीच अनुपात के अप्रतिम प्रादर्श हैं, जिनमें उपपीठ से लेकर स्तूपिका तक की सूक्ष्म से सूक्ष्म रचना का संतुलित विचार किया जाता है।"[33]इस काल के मंदिरों के द्वारों को किन्नर,गन्धर्व, गंगा, यमुना, नाग, अप्सराओं, पुष्पों, लताओं आदि अलंकरण द्वारा सुसज्जित किया जाता था । इस काल में झांसी स्थित देवगढ़ का दशावतार मंदिर, कानपुर स्थित भीतरगांव का मंदिर, भूमरा का शिव मंदिर, साँची और उदयगिरि की गुफाएँ वास्तुकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं । चंदेल राजाओं द्वारा बलुआ, लाल तथा ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित खजुराहों के मंदिरों में आज भी संपूर्ण विश्व में भारतीय स्थापत्य की चरम परिणति दिखाने में सर्वसमर्थ हैं, अर्थात् मध्य भारत के मंदिरों की चरम परिणति खजुराहो के मंदिरों में देखने को मिलती है । यदि खजुराहों के मंदिरों को इस काल का प्रतिनिधि कहा जाये, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । खजुराहो के मंदिरों की मूर्तियाँ अपने सौंदर्य में अनुपम हैं और उनकी तुलना उस युग के सर्वोत्तम मंदिरों से की जा सकती है । गुप्तकालीन मंदिरों में जहाँ सादगी की प्रधानता थी, वहीं पूर्व मध्यकालीन मंदिरों को अनेक प्रकार से अलंकृत किया जाने लगा था, इन दोनों काल की स्थापत्यकला में बस यही एक अंतर दृष्टिगोचर होता है ।

शैवमत के अनुयायी राजा भोज ने 1050 ई. में मालवा प्रांत में शासन किया । राजा भोज न केवल एक कुशल प्रशासक थे, वरन् बहुत बड़े विद्वान तथा कला प्रेमी भी थे । राजा भोज ने 'समराङ्गणसूत्रधार नामक ग्रंथ की रचना की, जो कि स्थापत्यवेद का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अप्रतिम ग्रंथ है । इन्होंने भोजपुर के निकट 250 वर्गमील क्षेत्र में विशाल बांध तथा एक भव्य शिवमंदिर का निर्माण कराया । अपनी भव्यता के कारण यह मंदिर 'सोमनाथ मंदिर' कहलाया । यह मंदिर भारतीय स्थापत्य की गौरवमयी गाथा प्रदर्शित करने में सर्वप्रथम है ।

- **मध्यकाल में स्थापत्य :**

आठवीं से अठारहवीं शताब्दी के काल को मध्यकाल कहा जाता है । मध्यकाल को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है –

1. **पूर्वमध्यकाल (8वीं से 13वीं शताब्दी)**
2. **उत्तर मध्यकाल (13वीं से 18 वीं शताब्दी)**

पूर्व मध्यकाल में तुर्कों ने हिन्दू शासकों को पराजित कर तुर्क राज्य की स्थापना की । उत्तर मध्यकाल में मुगलों ने तुर्कों को पराजित कर मुगल साम्राज्य की स्थापना की । पूर्व मध्यकाल में स्थापत्यकला का विकास उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत में हुआ । इसका प्रमुख कारण यह है, कि जब उत्तर भारत में अनेक युद्ध हो रहे थे, तब दक्षिण भारत में विभिन्न राज्य अपने–अपने आधार पर शांतिपूर्ण ढंग से स्थापत्य कला का विकास कर रहे थे । इसका सबसे अच्छा उदाहरण कलिंग मंदिर समूह है । इस मंदिर के मुख्य भाग के सामने चौकोर कक्ष मिलता है, जो कि इस मंदिर समूह की विशिष्टता है, जिसे जगमोहन कहते हैं।[34] इस मंदिर समूह के मंदिरों में प्रमुख भुवनेश्वर का लिंगराज, रामेश्वर, सिद्धेश्वर का राजारानी, पुरी का जगन्नाथ, कोणार्क का सूर्य मंदिर, परशुरामेश्वर आदि हैं । लिंगराज मंदिर में प्रतिष्ठित भुवनेश्वर अथवा शिव के नाम पर ही इस स्थान का नाम भुवनेश्वर पड़ा है । यह मंदिर परकोटे से घिरे विशाल आंगन के मध्य में स्थित है पूर्वी दीवाल के मध्य में विशाल प्रवेशद्वार है एवं उसके चारों ओर विशाल छोटे–छोटे मंदिर बने हैं । ये समस्त विशाल मंदिर कला की दृष्टि से उत्कृष्ट हैं; किन्तु लिंगराज का विशाल मंदिर अप्रतिम है । पूर्व मध्यकाल में कल्चुरी वंश का शासन था। कल्चुरियों की राजधानी महिष्मती (मंडला) थी, किन्तु लगभग 800 ई. में त्रिपुरी कल्चुरियों की राजधानी बनी ।[35] त्रिपुरी अर्थात् तेवर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नामक ग्राम जबलपुर से लगभग 15 कि.मी. दूर स्थित है । इस शासनकाल में स्थापत्यकला का पर्याप्त विकास हुआ। भेड़ाघाट का चौंसठ योगिनी, मझौली का विष्णु वराह मंदिर, विलहरी के मंदिर एवं महल, तेवर का तालाब, त्रिपुर–सुन्दरी आदि अनेक मंदिर, महल एवं मूर्तियाँ अपनी विकासगाथा कहते प्रतीत हो रहे हैं । नवमीं शताब्दी तक उत्तर भारत में विभिन्न राज्यों की आपसी लड़ाई के परिणामस्वरूप भारत की राजनीतिक स्थिति बिगड़ी। फलस्वरूप विदेशी आक्रमण हुये और मुस्लिम शासन के उदय के साथ–साथ भारतीय स्थापत्यकला का ह्रास होना प्रारंभ हुआ । महमूद गजनवी ने 1000 ई. से 1026 ई. तक सत्रह आक्रमण कर भारतीय कला एवं संस्कृति तथा धन संपदा को नष्ट करने का भरपूर प्रयत्न किया । महमूद गजनवी ने सोलहवां आक्रमण सोमनाथ के मंदिर पर गदा से प्रहार कर मूर्तियों को चूर–चूर कर भारतीय स्थापत्य की अमूल्य कृतियों को नष्ट कर दिया । गुलामवंश के शासक अल्तमश ने गुप्तकाल में निर्मित उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर को नष्ट कर अपनी कट्टरता का परिचय दिया है। इसी प्रकार सिकन्दरशाह ने 1506 ई. में मथुरा के मंदिरों का विनाश किया । मुस्लिम शासकों के आगमन के बाद मुगलशासन काल में नियोजित नगरों के बसाव में इस्लामिक प्रभाव बढ़ने लगा। फलतः नगर नियोजन मिश्रित रूप ग्रहण करने लगा, जो भारतीय वास्तुकला के इतिहास में हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई । मुगलकाल में विकसित आगरा, फतेहपुर सीकरी, शाहजहाँनाबाद (पुरानी दिल्ली), हैदराबाद, मैसूर, असीरगढ़, अहमदाबाद आदि नगर बसाये गये । ये नगर अकबर, शाहजहाँ, बाबर, फिरोजशाह तुगलक, शेरशाह सूरी आदि ने नवीन निर्माण कर स्थापत्यकला को नवीन दिशा देने का प्रयत्न किया । सम्राट शाहजहाँ द्वारा 1638 ई. में शाहजहाँनाबाद बसाया गया । यह नगर 500 हेक्टेयर में फैला था; जिसमें 60,000 लोगों के आवास की व्यवस्था थी । नगर के चतुर्दिक क्वार्टजाइट पत्थरों की बनी चहारदीवारी थी; जिसमें चार मुख्य दरवाजे (दिल्ली गेट, काश्मीरी गेट, अजमेरी गेट एवं लाहौर गेट) थे । यमुना नदी के दायें किनारे पर स्थित इस नगर का आकार धनुषाकार था । नगर की दो प्रमुख सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं । सड़कों के दोनों किनारों पर वृक्षों की कतारों के अतिरिक्त नगर की सुंदरता बढ़ाने के लिये सुंदर व खुली मस्जिदें, बाग, फब्बारे आदि थे ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर के आवासीय क्षेत्र को खण्डीय पद्धति के आधार पर अलग–अलग खंडों में बांटा गया। जैसे– दाईबाड़ा, वैद्यबाड़ा, नाईबाड़ा, धोबीबाड़ा, मालीबाड़ा आदि । व्यापारी एवं कारीगरों के क्षेत्र को कटरा एवं धनी और अभिजात वर्ग के मकानों को हवेली और छत्ता कहकर पुकारते थे । मूर्तिभंजक महमूद गजनवी को भी भारतीय कला प्रभावित किये बिना न रह सकी । वह मथुरा और कन्नौज के गगनचुम्बी भवनों को देखकर आश्चर्यचकित रह गया था । गजनवी ने अपने एक कर्मचारी को पत्र लिखा–"यहाँ (मथुरा में) एक हजार सुविशाल भवन ऐसे हैं, जो धार्मिकों के विश्वास की भाँति अचल हैं । आज नगर जिस अवस्था में है वैसा दूसरा नगर आगामी दो शताब्दियों में भी करोड़ों–अरबों दीनार (धन) खर्च करके भी नहीं बताया जा सकता ।[36] 1727 ई. में महाराजा सवाई जयसिंह ने जयपुर नगर को बसाया था । जयपुर नगर भारत में नियोजित नगर का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक माना जाता है, जो पूर्णतः वैदिक वास्तुशिल्प के आधार पर बसाया गया है ।

- **आधुनिक काल में स्थापत्य :**

भारत में 1750 ई. में अंग्रेजों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना व्यापार के बहाने की । प्रारंभ में अंग्रेजों के भारत आने का उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार एवं व्यापार था ; किन्तु भारत की कमजोर राजनीतिक स्थिति के कारण अंग्रेजों ने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाकर संपूर्ण भारत को अपने अधीन कर लिया परिणमस्वरूप स्थपत्य कला की उन्नति की बजाय अवनति होती गई ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत वर्ष में स्थापत्यकला की अवनति रोकने हेतु अनेक विद्वानों जैसे द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, तारापद भट्टाचार्य, आचार्य प्रसन्नकुमार, आचार्य चतुरसेन, जगदीश चंद्र मिश्र, श्रीराम शर्मा, आचार्य एवं महर्षि महेश योगी आदि ने वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद तथा विलुप्त होते हुये ग्रंथों को संरक्षित कर स्थापत्य कला की धरोहर को सुरक्षित रखा । इसके साथ–साथ अस्पष्ट एवं क्लिष्ट वैदिक ग्रंथों का सरलीकरण कर सामान्य जनमानस के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया । इसके अतिरिक्त कुछ संस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी वैदिक शिक्षा का अध्ययन आरंभ किया है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ स्थापत्यवेद की शाखायें :

वर्तमान में स्थापत्यवंद शब्द का प्रयोग शिल्पकला तथा वास्तुकला या वास्तुशास्त्र आदि शब्दों के रूप में होता है । जैसे वर्तमान काल में स्थापत्यवेद और वास्तुशास्त्र को एक ही अर्थ अर्थात् भवन निर्माण कला के लिये प्रयोग किया जाता है; किंतु वास्तुशास्त्र स्थापत्यवेद की एक महत्वपूर्ण शाखा मात्र है न कि संपूर्ण स्थापत्यवेद । ये समस्त शाखायें परस्पर अर्न्तसम्बन्धित हैं । जिस प्रकार देवालय, राजप्रसाद, भवन आदि का निर्माण वास्तुशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है ; किंतु उन वास्तु रचनाओं में मूर्तियों और चित्रों इत्यादि की स्थापना स्थापत्यवेद की अन्य शाखाओं के आधार पर होती है । इन समस्त शाखाओं का मिश्रित रूप में विकास होना इसका प्रमुख कारण है ; जिसके परिणामस्वरूप इन शाखाओं का काल निर्धारण करना संभव नहीं है। फिर भी स्थापत्यवेद की शाखाओं को तीन रूप में विभाजित किया गया है –

अ. चित्रकला

ब. मूर्तिकला

स. वास्तुकला

अ. चित्रकला :

विभिन्न रेखाओं के योग निर्मित आकृति विशेष या रेखाकृति को चित्र कहते हैं तथा वह ज्ञान जो आकृति विशेष को निर्मित करता है चित्रकला कहलाता है। पुरापाषण युग में जब मानव जाति किसी भाषा या लिपि विशेष से परिचित नहीं थी, तो उस समय चित्रकला विचार अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम थी और वर्तमान में पर्याप्त मात्रा में इसके प्रभाव अनेक शैलगुहाओं जैसे भीम पेठिका, बाध इत्यादि में प्राप्त होते है। अतः हम कह सकते हैं कि मानवीय अभिव्यक्ति का एक अनुपम माध्यम चित्रकला है।

भारतवर्ष में प्रत्येक कला को प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है फिर चाहे वह शिलाकला हो या संगीतकला । शिल्पशास्त्रीय ग्रंथों में चित्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द को अनेक रूप में परिभाषित कर वर्णित किया जाता है। जहां अन्य शैलियों में रंगप्रधान चित्रों को अधिक महत्व दिया गया है वहीं भारतीय चित्रकला में रंगों एवं अंग–प्रत्यंग की सजावट की अपेक्षा भाव अभिव्यक्ति तथा भाव व्यंजना पर अधिक बल दिया गया है। इसके विपरीत अन्य शैलियों में रंगप्रधान चित्रों को अधिक महत्व दिया गया है। साधारणतया चित्र का अर्थ मात्र पेंटिग से लगाते हैं ; जबकि प्रतिमा के वर्गीकरण में मुख्य रूप से तीन प्रकार की प्रतिमाओं का वर्णन मिलता है जो निम्नांकित है –

अ. चित्र

ब. चित्रार्थ

स. चित्रभाष

अ. चित्र :

चित्र का अर्थ पूर्ण प्रतिमा से है, जिसमें किसी वस्तु विशेष का जड़ अथवा चेतन रूप का पूर्ण प्रतिरूप चित्रित होता है जिसे दूसरे शब्दों में हम व्यक्त प्रतिमा कह सकते है।

ब. चित्रार्ध :

चित्रार्ध का शाब्दिक अर्थ है – चित्र + अर्ध। अर्थात् आधा अर्थ। इस प्रकार चित्र का आशय किसी अंग विशेष को चित्रित करने से है। चित्रार्ध को अव्यक्त अथवा व्यक्त प्रतिमा भी कह सकते हैं।

स. चित्रभाष :

चित्रभाष का शाब्दिक अर्थ है – चित्र + भाष अर्थात् चित्र की अनुभूति या आभास होने को चित्रभाष कहते हैं। चित्रभाष को वर्तमान में पेटिंग कहते हैं। चित्र और चित्रभाष में मुख्य अंतर यह है, कि चित्र में किसी भाव अभिव्यंजना पर विशेष जोर नहीं दिया जाता है इसके विपरीत चित्रभाष में भाव अभिव्यंजना पर विशेष रूप से जोर दिया जाता है । चित्रभाष किसी भित्ति या पट्ट पर अंकित किया जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चित्रकला के अन्तर्गत वह पदार्थ जिस पर चित्रांकन होता है, रेखाकृति तथा जिससे चित्रांकन किया जाना है चित्र का उपयोग, प्रभाव, परिणाम, रंग संयोजन तथा कारणों का सूक्ष्मतम एवं तथ्यात्मक अध्ययन किया जाता है।

ब. मूर्तिकला :

वैदिक काल में श्रुति परंपरा होने के कारण प्रतिमा की आवश्यकता नहीं थी। समस्त वेदों में निराकार ब्रह्म की कल्पना की गई है। महाकाव्य काल एवं पौराणिक काल में देव प्रसादों (मंदिरों) का निर्माण कर उनमें देव प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का आरंभ हुआ। मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति हेतु कालान्तर में प्रतिमा निर्माण मूर्तिविज्ञान मूर्तिकला के रूप में विकसित हुई। मूर्तिकला को वैदिक काल में तक्षक कहा जाता था।[37] प्रतिमा निर्माण में पाषाण, मृदा, काष्ठ, धातुयें रत्न इत्यादि का उपयोग किया जाता है। भारतीय स्थापत्य में मूर्तियों में पाषाण, मृदा, काष्ठ, धातुओं एवं रत्न इत्यादि अलग–अलग पदार्थों का विधान है एवं अधिकांश मूर्तियाँ इन्हीं पदार्थों से निर्मित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त मूर्ति निर्माण में पंचधातु, अष्टधातु इत्यादि मिश्र धातुओं का भी उपयोग होता है। इनका अध्ययन मूर्तिकला के अन्तर्गत किया जाता है।

मूर्तिकला में मूर्तियों की आकृति आकार भाव अभिव्यंजना आदि का विशेष महत्व होता है। यहाँ मूर्ति के आकार से तात्पर्य मूर्ति के भिन्न–भिन्न अंगों के भिन्न–भिन्न अनुपात से है। जैसे मूर्ति की लंबाई, चौड़ाई इत्यादि यह अनुपात भिन्न–भिन्न मूर्तियों में विभिन्न रूप से पूर्व से ही निर्धारित है। अतः वर्तमान में अनेक मठ–मंदिर इसके उदाहरण हैं। उदा स्वरूप सागर जिले में स्थित एरण मंदिर, जबलपुर के भेड़ाघाट में स्थित चौसठ योगिनी एवं बाजना मठ, भोजपुर स्थित शिवमंदिर।

- **वास्तुकला :**

वास्तुकला (वास्तुशास्त्र) के अन्तर्गत राजाप्रसाद, देवालय, सभागर, नगर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्राम एवं भवन इत्यादि निर्माण एवं नियोजन का अध्ययन किया जाता है। वर्तमान काल में जन–साधारण वास्तुकला को मात्र वास्तु रचना की साज सज्जा तक ही सीमित मानते हैं; जबकि वास्तुकला का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है इसके अन्तर्गत भू परीक्षा, दिक् विन्यास, पद विन्यास, वास्तु पुरूष विकल्प, वास्तुपुरूष मंडल एवं मान नियोजन इत्यादि सम्मिलित अध्ययन किया जाता है, जोकि वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक होता है। वास्तुशास्त्र ऐसे वास्तु निर्माण प्रक्रिया का विवेचन करता है ; जिसके अन्तर्गत वास्तुरचना में निर्माण करने वाले समस्त प्राणियों पर अनुकूल प्रभाव पड़े ; जिससे व्यक्ति अपना चहुमुखी विकास कर सुख शान्ति, समृद्धि, सम्पन्नता – प्रदान कर सके।

❑ स्थापत्यवेद की विषय – वस्तु :

भारतीय मनीषियों ने मानवीय जीवन के चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष निर्धारित किये हैं और संपूर्ण वैदिक वाङ्गमय की रचना इन्हीं पुरूषार्थ को ध्यान में रखकर की है। इस वैदिक वाङ्गमय में प्रमुख चार वेद माने गये हैं और इन्हीं चार वेदों का सूक्ष्मतम अध्ययन कर प्रत्येक वेद के एक उपवेद की रचना की गई है ; जिसमें से एक स्थापत्यवेद है। स्थापत्यवेद चारों पुरूषार्थों को प्राप्त करने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होने के कारण महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संपूर्ण वैदिक वांगमय किसी एक ऋषि अथवा व्यक्तिविशेष या काल विशेष की देन न होकर विभिन्न कालों में भिन्न–भिन्न ऋषि मुनियों एवं विद्वानों द्वारा प्राप्त अनुभविक ज्ञान का संग्रह है। यही बात स्थापत्यवेद पर लागू होती है। स्थापत्यवेद की विषयवस्तु अत्यंत व्यापक है ; क्योंकि स्थापत्यवेद में विभिन्न कालों में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इतना ही नहीं इसकी तकनीकि एवं भाषा में देश, काल एवं वातावरण के अनुरूप पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। वेदों के अनुसार सर्वप्रथम ब्रह्मा ने पृथ्वी की रचना की और उसे सौरमंडल में स्थापित कर दिया। भूगोल के अनुसार पृथ्वी सूर्य का ही एक भाग थी जो धीरे–धीरे ठण्डी हुई इन दोनों कथनानुसार प्रारंभ में पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं था, वह उजाड़ और वीरान थी। जिस पृथ्वी पर न वनस्पति थी, न जलाशय, न उपवन, न जातियाँ, न वृक्षलतायें, न चारागाह और न ही प्राणदायिनी वायु एवं जल था वहाँ, मानव एवं पशुपक्षी कैसे रह सकते थे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह कहा जाता है, कि समस्त सृष्टि के प्रेरणास्त्रोत ब्रह्मा थे, इसीलिये ब्रह्मा ने सर्वप्रथम देवशिल्पी विश्वकर्मा को आदेश देकर पृथ्वी पर इन समस्त वस्तुओं के निर्माण के पश्चात् मानव पशु–पक्षियों और जीवित प्राणियों की रचना कर पृथ्वी को आबाद किया विश्वकर्मा के पिता प्रभास वसु अपने आठ भाइयों में सबसे छोटे थे। इनके सात बड़े भाई क्रमशः धर, ध्रुव, सोम, अह, अनल, अनिल, प्रत्यूष आदि थे। ये सभी भाई शक्तियों और विधाओं के आचार्य थे –

धर – पृथ्वी के भूगोल का भूमापन किया।

सोम – आकाश अर्थात् चन्द्रलोक एवं ग्रहों का वैज्ञानिक

अह – अंतरिक्ष यात्री।

अनल – अग्निदेव।

अनिल – वायु।

प्रत्यूष – जीवन एवं रसायन शास्त्री।

प्रभास वसु – वास्तुशास्त्री, शिल्पी।

प्रभासवसु ने ही विश्वकर्मा को इस शिल्प शास्त्र का ज्ञान कराया था। विश्वकर्मा ने इस प्रकार के अनेक भवन एवं अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण कराया था; जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है, कि उन्हें शिल्प, ज्योतिष, वनस्पति, खगोल, भूगोल, रसायन आदि विज्ञानों का गूढ़ ज्ञान था। रामायण, महाभारत में प्रयोग किये जाने वाले अस्त्र–शस्त्र, महिषासुर मर्दिनी के समस्त अस्त्र–शस्त्र जो विभिन्न देवी–देवताओं ने उन्हें अलग–अलग दिये थे वे सब विश्वकर्मा द्वारा ही बनाये गये थे, जो उनके रसायन, विज्ञान के कुछ उदाहरण हैं। इसी प्रकार रावन का पुष्पक विमान जिस पर चाहे जितने लोगों को बैठाया जा सकता था, पुष्पों और लताओं के सम्मिश्रण से बना था। इस विमान की तकनीकि वर्तमान के अन्तरग्रहीय शटल यान, हेलीकाप्टर, हवाई जहाज, राकेट से भी आधुनिक थी। जिसमें संख्या के अनुसार जगह बनती थी। यह विमान उनके वनस्पति व्यवहार के ज्ञान का एक उदाहरण था। कुबेर की लंका, जिसे बाद में रावण ने कुबेर से छीन ली उसे रावण के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुरूप मय दानव ने बनाया था। पहले कुबेर के लिये विश्वकर्मा ने बनाया था। इसी प्रकार इन्द्र की राजधानी अमरावती, कृष्ण की द्वारिका, युधिष्ठिर की राजधानी इन्द्रप्रस्थ आदि अनेकों भवनों की अद्‌भुत कला इनके शिल्पज्ञान के उदाहरण हैं। रचनाकार विश्वकर्मा के इन समस्त निर्माण कार्यों को नियमबद्ध कर उसे वास्तुशास्त्र का रूप प्रदान किया गया है। ऐसा माना जाता है, कि किसी भी विधा और क्षेत्र का उत्थान एवं उसमें नवीनता तब तक नहीं आती, जब तब उसमें नई–नई खोजें न की जाये। इन नई–नई खोजों के लिये उस क्षेत्र के विद्वानों में प्रतिस्पर्धा होना जरूरी है ; क्योंकि वो अपने आप को सर्वोच्च बनाने के लिए नई–नई खोज करें एवं प्रेरणा प्राप्त करें। यह तभी संभव है, जब इस क्षेत्र के विद्वान हों एवं उनमें प्रतिस्पर्धा हो। वास्तुशास्त्र के क्षेत्र मे ऐसा ही कुछ विश्वकर्मा के साथ था उनके सबसे बड़े प्रतिद्वन्दी एवं समकक्ष विद्वान दानव शिल्पी मय थे उन्हें ही दानव वास्तुशास्त्र का प्रवर्तक मानते है ''मय शिल्प'' और 'मयमतम्' शिल्पकला के रचयितामय दानव रावण के ससुर एवं मंदोदरी के पिता थे। मय राक्षसों की तिलस्मी विद्या का प्रकाण्ड ज्ञाता और महान वास्तुशिल्पी था। मय दानव के दो पुत्र–मायावी और दुदुंभी थे ये दोनों शिल्पशास्त्र के ज्ञाता थे। जलवायु, विद्युत, अणुशक्ति, प्रकाश किरणों की ऊर्जा का प्रयोगमय विद्या के प्रमुख अंग थे। जहाँ विश्वकर्मा निर्माणोन्मुखी थे तो दूसरी ओर मय सत्ता व भोग के लिये संघर्षोन्मुखी थे। किष्किंधा के पास ऋक्षबिल में भूमिगत सुरंग जिसके द्वारा समुद्रतट से समुद्र के नीचे ही नीचे शीघ्र लंका पहुंचने का मार्ग था। विश्वकर्मा के साथ मिलकर युधिष्ठिर की इन्द्रप्रस्थ का निर्माण किया। ऐसा माना जाता है कि शिवजी के आर्शीवाद से मय दानव अमर है एवं पृथ्वी पर आज भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त रावण की लंकापुरी, अहिरावण की पाताल पुरी, विश्वामित्र के आदेश पर त्रिशंकु के लिये आकाश व पृथ्वी के मध्य नई स्वर्ग रचना, मय दानव के लिये बनाये गये अनेकों तिलिस्मी नगर व प्रसाद मय दानव की अद्‌भुत कला का नमूना है।

इसीलिये रविकान्त झा कहते हैं कि ''वास्तुकला में उपभोग के अनुसार भी तकनीकि परिवर्तन हुये – जलयान वास्तुकला, सामुद्रिक ज्ञान, वायुयान एवं उपग्रह आदि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुकला के अंग है।[38] कहने का तात्पर्य है कि विश्व की समस्त शिल्पकलाओं का संग्रहित ज्ञान ही स्थापत्यवेद है, फिर चाहे यह किसी विशेष काल या विशेष मानव समुदाय द्वारा उत्पन्न हुई हो, वह सभी स्थापत्यवेद का एक अंग है। कुछ विद्वान इसे समस्त ब्रह्माण्डीय ज्ञान का संकलन स्वीकारते हैं।[39] वास्तुविद्या का भूगोल एवं भूगर्भ–विद्या तथा गणित से घनिष्ठ संबंध है, क्योंकि प्राचीन स्थापित भूमि के गंध, वर्ण, रस (स्वाद) एवं स्पर्श से भूगर्भिक परीक्षण से भवन का स्थान निश्चित करते थे।[40] स्थापत्यवेद की विषय वस्तु का एक अतिमहत्वपूर्ण भाग वास्तुकला अथवा वास्तुशास्त्र है। इसके द्वारा भवन–निर्माण का कार्य सम्पन्न होता है। प्राचीन मनीषियों ने समाज को चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र में बांटा था। ये चारों वर्ण कर्म पर आधारित है। स्थापत्य में इन चारों वर्णों के लिए भिन्न–भिन्न भवनों का विधान है। जैसा कि श्रीमद्भागवत गीता में कहा गया है –

ब्रह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परतरं ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गणै ।।[41]

व्यक्ति जिस भवन मे निवास करता है, उस पर भवन एवं आस–पास के वातारण का प्रभाव पड़ता है। वास्तुशास्त्र में न केवल आवासीय भवनों का निर्माण किया जाता है ; वरन समस्त मानव उपयोगी उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निर्मित वास्तु रचनाओं जैसे–उच्च प्रासाद, दुर्ग–गॉव, नगर, मंदिर – देवालय, कूप, वापी, तालाब, मूर्ति निर्माण, यज्ञ–शालाएं, विभिन्न प्रकार के मण्डप, सभागृह, रथ, विभिन्न प्रकार के यान, उद्यान, मंच आदि का निर्माण करना, प्रतिष्ठित करना, उनका संशोधन करना तथा जीर्णोद्धार करना वास्तुशास्त्र का विषय है। वास्तुशास्त्र ज्योतिष का एक अंग है ; क्योंकि वास्तुशास्त्र में सर्वप्रथम गणित ज्योतिष में मुहूर्त व शुभ समय प्रत्येक वास्तु निर्माण के लिए जानना एवं देखना अनिवार्य है। तिथि एवं वार देखकर कार्य प्रारंभ करना चाहिए एवं सर्वप्रथम दिग्दशाज्ञान, दिग्साधन, भूमि लक्षण, भूमिशोधन एवं भूमि परीक्षण, आयादि विचार, गृहपिंडसाधन, गृहारंभ मुहूर्त, कर्मचक्र, गृहद्वार निर्णय, द्वार वेध, द्वार दोष, गृहप्रवेश निर्णय, गोशाला विचार, अश्वगृह निर्माण, गजगृह,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वाटिका, उद्यान निर्माण, कूपचक्र, वृक्षायुर्भेद, प्रासाद लक्षण, प्रतिष्ठा मुहूर्त, राजभवन निर्माण शय्या प्रमाण, तोरण मंजूषा, पंजर, नीड, मंडपभेद, प्रतिमा विज्ञान, पूजा–परंपरा, देवी–देवताओं के चिहन, लिंग, वर्ण, आभूषण का ज्ञान वास्तुशास्त्र का विषय है।[42]

भवन में रहने वाले भूस्वामी को भवन हर संभव शुभफलदायक, पुत्र – पौत्रादि सुख को बढ़ाने वाला, ऐश्वर्य लक्ष्मी,धन एवं वैभव का बढ़ाने वाला हो इसका विचार वास्तुशास्त्र मे किया जाता है। भवन में अग्नि का स्थान कहाँ हो? जल, का स्थान, पूजागृह, शयन कक्ष आदि किस दिशा में हो ? घर में बिना किसी बाहरी सहायता से पूर्ण हवा, प्रकाश, जल व अग्नि का संचय किस प्रकार होना चाहिए? घर स्वामी को घर में सुखपूर्वक नींद किस प्रकार से आती है ? भूखण्ड की आकृति कैसी होना चाहिए ? मकान का दरवाजा किस दिशा मे होना चाहिए ? इन समस्त विषयों का विस्तार से चिंतन करना वास्तुशास्त्र की विषय–वस्तु है।

इस प्रकार कह सकते हैं, कि समस्त पृथ्वी सौरमंडल और विश्व की वास्तु रचना ने मनुष्य को ऐक्य मानवीय संस्कृति के सूत्र में बांधा है। अतः स्थापत्य की परिधि में ज्योतिष, भूगोल, भूगर्भ विद्या, खगोल, पुरातत्व, मनोविज्ञान, शिल्प, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद एवं प्रकृति विज्ञान आदि आते हैं। दूसरे शब्दों में प्रकृति (जड़ जगत) में व्याप्त ऊर्जा का ज्ञान वैज्ञानिक पद्धति द्वारा जड़ पदार्थ का क्रमिक अवलोकन, पूर्वकल्पना, प्रयोग और परीक्षण के ज्ञान द्वारा समस्त व्यवहारिक या प्रायोगिक विज्ञानों का यथा– भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, जीवशास्त्र, भूशास्त्र, संचार और अंतरिक्ष शास्त्र आदि विज्ञानों का प्रादुर्भाव हुआ है। इसलिये भवन निवेश या नगर निवेश न केवल एकांगी कला है, अपितु एक समन्वित सर्वव्यापक कला है।

❑ वास्तुशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा :

वर्तमान समय में स्थापत्यवेद का आशय वास्तुशास्त्र से लगाया जाता है, किंतु वास्तुशास्त्र स्थापत्यवेद की एक शाखा मात्र हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र वह कला अथवा विज्ञान है; जिसके द्वारा विभिन्न मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समयानुरूप एवं परिवेशानुरूप प्रकृति के नियमानुसार वास्तु रचनाओं का निर्माण एवं नियोजन किया जाता है, साथ ही उत्तम कल्पनानुरूप वास्तु की आंतरिक एवं बाह्य साज–सज्जा में अभिवृद्धि की जाती है ।

वास्तुशास्त्र, भवन,ग्राम,नगर तथा प्रदेश आदि के स्थापन एवं नियोजन का विज्ञान है तथा वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत समस्त भवन, ग्राम व नगर आदि का निर्माण एवं नियोजन की संपूर्ण प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है । वास्तुशास्त्र को शिल्पशास्त्र, शिल्पकला, वास्तुविद्या तथा वास्तुकला आदि नामों से भी जाना जाता है, किंतु कालानुरूप मानवीय आवश्यकताओं एवं अभिरूचियों तथा मानवकृत रचनाओं में जैसे–जैसे परिवर्तन हुये हैं, तदानुरूप वास्तुशास्त्र की परिभाषा एवं विषय–वस्तु आदि में भी पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन होते रहे हैं ।

भारतीय स्थापत्य परंपरा के दो बड़े ही प्रसिद्ध स्थापतियों देव शिल्पी विश्वकर्मा एवं मय दानव के स्थापत्य कौशल का नमूना ही वास्तुशास्त्र है । वास्तु शब्द 'वस्तु' से बना है । वस्तु का व्युत्पत्यात्मक अर्थ है– 'जो है या जिसकी सत्ता है, वही वास्तु है । कोई भी 'निर्मिति' वास्तु है । कोई भी योजना वास्तु । विधाता ने मानसी सृष्टि की और संभवतः भौतिक सृष्टि भी की; परंतु जितनी भी सृष्टि है वह सभी वास्तु है और इससे संबंधित शास्त्र 'वास्तुशास्त्र' है । संस्कृत हिन्दी कोष के अनुसार 'वास्तु' का आशय वस्+तुण् अर्थात् घर बनाने की जगह, भवन, भूखंड जगह तथा घर आवास निवास है एवं 'शास्त्रम्' का आशय शास्+ष्ट्रम् अर्थात् आदेश, आज्ञा, पावन–शिक्षण, वेद का आदेश ज्ञान का कोई विभाग, किसी विषय का सैद्धांतिक पक्ष है ।[43] संस्कृत में वास्तु का अर्थ प्रकृति, आस–पड़ौस या पर्यावरण से है । "वास्तु", 'वस्तु' से बना है, जो किसी भी वस्तु के अस्तित्व का द्योतक है, जैसे मकान, शरणस्थल, भवन इत्यादि । इसी प्रकार शास्त्र का अर्थ संस्कृत में 'पद्धति' से है ।[44] मयमत के अनुसार 'वस्तु' का प्रयोग निवास स्थान हेतु और 'वास्तु' का प्रयोग ठीक निवास स्थान के लिये होता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र का उदय एवं संरचना सृष्टि के पंचभूतात्मक तत्वों पर आधारित है, अतः कहा गया है 'अणोरणीयान महतो महीयान् ।'[45] चाहे कोई भी वस्तु अत्यंत बड़ी हो या अत्यंत छोटी उसका निर्माण इन्हीं मूल तत्वों से हुआ है । वास्तुशास्त्र का उद्देश्य मानव को सुख, समृद्धि एवं आत्मिक शांति प्राप्त कराना है– 'प्रकृतेः क्रियमाणति गुणैः कर्माणि सर्वशः।' अर्थात् संपूर्ण कर्म वास्तव में प्राकृतिक गुणों द्वारा सम्पादित होते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वास्तुशास्त्र के नियम इस प्रकार बनाये गये हैं, कि हमें प्राकृतिक स्रोतों से अधिकाधिक ऊर्जा मिल सके और हम अधिकाधिक सुख, शांति व समृद्धि प्राप्त कर सकें ।

मत्स्य पुराण में भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजित, विशालाक्षा, पुरन्दर, ब्रह्म, कुमार, नंदीश्वर, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरूद्ध, शुक्र व बृहस्पति ये अठारह वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक कहे गये हैं ।[46] वास्तुशास्त्र के प्रथम प्रवर्तक देवताओं के वास्तुविद् विश्वकर्मा कहे जाते हैं । ब्रह्मा ने संसार का प्रारूप बनाने का समस्त भार राजा पृथु को सौंपा था। राजा के अनुरोध पर संसार के निर्माण हेतु ब्रह्मा ने विश्वकर्मा को नियुक्त किया था ; जिन्होंने देवपुरियों का निर्माण किया था ।[47]

'विश्वकर्मन् नमस्तेऽस्तु विश्वात्मन् विश्वसम्भवः ।
अपवर्गोऽसि भूतानां पश्चानां परतः स्थितः ।।

हे विश्वकर्मन्! यह संपूर्ण विश्व आपकी रचना है। आप समस्त विश्व की आत्मा और उत्पत्ति स्थान है तथा आप पंचमहाभूतों से अतीत होने के कारण नित्यमुक्त हैं, आपको मेरा नमस्कार है । इस प्रकार विश्वकर्मा और मय वास्तुशास्त्र के प्रर्वतक माने जाते हैं ।

'वस' धातु प्रत्यय से नपुंसकलिंग में 'वास्तु' शब्द की निष्पत्ति होती है । वास्तु शब्द का साधारण अर्थ भवन या नगर है । वस्तु शब्द का व्यापक अर्थ धरा है । अतः धरा पर निर्मित भवन, पुर, प्रासाद सभी वास्तु है । कहने का तात्पर्य है, कि किसी भी प्रकार का सृजन वास्तु है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समराङ्गण सूत्रधार के 1/5 के अनुसार –

वास्तुशास्त्रदुते तस्य न स्याल्ल क्षणनिश्चयः ।
तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमेतदुदीर्यतो ।।

वास्तुशास्त्र के अलावा अन्य कोई भी प्रकार नहीं है ; जिससे ये निश्चित किया जा सके, कि किसी भी भवन का निर्माण सही है या नहीं । वस्तुतः जनता जनार्दन पर कृपा स्वरूप वास्तुशास्त्र के नियमों को बनाया गया है । मनुष्य, प्राणियों में सर्वोपरी होने के कारण सृष्टि के नियमों का उल्लंघन करने का प्रयत्न करता है। वह प्रकृति को जीतना चाहता है ।

वास्तुशास्त्र की विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न परिभाषाएं दी हैं । वास्तु वह स्थान कहलाता है जिस पर कोई इमारत खड़ी हो अथवा घर बनाने लायक जगह को वास्तु कहते हैं ।[48]

डॉ. शुक्ल के मतानुसार– *'वास्तु शब्द ग्रामों, पुरों, दुर्गों, पत्तनों, पुरभेदनों, आवास, भवनों एवं निवेश्य भूमि का वाचक है । साथ ही मूर्तिकला व पाषाणकला वास्तुकला की सहचरी है ।*[49]

हलायुध कोष के अनुसार –

वास्तु संक्षेपतो वक्ष्ये गृहादौविघ्ननाशनम्।
ईशानकोणादारभ्य ह्योकाशीतिपदे त्यजेत् ।। [50]

अर्थात् वास्तु संक्षेप में ईशान्यादि कोण से प्रारंभ होकर गृह निर्माण की वह कला है, जो घर को विघ्न प्राकृतिक उत्पातों–उपद्रवों से बचाती है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमरकोष के अनुसार – 'गृहरचनावच्छिन्न भूमे' अर्थात् गृह रचना के योग्य अविच्छिन्न भूमि को वास्तु कहते हैं ।[51] घर के लिये ऋग्वेदकाल से ही वास्तु शब्द आम रहा है ।[52] वास्तुशब्द सभी प्रकार के निर्माण का वाचक है 'वसन्ति प्राणिनो यत्र।'[53] इस व्युत्पत्ति से निर्माण कार्य करने योग्य भूमि का नाम ही वास्तु है ।

हिन्दू आर्किटेक्चर शब्द कोष के अनुसार – वृहद् अर्थों में वास्तु शब्द का अभिप्राय पृथ्वी, भवन (हर्म्य) निर्माण कार्य, पर्यंक आदि से किया गया है ।[54] 'वास्तु' शब्द वस निवासे' धातु से निष्पन्न होता है, जिसे निवास के अर्थ में ग्रहण किया जाता है ।[55] इसके अतंर्गत संपूर्ण देश व नगरों की योजना से लेकर छोटे–छोटे भवनों एवं उसमें रखी जाने वाली वस्तु तक की योजना आती है ।

वस्तु से वास्तु बना है । अनियोजित वस्तु जब सुनियोजित वस्तु में परिणित हो जाता है तो वह वास्तु अर्थात् कला के नाम से पुकारी जाती है ।[56]

'वस्तु' का शास्त्र ही 'वास्तुशास्त्र' है । दूसरे शब्दों में वास्तु का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को 'वास्तुशास्त्र' कहते हैं अर्थात् अनियोजित पुरों, ग्रामों, दुर्गों, पुरभेदनों, आवास–भवनों एवं निवेश्य भूमि को सुनियोजित वस्तु(वास्तु) में परिणित करने का ज्ञान करान वाले शास्त्र को वास्तुशास्त्र कहते हैं । कहने का तात्पर्य है , कि वास्तुशास्त्र एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें परिमित भूमि अपरिमित विश्व–शक्ति में परिवर्तित की जाती है । मूलतः वास्तुशास्त्र से तात्पर्य यह है , कि प्राकृतिक सिद्धांतों के अनुरूप मकान, मंदिर, किला, ग्राम, शहर, उद्योग संस्थान, कार्यालय, शैक्षणिक संस्थान आदि का निर्माण करना है ।

वास्तुशास्त्र प्राचीन कला व विज्ञान है, जिसकी भवन निर्माण हेतु नियमित परिपाटी है । इससे व्यक्ति और प्रकृति के मध्य एकरूपता व संतुलन सुनिश्चित किया जा सकता है ; जिससे प्रत्येक व्यक्ति को पूर्णरूपेण शांति, सुख, स्वास्थ्य, लाभ, समृद्धि एवं धन–संपदा की प्राप्ति हो सके ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ वास्तु पुरूष :

वास्तुशास्त्र, वेदों से प्राप्त हुआ विज्ञान है; जिसकी प्रायोगिकता एवं उपयोगिता निर्माण कार्य को एक समान संतुलित कर जीवन को सुखमय बनाना है । वास्तुअनुरूप भवन निर्माण में भवन के आकार का अत्यधिक महत्व होता है । आधुनिक विचारधारा में हम भवन के निर्माण के लिये नक्शा बनवाने के लिये किसी आर्किटेक्ट या इंजीनियर के पास जाते हैं । वह भूखंड की लंबाई, चौड़ाई और आवश्यकतानुसार भवन का नक्शा बना देता है ।

(वास्तुपुरूषाकृति (सावयवा, वास्तु पुरूष मंडल,शतपद वास्तुपुरूष मंडल)

प्राचीनकाल में किसी भी निर्माण कार्य से पहले उसका एक सूत्र होता था, जिसे हम मण्डल या वास्तुमण्डल कहते हैं । मण्डल की योजना में सूक्ष्म (पिण्ड) और वृहद् (ब्रह्मा)दोनों को एक दूसरे के अनुकूल बनाना होता था । वास्तु पद विन्यास–वास्तुशास्त्र का मूल है । इसे हम प्रत्येक प्रकार से जो भी निर्माण कार्य हो रहा है, उसका नक्शा कह सकते हैं । परंतु वास्तुपद विन्यास के प्रत्येक पद में जिस देवता विशेष की कल्पना है, वह उसे कला के क्षेत्र के साथ–साथ आध्यात्मिकता या दर्शन से जोड़ देती है । जिस प्रकार भारत में हर कला का संबंध देव विशेष से है, उसी प्रकार वास्तु पुरूष की कल्पना संपूर्ण भूखंड पर की जाती है । भूपटल पर भगवत् स्वरूप वास्तुपुरूष की कल्पना भी एक पौराणिक घटना है ; जिससे हम वास्तुपुरूष की उत्पत्ति अलग–अलग ढंग से मानते हैं इसी वास्तुपुरूष की उत्पत्ति के पश्चात् ही वास्तुशास्त्र का जन्म हुआ । इस भूपटल पर अनेकों देवताओं की पद विशेष में स्थापना है, जो कि विभिन्न प्रकार की ऊर्जाओं के प्रतीक के रूप में हैं; जो जीवन की समस्त शक्तियों तथा ऊर्जाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

वास्तु पुरूष एक ऐसी सर्वव्यापक वैश्विक चेतना का प्रतिरूप है ; जिससे सब कुछ बनकर फिर उसी में लय हो जाता है । व्यक्त और अव्यक्त , साकार और निराकार सभी कुछ इसी एक ब्रह्म में है । जैसा कि उपनिषद में कहा है–

कास्मिन्तु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति । [57]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उस एक ब्रह्मा को जान लेने से उन सबका ज्ञान अपने आप हो जाता है, जो इस विश्व में है (व्यक्त) तथा नहीं है (अव्यक्त) । वास्तुशास्त्र एक ऐसी प्रक्रिया है ; जिसमें परिमित एवं अपरिमित शक्ति को विश्वशक्ति में परिवर्तित किया जाता है। वह अनाम एवं अरूप सत्ता जो इस वास्तुमण्डल में नियंत्रित की जाती है, उसे वास्तुपुरूष कहते हैं । 'समराङ्गण सूत्रधार के अनुसार' वास्तु पुरूष की कल्पना में कला और दर्शन दोनों छिपे हैं । कला की दृष्टि से वास्तु पद विन्यास भवन का नक्शा है । दर्शन की दृष्टि से यह भवन की रक्षा और भवन निवासियों के कल्याण के लिये एक जीवन दर्शन है । यह अत्यंत सारगर्भित विचार है, जो वास्तुपुरूष की आवश्यकता या महत्व को सिद्ध करता है । वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों में वास्तुपुरूष की कल्पना के आधार को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है तथा भूस्थल से पृथ्वी के एक छोटे रूप की कल्पना की गई है । अनेक अन्वेषणों के आधार पर हमारे पूर्वजों ने यह पाया है, कि पृथ्वी के छोटे से छोटे भाग में वही तत्व विद्यमान हैं, जो वृहद् आकार में। जब किसी भूस्थल के चारों ओर परकोटा निर्मित कर दिया जाता है, तो इस स्थल में समस्त ब्रह्माण्डीय शक्तियाँ विद्यमान हो जाती हैं; जिनका संतुलन भवन में करना पड़ता है ।

वास्तुपुरूष मण्डल या वास्तु पदविन्यास, वास्तु विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है । वास्तु पुरूष मण्डल को भवन के नक्शे के रूप में समझा जा सकता है । जिस प्रकार निर्माण कार्य से पूर्व हमें भवन की योजना बनाने हेतु नक्शा बनाना होता है, ठीक उसी प्रकार प्राचीनकाल में स्थल का नक्शा या भवन का नक्शा बनाने की परिपाटी थी । इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि वास्तुपुरूष किसी भी निर्माण (भवन, मंदिर, कॉलोनी, नगर) का एक प्रमुख आधार है । मनुष्य को प्रकृति से अलग नहीं किया जा सकता और करना भी नहीं चाहिए ; क्योंकि वास्तु शास्त्र के नियमों द्वारा यह प्रयास होता है, कि आवरण होने के बावजूद भी प्रकृति में विद्यमान ऊर्जा अधिकाधिक प्राप्त हो । भवन के अंदर, अधिकाधिक धनात्मक ऊर्जा आए और ऋणात्मक ऊर्जा भवन के बाहर रहे । यह उद्देश्य भूखंड का चयन, भवन निर्माण सामग्री एवं भवन में स्थित विभिन्न क्रियाकलापों के स्थान निर्धारण आदि के द्वारा प्राप्त किया

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जा सकता है । इसी को सिद्धांत रूप में विकसित करने के लिये वास्तुपुरूष की परिकल्पना कर पद देवता विन्यास का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है । वास्तुपुरूष की कल्पना के पीछे अनेक कथायें जुड़ी हैं । जिसमें से एक निम्न प्रकार है –

वास्तुपुरूष–स्वरूपम्

पुराकृतयुगे ह्यसीन्महद्भूतं समुत्थितम् ।
व्याप्यमानं शरीरेयण सकलं भुवनं ततः ।।1।।
तद्वृष्टवा विस्मयं देवगतासेन्द्रा भयावृताः ।
ततस्तैः क्रोधसन्तप्तैर्गृहीत्वा तमयासुरम् ।।2।।
विनिक्षिप्तमधोवक्यं स्थितास्तत्रैव ते सुराः ।
तमेव वास्तुपुरूषं ब्रह्म काल्पित्वान् स्वयं ।।3।। [58]

'वास्तुसौरव्यम्' नामक ग्रंथ में यही कथा अलग ढंग से कही गयी है–

'अथ वास्तुस्वरूपमाह वराहमिहिरः –
किमपि किल भूतम भव द्रुन्धानं रोदसि शरीरेण ।
तदमरगणेन सहसा विनिगृह्याधोमुखं न्यस्तम् ।।
यत्र च येन गृहीतं विवुधेनाधिष्ठितः स तत्रैव ।
तदमरमयं विधाता वास्तुनरं कत्पयामास ।।9–10।। [59]

पूर्वकाल में कोई अद्भुत अज्ञान स्वरूप का एक प्राणी प्रकट हुआ, उसका विकराल शरीर भूमि से लेकर आकाश तक व्याप्त था, देवताओं ने उसे देखकर सहसा पकड़कर नीचे मुख करके धरती पर पटक दिया और यथास्थान अपना निवास बना लिया, जिस देवता ने उसके शरीर के जिस भाग को पकड़ा उसी स्थान पर स्थित हो गये । ब्रह्मा ने उस अज्ञात प्राणी को देवमय वास्तुपुरूष के नाम से उद्घोषित किया । तद्पश्चात् क्षमा याचना करने पर ब्रह्मा जी ने उसे वरदान दिया कि गृह, बस्ती, नगर रचना करने वाले मनुष्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम्हारे अंगों के अनुकूल पदविन्यास के साथ निर्माण कार्य करेंगे तथा तुम्हारी पूजा भी करेंगे । ताकि उस स्थान में निवास करने वाले सभी मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें ।

वास्तुपुरूष मण्डल का शाब्दिक अर्थ होता है–'वास्तु' यानि चारों ओर की परिस्थिति या परिवेश, या पदार्थ या प्रकृति से है । संस्कृत में प्रकृति को वास्तु कहा गया है। 'पुरूष' का अर्थ है, ऊर्जा या कार्यशक्ति, बल या आत्मा । संस्कृत में 'पुरूषमंडल' यानि ज्योतिषीय ग्रह, नक्षत्रों की वह स्थिति जो दिशा निर्धारण से संबंधित है । अर्थात् चारों ओर के प्राकृतिक परिवेश की परिस्थिति जो कार्य, ऊर्जा, शक्ति व ग्रह नक्षत्रों के दिशा निर्धारण से संबंधित है, वास्तुपुरूष मण्डल कहलाता है ।

वास्तुशास्त्र में अनेकों प्रकार के वास्तुपुरूषों का विवरण मिलता है । स्थापत्य के प्रमाणित ग्रंथ मानसार में विभिन्न प्रयोजनों हेतु 1 पदीय सकल पद वास्तु पुरूष से लेकर 1024 पद तक के 32 प्रकार के वास्तु पद विन्यासों का वर्णन मिलता है; जिनका अपना अलग–अलग महत्व है । यहाँ पर 81 पदीय वास्तुपुरूष का वर्णन किया जा रहा है –

81 पदीय वास्तु पुरूष विशेषकर गृहनिर्माण में एवं मंदिर व राजमहल संबंधी कार्य 64 कोष्ठात्मक उपयोग में लाया जाता है । जब भूखण्ड का आकार बड़ा हो तब पद नियोजन से अन्यथा दिशाओं के अनुरूप भूखंड का विभाजन कर उसमें वास्तु नियमों के अनुसार निर्माण होता है । 81 पदीय वास्तुपद विन्यास में संपूर्ण भूमि जिस पर निर्माण करना है तथा जिसकी परीक्षा योग्य वास्तुशास्त्री के द्वारा करायी जा चुकी है उसे 9 x 9 बराबर भागों में विभक्त करने के पश्चात् देवताओं की निर्धारित स्थान पर योजना करते है। । 81 पदीय वास्तु पुरूष में 45 देवता तथा उनके पद होते हैं । कुछ देवता एक पदीय, कुछ दो पदीय, कुछ छः पदीय और कुछ नौ पदों पर विराजित हैं ।

वास्तुपुरूषाकृति (सावयवा, वास्तु पुरूष मंडल,शतपद वास्तुपुरूष मंडल)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुपुरुषाकृति (शाक्तयजा)
(९ × ९ = ८१) बृहत्संहिता (अ. ५३)

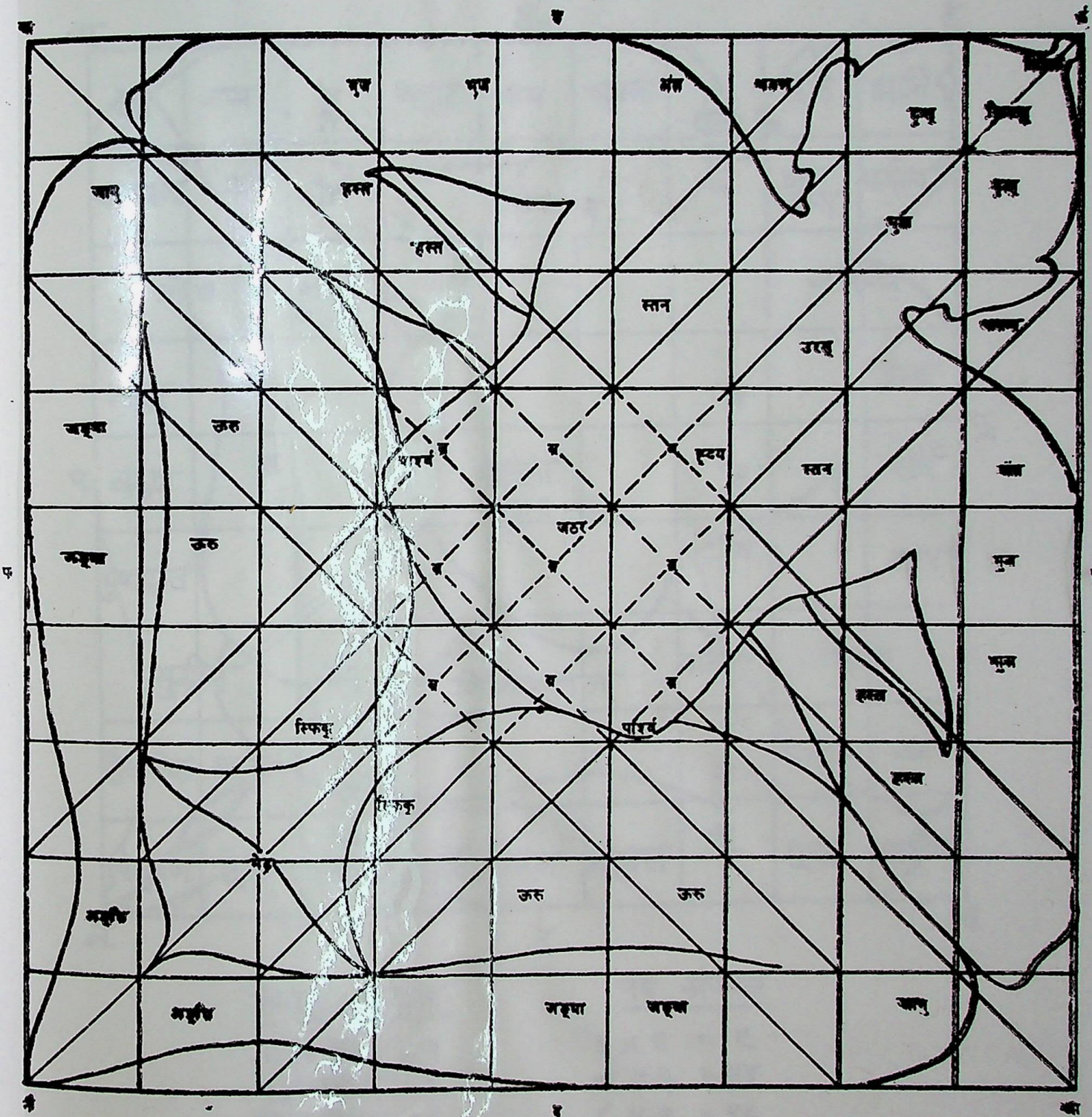
पूर्व
उत्तर
दक्षिण
पश्चिम
शिखी
पर्जन्य
जयन्त
इन्द्र
सूर्य
सत्य
भृश
आकाश
वायु
पूषा
वितथ
बृहत्क्षत
यम
गन्धर्व
भृङ्गराज
मृग
पितृ
दौवारिक
सुग्रीव
पुष्पदन्त
असुर
शोष
रोग
नाग
मुख्य
भल्लाट
सोम
भुजग
अदिति
दिति
आप
आपवत्स
अर्यमा
सवितृ
सावित्र
विवस्वान्
इन्द्र
इन्द्रजय
मित्र
राजयक्ष्मा
पृथ्वीधर
आपवत्स
ब्रह्मा

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

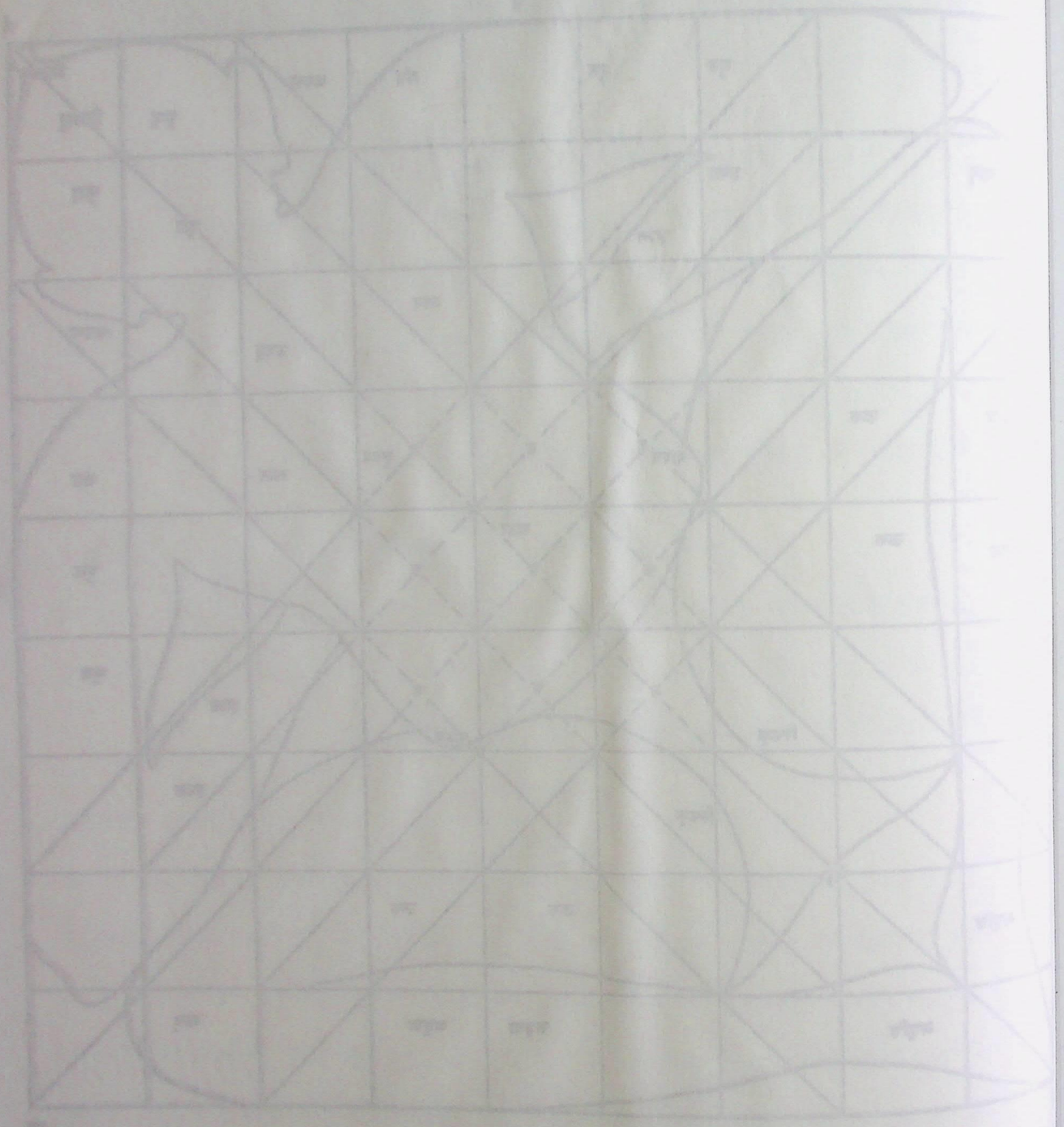

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुपुरुष मण्डल
८×९=८१

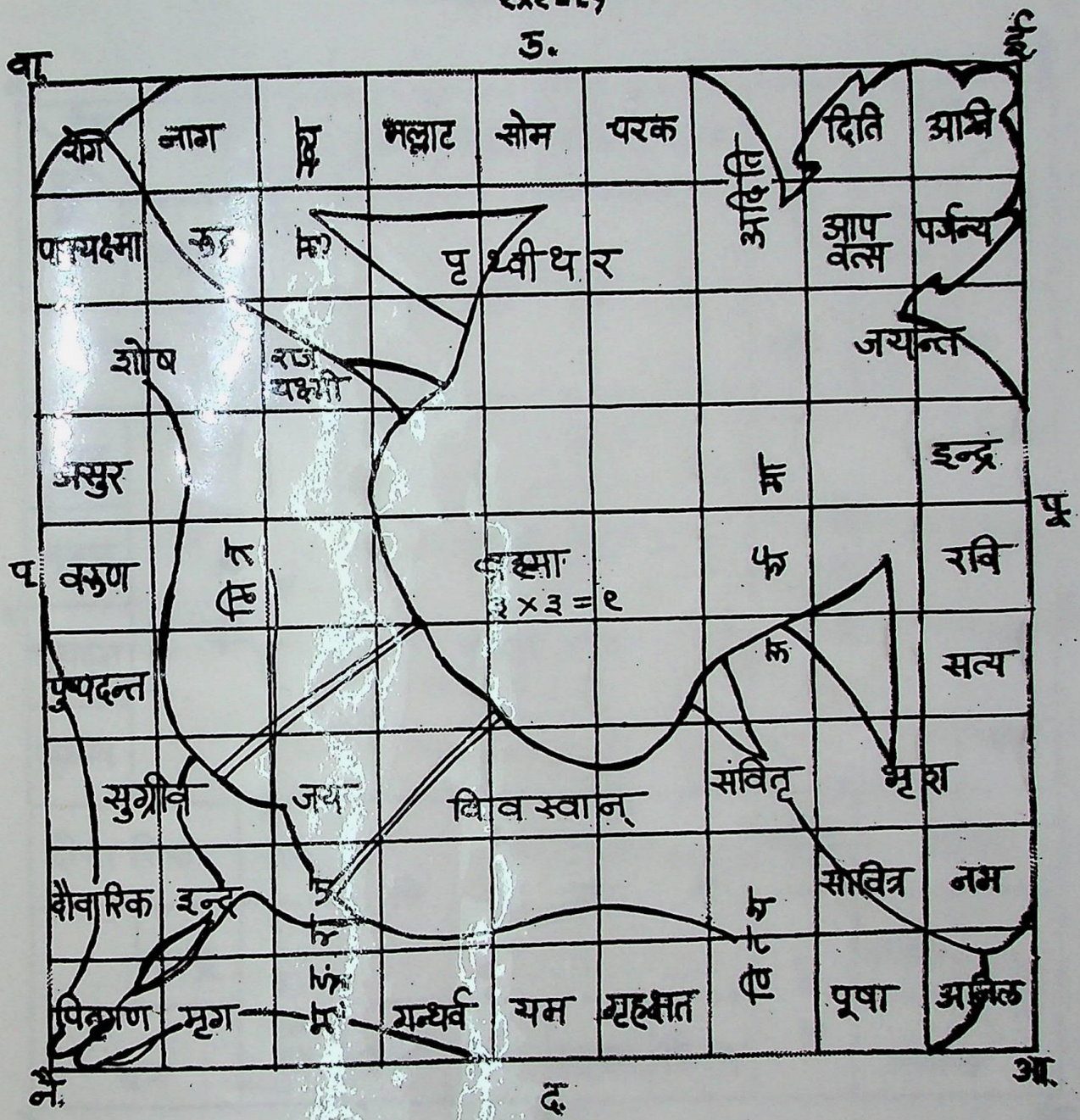

देवता संख्या		पद संख्या	
नवपदिक	-१	१×९	= ९
षट्पदिक	-१	४×६	= २४
द्विपदिक	-८	८×२	= १६
एकपदिक	-३२	३२×१	= ३२
	४५		८१

प्रमाण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शतपद वस्तुपुरूष मण्डल

१०X१०=१००

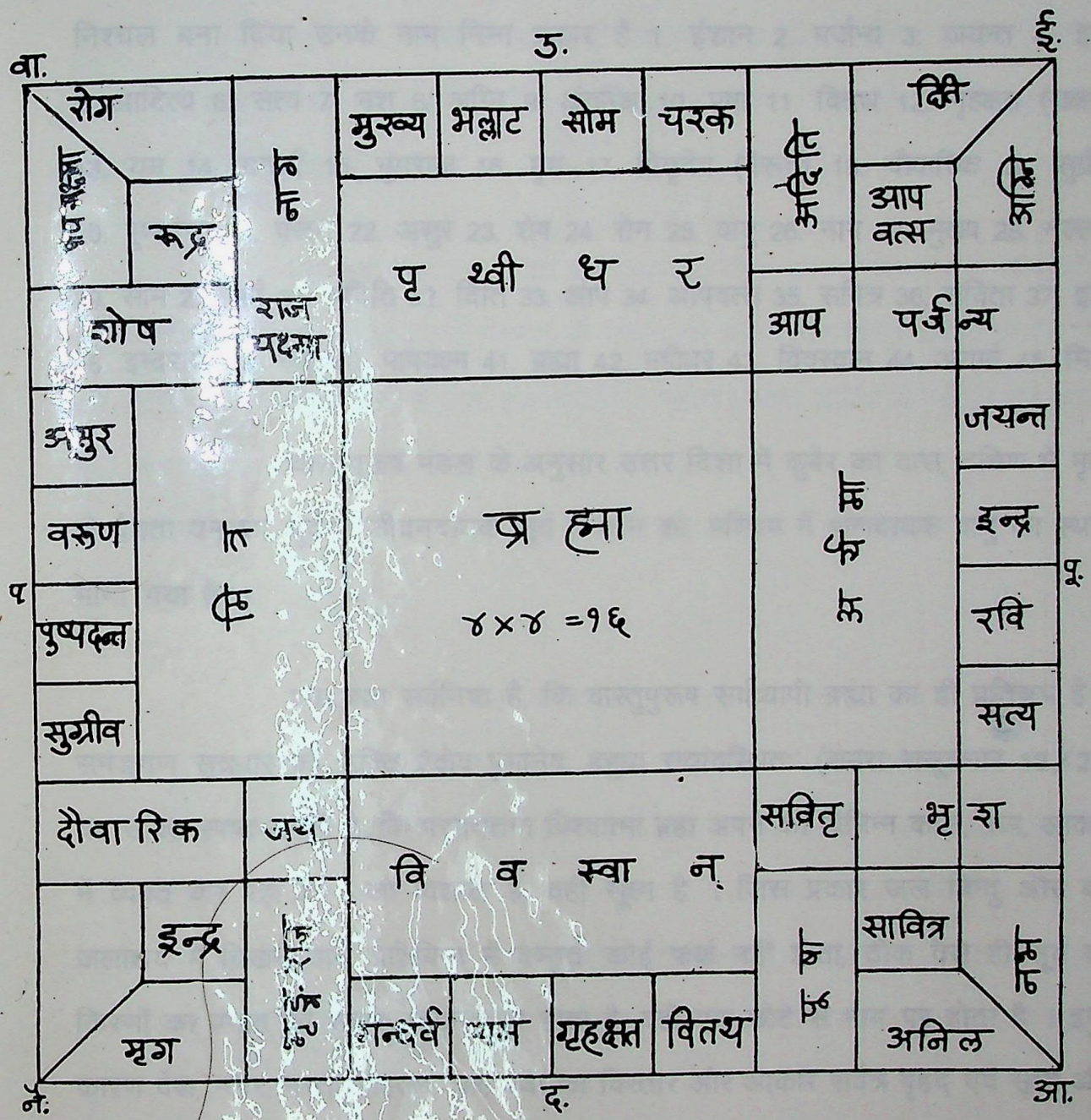

देवता संख्या	
षोडशपदिक	- १
अष्टपदिक	- ४
द्विपदिक	- ८
अध्यर्धपदिक	- ८
एकपदिक	-२४
	४५

पद संख्या	
१६ × १	= १६
८ × ४	= ३२
२ × ८	= १६
१½ × ८	= १२
१ × २४	= २४
	१००

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शतपद वस्तुपुरूष मण्डल

१०X१०=१००

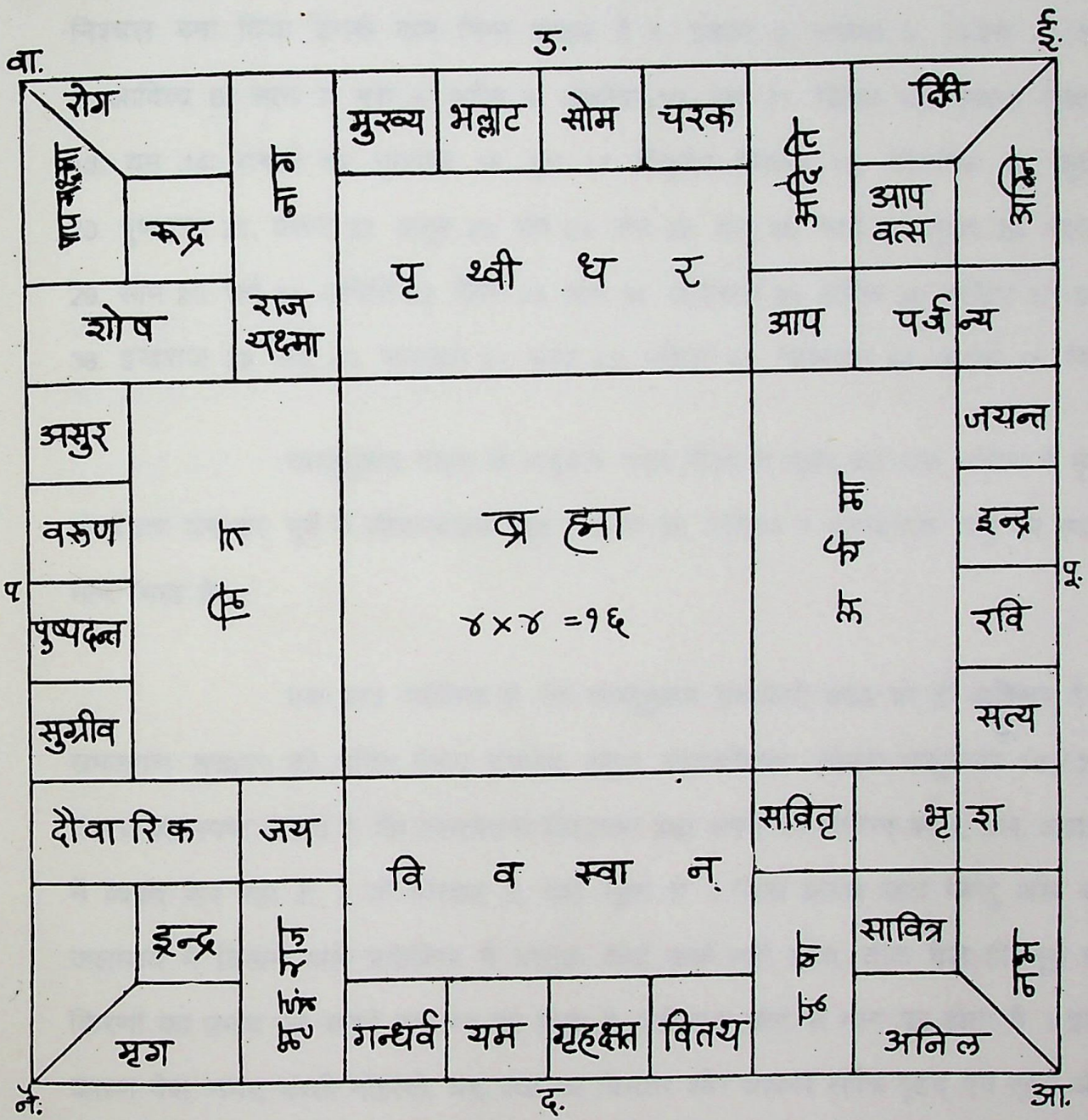

देवता संख्या		पद संख्या
षोडशपदिक	- १	१६ × १ = १६
अष्टपदिक	- ४	८ × ४ = ३२
द्विपदिक	- ८	२ × ८ = १६
अध्यर्धपदिक	- ८	१½ × ८ = १२
एकपदिक	-२४	१ × २४ = २४
	४५	१००

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

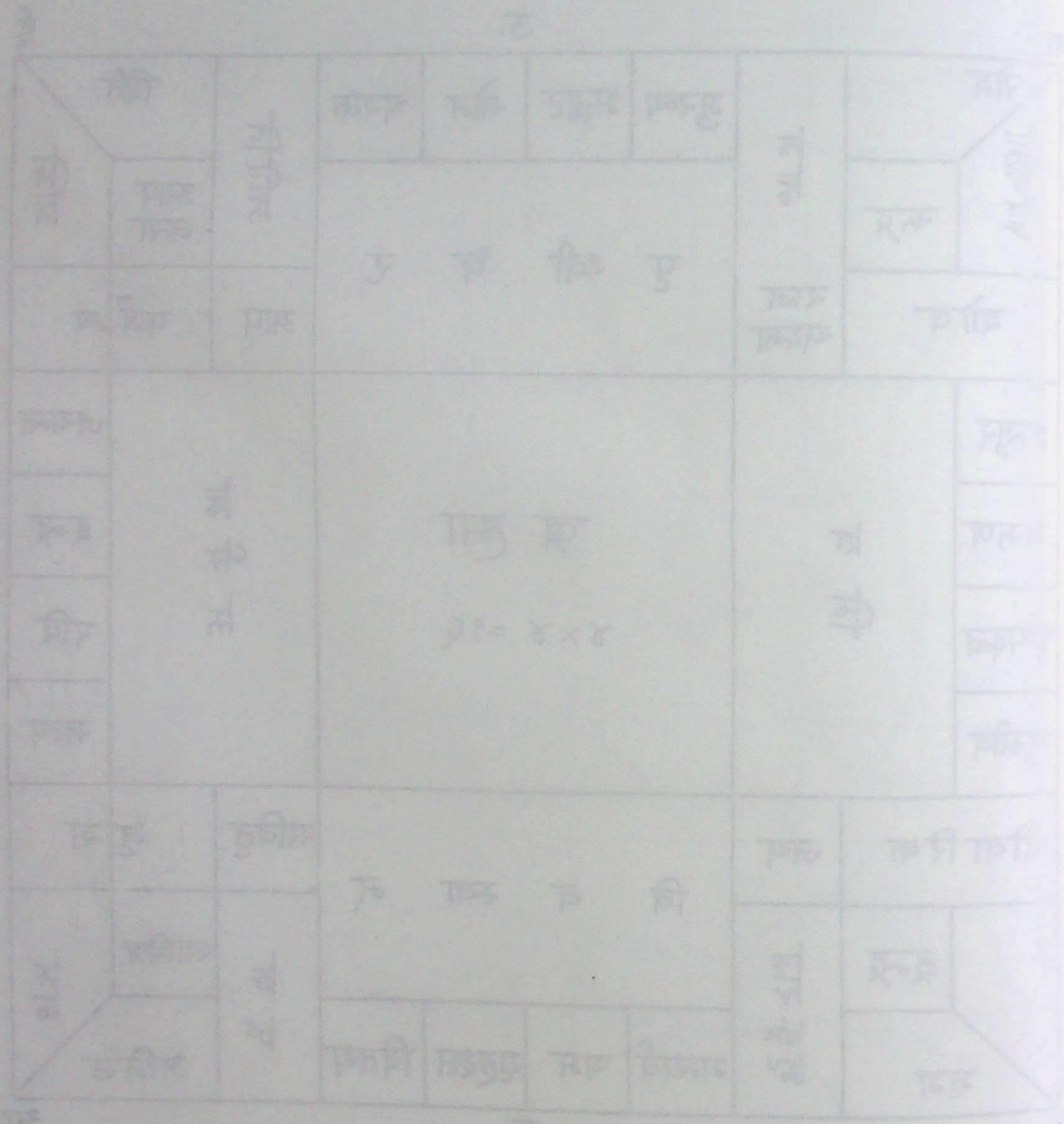

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिन पद देवताओं ने उस राक्षस या वास्तुपुरूष को जमीन में दबाकर निश्चल बना दिया उनके नाम निम्न प्रकार हैं 1. ईशान 2. पर्जन्य 3. जयन्त 4. इन्द्र 5. आदित्य 6. सत्य 7. भृश 8. अग्नि 9. अंतरिक्ष 10. पूषा 11. वितथ 12. गृहक्षत (राक्षस) 13. यम 14. गन्धर्व 15. भृंगराज 16. मृग 17. पितृदेव (नैरूत) 18. दौवारिक 19. सुग्रीव 20. पुष्पदन्त 21. वरूण 22. असुर 23. शेष 24. रोग 25. वायु 26. नाग 27. मुख्य 28. भल्लार 29. सोम 20. सर्प 31. अदिति 32. दिति 33. आप 34. आपवत्स 35. सवित्र 36. सविता 37. इन्द्र 38. इन्द्रराज 39. रूद्र 40. पापयक्ष्म 41. ब्रह्मा 42. महीधर 43. विवस्वान 44. अयर्मा 45. मित्र

वास्तुपुरूष मंडल के अनुसार उत्तर दिशा में कुबेर का वास, दक्षिण में मृत्यु के देवता यम का, पूर्व में जीवनदायक सूर्य व सोम का, पश्चिम में प्राणदायक वायु का स्थान माना गया है ।

एक बात सर्वनिष्ठ है, कि वास्तुपुरूष सर्वव्यापी ब्रह्मा का ही प्रतिरूप है । समङ्गण सूत्रधार की उक्ति ऐकेव पुमानेषः बहुधा संव्यवस्थितः' (समरा णसूत्रधार 13/21) यह उक्ति स्पष्ट करती है, कि परमचेतना विश्वात्मा ब्रह्म अपने को विभिन्न काल, रूप, आकार में व्यक्त कर रहा है । जो विशाल है, वही सूक्ष्म है । जिस प्रकार जल बिन्दु और बड़े जलाशय में दिखने वाले प्रतिबिम्ब में वस्तुतः कोई फर्क नहीं होता, ठीक वैसे ही सूर्य की किरणों का प्रभाव जो समूचे ब्रह्माण्ड पर होता है, वही एक छोटे से भाग पर होता है । इसी कारण देश, नगर, बस्ती मोहल्ले, घर, कक्ष का विस्तार और आकार सर्वत्र वृहद् एवं सूक्ष्म और वैज्ञानिक रूप में व्यक्त किया जा सकता है । यही कारण है, कि जिन भवनों की रचना वास्तुपुरूष मंडल के सिद्धांत के आधार पर की जाती है, वो सभी सार्वदेशिक और सार्वकालिक होते हैं । इस प्रकार जो मनुष्य (नगर)वास्तु विधान का समस्त प्रकार से पालन करता है, वह शतायु, स्वस्थ, सुखी व सम्पन्न होता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ **वास्तुशास्त्र का महत्व :**

भूमि पर किसी भी प्रकार के निर्माण से प्रकृति प्रभावित होती है, लेकिन प्रकृति को कम से कम हानि कैसे पहुँचे, इस बात को ध्यान में रखकर ही निर्माण करना भारतीय जीवन पद्धति है।

ब्रह्माण्ड में व्याप्त प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष वस्तु का अपना–अपना महत्व होता है। महर्षि जी वास्तु अर्थात् ऊर्जा संचरण के महत्व को प्रतिपादित करते है।। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी–अपनी ऊर्जा होती है और इस ऊर्जा का महत्व प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर पड़ता है। यह ऊर्जा दो प्रकार की होती है –

1. धनात्मक
2. ऋणात्मक

धनात्मक ऊर्जा जहाँ व्यक्ति को उत्साह एवं प्रसन्नता प्रदान करती है वही ऋणात्मक ऊर्जा उसे हतोत्साहित कर दुःख प्रदान करती है, इन दोनों ऊर्जाओं में जो मानव हित में है इसका ज्ञान स्थापत्यवेद में मिलता है। इस वेद के आधार पर व्यक्ति प्रकृति के समीप पहुँचता है और उसका जीवन एवं कार्यकलाप प्रकृति के अनुरूप निर्मित होता है। प्रकृति के अनुरूप कार्यकलाप से व्यक्ति अपने जीवन को रोगमुक्त, तनावमुक्त बनाकर स्वस्थ्य एवं संगठित समाज का निर्माण कर सकता है। वास्तुशास्त्र की महत्ता समराङ्गण सूत्रधार में प्रतिपादित करते हुए कहा गया है –

देशः पुरं निवासश्च सभावेश्मासनानि च ।
यहदीदृशमन्यच्च तत्तच्छेयस्करं मतम् ।। 4 ।।
वास्तुशास्त्रादृते तस्य न स्माल्लक्षणनिश्चयः ।
तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमेतदुदीर्यते ।। 5 ।।[60]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात् देश (संपूर्ण राष्ट्र, राज्य आदि) पुर (राजधानी, महानगर, नगर, लघुनगर, आदि।) निवास (गांव, कस्बे, बस्तियां, कॉलोनियॉ, गलियॉ विशेष प्रकार के भवन) वेश्म (प्रासाद आदि उच्चकोटि के भवन एवं सामान्य व्यक्तियों के भवन आदि) और आसन (विभिन्न प्रकार की सवारियाँ व पलंग आदि) तथा इसके अतिरिक्त जो भी निर्माण वास्तुशास्त्रनुरूप होता है वह कल्याणकारी होता है।

भारतीय धर्म ग्रन्थों में वास्तुशास्त्र के विषय में विस्तार से लिखा गया है। धर्म को इन वैज्ञानिक तथ्यों ने सिद्धान्त रूप में परिवर्तित कर दिया है। मनुष्य की आधारभूत तीन प्रमुख आवश्यकताओं में आवास तीसरी आधारभूत आवश्यकता है इसीलिए कहते है –

वर्तमान – युग लोके भोजन बसनं गृहम् ।
आवश्यकं नितान्त, यैर्हीनं जन्म निरर्थकम् ।।[61]

अतः मानव ने आवासीय आवश्यकता एवं अन्य समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु भवन निर्माण हेतु इस कला को सीखा। मानव अपने क्रिया कलापों के माध्यम से जाने–अनजाने में प्रकृति को सदैव से प्रभावित करता है। वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त चुम्बकीय प्रभावों, आठो दिशाओं, सूर्य–रश्मियों, वायु प्रवाह और गुरूत्वाकर्षण के नियमों को ध्यान में रखकर बनाये गये हैं। मानव शरीर में चलने वाली जैव रासायनिक क्रियायें समस्त दिशाओं, वायु–प्रवाह, सूर्य रश्मियों, गुरूत्वाकर्षण के नियमों, चुम्बकीय प्रभावों से प्रभावित होता है। वास्तुशास्त्र अर्थात् स्थापत्यवेद की रचना प्रकृति एवं मानवीय क्रियाकलापों तथा जैव रासायनिक क्रियाओं के मध्य उचित सामन्जस्य स्थापित करने की दृष्टि से की गई है; जिससे मानव अपना जीवन दीर्धकाल तक सुखी एवं समृद्धशाली व्यतीत कर सके। वास्तुशास्त्र का महत्व बतलाते हुये भगवान श्रीराम कहते हैं –

कर्तव्यं वास्तुशमनं सौमित्रं चिरंजीविभिः ।[62]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस शिल्पशास्त्र, वास्तुविज्ञान के ज्ञान से मनुष्य को मात्र धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरूषार्थ की प्राप्ति होती है, जिससे उस व्यक्ति का जीवन सार्थक हो जाता है। साथ ही मृत्यु लोक में वह देवत्व को प्राप्त कर जाता है तथा दूसरों का कल्याण एवं मंगल करने में समर्थ हो जाता है। जैसा कि भगवान विश्वकर्मा ने स्वयं कहा है –

चतुर्वर्ग फल प्राप्ति सलोकश्च भवेदध्रुवम् ।
शिल्पशास्त्र परिज्ञाना न्यर्त्योऽपि सुरतांब्रजेत[63]

कु. ऐलेन सेम्पुल कठोर निश्चयवाद की अग्रणी विद्वान मानी जाती है उनके अनुसार ''मानव प्रकृति के सामने मात्र मोम या प्लास्टिक का पुतला है, जिसे प्रकृति स्वच्छानुसार ढालती है।''[64] कहते का तात्पर्य है, कि मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियाँ प्रकृति के अनुरूप होती है। प्रकृति और मनुष्य के मध्य संघर्ष प्रारंभ से ही चला आ रहा है। आज मनुष्य प्राकृतिक नियमों की अवहेलना करने के कारण अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो गया है। वर्तमान काल में भौतिक विकास चरम सीमा पर पहुँच गया है, जिससे व्यक्ति का एकांगी विकास हुआ है। भारतीय दर्शन का एक भाग सृष्टि विज्ञान अर्थात् भौतिक विज्ञान तथा दूसरा आत्म–ज्ञान अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान है। मानव केवल भौतिक विकासकर सर्वतोन्मुखी विकास नहीं कर सकता।

मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ विज्ञान मानवीय दिनचर्या में सर्वोपरि भूमिका निभाता गया। भवन निर्माण की कला में भी परिवर्तन होते गये ये भवन आधुनिकता के प्रभाव से मंडित हैं, जहाँ मनुष्य और प्रकृति के बीच निरंतर दूरी बढ़ती चली गई। कृत्रिम दिखावट मनुष्य की प्रगति की पथ प्रदर्शक होती गई। और यही कारण है, कि हमने वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों की उपेक्षा की है। इसी कारण वर्तमान में मानव अस्थिर, दुःखी, तनावग्रस्त और अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है। वह इतना अशांत हो चुका है कि उसमें निराशा के साथ–साथ हीनता एक विध्वंसात्मक रूप में प्रस्फुटित होने लगी है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसी स्थिति में हमें भवन निर्माण/नगर निर्माण के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यकता है; क्योंकि यदि वास्तुसिद्धान्तों पर आधारित भवन बनाएगा, तो उसमें रहने वाला व्यक्ति शांत एवं सुखी होगा। यह सर्वविदित है, कि भौतिकवादी दृष्टि इन्द्रियजन्य ज्ञान तक ही सीमित है जो केवल व्यक्त पक्ष की व्याख्या कर सकती है। व्यक्त पक्ष के पार्श्व में कुछ अव्यक्त भी है; जिसका बोध अनुमान या अलौकिक प्रत्यक्ष से संभव है जैसा कि महर्षि नारद कहते हैं –

अनेन विधिना सम्यग्वास्तुपूजां करोति यः।
आरोग्य पुत्रलाभं च धनं धान्यं लभेन्नरः ।।[65]

अर्थात् इस विधि से सम्यक प्रकार से जो वास्तु (भवन विद्या) का सम्मान करता है, वह आरोग्य पुत्र, धन धान्यादि का लाभ प्राप्त करता है। भारतीय दृष्टि में सृष्टि, मनुष्य और उसके आवास अव्यक्त ब्रह्माण्डीय शक्तियों से प्रभावित होत हैं। परमात्मा का स्थापत्य सम्पूर्ण प्रकृति है। गिरि, पर्वत, नदी, समुद्र, भूमि, आकाश, वायु, जल, सूर्य, चन्द्र इत्यादि प्रकृति के सोपान पर ब्रह्म रूपी स्थपति की स्वाभाविक शाश्वत कृतियाँ हैं और उनमें परमात्मा का अंश रूपी जीव–मानव भी जीवन विकास यात्रा के लिए उद्यत हुआ। तो परमात्मा द्वारा प्रदत्त बुद्धि योग से मनुष्य ने असीम प्रकृति रूपी स्थापत्य में सीमित वास्तु–रचना के सोपान शनैःशनैः निर्मित किए। तब प्रारम्भ में विशाल प्रकृति से तादात्मय, समन्वय और सामंजस्य रखते हुए मनुष्य प्रकृति के अनुरूप ही वास्तु रचना के द्वारा जीवन यापन करता रहा। चाहे वे प्रकृति के मध्यस्थित ग्राम्य शोभा से युक्त खुले हुए छोटे–छोटे भवन हों चाहे वनसंस्कृति के साथ तादात्मय करते हुए आश्रमों के विशाल परिसर हों प्राकृतिक स्थापत्य और मानवीय वास्तुरचना के परस्पर सामंजस्य को दोहराते हुए युगयुगों तक मनुष्य की जीवन यात्रा के पड़ावों को पार करते रहे परन्तु जब प्रकृति और निर्मिति के बीच से सन्तुलन रेखा मनुष्य के अपने स्वार्थों बस संकुचित होने लगी। विज्ञान के बहुआयामी सुविधा भोगी दृष्टि कोणों से प्रकृति के स्वरूपों की कृत्रिम निर्मिति का विस्तार होने लगा। तो शाश्वत स्थापत्य और मानवीय संरचना से निर्मित भवन निवेश नगर नियोजन इत्यादि परस्पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नदी के दो किनारों से दूर होते गए। प्रकृति संग सन्तुलन, तादात्मय, सामंजस्य के स्थान पर अधिकाधिक सीमेंट की अट्टालिकाओं के विस्तार ने शाश्वत स्थापत्य और वास्तु के अकार व सिद्धान्तों की अवहेलना कर दी। परिणाम हुआ समविष्टगत स्तर पर प्रकृति का असन्तुलन भूकम्प, बाढ़ आदि को विभीषकाऐं। व्यक्तिगत स्तर पर समस्याओं के, तनावों के, आपदाओं के वातावरण से बोझिल मानवता और उसके डगमगाते कदम भविष्य की ओर उन्मुख हुये।

अतः पुनः उन शाश्वत सिद्धान्तों की ओर हमारी जीवन दृष्टि लौट रही है। अतीत के पूर्वाभ्यास हमारी जीवन पद्धति को दिशा देंगे। वैदिक जीवन दर्शन, दिनचर्या और वैदिक वातावरण के सुवासित वास्तु भवन, निवेश, नगर नियोजन हमारे अभीष्ट हो रहे है। और इस दिशा में स्थापत्य को पुनः भारतीय जिजीाविषा का केन्द्र बिन्दु बनाने का श्रेय पूज्य महर्षि जी को जाता है। जिन की जागृत चिन्तन दृष्टि, वैदिक अभीप्सा से परिपूरित वैचारिक ऊर्जा वास्तुसिद्धान्तों को पुनः सापेक्ष और सार्थक भूमिका में लाकर खड़ा कर रही है। निश्चय ही आज वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप भवन निवेश, नगर नियोजन आदि समय की मांग है। भविष्य के लिए सुरक्षित सहज स्वाभाविक बढ़ते कदम है।

अतः वास्तु सिद्धान्त हमारी जीवन पद्धति के पक्षधर है। यदि मानव का आवास प्रकृति के अनुकूल है, तो आस–पास का वातावरण स्वस्थ्य होगा अर्थात् मानव आवास, ग्राम, नगर स्थापत्यवेदानुरूप निर्मित करने से न केवल व्यक्ति विशेष का चहुमुखी विकास होगा बल्कि ; संपूर्ण समाज का विकास संभव होगा। तात्पर्य यह है , कि इन अव्यक्त प्रभावों / ऊजाओं का मनुष्य सर्वाधिक लाभ उठा सके। वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक शांति, स्वास्थ्य, धन आदि लाभों को प्राप्त करके सुख–शांति, समृद्धि में वृद्धि व सम्पन्न बन सकता है तथा अपना चहुमुखी विकास कर सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ वास्तुशास्त्र की वैज्ञानिक अवधारणा :

प्राचीन वाङ्गमय में विज्ञान का असीम भंडार है। आवश्यकता है, सजग दृष्टि वाले गोताखोर की। वास्तुकला का जितना धार्मिक महत्व है उतना ही वैज्ञानिक था। इसीकारण आज वास्तुकला की ओर सभी का ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक है। यह शास्त्र अत्यंत प्राचीन है। इसके नियम बहुत सूक्ष्म अध्ययन और अनुभवों के आधार पर बनाए गये हैं । इन अनुभवों का अनुसरण करने मात्र से सुख–शांति और सम्पन्नता का मार्ग प्रशस्त होता है। हमारे पूर्वजों द्वारा प्रतिपादित वास्तुकला के सिद्धान्त उनके अध्ययन, अनुसंधान और अनुभवों के प्रकाश स्तंभ है। वास्तुशास्त्र के समस्त सिद्धान्त आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर खरे सिद्ध हुये हैं। वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों को आधुनिक नगर नियोजन एवं वैज्ञानिक, उसकी वैज्ञानिकता के कारण इसका सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं। वास्तुशास्त्र स्वयं में एक संपूर्ण विज्ञान है। इसकी प्रौद्योगिकी सुव्यवस्थित एवं दोषमुक्त है। यही कारण है, कि वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के व्यक्ति भी भारतीय संस्कृति का मार्गानुसरण कर रहे हैं। वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के माध्यम से प्राकृतिक पर्यावरण और मानव के मध्य संतुलन स्थापित किया गया है। वैदिक वास्तु प्रकृति के वे नियम है जो खुले आकाश के नीचे ऐसे स्थान का निर्माण करते है जो भवन में निवासित व्यक्तियों के लिये प्रकृति के साथ संतुलित पर्यावरण एवं स्वस्थ तरंगों को उत्पन्न करता है। वास्तु सिद्धान्तों के पालन से भूमि, भवन व आंतरिक वातावरण के निर्माण से निवासियों की न केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है; बल्कि इससे मानसिक सुख व शांति भी प्राप्त होती है। वास्तुशास्त्र के कुछ प्रमुख सिद्धान्त निम्नानुसार हैं –

1. दिक् निर्धारण :

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों में दिक् निर्धारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। दिक् निर्धारण को दिक् विन्यास भी कहा जाता है। दिक् विन्यास अर्थात् दिशाओं का सही ज्ञान होना अर्थात् वास्तु के किसी भी भाग को उचित दिशा स्थापित करना ही दिशा निर्धारण हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुशास्त्र के अनुसार समस्त आठ दिशाओं के अधिपति देवता स्थान विशेष के रहवासियों को सुरक्षा प्रदान कर उनका विकास करते हैं। इसका विवरण निम्नांकित है –

दिशा	संबंधित ग्रह	अधिपति देवता	प्राप्ति
पूर्व	सूर्य	इन्द्र	धनवैभव
उत्तर	बुध	कुबेर	धन व सुख
पश्चिम	शनि	वरूण	समृद्धि व आनंद
दक्षिण	मंगल	यम	पापों को नष्ट करने वाले
उत्तर–पूर्व	गुरू	ईशान	बृद्धिमत्ता, ज्ञान व सभी सुख
दक्षिण–पूर्व	शुक्र	अग्नि	सुन्दर शारीरिक रचना
दक्षिण–पश्चिम	राहू	नैरूत	शत्रुओं के भय का नाश
उत्तर–पश्चिम	चन्द्रमा	वायु	जीवन बल, स्वास्थ्य प्रदाता

जब किसी वास्तु की स्थापना की जाती है, तो इसके विभिन्न भागों को उचित दिशानुरूप निर्धारित किया जाता है। इन दिशाओं का वर्गीकरण एवं निर्धारण पूर्णरूपेण वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप होता है। पृथ्वी ही नहीं बल्कि संपूर्ण सौर्य मंडल के लिये सूर्य ऊर्जा का बहुत महत्वपूर्ण स्त्रोत है। वास्तुशास्त्र में पूर्व दिशा को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है इसका संकेत पृथ्वी पर सूर्योदय और सूर्यास्त से मिलता है। प्रातःकालीन सूर्य रश्मियों में अल्ट्रा वायल्ट रश्मियों की अधिकता होती है। मध्याहन में सूर्य रश्मियाँ रेडियोध ार्मिता से ग्रस्त रहती हैं और सूर्यास्त के समय इन्फ्रारेड व कॉस्मिक किरणे होती है। प्रातः कालीन सूर्य रश्मियों से लाभ, मध्याह्म व सायं कालीन रश्मियों से हानि होती है। सूर्य की हानिकारक किरणों से बचने के लिये ही पूर्व व उत्तर दिशा को महत्ता दी गई है। इसीलिये पूर्व एवं उत्तर दिशा के भाग को खुला एवं नीचा रखा जाता है। इसी प्रकार भवन का दक्षिण पश्चिम भाग ऊंचा एवं दीवालें मोटी बनायी जाती हैं। इसके पीछे वैज्ञानिक पक्ष यह है – कि जब पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा दक्षिण दिशा में करती है, तो वह एक विशेष कोणीय स्थिति में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जब पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा दक्षिण दिशा में करती है, तो वह एक विशेष कोणीय स्थिति में रहती है ऐसे में इस ओर अधिक भार रखने से संतुलन बना रहता है और इस ओर अधिक सूर्यताप से भी बचा जा सकता है मनुष्य के अंदर चुम्बकीय क्षेत्र सिर से पैर की ओर होता है। मनुष्य के सिर को उत्तरी तथा पैरों को दक्षिणी ध्रुव माना गया है। यदि हम सोते समय सिर उत्तर की ओर रखते हैं, तो पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव मनुष्य के उत्तरी ध्रुव से चुम्बकीय प्रभाव को अस्वीकार करेगा; जिससे शरीर में रक्त संचार के लिये अनुकूल चुम्बकीय तरंगों का क्षेत्र नहीं मिल सकेगा, फलस्वरूप मनो–मस्तिष्क तनाव के कारण अस्थिर रहेगा, शांति सहित गहन निद्रा न आने के कारण शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। इसीकारण सोते समय सिर दक्षिण दिशा में रखा जाता है ऐसा करने से मनो–मस्तिष्क तनाव रहित रहता है और गहरी नींद आती है। अब प्रश्न उठता है, कि उत्तर क्षेत्र धन का कारक क्यों है ? वास्तुशास्त्र में चुम्बकीय उत्तर क्षेत्र कुबेर का स्थान माना जाता, जो कि धन वृद्धि कारक है। यह भी सलाह दी जाती है, कि जब भी कोई व्यापारिक वार्ता या परामर्श में भाग लें तो सर्वाधिक उचित व लाभप्रद यही होगा कि मुख उत्तर की ओर हो । वैज्ञानिक कारण यही है, कि इस ओर चुम्बकीय तरंगे विद्यमान रहती है; जिससे मस्तिष्क की कोशिकाएं सक्रिय रहती हैं और शुद्ध वायु के कारण भी अधिक ऑक्सीजन मिलती है , जो मस्तिष्क को सक्रिय करके स्मरण शक्ति बढ़ाती है। सक्रियता और स्मरणशक्ति व्यापारिक उन्नति और कार्यों में सफलता देने में सक्षम है। वास्तुशास्त्रानुसार भूखण्ड के चारों ओर खुला स्थान इस प्रकार छोड़ा जाता है, कि पूर्व में सबसे अधिक खुला स्थान उससे कम उत्तर में उत्तर से कम दक्षिण में और दक्षिण से कम पश्चिम दिशा में खुला स्थान छोड़ा जाता है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है, कि भवन के चारों ओर खुला स्थान छोड़ने से सभी दिशाओं से वायु का आवागमन सम्यक रूप से होता है; जिससे पर्यावरण शुद्ध रहता है और गर्मियों में भवन ठंडा एवं सर्दियों में गर्मी का आभास किया जा सकता है। इसी सिद्धान्त को दृष्टिगत रखते हुये दक्षिण–पश्चिम भाग में खिड़की एवं दरवाजे कम बनाने का प्रावधन है। आग्नेय कोण में रसोई घर रखने के पार्श्व में यही कारण है कि इस ओर सूर्य रश्मियाँ एवं शुद्ध वायु की अधिकता रहती है। पृथ्वी, सूर्य की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिक्रमा दक्षिणायन की ओर करती है इसलिये इस ओर सूर्य की अल्ट्रा वायलेट रश्मियाँ अधिक प्राप्त होती है जिससे रसोईघर में रखे खाद्य पदार्थ शुद्ध रहते हैं। इसीप्रकार उत्तरपूर्व में जलस्त्रोत एवं पूजा स्थल रखने का वैज्ञानिक कारण यह है, कि इस ओर सूर्यताप अधिक होने के कारण पानी शीघ्र प्रदूषित नहीं होता और शुद्ध जल प्राप्त होता है। पूजा स्थल ईशान में होने से प्रातःकालीन सूर्य की किरणें सीधी पड़ती है जो स्वास्थ्य के लिये लाभदायक होती हैं। यह दिमाग को तरोताजा और आत्मा को स्वच्छ और पवित्र रखती है जो कि वास्तविक प्रार्थना के लिये अत्यंत आवश्यक है। इसी प्रकार दक्षिण दिशा में सिर करके सोने के पार्श्व में वैज्ञानिक कारण यह है, कि हमारा सौर मंडल पूर्णतः चुम्बकीय तरंगों से भरा हुआ है। सूर्य से निकलने वाली किरणें, ऊर्जा तरंगे और सौर मंडल में भ्रमण कर रहे ग्रहों की गति आदि विद्युत चुम्बकीय तरंगे पैदा करती हैं। पृथ्वी सौरमंडल की एक ग्रह है एवं इसमें चुम्बकीय शक्ति होती है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है और साथ ही साथ अपने अक्ष पर भी घूमती है ; जिससे विद्युत चुम्बकीय तरंगे पैदा होती है। हमारे शरीर में भी विद्युत चुम्बकीय तरंगे होती हैं; जिसके कारण हमारा हृदय क्रियाशील रहता है, मस्तिष्क सक्रिय रहता है अर्थात् मानव समस्त कार्य संचालित होते हैं यह विद्युत ही मनुष्य को जीवन शक्ति यानी चेतना प्रदान करती है।

2. वास्तु–पद विन्यास :

जिस प्रकार वर्तमान समय में नगर नियोजन के पूर्व मास्टर प्लान तैयार कर उसके अनुरूप विभिन्न कार्य संपादित होते हैं; ठीक वैसे ही वैदिक काल में स्थापित नगरों में वास्तुपद विन्यास किया जाता था; जिसमें प्राकृतिक नियमों के अनुरूप वास्तु के विभिन्न भागों का निर्धारण किया जाता था। पृथ्वी पर वास्तु रचना ब्रह्माण्डीय रचना का सूक्ष्मरूप है; जिस प्रका मानव शरीर की बनावट में शीश से लेकर पैर तक एक निश्चित श्रृंखला है, ठीक उसी तरह भवन/नगर में भी वास्तुपुरूष की परिकल्पना की गई है। शास्त्रों में वर्णित 'वास्तु पद विन्यास' की परिकल्पना की वैज्ञानिकता यह है, कि भवन/नगर को कोई जड़ वास्तु न समझकर उसे भी एक जीवंत तंत्र के (शरीर के समान) रूप में देखा जाए।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वैदिक कालीन स्थापतियों को प्राकृतिक नियमों का पूर्ण ज्ञान था। इसीलिये इन नियमों के आधार पर भवन/नगर में सम्पादित होने वाले कार्यों के स्थान का निर्धारण किया जाता था, किन्तु वर्तमान समय में नगर का मास्टर प्लान तैयार करते समय प्राकृतिक नियमों की उपेक्षा कर दी जाती है।

3. मान नियोजन :

वैदिक काल में जिसे हस्त लक्षण अथवा मान नियोजन कहा जाता था उसे वर्तमान में Megerment के नाम से जाना जाता है। वैदिक काल में माप के लिए मुख्य रूप से हस्त का उपयोग होता था। वास्तुशास्त्र के अप्रतिम ग्रंथ मानसार का नामकरण मान के आधार पर ही हुआ है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि माप का सार या निष्कर्ष ही मानसार है। वैदिक काल में मान नियोजन की विधियाँ अति सूक्ष्म एवं पूर्णरूपेण वैज्ञानिक विधि पर आधारित थी। उसकाल में मान प्रमुख रूप से क्षेत्रफल गणना,संख्या गणना तथा समय गणना के रूप में किया जाता था । जिस प्रकार वर्तमान में क्षेत्रफल गणना के लिये फुट, इंच एवं से.मी. इत्यादि का प्रयोग किया जाता है वैसे ही वैदिक काल में अंगुल, हस्त, ब्यान गव्यति इत्यादि का प्रयोग किया जाता था। इतना ही नहीं वैदिक काल में ग्राम तथा नगर का निवेश कितने क्षेत्रफल में होना है, किस वर्ण के व्यक्ति के लिये किस माप का भवन बनाना है यह भी निश्चित था। क्षेत्रफल के आधार पर ही ग्राम, नगर, पुर, खेटक इत्यादि नाम दिये जाते थे।

स्थापत्यवेद में मान नियोजन का विशिष्ट महत्व है, क्योंकि गलत अनुपातिक मान को सभी प्रकार की रचनाओं के लिये अशुभ माना गया है। इसके पार्श्व में वैज्ञानिक कारण यह है, कि यदि वास्तु की माप सही नहीं होगी, तो व्यक्ति को प्राकृतिक सहयोग प्राप्त नहीं होगा, जिससे व्यक्ति की संपूर्ण जैविक प्रणाली प्रभावित होगी। परिणामस्वरूप व्यक्ति को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. भूमि परीक्षण :

इसे मृदा परीक्षण भी कहते हैं। मृदा (भूमि) परीक्षण वास्तुशास्त्र का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं। इससे भूमि की परीक्षा के द्वारा भूमि की आंतरिक स्थिति का पता चल सकता है। संपूर्ण वास्तु रचनाओं का विकास मृदा पर ही निर्भर होता है। भवन, ग्राम, नगर आदि से संबंधित प्रत्येक मानवीय क्रिया कलाप पर मिट्टी का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिक शोधों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है, कि मिट्टी में अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं, जिसमें से कुछ लाभप्रद तथा कुछ हानिप्रद होते है; जिसका प्रभाव उस स्थान के भवनवासियों तथा भवन पर पड़ता है। कहने का तात्पर्य है, कि जिस मिट्टी में जिस प्रकार के तत्वों की अधिकता होती है, उस भूमि को उसकी प्रकृति के अनुरूप कार्य के लिये निर्धारित किया जाता है।

5. आयादि निर्णय :

किसी भी वस्तु के भार वहन करने की शक्ति के उपरान्त ही उस का निर्माण कार्य करना चाहिए। वैदिक काल में यह कार्य आयादि निर्णय के माध्यम से किया जाता था। उदाहरणस्वरूप यदि किसी भवन का निर्माण करना है, तो वहाँ निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या के आधार पर उस स्थान का क्षेत्रफल निर्धारित किया जाता था। कहने का तात्पर्य है, कि निर्माणाधीन वास्तु की लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई इत्यादि की माप क्या हो इसको ध्यान में रखकर वास्तु रचना की जाती थी।

6. पताका छंदस :

वैदिक काल में प्रत्येक उद्देश्य के भवन हेतु आकार एवं आकृति निश्चित थी, जिसे पताका छंदस कहते हैं। हमें वैदिक वास्तु रचनाओं की आकृति और आकार को देखते ही यह ज्ञान हो जाता है, कि संबंधित वास्तु की रचना किस उद्देश्य से की गई है ;किन्तु वर्तमान में इस प्रकार के सिद्धान्त लुप्तप्राय हो गये हैं; जिसके कारण भवन के सामने पटल लगाना पड़ता है, कि संबंधित वास्तु का निर्माण किस उद्देश्य हेतु किया गया है। इस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थिति में यदि कोई अन्य भाषा का व्यक्ति या अशिक्षित व्यक्ति भवन को देखता है, तो उसे मालूम ही नहीं चलता कि भवन किस प्रयोजन हेतु निर्मित है। इसके विपरीत वैदिक काल में उद्देश्य के अनुरूप वास्तु रचना के कारण भ्रम नहीं रहता था।

इस प्रकार हम कह सकते हैं; कि वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त मात्र कल्पनाओं पर ही आधारित नहीं हैं; बल्कि वैज्ञानिकता के ठोस धरातल पर ये सिद्धान्त खरे उतरते हैं; जो आज भी उतने ही उपयोगी है, जितने वैदिक काल में थे। इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त सार्वकालिक और सार्वदैशिक है; जिनका अनुसरण कर मानव अपना अधिकाधिक विकास कर सुख, ऐश्वर्य, प्रगति एवं शांतिपूर्वक जीवन यापन कर सकता है।

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. शुक्ल, कमलकान्त 1998 श्री टोडरमल विरचित वास्तुसौरव्यम्, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी पृ. क्र. 1
2. खेमक राधेश्यामः 1999 कल्याण, गीता प्रेस गोरखपुर पृ. क्र. 143
3. आप्टे शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोष नागप्रकाशन दिल्ली
4. शुक्ल, द्विजेन्द्रनाथ, भवन निवेश 1994 प्रथम खंड पृ. क्र. 13
5. आप्टे शिवराम, संस्कृत हिन्दी कोष
6. बाजपेयी कृष्णदत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान लखनउ पृ. क्र.1
7. शुक्ल, डॉ. द्विजेन्द्रनाथ, भवन निवेश, अध्याय 6 पृ.क्र.26–28
8. गुप्त, परमेश्वरीलाल, भारतीय वास्तुकला 1989 विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक वाराणसी पृ.क्र. 1
9. बाजपेयी कृष्णदत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ, पृ. क्र.5
10. बाजपेयी कृष्णदत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ, पृ. क्र. 24
11. श्रीवास्तव, शिवकुमार एवं बाजपेयी रामदुलारे भारतवर्ष का सांस्कृतिक गौरव, 1949, नवभारत प्रकाशन, मेरठ पृ.क्र.68
12. ऋग्वेद 7/54/1
13. ऋग्वेद 7/55/1
14. अथर्ववेद 3/3/1.
15. श्रीमद्भागवत् 3/12/38
16. मिश्र, डॉ. सुरेन्द्रचंद्र, वृहत संहिता, खंड 2, प्रथम संस्करण 1997 पृ.क्र.543.
17. मत्स्य पुराण, अध्याय 292, श्लोक 1–3 पृ.क्र. 425–426 श्रीवास्तव, डॉ. बलराम, सूत्रधार मण्डनकृत, रूपमण्डनम् पृ.क्र.1
18. द्विवेदी, पं. रामनिहोर, वृहद्वास्तुमाला 1932, काशी पृ.क्र.4
19. मिश्र सुरेशचंद्र, वृहत् संहिता, खण्ड 2 प्रथम संस्करण 1997 पृ.क्र.544
20. वाजपेयी, कृष्णदत्त, भारतीय वास्तुकला का इतिहास, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ पृ.क्र.5

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

21. तिवारी, आर.सी, अधिवास भूगोल 1997, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ.क्र.328
22. बाल्मीकि रामायण 5/10
23. बाल्मीकि रामायण 2/21
24. वाजपेयी, कृष्णदत्त, वही, पृ.क्र.13
25. महाभारत आदिपर्व 206/28
26. मिश्र, जगदीशचंद्र (व्याख्याकार), शुक्रनीति 1998 चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
27. गैरोलावाचस्पति, व्याख्याकारद्ध, कौटिल्य का अर्थशास्त्र 1991 चौखम्भा विद्याभवन प्रकाशन वाराणसी पृ.क्र.91
28. अग्रवाल,वासुदेवशरण, भारतीय कला 2000 ई. अध्याय 5 पृ.क्र.68
29. कादरी एम.एम. असगर अली हिंदु मुस्लिम स्थापत्य कला शैली आगरा 1963 पृ.क्र.90
30. तिवारी, आर.सी., अधिवास भूगोल 1997, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृ.क्र.329
31. अखण्ड ज्योति, जून 2000 पृ.क्र.30
32. श्रीवास्तव, शिवकुमार एवं वाजपेयी रामदुलारे, भारतवर्ष का सांस्कृतिक गौरव 1949 नवभारती प्रकाशन मेरठ पृ.क्र.156
33. शर्मा, सुरेश्वर (संपादक) विज्ञान भारती प्रदीपिका, विज्ञान भारती प्रकाशन उदयाचल जबलपुर,अक्टूबर 1998 पृ.क्र.17
34. वाजपेयी, कृष्णदत्त, वही, पृ.क्र. 135
35. चौबे, महेश चंद्र, जबलपुर अतीत दर्शन, जिला योजना मंडल जबलपुर तथा भारतीय संस्कृति निधि जबलपुर 1994 पृ.क्र. 18–19
36. गुप्त, परमेश्वरीलाल, भारतीय वास्तुकला अध्याय 8 पृ.क्र. 186
37. झा रविकान्त, वास्तुकला का इतिहास पृ. क्र. 17
38. झा रविकान्त, वास्तुकला का इतिहास 1992 पृ. क्र. 17
39. झा रविकान्त, वास्तुकला का इतिहास 1992 पृ. क्र. 18
40. नारद संहिता अध्याय 31, पृ सं. 220
41. श्रीमद् भागवत् गीता अध्याय 18 श्लोक 40
42. नारद संहिता अध्याय 31, पृ सं. 220
43. आप्टे शिवराम, संस्कृत हिंदी कोष 1986: मोतीलाल बनारसी दास पब्लिकेशर्स प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, राज संस्करण पृ.क्र.———

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

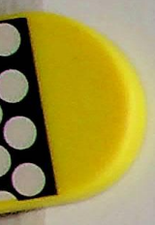

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

44. रामन वी.वी., वास्तुशास्त्र पृ.क्र. 34

45. *गोयन्दका हरिकृष्णदास,* कठोपनिषद् / अध्याय[1] / बल्ली[2] / श्लोक[20] पृ.क्र. 93

46. श्रीवास्तव डॉ. बलराम, मत्स्य पुराण रूप मंडल / पृ.क्र.1

47. ज्ञानेश्वर डॉ. उमेशपुरी, भारतीय वास्तुशास्त्र, अध्याय[1] पृ.क्र. 15

48. नैने पं. गोपाल शास्त्री, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ.क्र. 1008

49. शुक्ल डॉ. द्विजेन्द्रनाथ, भारतीय स्थापत्य 1968:हिन्दी समिति लखनऊ पृ.क्र.17

50. जोशी जयशंकर,हलायुध कोष,पृ.क्र. 606

51. झा पं. विश्वनाथ, अमरकोष, द्वितीय कांड, पृ.क्र.140

52. सातवेलकर दामोदर,"वास्तोष्पते प्रति जानीहास्मान्" ऋग्वेद 7 / सू.54 / 1

53. मिश्र सुरेशचन्द्र, वृहत् संहिता पृ.क्र. 543

54. Acharya Prasanna Kumar, Mansar a series No.1 "A Dictonary of Hindu Architecture" Low price Publication Delhi 1197 P- 545

55. शर्मा, प्रो. सुरेश्वर, विज्ञान भारती प्रदीपिका विशेषांक, खण्ड 1, पृ.क्र. 64

56. शुक्ल डॉ. द्विजेन्द्रनाथ समराण सूत्रधार–भवन निवेश द्वितीय खंड, अध्याय–पृ.क्र.8

57. गोयन्दका हरिकृष्णदास, मुण्डकोपनिषद, अध्याय 1, बल्ली1, श्लोक3 पृ.क्र. 213

58. त्रिपाठी, डॉ. ब्रह्मानंद, वृहद्वास्तुमाला श्लोक 1–3 पृ.क्र. 1

59. शुक्ल, श्री कमलकांत, वास्तुसौरव्यम्, प्रथम अध्याय, श्लोक 9–10 पृ.क्र.3

60. राजाभोज, समरागण सूत्रधार

शुल्क, द्विजेन्द्रनाथ, समरागड़सूत्रधार अध्याय 1 श्लोक 4–5 पृ. क्र. 5

61. शास्त्रीय, आचार्य उमेश, वास्तु विज्ञानम् व्यास वालावक्ष, शोध संस्थान दीनानाथ मार्ग जयपुर 1996 1 / 14

62. वाल्मीकि रामायण 56 / 22

63. विश्वकर्मा प्रकाश, अध्याय 2, श्लोक 30

64. जैन एस.एम., भौगोलिक चिंतन एवं विधितंत्र, साहित्य भवन आगरा 1995 पृ. क्र. 340

65. नारद संहिता, अध्याय 32 श्लोक 19, पृ. क्र. 228

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

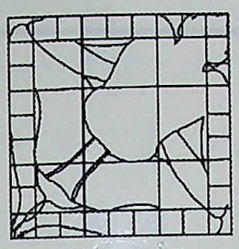

वास्तु पुरुष

वर्तमान युगे लोके, भोजनं वसनं गृहम्।
आवश्यकं नितान्तं, येषांनं जन्म निरर्थकम्॥१४॥
(वास्तुविज्ञानम् १/४)

अध्याय द्वितीय

नगरीय भूगोल का परिचय

- नगरीय भूगोल का अर्थ एवं परिभाषा की अवधारणा
- नगरों की उत्पत्ति एवं विकास
- नगरों के उद्भव और विकास की अवधारणा
- नगरीय भूगोल की विषय-वस्तु
- नगरीय भूगोल की आधारभूत संकल्पनायें
- नगरीय भूगोल की उपागम (विधियाँ)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

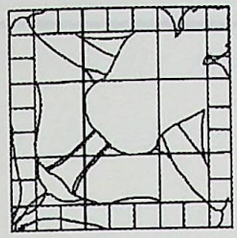

वास्तु पुरुष

वर्तमान युगे लोके, भोजनं वसनं गृहम्।
आवश्यकं नितान्तं, येषांनं जन्म निरर्थकम्।।१४।।
(वास्तुविज्ञानम् १/४)

अध्याय द्वितीय

नगरीय भूगोल का परिचय

- नगरीय भूगोल का अर्थ एवं परिभाषा की अवधारणा
- नगरों की उत्पत्ति एवं विकास
- नगरों के उद्भव और विकास की अवधारणा
- नगरीय भूगोल की विषय-वस्तु
- नगरीय भूगोल की आधारभूत संकल्पनायें
- नगरीय भूगोल की उपागम (विधियाँ)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगरीय भूगोल का परिचय

मानव समाज की तीन मूलभूत आवश्यकताएं मानी गई हैं–भोजन, वस्त्र और आवास । इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव विविध क्रियाकलाप सम्पादित करता है । आवासीय सुविधाओं के लिये प्राथमिक कार्यों में संलग्न मानव समाज द्वारा ग्रामीण बस्तियों का निर्माण किया गया है । विकास क्रम के बढ़ते क्रियाकलापों और कार्य की विविधता के फलस्वरूप बड़े आकार के अधिवास अस्तित्व में आये । इन अधिवासों में कार्यों के विक्रेन्द्रीकरण के साथ विशेषीकरण का उदय हुआ; जिसके कारण ऐसे अधिवासों की अलग पहचान बनने लगी । फलतः इनको सुनियोजित ढंग से बसाने के साथ ही साथ कुछ गैर प्राथमिक कार्यों को प्रोत्साहन दिया गया । कालान्तर में इन्हें नगर की संज्ञा दी गई । ऐसे नगरों की विशिष्ट जीवन पद्धति, कार्य संपादन और रचना विन्यास मानव समाज के लिए आदर्श रूप में स्वीकार किया गया । पहले नगर का आशय एक दीर्घाकार विशिष्ट बस्ती से था; जिसका निर्माण एक विशेष प्रयोजन जैसे प्रशासनिक केन्द्र, व्यापार केन्द्र, धार्मिक केन्द्र आदि के रूप में किया जाता था । ऐसे अधिवासों को एक विशेष योजना के तहत बसाया जाता था । भारत के गढ़ और यूरोप के वारों नगर इसी प्रकार अस्तित्व में आये ।

रिचर्ड हार्टशोर्न के अनुसार "भूगोल पृथ्वीतल की विभिन्नताओं का विज्ञान है ।[1]" भूगोल की दो बड़ी शाखाएं हैं– भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल । भौतिक भूगोल की सामग्री के रूप में भौतिक तत्व हैं; जबकि मानव भूगोल के अन्तर्गत संपूर्ण भौगोलिक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(भौतिक एवं सांस्कृतिक) परिस्थितियों से अन्योय क्रिया में व्यस्त मानव तथा उसके भिन्न–भिन्न तरह के कार्य आते हैं ।[2] मानव कार्यों के भिन्न–भिन्न रूपों के आधार पर मानव भूगोल की कई महत्वपूर्ण शाखाएं हैं; जिनमें प्रमुख हैं– आर्थिक भूगोल, बस्ती भूगोल, जनसंख्या भूगोल, राजनैतिक भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल, प्रजातीय भूगोल इत्यादि । नगरीय भूगोल वस्तुतः मानव भूगोल की उस महत्वपूर्ण शाखा का अंग है, जिसे बस्ती भूगोल कहते हैं ।

बस्ती भूगोल का संबंध उन सुविधाओं से हैं, जिन्हें मनुष्य, भूमि पर बसने की प्रक्रिया में निर्मित करता है ।[3] इन निर्मित सुविधाओं में मकान तथा गमनागमन– मार्ग और उनके भिन्न–भिन्न तरह के समूह शामिल किये जाते हैं ।[4] नगरीय भूगोल को बस्ती भूगोल के अंग के रूप में तथा भूगोल की एक अलग सुप्रतिष्ठित शाखा के रूप में भी देखा जाता है । इसका बस्ती भूगोल से ठीक वही संबंध है, जो आर्थिक भूगोल का मानव भूगोल से है। यह मानव भूगोल की बड़ी महत्वपूर्ण शाखा है, न केवल इसलिए कि नगरों तथा नगरीकरण का महत्व सबसे अधिक है तथा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, बल्कि इसलिए भी कि नगर मानवीकरण की मात्रा ओर के सर्वोच्च रूप हैं। बोमैन महोदय ने भी कहा है, कि मानव बसाव के पैमाने के एक तरफ तो अग्र क्षेत्र हैं और इसके दूसरे सिरे पर नगरीय भूगोल;[5] जो आकार और कार्य दोनों में जटिलतम मानव बस्तियों अर्थात् नगरों का अध्ययन करता है। नगरीय भूगोल के क्रमबद्ध अध्ययन की ओर जब हमारा ध्यान जाता है, तब हम पाते हैं, कि नगरीय भूगोल का अध्ययन अधिकांशतः बीसवीं शताब्दी की ही देन है ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है, कि नगरीय भूगोल बस्ती भूगोल का अंग होते हुए भी भूगोल की एक अलग सुविख्यात शाखा है । नगरीय बस्तियों की अलग तथा बड़ी भूमिका एवं निरन्तर बढ़ते हुए महत्व के कारण नगरीय भूगोल एक स्वतंत्र भौगोलिक विज्ञान के रूप में विकास कर चुका है और वर्तमान में अनेक भूगोलवेत्ता नगरीय क्षेत्रों के अध्ययन में लगे हुये हैं । इसके कारण भी नगरीय भूगोल के महत्व का संकेत मिलता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ नगरीय भूगोल का अर्थ एवं परिभाषा की अवधारणा :

नगरीय भूगोल शब्द अंग्रेजी के 'अरबन ज्योग्राफी' (Urban Gepgraphy) शब्द का हिंदी रूपान्तरण है । अंग्रेजी शब्द 'अरबन' (Urban) लैटिन भाषा के अर्ब्स (Urbs) और अरबनस (Urbans) शब्दों से बना है, जिसका अर्थ है नगर (city) और नगर से संबंधित या नगर में घटने वाला । "पृथ्वी और उस पर दिखाई देने वाली सभी बातों या तथ्यों का वर्णन करना या उसके बारे में लिखना ही शाब्दिक अर्थों में भूगोल है ।" दूसरे शब्दों में "भूगोल स्थानों के वर्णन का विज्ञान है ।" भूगोल की परिभाषा देते हुए रिटर ने स्पष्ट किया –"भूगोल विज्ञान का वह विज्ञान है; जिससे भूखण्ड के सभी लक्षणों, घटनाओं और उनके संबंधों का, पृथ्वी को स्वतंत्र रूप में मानते हुये, वर्णन किया जाता है । इसकी समग्र एकता मानव एवं जगत् पिता से संबंधित दिखाई देती है ।[6]

अमरीकन उच्च शिक्षा शब्दकोष (College Dictionary) के अनुसार–" Geography is the study of areal differentiation of the earth surface as shown in the charecter arrangement interrelation over the earth, of elements such as climate relief vegetation, population, land use industries on states and of the unit areas as formed by the complexity of these individual elements."[7]

भूगोल भूतल की क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है, यहाँ पर क्षेत्रों की लक्षण व्यवस्था के अर्न्तसंबंधों में ऐसी अनेक विभिन्नताएं दिखाई देती हैं । भूतल पर पाये जाने वाले प्रमुख तत्वों जैसे जलवायु, धरातल, वनस्पति, जनसंख्या, भूमि का उपयोग एवं उद्योगों आदि का इसमें वर्णन किया जाता है । इसमें उपर्युक्त तत्वों (विविध स्तर एवं प्रारूपों से संबंधित होने) से बनने वाली जटिलताओं से निर्मित इकाई क्षेत्रों का विस्तार से अध्ययन किया जाता है । इस प्रकार नगरीय भूगोल का शाब्दिक अर्थ है– नगरों अथवा नगरीय बस्तियों का भूगोल । " इसमें नगरों अथवा नगरीय क्षेत्रों के सभी पहलुओं का अध्ययन, भौगोलिक दृष्टि से किया जाता है ।"[8] सामान्य बोलचाल में नगर सिटी, टाऊन और

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेट्रोपोलोटन तीनों के लिये एक ही शब्द नगरीय प्रयोग किया जाता है, लेकिन वैज्ञानिक और प्रशासकीय दृष्टि से तीनों में अन्तर है । सिटी के लिये नगर, टाउन के लिए पुर या कस्बा तथा मेट्रोपोलिटन के लिये महानगर परिभाषित शब्दावलियाँ हैं । भूगोल एक स्थानिक विज्ञान (Spatial Science) है, जिसका उद्देश्य पदार्थ एवं उसके विविध रूपों की धरातल पर अवस्थिति और वितरण का अध्ययन करना है । भौगोलिक अध्ययन विधि मुख्यतः दो प्रकार की है– 1. क्रमबद्ध 2. प्रादेशिक । इस प्रकार नगरों का अध्ययन क्रमबद्ध रूप में (अवस्थिति उद्भव एवं विकास, प्रकार, विशेषताओं, वर्गीकरण आदि का अध्ययन) तथा प्रादेशिक रूप में नगर को एक सूक्ष्म इकाई मानकर (उनकी विभिन्न विशिष्टताओं जैसे–नगर का उच्चावच, जलवायु, अपवाह, जनसंख्या प्रतिरूप, परिवहन एवं संचार तंत्र, बसाव प्रतिरूप सामाजिक संरचना, पड़ोस से संबंध आदि) किया जा सकता है । अन्य विज्ञानों की भांति भूगोल का एक तीसरा दृष्टिकोण है; जिसके अन्तर्गत नगरीय समस्याओं (मलिन बस्तियों, यातायात संकुलन, पर्यावरण प्रदूषण आदि) एवं नगरीय नियोजन को भी अध्ययन में सम्मिलित किया जाता है । नगरीय भूगोल की विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न परिभाषाएं दी हैं जो निम्न प्रकार से है –

हेराल्ड एम. मेयर ने नगरीय भूगोल के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "यह उन प्रतिरूपों एवं संबंधों की व्याख्या से संबंधित है, जो एक ओर नगरीय क्षेत्रों के अंदर उपस्थित है तथा दूसरी ओर नगरीय क्षेत्रों तथा अनगरीय क्षेत्रों के मध्य स्थित हैं, जिन्हें नगर सेवायें प्रदान करते हैं।[9] **डॉ. ओ.पी. सिंह** ने नगरीय भूगोल को इस प्रकार परिभाषित किया है–"पृथ्वीतल या उसके किसी प्रदेश की नगरीय बस्तियों के मध्य तथा अन्दर और नगरीय एवं अनगरीय प्रदेशों से उसके संबंधों में जो क्षेत्रीय विभिन्नताएं पायी जाती हैं, उनकी वैज्ञानिक व्याख्या से नगरीय एवं अनगरीय प्रदेशों से उसके संबंधों में जो क्षेत्रीय विभिन्नताएं पायी जाती हैं, उनकी वैज्ञानिक व्याख्या से नगरीय भूगोल का संबंध है ।[10] नगरीय भूगोल को परिभाषित करते हुए रेमण्ड ई. मर्फी ने लिखा है, कि "नगरीय भूगोल का संबंध नगरीय विकास के स्थानात्मक पहलुओं से है; जिसमें गैर नगरीय क्षेत्रों को भी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सम्मिलित कर लिया जाता है; क्योंकि उनका संबंध नगरों से होता है । यह नगरीय केन्द्रों से सम्बद्ध क्षेत्रीय प्रतिरूपों को निर्धारित करने एवं व्यवस्थापनों की व्याख्या करने से संबंधित है ।[11] स्पष्ट है कि नगरीय भूगोल नगरों का व्यापक अर्थ में अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जो इनके कार्य–कारण संबंधों का स्पष्टीकरण और स्थानिक प्रभावों का मूल्यांकन करता है।

आर.ई. डिकिन्सन के अनुसार–"विस्तृत क्षेत्रों के परिप्रेक्ष्य में तथा नगरीय संश्लिष्टों के अंदर उनकी प्रादेशिक भिन्नताओं का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं स्पष्टीकरण नगरीय भूगोल की मूलभूत समस्या है।"[12] नगरीय बस्तियों के संबंध में ब्लाश का विचार है, कि नगर एक सामाजिक संगठन होता है; जिसका क्षेत्र अत्यंत विस्तृत होता है। यह सभ्यता की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जिन तक कुछ क्षेत्र नहीं पहुँच पाये हैं और जो शायद कभी पहुँच भी न सके ।[13] करण के अनुसार "नगर और भौगोलिक पर्यावरण के पारस्परिक संबंध का विश्लेषण नगरीय भूगोल है ।[14]

उपर्युक्त विवरण के आधार पर नगरीय भूगोल के अर्थ एवं परिभाषा से संबंधित तथ्यों को संक्षेप में निम्न प्रकार रखा जा सकता है –

1. नगरीय भूगोल एक सामाजिक विज्ञान है, जो नगरों के अध्ययन में प्रादेशिक एवं क्रमबद्ध दोनों ही उपागमों का सहारा लेता है ।
2. वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति अपनाते हुये नगरीय भूगोल अपने अध्ययन के दौरान विभिन्न सिद्धांतों और संकल्पनाओं के विकास एवं परीक्षण का प्रयास करता है ।
3. नगरीय भूगोल एक नगर के भीतर की क्षेत्रीय भिन्नताओं को ढूंढने एवं उनकी व्याख्या का प्रयास करता है ।
4. नगरीय भूगोल किसी क्षेत्र/प्रदेश के नगरों का तुलनात्मक अध्ययन कर उनके बीच स्थानिक समानताओं एवं विषमताओं को खोजने का प्रयत्न करता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5. नगरीय भूगोल एक नगर एवं उसके प्रभाव क्षेत्र के बीच संबंधों का विवेचन करता है; जिसमें सेवा केन्द्र के रूप में नगर क्षेत्रीय, आर्थिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं ।
6. नगरीय भूगोल नगर से सम्बद्ध समस्याओं के कारणों और निदान हेतु प्रयत्न करता है ।

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगरीय भूगोल एक ऐसा विज्ञान है, जो मानव निर्मित नगरीय अधिवासों की व्याख्या एक भौगोलिक इकाई के रूप में करते समय नगर और गैर नगरीय समीपवर्ती क्षेत्रों का ध्यान रखता है। आर.सी. तिवारी के शब्दों में नगरीय भूगोल में किसी एक नगरीय क्षेत्र के भीतर अथवा किसी प्रदेश के विभिन्न नगरों के बीच स्थानिक संबंधों की व्याख्या की जाती है ।[15] इसका परम उद्देश्य नगरीकृत क्षेत्रों का वर्णन और व्याख्या करना है, ताकि क्षेत्रीय विभिन्नताओं को स्पष्ट किया जा सके । इसके लिये एक या अनेक नगरों का वर्णन इस दृष्टि से किया जाता है, कि उनकी स्थिति, आकार, विकास, गठन, अन्तर्सम्बन्ध आदि पहलुओं की व्याख्या एकाकी या तुलनात्मक विधि से संभव हो सके । यह भी उल्लेखनीय है, कि भैगोलिक अध्ययन में नगरों की वर्तमान दशाओं पर अधिक बल दिया जाता है; क्योंकि भविष्य की अपेक्षित घटनायें इनसे संबंधित हो सकती हैं । इस प्रकार नगरों के अध्ययन में वर्णन,व्याख्या और भविष्यवाणी की वैज्ञानिक विधि अपनाई जाती है ।

स्पष्ट है कि नगरीय भूगोल नगर और नगर के बाहर स्थित सभी पक्षों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है ।[16] अतः नगरीय भूगोल की पूर्ण परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है–"पृथ्वीतल या उसके किसी प्रदेश की नगरीय एवं अनगरीय प्रदेशों से उनके संबंधों में जो क्षेत्रीय विभिन्नतायें पायी जाती हैं , उनकी पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या नगरीय भूगोल है दूसरों शब्दों में हम कह सकते हैं, कि नगरीय भूगोल मानव निर्मित बहुआयामी, गतिमान और विशिष्ट गुणों से सम्पन्न नगरीय अधिवासों की वैज्ञानिक व्याख्या करता है, जो पृथ्वी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तल के लघु भाग पर विस्तृत होने के बावजूद एक बृहद् प्रदेश को प्रभावित करते हैं । इन विशिष्ट अधिवासों के अंदर और बाहर क्षेत्रीय प्रतिरूपों को सृजित करने वाली प्रक्रिया, नगरीय अन्तर्सम्बन्ध और भविष्यगत सम्भावनाओं का, अध्ययन करना ही नगरीय भूगोल है ।

❑ नगरों की उत्पत्ति एवं विकास :

नगर रचना मानव के विकास से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण घटना है, जो उसके पौरूष, सहकर, चातुर्य, तकनीकि विकास बौद्धिकता और विशिष्ट जीवन शैली को चरितार्थ करती है । नगर निर्माण की प्रथम घटना मानव की सभ्यता और संस्कृति की नींव मानी जाती है । वही मानव समाज सभ्यता और सांस्कृतिक विकास में अग्रणी हो सका, जो ग्रामीण अधिवासों के निर्माण से ऊपर उठकर नगर बसाने में सफल हुआ । ऐसी अनुकूल परिस्थितियाँ विश्व की कृषि प्रधान नदी घाटी के क्षेत्रों में सबसे पहले उदित हुई, जहाँ ग्रामीण अधिवासों से भिन्न कुछ विशेष गैर कृषि कार्यों के सम्पादन के लिए कुछ बड़े अधिवास अस्तित्व में आये; जिन्हें कालान्तर में नगर का नाम दिया गया । ऐसे विशिष्ट अधिवासों की उत्पत्ति ईसा से 7000 से 6000 वर्ष पूर्व होने लगी थी । तत्पश्चात् ऐसे अधिवासों के विकास का क्रम सतत् चलता रहा । इस प्रकार नगरों की उत्पत्ति एवं विकास से संबंधित दो महत्वपूर्ण पक्ष विचारणीय हैं –

1. नगरों की उत्पत्ति और विकास का कालिक पक्ष ।
2. नगरों की उत्पत्ति और विकास का क्षेत्रीय पक्ष ।

यह निर्विवाद सत्य है, कि प्रारंभ से लेकर आज तक नगरों की उत्पत्ति और विकास की गतिविधियाँ समान नहीं रहीं हैं । भारत नगर रचना में अग्रणी देश रहा है। यहाँ लगभग 6000 वर्ष पूर्व व्यवस्थित नगर बसाये जाने लगे थे और यह क्रम सतत् क्रियाशील रहा, लेकिन आधुनिक संदर्भ में नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में पश्चिमी देश अग्रणी बन गये हैं । उत्तरी अमेरिका में आज से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व एक भी नगर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अस्तित्व में नहीं था, लेकिन अब वह नगरों का देश बन गया है, जहाँ की अधिकांश जनसंख्या नगरों में निवास करती है । अतः नगरों के उद्‌भव और विकास को समझने के लिये इनके कालिक पक्ष और क्षेत्रीय पक्ष पर विचार करना आवश्यक है ।

❑ नगरों के उद्‌भव और विकास की अवधारणा :

नगरों के उद्‌भव से तात्पर्य नगरों की उत्पत्ति के कालिक पक्ष से है । जब कोई अधिवास नगर का रूप ले लेता है, तो वह उसकी उत्पत्ति का समय होता है । नगर की उत्पत्ति दो प्रकार की होती है । कुछ अधिवास छोटी बस्ती के रूप में बसाये जाते हैं; लेकिन वे अनुकूल परिस्थिति में अपने क्रियाकलाप बढ़ाकर नगर का रूप धारण कर लेते हैं, जिस समय वे नगर कहलाने लगते हैं; वही अवस्था उनके उद्‌भव की प्रतीक है । अधिकांश नगरों की उत्पत्ति इसी प्रक्रिया से होती है; किन्तु नगर कुछ विशेष उद्‌देश्य से बसाये जाते हैं। यह उनकी उत्पत्ति की दूसरी विधा है । अधिकांश राजधानी, प्रशासकीय और कुछ व्यापारिक औद्योगिक नगरों की उत्पत्ति एक निश्चित कालखण्ड में हो जाती है । स्पष्ट है कि कुछ अधिवास नगर बनते हैं और कुछ बनाये जाते हैं । यह प्रक्रिया सभी युगों में क्रियाशील रही है ।

नगरों के विकास से तात्पर्य उनके स्वरूप और कार्य में वृद्धि से है। सीमित कार्यों के चलते उनका आकार और विस्तार मन्द गति से बढ़ता रहता है; जबकि अधिक कार्य सम्पादन से जनसंख्या बढ़ती है, जो उसकी आकृति को विकसित करती है । नगरीय जनसंख्या की बढ़ती आवश्यकता के साथ परिक्षेत्र की जनसंख्या की मांग भी बढ़ने लगती है, क्योंकि नगर केन्द्र स्थल होता है मांग में वृद्धि से नगर की वृद्धि होती है । फलतः एक छोटा नगर महानगर में परिवर्तित होने लगता है, जो उसके कालिक और स्थानिक पक्ष को रेखांकित करता है । जब कुछ विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, तो नगर का अस्तित्व नष्ट हो जाता है । उदा. नदी किनारे पर जन्मा नगर बाढ़ या अपरदन के फलस्वरूप नष्ट हो जाता है प्राकृतिक प्रकोप के अतिरिक्त मानवीय कारणों से भी नगर नष्ट हो जाते हैं । प्राचीन नगरों के भग्नावशेष इसके प्रमाण हैं ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **नगरों के उद्‌भव और विकास का कालिक पक्ष :**

नगरों के उद्‌भव और विकास का इतिहास बहुत लंबा है । इस लंबी अवधि में भौतिक परिस्थितियों की तुलना में सांस्कृतिक परिस्थितियों में भारी बदलाव आया है; जिसके कारण नगरों की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया प्रभावित होती रही है । जापान के प्राचीन नगरों की तुलना में नवीन नगरों का स्वरूप बिल्कुल बदल गया है । इसी प्रकार भारत के प्राचीन और नवीन नगरों की उत्पत्ति और विकास में काफी अन्तर देखने को मिलता है । वर्तमान में इस अवधारणा को मान्यता मिल चुकी है, कि विश्व की उपोष्ण नदी घाटियों में सबसे पहले कृषि और पशुपालन का विकास हुआ एवं इन्हीं क्षेत्रों में नगर सदृश्य अधिवास अस्तित्व में आये । इन प्रमुख नदी घाटियों में सिन्धु घाटी, दजलाफरात घाटी, नील घाटी और ह्वांगहो घाटी की प्राचीन सभ्यताओं के भग्नावशेषों से प्रमाणित हो चुका है, कि सबसे पहले इन्हीं क्षेत्रों में नगरों की रचना प्रारंभ हुई । इसीलिये इन्हें आदि सभ्यता का क्रोड कहा जाता है। उल्लेखनीय है, कि अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है, कि आदिकाल में इन घाटियों का भौतिक परिवेश मानव संस्कृति के विकास के लिये संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक उपयुक्त था । नगरों की उत्पत्ति और विकास के सुव्यवस्थित अध्ययन के लिये इसे चार कालखण्डों में विभक्त किया जा सकता है –

1. पुरा ऐतिहासिक कालीन नगर विकास (ईसा पूर्व 7000 से 550 वर्ष तक)
2. प्राचीन ऐतिहासिक कालीन नगर विकास (ईसा पूर्व 550 से 450 ई. तक)
3. मध्य युगीन नगर विकास (450 ई. से 1700 ई. तक)
4. आधुनिक कालीन नगर विकास (1700 ई. के बाद)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. पुरा ऐतिहासिक कालीन नगर विकास :

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, कि प्रागैतिहासिक काल में सबसे पहले नगर सदृश्य अधिवासों की उत्पत्ति विश्व की नदी घाटियों–सिंधु घाटी, दजला–फरात घाटी, नील घाटी और ह्वांगहो घाटी में विकसित हुई । जहाँ सबसे पहले कृषि और पशुपालन अनुकूल भौतिक परिवेश के कारण विकसित हुये इसी के आसपास मध्य अमेरिका में भी कृषि और पशुपालन विकसित हुये । नये अनुसंधानों से यह प्रमाणित हुआ है, कि उष्ण कटिबंधीय इन प्रदेशों में प्रथम मानव का उद्‌भव और विकास हुआ था । इन क्षेत्रों के मानव समाज द्वारा ही नगर सदृश्य अधिवासों के निर्माण की घटना को अब विश्वव्यापी स्वीकृति मिल चुकी है ।

- **भारत के प्रगैतिहासिक नगर :**

भारत में नगर निर्माण की कला वैदिक काल में विकसित हो चुकी थी । अब यह प्रमाणित हो चुका है, कि हड़प्पा मोहन जोदड़ो, कालीबंगा, रोपड़, कुनाल, लोथल, पलपल, धौलावीरा आदि वैदिक कालीन नगर हैं । भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने 35 से अधिक स्थानों को सुनिश्चित कर लिया है, जहाँ वैदिक कालीन नगरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं और 700 ऐसे केन्द्रों को सुनिश्चित करने का कार्य चल रहा है, जहाँ वैदिक कालीन नगरों के चिह्न पाये गये हैं । अब यह प्रमाणित हो चुका है, कि वैदिक संस्कृति का विस्तार बलूचिस्तान, सिंध, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक था । यह विस्तृत भूखण्ड अनेक जनपदों में विभक्त था । जनपदों की राजधानियाँ नगरों में थी । उस युग के सर्वाधिक नगर पेयजल, परिवहन, सुरक्षा आदि के कारण नदियों के तट पर बसाये गये थे ।[17] भारतीय ग्रन्थों, पुरातत्व विदों और इतिहासकारों की मान्यताओं के अनुसार भारत वैदिक काल में (7000–6000 ई. पूर्व) छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्यों में विभक्त था। जनसंख्या ग्रामों और निगमों में निवास करती थी । जो निगम राजधानी के रूप में बसाये जाते थे, उन्हें विशेष योजना के तहत सुरक्षा कवच प्रदान किया जाता था । यहाँ राजप्रसाद के अतिरिक्त श्रेष्ठ नागरिकों के लिये विशेष व्यवस्था की जाती थी । महाजनपद को आर्यावर्त कहा गया ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रितानी पुरातत्वविदों द्वारा 1922 में सिन्धु नदी के तट पर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगरों की खोज के बाद यह तथ्य प्रकाश में आया, कि सिन्धु घाटी में 2500 से 2200 ईसा पूर्व नगर रचना काफी विकसित हो चुकी थी । हड़प्पा कालीन अन्य नगरों की खोज के बाद इसे हड़प्पाकालीन संस्कृति का नाम दिया गया। इस सभ्यता का अवसान ईसा से 1500 वर्ष पूर्व माना जाता है । वैदिक कालीन नगरों के उजड़ने के कारणों पर प्रकाश डालते हुये कहा गया है, कि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न बाढ़ और सूखा, भूकम्प, वनस्पति आवरण में ह्रास, सरस्वती नदी का विनाश और उपयुक्त क्षेत्रों की उपलब्धता के कारण समीपवर्ती क्षेत्रों में मानव प्रवास हुआ होगा । वैदिक कालीन नगरों के संबंध में प्राप्त नई जानकारियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है, कि ये नगर व्यापार, कुटीर उद्योग, कृषि यंत्र निर्माण, यातायात के साधनों का निर्माण आदि से संबंधित लोगों की बस्ती थीं। जहाँ उच्च जीवन शैली की प्रधानता थी । इसीलिये इनको सभ्यता का प्रतीक माना जाता है । वैदिक कालीन नगर नियोजित ढंग से बसाये गये थे, जिनमें सड़कों की योजना, जलापूर्ति, जल निकासी और सार्वजनिक उपयोग के स्थल बनाये गये थे । पक्की ईटों से बने भवन एवं परकोटा इनकी सामान्य विशेषतायें थी । इन नगरों का ज्यामितीय विन्यास वेदों में वर्णित व्यवस्था के अनुसार था । इस युग के नगरों में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और धौलावीरा के खण्डहर प्रमाणित करते हैं, कि भरत वास्तु शिल्प में अग्रणी देश है, क्योंकि 5000 ईसा पूर्व विश्व के किसी भाग में सुनियोजित नगर बसाने का कोई प्रमाण अब तक प्राप्त नहीं हुआ ।[18] वैदिक कालीन नगरों में पेयजल के लिये कुँआ, सड़कें, आवास और नालियाँ पक्की ईटों के बने पाये गये । यातायात के साधन के रूप में प्रयुक्त बैलगाड़ी और नाव के अवशेष भी पाये गये हैं ।

- **धौलावीरा** :

धौलावीरा नगर, जो गुजरात तट पर मनसार और मनहार नदियों के मध्य स्थित है, वैदिक कालीन नगर की मान्यता 1986 में प्राप्त कर सका । यह सिन्धु घाटी का सबसे बड़ा नगर प्रमाणित हुआ है । यह एक दुर्ग नगर था, जिसकी जनसंख्या 20 हजार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से अधिक आंकी गई है । यह नगर चहारदीवारी से घिरा था । भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा कच्छ जनपद में किये गये उत्खनन से पता चलता है, कि यह नगर 100 हेक्टेयर पर फैला था; जबकि हड़प्पा 40 हेक्टयर पर फैलाया था । यह मोहन जोदड़ो और हड़प्पा से अधिक सुव्यवस्थित और सुविधा युक्त नगर था । इस नगर में भवन निर्माण, जलापूर्ति, जल निकासी, आभूषण, कलाकृतियाँ, स्नानागार और नगर विन्यास उत्कृष्ट स्तर के पाये गये हैं, जो हड़प्पा और मोहनजोदड़ो से सर्वश्रेष्ठ स्तर के हैं । ऐसा अनुमान है, कि यह नगर ईसा से 3000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में था । भारतीय पुरातत्व विभाग धैलावीरा के अतिरिक्त आलमगीरपुर और हुलास (उ.प्र.), भगवान पुरा, कुणाल और बानवाली (हरियाणा) सुकोदा, लोथल और पाहडरी (गुजरात), कालीबंगा (राजस्थान) और माण्डा (जम्मू) में खुदाई द्वारा सिन्धु घाटी सभ्यता के नगरों का पता लगाया है । यहाँ पीतल, ताँबा और सोने की भी वस्तुएँ पायी गई हैं । मिट्टी के पके बर्तन, खिलौने नालियाँ आदि पक्की ईंटों से नगर रचना प्रमाणित करते हैं, कि यहाँ के लोग इन्हें लकड़ी से पकाते थे ।

- **मोहन जोदड़ो और हड़प्पा :**

मोहनजोदड़ो सिंधु नदी के दाहिने किनारे पर तथा हड़प्पा रावी के बायें किनारे पर बसा था तथा इनके मध्य 600 किमी. की दूरी थी । दोनों नगरों की अनुमानित जनसंख्या 20 हजार से कम थी । मोहन जोदड़ो नगर का विस्तार 80 हेक्टेयर भूमि पर था, जबकि हड़प्पा का विस्तार 40 हेक्टेयर पर था । इन नगरों में गृहों का निर्माण पक्की ईंटों से किया गया था । इन नगरों का बसाव सुनियोजित ढंग से किया गया था। हड़प्पा का 'महाअन्नागार' और मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार इनकी पहचान थे । मोहनजोदड़ो के स्थल पर पक्का कुँआ, स्नानागार, चूल्हा, अग्निकुंड, जलनिकासी की नाली आदि के चिन्ह यह प्रमाणित करते हैं,कि यह एक व्यवस्थित और आरामदायक निर्माण का नगर था । मोहनजोदड़ो के पश्चिमी भाग में 380 मीटर लम्बा तथा 190 मीटर चौड़ा दुर्ग निर्मित था । नगर की मुख्य सड़क उत्तर से दक्षिण फैली थी, जो 10 मीटर चौड़ी थी । इसकी लंबाई एक किलोमीटर के आसपास थी । नगर की अन्य सड़के जो पूर्व पश्चिम दिशा में समानान्तर थी सामान्यतः 6 मीटर चौड़ी थी ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिंधु घाटी के अन्य नगरों में लोथल एक अन्य महत्वपूर्ण नगर माना जा रहा है; जिसके अवशेष खम्भात की खाड़ी तट पर अहमदाबाद से 75 किमी. दक्षिण में पाये गये हैं । इसकी उपस्थिति ईसा से 2500 वर्ष पूर्व मानी गई है । माना जा रहा है, कि यह एक बंदरगाह नगर था, जो सुनियोजित ढंग से बसाया गया था । इस नगर के व्यक्ति व्यापार के अतिरिक्त गृह उद्योग, वस्त्र निर्माण एवं नाव निर्माण में निपुण थे । सतलज के तट पर बसा रोपड़ सम्भवतः सरस्वती के तट पर बसा था, जिसे कालान्तर में सतलज ने अपहृत कर लिया था । इसे 2000 ईसा पूर्व का नगर माना गया है । ऐसा अनुमान है, कि यह एक व्यापारिक नगर था जहाँ कृषि उत्पाद, गृह उद्योग और वन उत्पाद की सामग्रियाँ नदी मार्ग से दूर–दूर तक पहुँचाई जाती थी । कालीबंगा और कुनाल नगर भी सरस्वती नदी के तट पर बसे नगर थे । ये दोनों नगर व्यापार, गृह उद्योग और कृषि के कारण समृद्ध नगर थे, जो सरस्वती नदी के सूखने के बाद उजड़ गये ।

उपरोक्त सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है, कि वैदिक कालीन नगर सुनियोजित ढंग से बसाये गये विश्व के प्राचीनतम नगर हैं । इनकी समृद्धि का आधार कृषि, उद्योग, पशुपालन, व्यापार और वन उत्पाद थे । इनकी जीवन शैली उन्नतिशील और समृद्धशाली थी। प्राकृतिक प्रकोपों के कारण एक के बाद एक नगर उजड़ते गये ।

- **दजला फरात की घाटी के नगर :**

दजला और फरात नदियों की घाटी भी प्रागैतिहासिक काल से लगभग उसी प्रकार प्रगतिशील लोगों द्वारा आबाद थी, जिस प्रकार सिंधु नदी की घाटी । इन दोनों घाटी क्षेत्रों का भौगोलिक परिवेश भी लगभग समान रहा है । दजला और फरात नदियों ने फारस की खाड़ी में गिरने के पूर्व उपजाऊ समतल मैदान की रचना की है । यहाँ भी ईसा से लगभग 5000 से 4000 वर्ष पूर्व मानव बसाव नगरों के रूप में पाये गये हैं । दोनों नदियों के बीच का भाग मेसोपोटामिया का मैदान कहलाता है । संपूर्ण घाटी क्षेत्र को तीन नामों से पुकारा जाता था । दक्षिण भाग को सुमेर, मध्यवर्ती भाग को बेबीलोन तथा उत्तरी भाग को असीरिया कहा जाता था ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **बेबीलोन नगर :**

यह नगर दजला नदी के पूर्वी तट पर ईसा से 2200 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया और लगातार प्रगति कर एक महत्वपूर्ण नगर बन गया । रूसी विद्वानों का विचार है, कि इसका धरातलीय विन्यास वैदिक नगरों के समान है । यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि सिंधु घाटी के आर्य और मेसोपोटामिया के लोगों के परस्पर सम्पर्क में आने के कारण वैदिक ज्यामितीय नियोजन विधि के अनुसार यह नगर बसाया गया होगा । दजला नदी के पूर्वी तट पर बसा यह नगर सुरक्षा कवच के रूप में दोहरी चहार दीवारी से घिरा था । चहार दीवार के बाहर दोहरी सुरक्षा के रूप में चौड़ी खाई निर्मित की गई थी । नगर का विस्तार लगभग 8 वर्ग किमी. पर था और चौक की लंबाई लगभग 2400 मीटर थी । कहा जाता है, कि सुरक्षा की दृष्टि से यह एक अभेद्य नगर था । नगरद्वार और किला उत्तर में स्थित थे; जिसके समीप उपवन और पूजा स्थल स्थित थे । सड़कें व गलियाँ पूर्णतः सुनियोजित थीं । [19]

इसके अतिरिक्त नील नदी की घाटी के नगरों में मेमफिस, हेलियोपोलिस, इल्लाहुन, थेविस और इलकाब आदि नगर हैं ।

- **उत्तर वैदिक या पौराणिक कालीन नगर :**

उत्तर वैदिक काल में आर्यों की उन्नति अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति तक पहुँच गई थी । इस युग में स्थल मार्ग के वाहनों ने दूरियों को कम कर दिया था एवं नौकायन का विकास समुद्री दूरियों को पार करने में सक्षम हो गया था । सिन्ध मैदान में जलवायु परिवर्तन, सरस्वती नदी में जल की कमी, बढ़ती जनसंख्या और गंगा घाटी का बढ़ता आकर्षण जनसंख्या फैलाव के कारण बन गये । इसी समय गंगा के जल की भौतिक गुणों ने इसके प्रति आकर्षण बढ़ा दिया । यहाँ उपजाऊ मिट्टी, उपयुक्त जलवायु एवं उन्नत कृषि औजारों के कारण कृषि उत्पादन बहुत अधिक होने से जीवन यापन आसान हो गया । इस प्रकार गंगा के मैदान की महत्ता बढ़ती गयी, जिससे आर्यावर्त संपूर्ण उत्तरी मैदान तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विस्तृत हो गया । इसी समय इक्ष्वाकु क्षत्रिय योद्धाओं द्वारा सरयू तट पर अयोध्या नामक राजधानी नगर की स्थापना की गई । ये योद्धा अपने को इक्ष्वाकु अर्थात् ईश्वर द्वारा भेजा गया प्रतिनिधि बताकर सामाजिक संगठन को मजबूत बनाने में सफल हुये। सूर्य के उपासक होने के कारण इन्हें सूर्यवंशी कहा गया । कहा जाता है, अयोध्या परकोटा के अंदर बसा अद्वितीय नगर था; जिसकी ख्याति पूरे भारत में विख्यात थी । सूर्यवंशी राजाओं द्वारा अनेक नगरों की स्थापना मध्य गंगा मैदान में की गई, जिनमें रामग्राम, श्रावस्ती, मथुरा, कुशस्थली, पुष्करवटी आदि का वर्णन अनेक ग्रंथों में मिलता है ।

महाभारत कालीन भारत, जिसकी अवधि ईसा से 3100 वर्ष पूर्व मानी गयी है, सूर्यवंशी राजाओं के पराभाव के बाद गंगा की ऊपरी घाटी में चन्द्रवंशी क्षत्रिय राजाओं का प्रभुत्व बढ़ गया और सत्ता का केन्द्र अयोध्या की बजाय हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ में स्थापित हो गया । कालान्तर में यदुवंशियों के उत्कर्ष के साथ मथुरा शक्तिशाली नगर बना। बाद में मथुरा के स्थान पर द्वारिका में यदुवंशियों की राजधानी बसाई गई । महाभारत काल में नगर निर्माण की कला उत्कृष्ट रूप ग्रहण कर चुकी थी । हस्तिनापुर से उत्कृष्ट नगर इन्द्रप्रस्थ था और उससे उक्कृष्ट नगर द्वारिका में बसाया गया, लेकिन महाभारत युद्ध के बाद इस क्षेत्र के नगर उजड़ गये और अधिकांश भूमि पर जंगली आदिवासियों का कब्जा हो गया । महाभारत काल के बाद दो हजार वर्ष तक उत्तरी भारत अन्धकार में डूब गया ।

2. प्राचीन ऐतिहासिक नगर – (ईसा 550 से 450 ई. तक)

भारत में ईसा से 550 वर्ष पूर्व की अवधि को ऐतिहासिक काल माना गया है । इस समय भारत अनेक राज्यों एवं गणराज्यों में विभक्त था इन राज्यों के राजधानी नगर सुरक्षित स्थानों पर बसाये गये थे । ईसा पूर्व की शताब्दियों में भारत में दो महानतम घटनायें हुई । प्रथम बौद्ध और जैन धर्म का उदय और दूसरा सिकन्दर का भारत पर आक्रमण । इन दोनों घटनाओं का प्रभाव न केवल भारत बल्कि पूरे एशिया महाद्वीप पर पड़ा । ईसा से 326 वर्ष पूर्व जब भारत पर यूनानी सम्राट सिकंदर का हमला हुआ, तो उस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समय अभेद्य नगर राजधानी के रूप में सभी राज्यों द्वारा बसाये गये थे । पंचनद के नगरों में पुरूषपुर, तक्षशिला, अटक, अभिसार, जलालपुर, संगला, क्षुद्रक और सौमूर्ति इस क्षेत्र के प्रमुख नगर थे । सिन्धु के निचले भाग में अलोर, सोद्राय, सिन्दिमान और पत्तल प्रमुख नगर थे । पत्तल सिंधु डेल्टा के निकट बसा बंदरगाह नगर था । उस समय उत्तर भारत के विशाल भूखण्ड पर नंद साम्राज्य फैला था; जिसकी राजधानी कुसुमपुर में थी । काशी, प्रयाग, मथुरा, पांचाल, सूरसेन राजगृह, चम्पा, इन्द्रप्रस्थ , हस्तिनापुर और कान्यकुब्ज आदि उस युग के उत्तर भारत के प्रमुख नगर थे । नंदवंशीय साम्राज्य के पराभाव और मौर्य वंश के उदय के साथ अनेक प्रशासनिक नगर बसाये गये । पाटिलीपुत्र उस युग का अद्वितीय नगर था; जिसकी ख्याति संपूर्ण विश्व में व्याप्त थी । यह नगर गंगा के तट पर लगभग 20 किमी. की दूरी तक फैला था । उत्तर में कौशाम्बी दूसरा राजनैतिक प्रभुत्व का नगर था । मध्यवर्ती भाग में कौशाम्बी और उज्जयिनी और दक्षिण में महिसुर दो प्रशासनिक नगर थे, जिन्हें मौर्यसाम्राज्य के प्रबन्धन के लिये बसाया गया था । उल्लेखनीय है, कि मौर्यवंश के उदय के पूर्व अधिकांश भारत नगर राज्यों में विभक्त था । नगर राज्यों की स्थापना का क्रम उत्तर वैदिक काल में शुरू हुआ और महाभारत काल के बाद ऐसे नगर राज्यों की संख्या सर्वाधिक हो गई, क्योंकि आर्यों और अनार्यों को एक संगठन में बांधने का इसके पहले कोई प्रयास नहीं किया गया चन्द्रगुप्त मौर्य पहला सम्राट था, जो भारत को एक वृहद् भौगोलिक इकाई का रूप देने में सफल हुआ । चन्द्रगुप्त द्वारा निर्मित राजधानी नगर पाटिलीपुत्र का वर्णन करते हुए मेगस्थनीज ने लिखा है, कि पाटिलीपुत्र एक समानान्तर चतुर्भुज के रूप में गंगा तट पर बसाया गया नगर था । इसके परकोटे का निर्माण लकड़ी के द्वारा हुआ था, जिसमें बाण भेदन के लिये छेद बनाये गये थे। नगर की सुरक्षा की दृष्टि से खाई बनाई गयी थी जो 180 मीटर चौड़ी और 9 मीटर गहरी थी। नगर में 64 द्वार थे तथा चहारदीवारी पर 570 गुम्बद बनाये गये थे । इतिहासकारों का विचार है, कि पाटिलीपुत्र का विनाश गंगा की बाढ़ और अपरदन के कारण हो गया । मौर्यवंश के महान शासक सम्राट अशोक ने न केवल दक्षिणी छोर तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया, अपितु अफगानिस्तान को भी भारत का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंग बनाया । उस कालखण्ड में (273 से 232 ई. पू.) प्रशासन के उद्देश्य से पूरे भारत में नगरों की स्थापना की गई । पश्चिमोत्तर में काबुल, कन्धार, हिरात, मेकरान, शाहजाबगढ़ी, मानसेरा, विराट और हस्तिनापुर प्रमुख नगर थे । मध्यभाग में पाटिलीपुत्र के अतिरिक्त वैशाली, नालंदा, कालसी, कुशीनगर, नंदनगर, काशी, प्रयाग, उज्जैन, सांची तथा दक्षिण में सोपारा धौली, ब्रह्मगिरी आदि नगर थे।

मौर्यवंश के पराभाव के पश्चात् भारत पुनः नगर राज्यों में बट गया । तीसरी शताब्दी के अंत में गुप्तवंशीय राजाओं ने पुनः भारत को एकसूत्र में बांधने का प्रयास किया । इस विजय अभियान में अनेक नगरों का पतन हुआ, वहीं दूसरी ओर अनेक नगर बसाये गये । उस युग के प्रसिद्ध नगरों में पाटिलीपुत्र के अतिरिक्त साकेत, श्रावस्ती, कुशीनगर, कन्नौज, वैशाली, कौशाम्बी, मथुरा, इन्द्रप्रस्थ, काशी, नालंदा, उज्जैन, पल्लव, कांचिवरम्, महेन्द्रगिरि अधिक महत्वपूर्ण नगर थे छठी शताब्दी तक भारत का प्रभाव पूर्वी और दक्षिण पूर्वी समीपवर्ती देशों पर भी हो गया था। फलस्वरूप भारतीय शासकों ने जावा, सुमात्रा, श्रीलंका, बोर्निया, वाली, कम्बोडिया, चम्पा, स्याम और वर्मा आदि एशियाई देशों में प्रशासनिक नगरों का निर्माण किया ।

3. मध्ययुगीन नगर विकास :

पांचवी से सत्रहवीं शताब्दी के काल को मध्यकाल कहा जाता है । यूरोप में रोमन साम्राज्य के पतन के बाद यूरोप अनेक टुकड़ों में बंटकर विभिन्न अवस्था में पहुँच गया, जिसके कारण पांचवीं सदी से लेकर दसवीं सदी तक की अवधि को अन्धयुग कहा जाता है । भारत में अन्धयुग का तात्पर्य एंतिहासिक अज्ञानता एवं अस्थिरता से ही अधिक है, जबकि यूरोप के नगरों का विकास न केवल रूका हुआ था, बल्कि उनका ह्रास भी हुआ तथा कई क्षेत्रों में नगरीय जीवन गायब सा हो गया ।[20] गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत पर हूणों का आक्रमण पश्चिमोत्तर से शुरू हुआ । 405 ईसा में फाह्यान भारत आया था। उस समय भारत में तक्षशिला, पुरूषपुर, कन्नौज, मथुरा, श्रावस्ती, पाटिलीपुत्र, वैशाली,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुशीनगर, नालंदा, काशी, सारनाथ, राजगृह और ताम्रलिपि महत्वपूर्ण नगर थे । इसके अतिरिक्त भारत के पूर्वी तट पर महेन्द्रगिरि, कोद्दूर, पिष्टपुर, महाकानौर अवमुक्त और कांचीपुर महत्वपूर्ण व्यापारिक और व्यवसायिक नगर थे । 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् नगर निर्माण की प्रक्रिया धीमी पड़ गई, क्योंकि भारत छोटे–छोटे राज्यों में बंट गया । महमूद गजनवी ने भरत पर 17 बार आक्रमण कर पुराने नगरों को सबसे अधिक नष्ट किया, क्योंकि उस समय नगर सत्ता के केन्द्र होने के साथ–साथ सर्वाधिक सम्पन्न थे । इन महत्वपूर्ण नगरों में पेशावर, काबुल, लाहौर, नगरकोटा, मुलतान, थानेश्वर, मथुरा, दिल्ली, आगरा, कन्नौज, ग्वालियर, अजमेर, जैसलमेर, काशी, प्रयाग, पटना, चित्तौड़, उज्जैन, महोबा, जूनागढ़ और सामनाथ की ख्याति पूरे महाद्वीप में फैली थी । दक्षिण में जगन्नाथपुरी, कांची, मदुरै आदि महत्वपूर्ण नगर थे । इस समय राजपूत राजाओं द्वारा राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से दुर्गम स्थानों अर्थात् पहाड़ियों पर किलाबंद नगर बसाये । मैदानी भागों में भूमि को ऊँचा कर चारों ओर दीवार व खाई से सुरक्षा प्रदान कर नगर बसाये गये थे । पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, बिहार, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश में ऐसे नगरों को सर्वाधिक बसाया गया । आठवीं सदी के अंत तक उत्तरप्रदेश और बिहार में दर्जनों नगर बसाये गये और पुराने नगरों का जीर्णोद्धार किया गया । तेरहवीं सदी तक राजपूत राजाओं की शक्ति क्षीण हो गई । आपसी विग्रह के कारण बाहरी आक्रमण से निपटना कठिन हो गया । भारत पर मोहम्मद गौरी के आक्रमण (1175–1206 ई.) के बाद उत्तर भारत अपनी शक्ति खो बैठा, जिससे गुलाम वंश का साम्राज्य पेशावर से बंगाल तक संपूर्ण उत्तर भारत में स्थापित हो गया । इस वंश में सर्वाधिक शक्तिशाली अल्तमश (1210–1236ई.) प्रमाणित हुआ; जिसने अपने राज्य की सुरक्षा के लिये पुराने किला नगरों का जीर्णोद्धार किया । इस अवधि में भारत का गौरवमय इतिहास क्षीण होने लगा था, क्योंकि मुस्लिम शासकों का दमन बढ़ता जा रहा था । इस समय जो भी नगर बसाये गये ऐसी कोशिश की गई कि उसकी योजना और वास्तुशिल्प पश्चिमी एशिया में प्रयुक्त मुस्लिम देशों के समान हो । इस युग में सुरक्षा के लिये नगरों के चारों ओर विशेष प्रबंध किये गये । तुगलक वंश में मोहम्मद बिन तुगलक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था इसने राजपूताना के कुछ भाग को छोड़कर संपूर्ण भारत को अपने साम्राज्य में मिला लिया इसके द्वारा उत्तर से दक्षिण तक संपूर्ण देश में पुराने किला नगरों को सुदृढ़ किया गया । लोदी वंश के शासकों द्वारा अनेक नगर बसाये गये । सिकन्दर लोदी ने आगरा को राजधानी नगर के रूप में प्रथम बार बसाया जो आगे चलकर मुगलों की राजधानी बना ।

उत्तर भारत की अपेक्षा दक्षिण भारत मुस्लिम आक्रमणों से कम आक्रान्त था। फलस्वरूप दक्षिण भारत में हिन्दू राजाओं द्वारा राजधानी नगरों के अतिरिक्त मंदिर नगर, बंदरगाह नगर, किला नगर और व्यापारिक नगरों की स्थापना की गई । 13वीं सदी में चोल, चेर और पाण्ड्य शासकों द्वारा सर्वाधिक नगर स्थापित किये गये। मदुरई, कांचीपुरम, तंजौर, तिरूवन्तपुरम, कम्भकोनम् तिरूनवेली, कोयम्बटूर, नगरकोईल, राजमहेन्द्री, तिरूचरापल्ली, तिरूपति, अलेप्पी मंदिर नगर के रूप में अस्तित्व में आये । कालीकट, कोच्चीन, मछलीपट्टम्, विशाखापटनम्, काकीनाडा, मंगलोर आदि बंदरगाह नगर अस्तित्व में आये । प्रशासनिक नियंत्रण के लिये स्थापित किला अनुकूल परिस्थितियों में नगर के नाभिक बन गये; जिसके फलस्वरूप विजय नगर, नेल्लोर, सिंगानल्लूर बंगलोर, बेलगाम, मैसूर, विजयवाड़ा , बेलारी, एल्लूस, हैदराबाद, गुलवर्ग, हुबली जैसे नगर विकसित हुये ।[21] बाबर द्वारा भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना (1525 ई.) से लेकर सत्रहवीं सदी तक मुगलों के शासन काल में सर्वाधिक नगर अस्तित्व में आये । अकबर द्वारा आगरा को राजधानी नगर के रूप में पुनः बसाने के बाद यह भारत का विशालतम नगर बन गया । अकबर द्वारा इलाहाबाद, फतहपुर सीकरी, लखनऊ, जलालाबाद, फिरोजाबाद, अकबर पुर, जलालपुर, मुगलसराय, बैंगलोर, हैदराबाद, अमृतसर, राजमहल, बरेली, हुगली, चंद्रगिरि, उदयपुर आदि नगरों का उदय हुआ । इसी वंश के शासक जहाँगीर ने जहाँगीराबाद, अनूप शहर और गोण्डा की स्थापना की । शाहजहाँ ने शहजहानाबाद, मुरादाबाद, और मुज्जफरपुर को बसाया । आजमगढ़ औरंगाबाद, सीरा और वेलोर नगरों की स्थापना औरंगजेब द्वारा की गई । मुगल शासकों द्वारा भारत के बाहर अनेक नगर काबुल, कन्धार, श्रीनगर, बदरवशाँ आदि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर बसाये । अकबर द्वारा सूरतगढ़, जैसलमेर, बीकानेर, अमरकोट, मारवाड और जोधपुर आदि मुगल नगरों की स्थापना की ।

मुगलसाम्राज्य के पतन के पश्चात् मराठा साम्राज्य की स्थापना से बड़ौदा, अहमदाबाद, दमन, असीरगढ़, बीजापुर और नागपुर जैसे नगर अस्तित्व में आये । इसी समय फ्रांसीसी, पुर्तगाली, डच और अंग्रेज व्यापारियों के अधिवास समुद्रतटीय क्षेत्रों में बनने लगे ।

मध्यकालीन नगरों के उद्भव एवं विकास के सर्वेक्षण से स्पष्ट है, कि यूनानी, रोमन और मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ नगर निर्माण की जो संस्कृति इस युग में विकसित हुई, उसकी विरासत आज भी देखने को मिलती है। इसी प्रकार इस्लाम और ईसाई धर्म ने नगरीय जीवन को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । संक्षेप में मध्यकालीन नगरों के उद्भव और विकास में निम्न कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है –

क. रक्षा कवच के साथ किला नगरों की स्थापना ।

ख. सामरिक स्थलों पर नगरों का अभ्युदय ।

ग. धार्मिक स्थलों पर नगरों का प्रभाव ।

घ. राजशाही के उदय के साथ नगरों के स्वरूप में परिवर्तन ।

ड. व्यापार और दस्तकारी के विकास के साथ नगरों की स्थिति , बसाव और विकास ।

च. नगर के फैलाव में युगों से प्रचलित परकोटा के अवरोध का अंत ।

4. आधुनिक काल में नगरों का उद्भव और विकास :

आधुनिक कालीन नगरीकरण काइतिहास विविधताओं से परिपूर्ण है । 800 ई. के बाद नगरों की उत्पत्ति, विकास और क्षेत्रीय संगठन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया । विश्व के ऐसे देश जहाँ नगर कहने लायक कुछ ही बस्तियाँ थी, विगत दो सौ वर्षों में वहाँ की तीन चौथाई जनसंख्या विशाल नगरों में बसी है । आधुनिक काल में यूरोप में विशेषतः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंग्रेजों के औपनिवेशिक प्रभावों में वृद्धि हो रही थी । समुद्रतटीय क्षेत्रों में बंदरगाह तथा व्यापार केन्द्रों की स्थापना पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों, डच, फ्रांसीसियों द्वारा की जा चुकी थी। इसके साथ–साथ भारत के आंतरिक भाग में अंग्रेज अपने शासन के विस्तार हेतु प्रयत्नशील थे । प्लासी के युद्ध के पश्चात् ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव बढ़ा; जिससे व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि हुई । इसी कारण समुद्रतटीय क्षेत्रों में अनेक बंदरगाह नगरों जैसे– दमन, दीव, चोल, गोवा, बंबई, सूरत, कलकत्ता, मद्रास, माही, कालीकट, पाण्डिचेरी, कोचीन का विकास किया गया । स्पेट महोदय का विचार है [22]– जब तक कंपनी के प्रभाव में भारत रहा तब तक समुद्रतटीय क्षेत्रों एवं देश के पूर्वी भाग में नगरीकरण का विकास हुआ; लेकिन जब देश पूर्णरूपेण ब्रिटेन के अधिकार में आ गया, तब से नगरों के विकास को विशेषरूप से प्रोत्साहन मिला । अंग्रेजों द्वारा व्यापारिक क्षेत्र में निरंतर वृद्धि होने से यातायात में वृद्धि हुई । इससे भारत में यूरोपीय अर्थव्यवस्था का प्रभाव छा गया । ग्राम्यवासी नगरीय जीवन की ओर आकर्षित होने लगे परिणामस्वरूप अनेक नगरों का विकास हुआ । आधुनिक काल में नगरों के उद्‌भव और विकास की दृष्टि से आधुनिक काल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है । आधुनिक काल में नगरों की संख्या, आकृति, संगठन और महत्व में क्रांतिकारी बदलाव आया है; जिसके लिये निम्न कारक उत्तरदायी हैं –

1. वैज्ञानिक और तकनीकी विकास
2. औद्योगिक क्रांति
3. व्यापारिक क्रियाकलाप की समृद्धि
4. तीव्र जनसंख्या वृद्धि
5. नये शक्ति के साधनों का अविष्कार
6. औपनिवेशीकरण
7. यातायात के नये साधनों का विकास
8. उत्खनन का विकास
9. अवाध नगरीय विस्तार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

10. सामाजिक संगठन में परिवर्तन
11. तृतीयक कार्यों में वृद्धि
12. राष्ट्रीय चेतना का विकास
13. वैश्वीकरण अवधारणा का उदय
14. नवीन नगरीय संस्कृति का उदय
15. प्राथमिक कार्यों का विकास

आधुनिक युग को विज्ञान और तकनीकी उन्नति का युग कहा गया, क्योंकि ज्ञान–विज्ञान की मदद से नये–नये यंत्रों का विकास हुआ, इसलिये इसे कलयुग भी कहा जाता है । यंत्रों की सहायता से द्वितीयक और तृतीयक कार्यों में क्रांतिकारी बदलाव आया । उन्नीसवीं सदी में औद्योगिक क्रांति उन वीरान स्थलों पर नगर और महानगर को जन्म देने लगी; जिसकी कभी कल्पना नहीं की गई थी । औद्योगिक नगरों का जन्म और विकास आधुनिक काल की सबसे बड़ी घटना कही जा सकती है । संपूर्ण विश्व में कारखाना नगर अपनी पहचान बनाने में सफल हुये हैं । इस प्रकार कुछ नगर महानगर में बदल गये। मध्ययुग में स्थापित व्यापारिक क्रियाकलाप आधुनिक काल में शिखर पर पहुँच गया; जिसके कारण नये व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना हुई । आधुनिक काल को शक्ति के साधनों के अन्वेषण और दोहन का युग माना जाता है । कोयला, तेल, बिजली और अणुशक्ति के विकास और उपभोग से आर्थिक–सामाजिक विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया । सड़क, रेल और जल यातायात के विकास से आधुनिक काल में नगरों की उत्पत्ति और विकास का नया अध्याय शुरू हुआ । नदियों के किनारे बसने वाली पुरानी परंपरा समाप्त हो गई। बंदरगाह नगर, रेलपथ नगर, सड़क पथ नगर और मार्ग संगम नगर अस्तित्व में आये । आधुनिक काल में विविध खनिजों के उत्खनन स्थलों के समीप नगरों की स्थापना विश्वव्यापी रूप में देखी जा सकती है । जैसे झरिया, बोकारो, जोहन्सवर्ग ऐसे ही नगर हैं । इसी प्रकार आधुनिक काल में परकोटा के अंदर नगर बसाने की प्रक्रिया बिल्कुल समाप्त हो गई है । फलस्वरूप नगरों का विस्तार अबाध रूप से होने लगा है, दिल्ली और नई दिल्ली इसके प्रमाण हैं । नगर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फैलाव की प्रक्रिया इतनी प्रबल हुई, कि दो नगर मिलकर सन्नगर बन गये । उदा. संयुक्त राज्य अमेरिका का पूर्वीभाग, रूर घाटी, टोक्यो खाड़ी क्षेत्र इसके प्रमाण हैं। आधुनिक काल में नगरीय संस्कृति का भौतिकवादी स्वरूप इतना आकर्षक हो गया है, कि सभी राष्ट्र अपनी उन्नति नगरीय जीवन से मापने लगे हैं । फलतः नगरों की ओर जनसंख्या पलायन आधुनिक काल की एक महत्वपूर्ण घटना है । इस प्रक्रिया से नये नगरों के उदय और पुराने नगरों के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग मिला है । आधुनिक काल के नगरों के उद्‌भव और विकास पर प्राथमिक कार्यों विशेषकर कृषि के विकास का भी गहरा प्रभाव पड़ा है । पश्चिमी देशों की व्यापारिक कृषि के कारण मण्डी नगरों का जन्म हुआ है । भारत में भी कृषि के विकास के कारण अनेक नगर कृषि आधारित उद्योगों के कारण अस्तित्व में आये हैं ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि नगरों का उद्‌भव एवं विकास एक अनिवार्य कालिक एवं स्थानिक प्रक्रिया का प्रतिफल है । कालिक प्रक्रम के संदर्भ में नगरों का जीवन इतिहास का संवरण करता है; जिसमें नगरों की उत्पत्ति एवं वृद्धि की अवस्थायें परिलक्षित होती हैं; जबकि स्थानिक संदर्भ में नगरों की भैगोलिक प्रासंगिकता ही इनकी मात्रात्मक तथा गुणात्मक वितरण विन्यास से परिलक्षित होती है । सम्भवतः विश्व के नगर न तो एक समय की उत्पत्ति है और न नगरों की वृद्धि की अवस्था एक सी पायी जाती है। नगरों की उत्पत्ति एवं उद्‌भवशील विकास मूलतः आर्थिक प्रौद्योगिकी अवस्थाओं में उन्नयन की अनुक्रिया मानी जा सकती है । इस संदर्भ में कहा जा सकता है, कि सभ्यता एवं संस्कृति के विभिन्न चरणों के अनुरूप नगर आर्थिक सामाजिक संगठन की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति को परिलक्षित करते हैं । सामान्यतः आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी विकास की प्रारंभिक, आंतरिक और समकालीन अवस्थाओं की अनुक्रिया में नगरों की कालिक और स्थानिक विकास प्रक्रिया संपन्न होती रही है । मानव सभ्यता विकास का प्रथम चरण जनसंसाधन सुलभ प्रदेशों में पशुपालन एवं कृषि स्थायी अधिवासों की उत्पत्ति के रूप में पाया गया है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगरीय उद्‌भव तथा विकास के दूसरे चरण का संबंध व्यापारिक अर्थव्यवस्था उन्नति से जुड़ा पाया गया है । सभ्यता के विकास के मध्य युग में कृषिगत उत्पादन में आशातीत उपलब्धि एवं परिवहन प्रौद्योगिकी की उन्नति के समर्थन से व्यापारिक क्रियाओं से प्रेरित नगरों में संख्यात्मक गुणन और प्रादेशिक वितरण के साथ आकार में वृद्धि का गुण पाया गया । नगरों के उद्‌भव तथा विकास का समकालीन आयाम मानव सभ्यता की आधुनिक अवस्था के प्रारंभिक चरण से संबंधित माना गया; जबकि नगरों के उद्‌भव और विकास का मूल आधार उद्योग पर आधारित अर्थव्यवस्था में निहित है । औद्योगिक विकास में तीव्रता के साथ नगरीय विकास में वृद्धि तथा विकास एक अनिवार्य अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट हुआ है।

इस प्रकार हम कह सकते है, कि आधुनिक आर्थिक–प्रौद्योगिकी ने समकालीन तीव्र नगरीकरण के तहत नगरों के उद्‌भव और विकास को एक नया आयाम प्रदान किया है । औद्योगिक विकास तथा प्रौद्योगिकी में उन्नति की गति तथा स्वरूप अपने समकालीन परिप्रेक्ष्य में नगरीय वृद्धि की प्रवृत्ति को नया आयाम प्रदान किया है ।

❑ नगरीय भूगोल की विषय – वस्तु

किसी भी विषय का अध्ययन क्षेत्र उसकी परिभाषा में निहित रहता है। अतः परिभाषा की विस्तृत व्याख्या से यह बात स्पष्ट हो सकती है, कि उस विषय की सीमा में किन– किन बातों को अध्ययनार्थ शामिल किया जा सकता है। इससे उन परंपराओं और विद्याओं के बारे में भी जाना जा सकता है, जो सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ विषय की अध्ययन विधि को प्रभावित करती रही है।

अर्थशास्त्री, भूगोलविद्, समाजशास्त्री एवं भूगोलवेत्ता सभी नगरीय अधिवास का अध्ययन विभिन्न दृष्टिकोणों से करते हैं । भूगोलविद् नगरीय अधिवासों को पृथ्वीतल पर मनुष्य द्वारा निर्मित बस्ती के रूप में मानता है। इस प्रकार उसके अध्ययन का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधार, नगर का आकार एवं प्रशासन की सीमा तक ही न होकर, वह इन अधिवासों के क्रियाकलापों, विशेषकर सांस्कृतिक, औद्योगिक, व्यापारिक, प्रशासनिक और आवासीय विशेषताओं का अध्ययन करता है, जिनसे नागरिक आवासीय एवं समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्र के लोग संबंधित एवं प्रभावित होते है। इस प्रकार एक नगरीय समुदाय के कार्यो में कृषिगत कार्य त्याज्य नहीं है। पहले यह माना जाता था कि "नगरीय भूगोल का अध्ययन क्षेत्र नगर के स्थिति उसके बाह्य स्वरूप और आंतरिक संरचना के विश्लेषण तक सीमित है; लेकिन अब अध्ययन क्षेत्र के नये आयाम जुटने लगे हैं, क्योंकि नगरों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यताओं में परिवर्तन आने लगे है। साथ ही नगर अधिक जनसंख्या दबाव से बोझिल होने लगे हैं; जिससे नई समस्यायें जैसे प्रदूषण, सामाजिक विघटन, नागरिक सुविधाओं का अभाव और नगर उपान्त क्षेत्र जैसे पक्ष नगरीय भूगोल के विषयवस्तु बन गये हैं।[23] विभिन्न भूगोलवेत्ताओं ने नगरीय भूगोल को भिन्न–भिन्न तरीके से प्रस्तुत करनें का प्रयास किया है जो निम्नप्रकार से है –

डब्ल्यू के. डी. डेवीज[24] ने 1970 में (Approaches to Urban Geography: An Overview) नामक लेख में नगरीय भूगोल के अध्ययन में निम्न तीन पहलुओं को समाहित करने का सुझाव दिया है –

1. **तत्व**
   - अ. वातावरण – बसाव स्थान एवं स्थिति
   - ब. जनसंख्या – जनसंख्या संबंधी विशेषताएं
   - स. कार्यिक क्रियाकलाप – नगरीय कार्य
   - द. नगरीय आकारिकी – नगर निर्मित क्षेत्र संबंधी भूदृश्य
2. **परिदृश्य**
   - अ. स्थायी सरंचना विभिन्न भागों का संबंधीकरण – अन्तरनगरीय एवं अन्तः नगरीय सरंचना एवं प्रवाह
   - ब. गत्यात्मक प्रक्रिया – कालिक परिवर्तन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. नगरीयता की व्यवस्था

अ. नगरीकरण की प्रक्रिया

ब. विभिन्न नगरों के संदर्भ में नगर एक

इकाई के रूप में – नगर एक वितरण केन्द्र के रूप में

स. नगर का क्षेत्र प्रभाव

द. नगर एक क्षेत्र के रूप में – आंतरिक सरंचना

इसी प्रकार राबर्ट ई. डिकिन्सन महोदय ने नगरीय भूगोल के विषय क्षेत्र को निम्न चार प्रमुख वर्गो में समाहित किया है [25] –

1. नगरों की संस्थिति एवं अवस्थिति
2. नगरों का ऐतिहासिक विकास इसमें नगरों की उत्पत्ति को भी शामिल किया जाता हे।
3. नगरों की सरंचना – इसमें नगर की सरंचना के दोनों पक्षों –

   अ. कार्यात्मक एवं जनांकिकीय

   ब. नगर विन्यास या आकारिकीय सरंचना को सम्मिलित किया जाता है।
4. नगरीय अधिवासों की सीमायें – इसके अन्तर्गत नगर और उसके प्रभाव – क्षेत्र के बीच सम्बन्धों का अध्ययन समाहित है।

पृथक नगरों के उपर्युक्त प्रकार के विश्लेषण के अतिरिक्त प्रादेशिक स्तर पर उनका तुलनात्मक अध्ययन कार्यात्मक और आकारिकीय तौर पर किया जाता हैं। नगरीय भूगोल के विषय – क्षेत्र के बारे में सभी नगरीय भूगोल वेत्ताओं ने एक स्वर होकर इस ओर ध्यान आकर्षित किया है। वह यह, कि नगरीय भूगोल के अध्ययन के दो सर्वमान्य पक्ष हैं –

1. नगर का पृथ्वीतल पर एक पूर्ण क्षेत्रीय इकाई के रूप में अध्ययन
2. नगर के बाह्य स्वरूप और संरचना का अध्ययन। एक पूर्ण भौगोलिक इकाई के रूप में नगर के अध्ययन के दो भागों में विभक्त किया जाता है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क. भौतिक इकाई के रूप में स्थिति, उद्‌भव एवं विकास, आकार वितरण आदि का अध्ययन और

ख. कार्यात्मक इकाई या प्रदेशिक केन्द्र के रूप में नगर के कार्यो या उसके समीपवर्ती तथा अन्य क्षेत्रों से उसके संबंधों का अध्ययन करते हैं। नगरों के अध्ययन का दूसरा पक्ष उसका बाह्यस्वरूप होता है; जिसके अन्तर्गत नगरों के विन्यास, वास्तुकला, मकानों की व्यवस्था आदि के साथ–साथ नगरों की अन्तर्गत सम्पादित होने वाले कार्यो का अध्ययन क्षेत्रीय भिन्नता के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है। अतः नगर के स्वरूप और कार्यो को विश्लेषित करने के लिये भूमि उपयोग प्रतिरूप को चिह्नित कर नगर की आकारिकी का अध्ययन किया जाता है। इसके लिये सूक्ष्म अध्ययन विधि के द्वारा नगर के व्यवसायिक स्वरूप, आवासीय सुविधा, भूमि मूल्य और भूमि उपयोग जैसे पक्षो का अध्ययन किया जाता है।

किसी भी नगरीय अध्ययन में भूगोलवेत्ता का सबसे पहला काम है – बस्ती (नगर) के स्थल एवं परिस्थिति की विशेषताओं का सही निर्धारण है।[26] भूगोलवेत्ता का दूसरा कार्य नगर की उत्पत्ति एवं विकास का इतिहास ज्ञात करना है। ऐसा करते समय भूगोलवेत्ता को यह नहीं भूलना चाहिए, कि वर्तमान बस्ती की व्याख्या के उद्‌देश्य की पूर्ति के लिए इतिहास केवल सहायक है, अपने आप में उद्‌देश्य नहीं।[27] इन्हीं बातों की तरफ संकेत करते हुए मेयर महोदय कहते है – " कि नगरीय भूगोलवेत्ता का संबंध एक कार्यात्मक और एक भौतिक इकाई के रूप में नगर से है वह नगरों के 'पर्यावरण' से एवं नगरों के 'भीतर' स्थित पर्यावरणों से सबंध रखता है। रावल ब्लैन्चर्ड के अनुसार किसी नगर के भौगोलिक अध्ययन का संबंध निम्नलिखित 4 प्रकार की मुख्य समस्याओं से है –

1. नगरीय केन्द्र की उत्पत्ति के लिए उत्तरदायी भौतिक एवं सांस्कृतिक दशायें।
2. ऐतिहासिक घटनाओं से प्रभावित नगरीय केन्द्र की उसके कार्यात्मक एवं आकारिकीय विकास में प्रतिक्रियायें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. वर्तमान बस्ती का जीवन एवं संगठन, स्थानात्मक दृष्टिकोण से दोनों की तरह से अर्थात् पूर्ण इकाई के रूप में और उसके भीतर पाई जाने वाली विभिन्नताओं के संबंध में

4. नगर तथा इसको घेरने वाले क्षेत्र के परस्पर संबंध।[28]

नगरीय भूगोल में भिन्न – भिन्न समस्याओं की अध्ययन पुनः दो पहलुओं में किया जाता है –

1. व्यक्तिगत नगरों का अलग–अलग क्रमबद्ध अध्ययन इसके अन्तर्गत किसी एक नगर या कुछ नगरों का अलग–अलग अध्ययन किया जाता है – बारी – बारी से और उसके हरपक्ष को लेकर स्थिति आदि से उसके प्रभाव क्षेत्र एवं प्रादेशिक संबंधों तक ।

2. नगरों का तुलनात्मक अध्ययन या प्रादेशिक नगरीय भूगोल इसके अन्तर्गत हम किसी प्रदेश विशेष के सभी नगरों का तुलनात्मक अध्ययन एक साथ करते है।

नगरीय भूगोल के अध्ययन सामग्री या विषय वस्तु को इन तीन पहलुओं या पक्षों के रूप में भी रखा जाता है –

1. आकारिकी
2. कार्य और विकास

1. आकारिकी :

नगरीय क्षेत्र के भीतर जितने भी तत्व प्रतिरूप या विशेषतायें हैं (जिनमें नगरीय क्षेत्र का स्वरूप तथा आन्तरिक संरचना के तत्व भी शामिल है – उन सबका अध्ययन इन सब में करते है यद्यपि वर्तमान विशेषताओं पर अधिक बल दिया जाता है) लेकिन उसके अंग–प्रत्यंगों का विकास या परिवर्तन कैसे हुआ है और भविष्य में कैसे हो सकता है नगरो के इस विकास पक्ष का भी अध्ययन किया जाता है।[29]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. कार्य :

नगरीय कार्यो के अध्ययन के 2 पक्ष है – अ अपने प्रदेश के केन्द्र के रूप में नगर के कार्यो का अध्ययन ब नगर के भीतर पाये जाने वाले कार्यो की विभिन्नता या वितरण , जो नगर के निवासियों संस्थानों एवं भूमि– उपयोग में भी लगभग समान रूप से परिलक्षित होते है तथा प्रादेशिक केन्द्र के रूप में किये गये कार्यो से जिनका प्रत्यक्ष संबंध होता है नगर नियोजन का संबंध अधिकांश कार्यो के आन्तरिक विभिन्नीकरण (अर्थात् दूसरे पक्ष) से है। कार्यो के अध्ययन में विकास–पक्ष का भी अध्ययन कर सकते है। आकारिकी एवं कार्य दोनों इतने एक दूसरे से संबंधित है, कि उनका अध्ययन अलग–अलग करना तो अवश्य संभव हो सकता है; लेकिन अध्ययन एकदम अधूरा ही रह जाएगा इसलिए कार्यो के साथ आकारिकी एवं आकारिकी के साथ कार्यो का भी अध्ययन करते है।

3. विकास :

समय की दृष्टि से भी नगरीय क्षेत्रों का अध्ययन करते है, अर्थात् उनकी उत्पत्ति एवं विकास को सम्पूर्ण इकाई के रूप में तथा उनके भीतरी भागों को लेकर दोनों दृष्टियों से देखते हैं। विकास के अध्ययन में अन्य दोनों पक्षों का अध्ययन किसी न किसी रूप में करना ही होता है, क्योंकि संपूर्ण नगर का निर्माण उसके आकारिकीय तत्वों एवं कार्यो का ही परिणाम होता है।[30]

नगरीय भूगोल के अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात यह है, कि नगर का अध्ययन एक अलग और पूर्णतः स्वतंत्र इकाई के रूप में नहीं किया जा सकता। नगर के उन कार्यो एवं संबंधों की तरफ ध्यान देना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है; जिसके कारण नगर अपनी सार्थकता या अस्तित्व को सिद्ध करते हैं। मेयर महोदय भी इसी संबंध में कहते हैं, कि नगरीय भूगोलवेत्ता का संबंध नगरों के आर्थिक आधार के अध्ययन से है .....।[31] इसी बात को स्पष्ट करते हुये डिकिन्सन महोदय कहते हैं कि "वे क्रियायें जो विशिष्ट रूप से नगरीय हैं, वे या तो समीपवर्ती क्षेत्रों को सेवायें प्रदान करने के लिए या उन क्रियाओं को

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सम्पादित करने के लिये जो किन्ही संसाधनों के साथ सम्बद्ध है या उन स्थानों पर जहाँ ऐसे संसाधन सुविधाजनक ढ़ग से एकत्रित किये जा सकते हैं, स्थित होती है"[32] निवास, काम, यातायात तथा मनोरंजन – अपने इन चारों कार्यो के लिये प्रत्येक नगरीय बस्ती तथा उसका प्रभाव प्रदेश उस पूर्ण तंत्र का एक भाग है जो आर्थिक, सामाजिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक सभी उद्देश्यों से संगठित है। नगरों का विस्तार आसपास के क्षेत्रों पर बढ़ता जाता है तथा क्षेत्रीय केन्द्र के रूप में उसका प्रभाव बहुत बडे क्षेत्र पर होता है, जिसमें बहुत से छोटे–बडे ग्रामीण अर्द्धनगरीय तथा नगरीय केन्द्र भी क्षेत्रीय कार्यो के सम्पादन में सहायक होने के लिये विकसित होते है। इसीलिए नगरीय न केवल नगर की भौगोलिक एवं राजनैतिक सीमाओं के भीतर ही उसका अध्ययन करते है; बल्कि उसके उपान्तों एवं अन्य संबंधित क्षेत्रों का भी अध्ययन करते हैं, परन्तु उसी सीमा तक जहॉ तक नगर से उसका संबंध है।

उपर्युक्त विवरण से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर नगरीय भूगोल की विषय – वस्तु को निम्न चार प्रकार से वर्णित किया जा सकता है –

1. नगर का एक इकाई के रूप में अध्ययन :

इसमें नगर की संस्थिति , अवस्थिति , स्थिति मार्ग संगमता , उत्पत्ति एवं विकास, आकार, जनसंख्या सरंचना आकारिकीय संरचना, भूमि उपयोग, कार्यात्मक सरंचना आदि को सम्मिलित किया जाता है।

2. नगर एवं उसके प्रभाव क्षेत्र के संबंधों का अध्ययन :

इसमें नगर के बसाव क्षेत्र, नगरीय ग्रामीण उपान्त, नगर प्रभाव क्षेत्र, केन्द्र स्थल सेवा केन्द्र के रूप में नगर, उपग्रहीय नगरो, अर्द्ध नगरीय बस्तियों, ग्रामीण नगरीय प्रवाह आदि विषयों के अध्ययन को समाहित किया जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. नगर –नगर के संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन :

इस अध्ययन में नगरों की तुलना उनकी कार्यात्मक एवं आकारिकीय विशेषताओं के आाधार पर की जाती है।

4. नगरीय समस्यायें, नियोजन एवं सुझाव :

इसमें नगरीय भूमि उपयोग, नगरीय बसाव (मलिन बस्तियां) नगरीय परिवहन, नगरीय पर्यावरण प्रदूषण, नगरीय प्रकार्यो नगरीय समाजिकी संबंधी समस्याओं का अध्ययन कर नियोजन हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जाते है।

❑ नगरीय भूगोल की आधारभूत संकल्पनायें :

अन्य विषयों की तरह नगरीय भूगोल के भी मूल आधार के रूप में कुछ संकल्पनायें है। किसी प्रदेश के नगरीय भूगोल को अच्छी तरह समझने के लिये इन संकल्पनाओं का पूर्वज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। संकल्पनाओं से हमारा तात्पर्य उन समान्य कारणों से है, जिन्हें हमने नगर तथा उसके अध्ययन के भिन्न–भिन्न पक्षों के बारे में चुना है। इन संकल्पनाओं को प्राथमिकता के क्रम में रखा जा सकता है। कुछ संकल्पनायें तो नगरीय भूगोल को समझने के लिये अधिक महत्वपूर्ण है। अन्य बातों को समझने के पहले उनको समझना या जानना आवश्यक होता है। जैसे 'नगर' क्या है और वह 'ग्रामीण बस्तियों या क्षेत्रों से कैसे भिन्न है – इसका ज्ञान हमें सबसे पहले होना चाहिए। अतः 'नगर' की संकल्पना नगरीय भूगोल की सबसे अधिक मौलिक संकल्पना है प्राथमिकता के आधार पर प्रमुख व संकल्पनाओं को निम्नानुसार वर्णित किया गया है। ' नगर ' और उसके भिन्न–भिन्न रूप की संकल्पना का वर्णन भी किया गया है ये सभी संकल्पनाऐं आपस में एक दूसरे से संबंधित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **नगर और उसके भिन्न–भिन्न रूपो की संकल्पनायें :**

यह नगरीय भूगोल की पहली और सर्वाधिक आधारभूत संकल्पना है जिसका सही तथा सर्वमान्य निर्धारण स्वतः एक समस्या है। इसके अन्तर्गत दो प्रकार की संकल्पनाऐं आती हैं – 1. नगर क्या है और यह किस प्रकार अनगरीय (अर्थात् ग्रामीण या अर्धग्रामीण) स्थानों से भिन्न है। तथा 2. आकार , विस्तार, और समूहन के आधरों पर नगर के भिन्न–भिन्न रूप क्या है?

'नगर' नगरीय बस्ती, नगरीय स्थान, तथा नगरीय केन्द्र चारों का एक ही अर्थ है, क्योंकि एक ही नगर बस्ती, स्थान (क्षेत्र) और केन्द्र इन सभी रूपों में होता हे। 'नगर' शब्द को कुछ लोग ' City' का समानार्थक समझते है। लेकिन यह 'नगर' शब्द का अत्यन्त संकीर्ण अर्थ है। इस अर्थ में नगरीय भूगोल केवल शहरों का ही भूगोल सिद्ध होता है जबकि यह सभी नगरीय बस्तियों का भूगोल है "प्राचीनकाल में नगर प्रायः आकार में काफी छोटे और कम विकसित होते थे सभी नगरों को प्रायः City कह दिया जाता था;[33] लेकिन City (शहर) का अर्थ बड़ी और विकसित नगरीय बस्तियों से है।

- **नगर एवं नगरीय स्थान की संकल्पना :**

नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों को पहचानना सामान्यतया आसान है, लेकिन इनको परिभाषित करके स्पष्ट करना अपेक्षाकृत काफी कठिन कार्य है, विशेषतया आज की परिस्थितियों में जब वे सभी सुविधां जिन्हें सम्पन्न है।आमतौर पर यहॉ के निवासियों को नगरीय समझा जाता है देहातों में भी उपलब्ध हो रही हे जैसे – पक्की सड़के , पक्के मकान, रेडियों, टेलीविजन और समाचारपत्र, मोटर गाड़ियो विद्युत आपूर्ति की सुविधायें , जिनके कारण नगरीय जीवन अब ग्रामीण जीवन से भिन्न नहीं रह गया है। इसके अतिरिक्त प्राचीनकाल में नगर या तो दीवारों या इसी प्रकार की अन्य स्पष्ट सीमा रेखाओं से घिरे रहते थे, जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों से उनको अलग करना आसान था ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **नगरीय और ग्रामीण :**

इन शब्दों को प्रायः एक दूसरे का विरोधी माना जाता है अतः एक का अर्थ समझने के लिये हमें दूसरे को भी जानना पड़ेगा अर्थात् इन दोनों के बीच के भेदों को स्पष्ट करना होगा अतः "नगर और देहात एक सातत्य या निरन्तरता के रूप में हैं न के द्वैत के रूप में।[34] इन कठिनाइयों के अतिरिक्त यह भी एक बड़ा सत्य है कि नगर की धारणा भिन्न – भिन्न व्यक्तियों , संस्थाओं सभ्यताओं और देशों तथा उनकी परिस्थितियों और समय के साथ बदलती रही है।" नगर के लिये भिन्न – भिन्न भाषाओं में व्यवहृत शब्दों और उनके व्युत्पत्ति मूलक अर्थो से भी नगर के बारे में कुछ बातें स्पष्ट हो सकती है। अंग्रेजी में Town शब्द का प्रयोग अधिक प्रचलित रहा है। 'City' शब्द का प्रयोग पहले Town के अर्थ में किया जाता था। अतः ये दोनों शब्द लगभग समानार्थक थे। 'City' शब्द मूलतः लैटिन शब्द Civilas से निकला है , जो Civilization का भी मूल है तथा जिसका उपयोग शुरू में रोमन साम्राज्य के संगठन जिले के लिये किया जाता था। ब्रिटेन में आज भी City का प्रयोग प्रधान गिरजाघर रखने वाले नगर के लिये लोकप्रिय अर्थ में हो रहा है। रेटजेल महोदय के अनुसार नगर एक बड़े स्थल भाग तथा कई व्यापारिक मार्गो के केन्द्र पर बसा हुआ मनुष्यों एवं अधिवासों का एक स्थायी सतत् और घना समूह है।[2] नगर की तुलना ग्रामीण क्षेत्रों से करते हुये रेटजेल महोदय ने तीन प्रमुख बातों की तरफ ध्यान आकर्षित किया है –

1. पेशे से संबंधित कोई क्रिया जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं पशुपालन तथा नगरों में व्यापार एवं उद्योग,
2. मकानों का केन्द्रीकरण (नगरों में घनत्व अपेक्षाकृत काफी अधिक होता है) और
3. निवासियों की एक न्यूनतम संख्या (जो नगरों के लिये उन्होंने 2000 रखी है)

रेटजेल महोदय ने नगर की क्रियाओं में व्यापार पर अधिक बल दिया है।

नगर की भिन्न – भिन्न परिभाषाओं में निम्न प्रमुख आधारों या मापदण्डों का सहारा लिया गया है, उनको इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते है

1. बस्ती या स्थान के कार्य या उद्यम तथा भूमि उपयोग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. मकानों या जनसंख्या का घनत्व और बस्ती की सघनता (Compactness) जो मकानों एवं बस्तियों के बीच की दूरी से तय की जाती है तथा स्थायित्व
3. बस्ती का आकार
4. बस्ती का प्रशासकीय दर्जा, सीमायें एवं महत्व
5. भिन्न – भिन्न व्ययक्तियों , क्षेत्रों या सरकारों की निजी धारणायें।

नगर की उपर्युक्त से स्पष्ट है कि नगर किसी भी न्यूनतम आकार का हो सकता है, लेकिन उसे मानव बस्ती की एक स्थायी तथा सतत् इकाई के रूप में होना चाहिए जो अप्राथमिक कार्यो में विशिष्टता रखता हो। अप्राथमिक कार्यो का प्रतिशत तथा नगरीय घनत्व की न्यूनतम संख्या स्पष्ट रूप से निश्चित नही की जा सकती, लेकिन अत्यन्त प्रधानता शब्द से इतना अवश्य मालूम होता है कि यह प्रतिशत संख्या 50 प्रतिशत से निश्चित अधिक तथा कम से कम 2/3 भाग के आसपास होनी चाहिए तथा नगर में मकान, बस्तियां या निर्माण इतने पास–पास हो कि 'एक' सतत् अर्थात् सघन अप्राथमिक इकाई का निर्माण अवश्य हो सके।

- **नगरों की स्थिति स्थल एवं परिस्थिति :**

किसी भी नगरीय अध्ययन में नगर कहॉ और किन परिस्थितियों में स्थित है – इसका पूर्णज्ञान प्रारंभ में ही करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि यह एक भौतिक आधारशिला है जिस पर नगर का संपूर्ण जीवन–ढ़ॉचा खड़ा होता हे। सबसे पहले हम यह जानने का प्रयास करते हैं कि अध्ययन किये जाने वाले नगर पृथ्वी के ग्लोब पर या ज्ञात बिन्दुओं के संदर्भ में ठीक–ठीक कहॉ स्थित हैं यह उनकी स्थिति है। नगर जिस धरातल को घेरे हुए स्थित है, व उसका स्थल है, तथा वह जिन भौतिक सांस्कृतिक परिस्थितियों से घिरा हुआ है या उनके बीच स्थित हे, उन्हें उनकी परिस्थिति कहते हे। किसी भी प्रदेश के नगरीय भूगोल में नगरों का प्रथम परिचय देना आवश्यक है। और परिचय में दो बातों के बारे में अवश्य ही बताना होगा – नगर कहॉ है और कितना बड़ा है। अतः नगरों की स्थिति एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आकार– दोनों नगरीय भूगोल की प्रारंम्भिक संकल्पानयें है।अतः 'स्थिति की अवधारण क्या है, इसका ज्ञान प्रारंभ में ही होना आवश्यक है।

- **नगरीय भूगोल की अन्य संकल्पनायें :**

अभी तक हमने जिन संकल्पनाओं की विवेचना की है वे अत्यन्त प्रारम्भिक एवं मौलिक है। नगरीय भूगोल की अन्य संकल्पनायें प्रमुखतः निम्नलिखित हैं –

1. नगरों की उत्पत्ति, वृद्धि एवं विकास संबंधी संकल्पनायें, जिनमें नगरीय फैलाव या विस्तार भी शामिल है।
2. नगरीकरण तथा नगरीकरण एवं आर्थिक विकास के संबंधों की संकल्पनायें ।
3. नगरों के वितरण एवं दूरी की संकल्पनायें।
4. नगरों के आकार का कोटि, वितरण एवं दूरी इत्यादि से संबंधों की संकल्पनायें ।
5. नगरों की स्थिति अर्थात् स्थानीयकरण की संकल्पनायें तथा केन्द्र स्थल संकल्पता
6. केन्द्रीयता तथा पदानुक्रम की संकल्पता।
7. नगरों के प्रभाव–प्रदेशों या सेवा–प्रदेशों की संकल्पता।
8. नगरों के मण्डल या तन्त्र की संकल्पता।
9. नगरीय आकारिकी की संकल्पता। जिसके अंतर्गत तथा जिसके साथ नगरीय वृद्धि के सिद्धान्त, नगरों के आंतरिक प्रदेश, केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र इत्यादि बहुत सी संकल्पनायें शामिल है।
10. उपान्तों या बाह्य भागों या नगरों की संकल्पनायें, जिसके अन्तर्गत नगरीय ग्रामीण सातव्य की संकल्पना भी शामिल है।
11. नगरीय प्रादेशीकरण तथा नगरीय नियोजन की संकल्पनायें ।[35]

- **नगर तथा उसकी संकल्पना :**

इस संकल्पना के अंतर्गत पी.ए. सोरोकिन ने नगर–ग्राम की ऐतिहासिक विभिन्नता पर प्रकाश डालते हुए यह प्रमाणित करने की चेष्टा की है कि ग्राम और नगर की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्पत्ति एक ही बिन्दु से हुई है परंतु कालान्तर में नगर का विकास होने से दोनों में विभिन्नता आ जाती है इस प्रक्रिया को उन्होंने ज्यामितीय ढंग से दर्शाते हुए 'परवलयिन फलक' की संज्ञा दी है उनका कहना है कि नगर का निर्माण बहुत ही मन्थर गति से प्रारंभ होता है और अंत में नगर ग्राम की विभिन्नता एक पराकाष्टा को पहुंच जाता है। फिर एक समय आ जाता है जब ग्राम की चरम विभिन्नता समीपवर्ती ग्रामों के विकास अथवा नगर के ह्रास अथवा दोनों के पारस्परिक सम्मिश्रण से बहुत ही कम हो जाता है रेडफील्ड (1941–1953) ने सभ्यता की उत्पत्ति और विकास के सिलसिले में प्राचीन नगरों की उत्पत्ति पर भी विचार किया है । माया संस्कृति के प्राचीन नगरों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह प्रमाणित किया है, कि इन नगरों की उत्पत्ति धार्मिक कार्य कलापों में निहित है। माया संस्कृति के नगरों का विकास मेसोपोटामिया के नगरों के विपरीत केन्द्र और पुरोहितों के आधिक्य के कारण हुआ अतएव यह न समझना चाहिए कि ग्रामों से नगरों की उत्पत्ति न केवल भौतिक एवं आर्थिक कार्यों की बहुलता के कारण ही होनी है।

नगरों के उत्पत्ति की ऐतिहासिक कहानी जो भी हो, यह स्पष्ट है कि औद्योगिक क्रांति के बाद नगरीकरण पर की यन्त्रीकरण और औद्योगिकरण के प्रभाव का आधिक्य है। औद्योगिकीकरण के प्रभाव के कारण आज नगरों का दिन विकास होता जा रहा है और गांव से नगर की ओर आवास हो रहा है। पाश्चात्य देशों में नगरों की संख्या और आबादी में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, वह हम लोगों से छिपी नहीं है।[36]

- **नगर और उसके विविध रूप की संकल्पता :**

नगरीय अधिवास उतने ही प्राचीन है, जितनी मानव समाज की सभ्यता/प्राचीनकाल में नगर रचना विशेष उद्देश्य, विशेष स्थान, और विशेष ढंग से की जाती थी/नगरीय अधिवास छोटे आकार से लेकर वृहद् आकार के होते हैं, फलतः ऐसे अधिवासों के लिये अनेक नामों का प्रयोग किया जाता है जैसे ग्रागर केन्द्र, केनद्र स्थल, कस्बा, शहर, महानगर, सन्नगर, वृहद् महानगर, वैधानिक नगर, भौगोलिक नगर, नगरीय क्षेत्र एवं मेट्रोपोलिटन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्टैण्डर्ड एरिया आदि । इन शब्दाबलियों का प्रयोग नगरीय भूगोल मे विशेष अर्थों में किया जाता है।

- **ग्रागर केन्द्र :**

इस नाम का प्रयोग उन मानव बस्तियों के लिये किया जाता है, जो अपने विकासक्रम न तो नगर होते हैं और न ग्रामीण बस्ती के समान। जब अनेक ग्रामीण अधिवास, गैर कृषि कार्यों के प्रोत्साहन से बाजार का रूप ग्रहण कर लेते हैं तो वहाँ विकास की दिशा नगर उन्मुख हो जाती है इस संक्रमण की स्थिति में वे न तो ग्राम रह जाते है। और न उन्हे पूर्व नगर ही कहा जा सकता है यहाँ का ग्रामीण जीवन गैर कृषि कार्यों के बावजूद सरल, सादा एवं आत्मनिर्भर होता है इन्हें बाजार ग्राम भी कहा जाता है।

- **केन्द्रस्थल :**

चाहे कोई भी अधिवास ग्रामीण हो या नगरीय जब अपने चतुर्दिक फैले क्षेत्र से अन्योन्यक्रिया द्वारा आबद्ध होता है तो उसे केन्द्र स्थल कहा जाता है। केन्द्र स्थल अपनी क्षेत्रीय पहचान वस्तुओं और सेवाओं के आदान–प्रदान द्वारा बनाता है।

- **कस्बा :**

कस्बा छोटे नगरीय अधिवासों को कहा जाता है, लेकिन कभी–कभी कस्बा के लिये टाउन शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है। जैसे ए.ई. स्मेल्स ने इसका प्रयोग नगर के संदर्भ में किया जाता है।[37] सामान्यतः 20 हजार से कम जनसंख्या वाले कस्बे को छोटा कस्बा और 50 हजार से अधिक आबादी वाले को बड़ कस्ब कहा जाता है।

- **नगर :**

शहर से आशय पूर्ण विकसित नगरीय अधिवास से होता है। सामान्यतः नगर/शहर एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले अधिवासों को कहा जाता है जहाँ नगरीय भूदृश्यावली स्पष्ट रूप से विकसित पाई जाती है। यहाँ नगरीय संगठन अपने सामान्य रूप

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में देखने को मिलता है । नगर की जीवन शैली पूर्णतः नगरीयता प्रकट करती है। जब ऐसे नगरों की जनसंख्या दस लाख की सीमा पार कर जाती है सागर इन नगर के अन्तर्गत आता है क्योंकि यहां का नगर पालिका निगम क्षेत्र की जनसंख 1991 के अनुसार 1 लाख 95 हजार 346 (1,95346) है। इस कारण सागर नगर के अन्तर्गत आता है।

- **महानगर :**

विशाल एकाकी नगर के लिये महानगर शब्दावली का प्रयोग किया जाता है ऐसे नगर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के होते है। महानगरों की विशालता न केवल इनकी जनसंख्या एवं विस्तार में निहित होती है अपितु ये नगरीय कार्यों में विशेषीकरण के केन्द्र, आर्थिक शक्ति और दोहरी जिन्दगी के केन्द्र बन जाते है। क्योंकि इनके आस–पास नगर सीमा के बाहर दूर तक नगर जैसा विस्तार बन जाता है जो महानगर का वैद्य अंग न होते हुये उस पर निर्भर रहता है। भारत में दिल्ली, मुम्बई, कोलकता आदि महानगर इसके उदाहरण है।

- **सन्नगर :**

जब दो नगर पास–पास स्थित हो जाते है। तो कभी–कभी फैलते हुये आपस में मिल जाते है। वैद्यानिक रूप में अन्तर होते हुये भी इनका व्यक्तित्व एक जुड़वा नगर की तरह हो जाता है जिन्हें सन्ननगर के नाम से पुकारा जाता है। उदा. के लिए दिल्ली और गाजियाबाद, हैदराबाद और सिकन्दराबाद । ये नगर एक दूसरे के पूर बन जाते है।

- **नगरीय भूगोल की उपागम – विधियाँ :**

जिस प्रकार एक ही स्थान तक पहुँचने के लिये कई रास्ते या तरीके हो सकते है, उसी प्रकार नगर और उसके भूगोल का अध्ययन भी कई ढंगों या दृष्टिकोणों से किया जाता है जिन्हें उपागम की विधियाँ कहते हैं । भूगोल के दो प्रसिद्ध उपागम है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. क्रमबद्ध उपागम
2. प्रादेशिक उपागम

अब तक के अधिकांश नगरीय अध्ययनों में वृहद् पैमाने पर क्रमबद्ध उपागम का ही उपयोग हुआ है, लेकिन उनके भीतर छोटे स्तरों पर प्रादेशिक विधि का भी उपयोग देखने को मिलता है। अतः उपागमों का यह द्वैतवाद नगरीय भूगोल पर स्पष्टतः बहुत ही कम लागू होता है।

- **एकाकी अध्ययन उपागम :**

इसके अंतर्गत नगरों का अध्ययन दो विधियों से किया जाता है ।

- **पूर्ण इकाई के रूप में :**

इस विधि के अनुसार भूगोलवेत्ता नगर को पृथ्वीतल पर एक पूर्ण इकाई के रूप में देखता है तथा एक नगर या कई नगरों की स्थिति, स्थल एवं परिस्थिति से प्रारंभ करके संपूर्ण नगर के विकास, जनसंख्या, कार्य, वितरण, प्रादेशिक संबंध इत्यादि सभी पहलुओं का क्रमबद्ध (क्रमानुसार) रूप से अध्ययन करता है। उस विधि को यीट्स एवं गार्नर ने नगरतंत्र विधि (City System approach) नाम दिया ।[38]

- **नगरों के आन्तरिक भागों का अध्ययन :**

इसे आकारिकीय उपागम भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत नगरीय संरचना के सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है, जिसके कारण नगरीय भूदृश्यावली की विविध विशेषतायें एवं भिन्नताएं उत्पन्न होती हैं। इसके नगर के आन्तरिक विन्यास, विकास, प्रक्रिया, कार्यो की व्यवस्था, जनसंख्या की गतिशीलता, आवासीय व्यवस्था और नगरीय सुविधाओं की व्यवस्था आदि का विवेचन और मूल्याकंन किया जाता है। यह उपागम नगर नियोजन के लिये अत्यंत उपयोगी है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **क्रमबद्ध उपागम :**

क्रमबद्ध उपागम के अन्तर्गत एक क्षेत्र के नगरों का तुलनात्मक और एकाकी दोनों प्रकार का अध्ययन किया जाता है। किसी क्षेत्र विशेष में विभिन्न युगों के नगर प्राप्त हो सकते है; जिनमें कालिक प्रभव के कारण उनके अव्यव समान नहीं पाये जातो हैं फलतः तुलनात्मक अध्ययन आवश्य हो जाता है। क्रमबद्ध उपागम की निम्नांकित दो विधियां वर्णित की गई है।

- **प्रतीक अध्ययन विधि :**

प्राचीन नगरों में ऐतिहासिक घटनाओं के कारण नगर के पुराने और नये क्षेत्रों में अंतर पाया जाता है अतः नगर के नवीनीकृत विकास के लिए प्रतीक विधि से अध्ययन कर सभी पक्षों का नये संदर्भ में मूल्याकंन किया जाता है, ताकि योजनाबद्ध विकास के लिये मार्ग प्रशस्त किया जा सके। भारत में अधिकांश पुराने नगरों के ब्रितानी काल में विकसित सिविल लाइन्स क्षेत्र के कारण संपूर्ण नगर की समस्या समान नहीं पाई जाती, अतः प्रतीक अध्ययन आवश्यक होता है।

- **तुलनात्मक प्रादेशिक विधि :**

इसे मण्डलीय विधि भी कहा जाता है। इस विधि के अन्तर्गत पृथ्वीतल या उसके किसी प्रदेश में स्थिति नगरों का अध्ययन तुलनात्मक दृष्टि से करते हैं ताकि सामान्यीकरण के द्वारा क्षेत्री विकास के लिये आधार प्रस्तुत किया जा सके। सेवा केन्द्रों के रूप में नगर क्षेत्रीय संगठन की धुरी माने जाते है। यह नगरीय भूगोल का अत्यंत उपयोगी तथा लोकप्रिय विधि है, क्योंकि इस विधि के द्वारा नगरों के बारे में सामान्यीकरण अत्यंत आसानी से हो सकता है। यह एक मूल भौगोलिक विधि है, जिसका उद्देश्य भिन्न–भिन्न नगरीय क्षेत्रों की संपूर्ण एवं आन्तरिक विभिन्नताओं को स्पष्ट कर निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

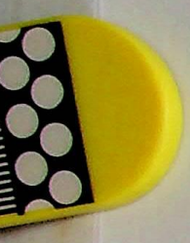

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **आर्थिक उपागम :**

किसी भी नगर की महत्ता का मुख्य आधार उसके आर्थिक कार्य होते हैं। इन कार्यों का मूल्यांकन कालिक और स्थानिक दो आधारों पर किया जाता है। यदि कोई पुराना नगर किसी कार्य के विशेषीकरण से अपनी पहचान बना चुका है और बाद में वहाँ पर नये उद्योगों की स्थापना होती है, तो नगर के कार्य में जो परिवर्तन उत्पन्न होता है उसके मूल्यांकन के लिये आर्थिक उपागम का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। इस उपागम का अध्ययन दो विधियों से किया जाता है।

- **उत्पत्तिमूलक या विकासात्मक उपागम :**

इसे ऐतिहासिक उपागम भी कहते है, क्योंकि नगर एवं इसकी विशेषताओं को इसमें 'समय' के संदर्भ में देखा जाता है। जैसा डिकिन्सन महोदय ने स्पष्ट किया है – ''इसमें हम नगर की उत्पत्ति से लेकर उसके वर्तमान स्वरूपों तक के पूरे विकास के इतिहास का अध्ययन करते है।''[39] स्पष्ट है कि नगरों की उत्पत्ति और विकास की व्याख्या में सबसे पहले उनकी स्थिति, स्थल एवं परिस्थिति का अध्ययन आवश्यक हो जाता है इस विधि में नगरों की अवस्थायें, स्वरूप, वितरण (भूत तथा वर्तमान दोनों में), विस्तार एवं समूहन इत्यादि का अध्ययन उत्पत्ति से लेकर आज तक का किया जाता है।

- **कार्यात्मक उपागम :**

इसे आर्थिक आधार उपागम भी कहते हैं। नगरीय कार्य की श्रेणी में उन सभी कार्यों को समाहित किया जाता है जो नगरीय जीवन के लिये आवश्यक होते हैं। इनमें आर्थिक कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जो नगरीय जीवन को आधार प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक प्रशासनिक जैसे (सादृश्य) कार्य भी स्थान अनुसार संपादित होते हैं। नगर जिन आर्थिक कार्यों को संपादित करता है उनको दो वर्गों में विभक्त किया जाता है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

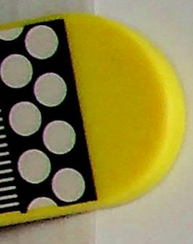

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ. आधारी आर्थिक कार्य

ब. गौण आर्थिक कार्य

इन कार्यों के संपादन के लिये नगर में एक व्यवस्था पाई जाती है जिनका क्षेत्रीय विभेदीकरण कार्यात्मक विधि से उद्‌घाटित किया जा सकता है। नगर के अंदर किसी क्षेत्र विशेष में किसी विशेष प्रकार की दुकानों की उपस्थिति के लिये अवश्य कुछ कारण होते हैं, जिनका पता लगाना कार्यात्मक विधि से संभव है। यह भी उल्लेखनीय है कि नगर के कार्यों का संबंध न केवल नगर की सीमा तक न होकर नगर के बाहर सेवा क्षेत्रों तक होता है जो नगर आधारी आर्थिक कार्यों के संपादन में अग्रणी होता है उसकी आर्थिक सम्पन्नता अधिक होती है क्योंकि वह बाहरी क्षेत्र से अधिक आय प्राप्त कर क्षेत्रीय मुख्यालय बन जाता है।

- **आगमन और निगमन मूलक उपागम :**

नगरीय भूगोल के अध्ययन में दोनों विधियों का विशिष्ट तरीके से प्रयोग किया जाता है, क्योंकि नगर अति संश्लिष्ट रचना के अधिवास होते हैं। इनके इस स्वभाव के कारण व्यक्तिगत अवधारणा में अधिक अंतर के कारण निष्कर्ष को सर्वग्राह्य बनाना कठिन हो जाता है, अतः मात्रात्मक विश्लेषण आवश्यक हो जाता है।

- **आगमनमूलक, व्यवहारिक और गुणात्मक उपागम :**

नगरों के अध्ययन की यह प्रचलित विधि है। मेयर के अनुसार "हाल तक नगरों के अध्ययन में आगमनमूलक विधि द्वारा एकाकी और सामूहिक रूप में गुणात्मक निष्कर्ष निकाले जाते रहे हैं।"[40] आनुभाविक आधारों पर निकाले गये निष्कर्ष को कभी–कभी सर्वग्राह्य बनाने में कठिनाई उत्पन्न होती है। इस उपागम में संश्लेषण की प्रमुखता के कारण क्षेत्रीय अध्ययन अधिक सरल होता है लेकिन सामान्यीकरण में केवल आनुभाविक आधार होने के कारण गल्तियाँ हो जाती हैं फिर भी कुछ कठिनाईयों के बावजूद इनका उपयोग भारतीय नगरों के अध्ययन में अनेक विद्वानों द्वारा किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **निगमनमूलक, सैद्धान्तिक और सांख्यिकीय उपागम :**

इस विधि द्वारा नवीनतम सूचनाओं को आधार बनाकर विश्लेषणात्मक ढंग से नगरों का अध्ययन किया जाता है। इस विधि में सामान्य से विशेष की ओर तार्किक ढ़ंग से बढ़ा जाता है। कुछ मान्यताओं या संकल्पनाओं के आधार पर अध्ययन शुरू कर सिद्धान्तों के प्रतिपादन का प्रयास किया जाता है। इसके लिये विस्तृत और सघन जानकारी के लिये आंकड़ों का चयन, संग्रह और उपयोग किया जाता है ताकि अध्ययन को वस्तुनिष्ठ बनाया जा सके। यदि समुचित आंकड़े उपलब्ध नहीं होते तो क्षेत्रीय अध्ययन के द्वारा आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं। इन तथ्यों का पुनः क्षेत्रीय परीक्षण करके तथ्यगत बनाया जाता है ताकि वह सर्वग्राह्य बन सके। इसका उदाहरण नगरों का कोटि आकार नियम है। यदि किसी नगर की जनसंख्या ज्ञात हो तो उसका कोटि आकार ज्ञात हो जाता है, और यदि कोटि ज्ञान हो तो उसकी जनसंख्या ज्ञात की जा सकती है। नगरों के कार्यात्मक वर्गीकरणों के लिए वर्तमान में लगभग सभी विद्वान सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर रहे हैं; क्योंकि इनमें सूक्ष्मता और शुद्धता की मात्रा अधिक मिलती है। सांख्यिकीय विधियाँ साधन अथवा 'विधि' मात्र है और 'साध्य' के रूप में है। सैद्धान्तीकरण या सामान्यीकरण और निगमन जिनका परीक्षण या उपयोग भिन्न–भिन्न क्षेत्रों या नगरों पर होता है अतः इस सिद्धान्तों का उपागम भी कहा जाता है।

माण्डेल तथा मण्डल – नगरीय भूगाल के अध्ययन मे अब एक नई विधि का प्रयोग शुरू हुआ है जिसे मॉडल और तंत्र विधि का नाम दिया गया है मॉडल उस आदर्श चित्रण को कहते है जो वास्तविक परिस्थितियों के सूक्ष्मीकरण से प्राप्त निष्कर्षों पर आधारित होता है। दूसरे शब्दों में यह एक काल्पनिक आदर्श स्थिति का द्योतक होता है जिसका ताना–बाना सूक्ष्म अध्ययन पर आधारित होता है। इसका उपयोग विशेष परिस्थितियों में किया जाता है। मॉडल के निर्माण द्वारा किसी घटना या तथ्यों के समूह की व्याख्या आसान, संक्षिप्त और शीघ्रतर हो जाती है, क्योंकि मॉडेल निर्माण की प्रक्रिया में सूक्ष्मीकरण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करते समय अनावश्यक और असंबंधित बातों को छोड़ देते हैं जिससे निष्कर्ष के रूप में हमें सामान्यीकृत एवं सरलीकृत स्वरूप ही प्राप्त होता है।

"भिन्न–भिन्न घटक अंगों के एक साथ मिलकर कार्य करने से बनी हुई सुसम्बद्ध कार्य इकाई को मण्डल कहते है।" उदा. जैसे स्नायुमण्डल और केन्द्रस्थल मंडल। मंडल दो प्रकार के हो सकते हैं –

1. बंद मंडल :

जिनका बाहर से कोई संबंध नहीं होता। जो पूर्णतः स्वतंत्र इकाई के रूप में कार्य करते हैं।

2. खुले मंडल :

जो बाहर से आदान प्रदान का संबंध रखते हैं इसीलिये अपने में बंद या पूर्ण न होरक बाह्य संबंधों पर भी आश्रित होते हैं।

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

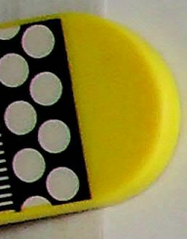

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. Hartshorne, Richard
"Geography is concerned with accurate orderly and rational description and interpretation of the variable character of the earth's surface"_
2. सिंह, ओमप्रकाश ,1979नगरीय भूगोल,तारा पब्लिकेशन्स वाराणसी पृ. क्र..3
3. "In general settlement geography has to do with the facilities men build in the process of occupying an area ..... settlement features, per se, and in their groupings."_ C.F. Kohn, 'Settlement Geography," American Geography, Inventory and prospect, 1954 P.125
4. "In general it deals with the facilities like houses and highways, built by man in the process of land occupance and their groupings."_R.L. Singh, "Meaning, objectives and scope of Settlement Geography," N.G.J.I., 7 (1) , March 1961, P.20 Prof. Singh has followed almost completely and re-explained the views of C.F. Kohn and R.E. Dickinson here
5. "City Geography is at one end of the scale of Settlement, pioneering at the other." -
Isaiah Bowman, "Settlement by the Modern Pioneer", Geography in the 20th Century,1965, P.266
6. जैन एस.एम., 1995 भौगोलिक चिंतन एवं विधितंत्र, साहित्य भवन आगरा पृ.क्र.5
7. जैन, एस.एम.,1995 भौगोलिक चिंतन एवं विधितंत्र, साहित्य भवन, आगरा पृ.क्र. 9
8. मिश्र कृष्णकुमार, अधिवास भूगोल, प्रथम संस्करण 1994, कुसुम प्रकाशन अतर्रा पृ.क्र. 1–2
9. It is concerned with interpreting the pattern and relationship that exist within urban areas on the one hand and between urban areas and the non urban areas that cities serve on the other." Mayer, H.M., Geography and Urbanism, Reading in Urban Geography, 1967,P.7
10. सिंह, ओ.पी.,1987 नगरीय भूगोल तारा बुक एजेन्सी वाराणसी पृ.क्र. 6
11. Urban Geography deals with spatial aspects of Urban development - even to include non-Urban areas as they relate cities. The concern is with determing the areal pattern associated with-urban centres and in explaining these arrangements- Murphy, R.E., The American City : An Urban Geography, 1966 P.1-2

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

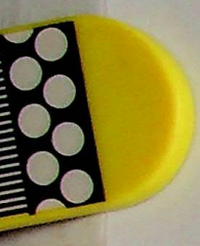

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

12. "Scientific examination and valuation of other regional variations, both over wide areas and within the urban complex itself are essential problems of Urban geography"- Dickidnson, R.E. The scope and status of Urban Geography : An Assessement in Mayer & Kohn, Readings in Urban Geography pp 11-12.

13. Blach, Vidal de la, Principles of Human Geography, P. 147

14. करण, एम.पी., नगरीय भूगोल, तृतीय संस्करण, किताब घर कानपुर पृ.क्र.12

15. तिवारी, आर.सी.1999, अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृ.क्र.153

16. राव, डॉ. पी.पी. एवं शर्मा नन्देश्वर, 2000–2001 नगरीय भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर पृ.क्र. 7

17. राव, बी.पी. भारत की ऐतिहासिक विरासत और आर्य उ.भा.भू. पत्रिका, 1994.

18. भारत के नगर, प्रगति प्रकाशन, मास्को 1984., पृष्ठ 18

19. Godeon, S. The origin and Evolution of Cities, Scientitic America, 1950, P.P.55-68

20. सिंह, ओम प्रकाश, नगरीय भूगोल, 1979 तारा पब्लिकेशन, वाराणसी पृ.क्र. 124

21. Ramesh A. & A.G. Noble, Pattern and Process in South Indian Cities, Delhi 1977.

22. Spate O.H.K., India and Pakistan : A General and Regional Geography London, 1954 P.166

23. राव, डॉ. पी.पी. एवं शर्मा नन्देश्वर, 2000–2001 नगरीय भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर पृ.क्र. 8

24. तिवारी, आर.सी.1999, अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद पृ.क्र.154 एवं वंसल सुरेशचंद्र, नगरीय भूगाल, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ चौथा संस्करण पृ. क्र. 31.

25. "Dickinson, R.E. 1967 : The scope and status of Urban Geography - An Assessment in Readings in Urban Geography, edited by H.M. Mayer and C.F. Kohn, Central Book, Allahabad pp 10-16.

26. The first task of the geographer in an urban study is to determine exactly the characteristics of the site and situation of the settlement." R.E. Dickinson, The scope and status...." op cit, p 12.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

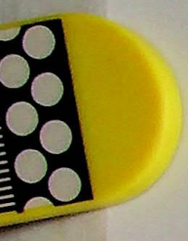

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

27. "History must be made subsidiary to this main object" - Dickinson - "The Scope and Method....." op. cit p 7

28. सिंह, ओम प्रकाश, 1979 नगरीय भूगोल, तारा पब्लिकेशन वाराणसी पृ.क्र. 8 – 10

29. सिंह, ओम प्रकाश, 1979 नगरीय भूगोल, तारा पब्लिकेशन वाराणसी पृ.क्र. 11 – 12

30. सिंह, ओम प्रकाश, 1979 नगरीय भूगोल, तारा पब्लिकेशन वाराणसी पृ.क्र. 12

31. "Urban Geography is concerned with the study of the economic base of cities....." - H.M. Mayer, Geography and Urbanism," op. cit p. 7, also item, "Urban Geography," op. cit p. 143.

32. "The specifically urban activities are all located either to serve a surrounding territory or to carry out activities that are tied to certain resources or where such resources can be conveniently assenbled." - Dickison, "The scope and status....." p10.

33. Dickinson, "City and Region" p. 20.

34. Mayer, H.M. & C.F. Khn Reading in Urban Geography op. cit. p. 27

35. सिंह ओम प्रकाश, नगरीय भूगोल 1979 तारा पब्लिकेशन, वाराणसी पृ. क्र. 26–47

36. करन म.प., यादव जी. पी. राम सुरेश 1983 अधिवास भूगोल पृ. क्र. 18–19

37. Dickinson R.E., The Scope and Status of Urban Geography. An Assessment in Readings in Urban Geography op. cit. p 19

38. Yeayrd, M.H. and Garner, G.J., The North American City, New York, 1991, p.p. 5-7.

39. "The precise site and layout of the initial settlement and the made of its extension are analysed in close conjunction with the conditions of its historical development." - R.E. Dickinson, Ibid, p. 9.

40. "Until relatively recently most Urban geographic investigations were predominantly empirical and inductive, concerned with building up a body of substantive knowledge from which generalizations could be made" - H.M. Mayer, " A survey of Urban Geography. They study of urbanization, op, cit. p. 81

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

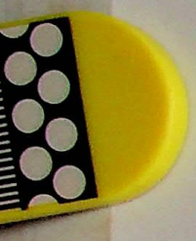

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

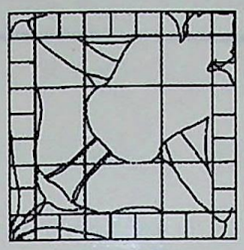

वास्तु पुरुष

"वास्तोष्पते प्रति पतीह्यस्मान त्वावेशो अति मीनो भवान्
यत् त्वमीह प्रतिन्नो जमुस्वंशनो भव द्विपदे शा चतुष्पदे।
(ऋग्वेद-मंडल ७/सूक्त ५४/श्लोक १/पृ. ११५)

अध्याय तृतीय

नगर नियोजन से संबंधित सिद्धान्त

- नगर नियोजन का अर्थ एवं परिभाषा
- नगर नियोजन से संबंधित भौगोलिक सिद्धान्त
- नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त
- नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन
- स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप आदर्श नगर की संकल्पना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

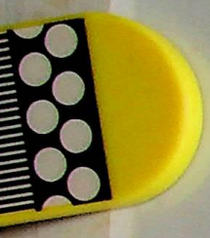

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

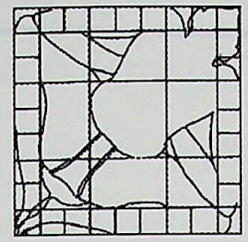

वास्तु पुरुष

"वास्तोष्पते प्रति पाती हयस्मान त्वावेशो अति मीनो भवान्
यत् त्वमेह प्रतिन्नो जमुस्वंशनो भव द्विपदे शा चतुष्पदे।
(ऋग्वेद-मंडल ७/सूक्त ५४/श्लोक १/पृ. ११५)

अध्याय तृतीय

नगर नियोजन से संबंधित सिद्धान्त

- नगर नियोजन का अर्थ एवं परिभाषा
- नगर नियोजन से संबंधित भौगोलिक सिद्धान्त
- नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त
- नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन
- स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप आदर्श नगर की संकल्पना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

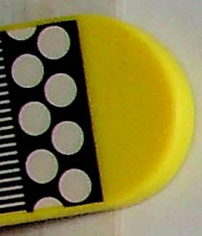

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर नियोजन से संबंधित सिद्धान्त

नगर मानव की सांस्कृतिक उपलब्धियों का विशिष्ट केन्द्र होता है। यह एक विशिष्ट स्थान पर जनसंख्या के एक ऐसे वृहत् समूह को प्रदर्शित करता है ; जिसमें आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है। इस विविधता के कारण ही नगर के विभिन्न भागों के भूमि उपयोग, कार्यात्मक विशेषताओं, इमारती विन्यास एवं संघटन में अंतर पाया जाता है। वर्तमान सदी के उत्तरार्ध में न केवल नगरीय जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण नगरों की संख्या और आकार में बेतहाशा वृद्धि हुई है ; बल्कि नगरों में भोजन, आवास, परिवहन, जलापूर्ति, जल निकास, प्रदूषण, जनस्वास्थ्य आदि समस्यायें जटिल होती जा रही हैं। इनका निराकरण नगरीय नियोजन के द्वारा ही किया जा सकता है ; जिससे न केवल वर्तमान नगरों को अधिक अच्छा और रहने योग्य बनाया जा सकता है ; बल्कि उन्हें भावी पीढ़ी के लिये भी बेहतर निवास स्थान के रूप में सुरक्षित रखा जा सकता है।

नियोजित नगर विकास की अवधारणा वैदिक कालीन समाज की देन है, जब सुविकसित योजनाबद्ध अधिवासों का उदय हुआ। भारत में आदिकालीन नगर हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगा, लोथल, धोलावीरा आदि सुनियोजित बसाव के प्राचीनकालीन उदाहरण हैं। भारत में इस प्रकार के नगर ईसा से पांच हजार वर्ष पूर्व अस्तित्व में आ गये थे। कालान्तर में मेसोपोटामिया, नील घाटी आदि क्षेत्रों में सुनियोजित नगर बसाये गये। भारत में सुनियोजित नगर निर्माण का क्रम सतत् चला आ रहा है। पौराणिक काल में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

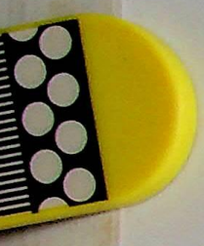

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अयोध्या, श्रावस्ती हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, काशी आदि ऐसे ही सुनियोजित नगर थे। ऐतिहासिक काल में पाटिलीपुत्र, तक्षशिला, नालंदा, कुशीनगर , मावापुरी इत्यादि का उल्लेख नियोजित नगरों के रूप में किया जाता है। हिन्दु और मुगल काल में नगरों का बसाव परकोटा के भीतर नियोजित ढंग से होता रहा। पिछले तीन सौ वर्षों का इतिहास नगर बसाव के दृष्टिकोण से विविधतापूर्ण रहा है नगरों का बंधनमुक्त फैलाव बाढ़ के जल के प्रसार के समान प्रमाणित हुआ है।

❑ नगर नियोजन का अर्थ एवं परिभाषा :

नगरीय नियोजन एक व्यवहारिक विषय है ; जिसके अन्तर्गत वर्तमान नगर और उसके आस–पास के क्षेत्रों के विकास, सुधार, पुननिर्माण एवं उसमें नये नगरीय क्षेत्रों के निर्माण संबंधी समयबद्ध योजनायें निर्मित एवं क्रियान्वित की जाती है। नगरीय जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना उसका मुख्य उद्देश्य है। उसके साथ–साथ नगर की क्रियाओं अथवा, भूमि उपयोग हेतु ऐसी स्थानिक संरचना प्रदान करना है, जो वर्तमान अनियोजित प्रतिरूप से श्रेष्ठतर हों। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं, कि नगर नियोजन नगरीय जीवन 'आदर्श' के अधिकधिक निकट पहुँचाने का प्रयास है; जिससे वर्तमान के साथ–साथ भविष्य में नगर के अधिकतम विकास के संदर्भ में नगरीय जीवन को अच्छा बनाया जा सके।

नियोजन का आशय, ऐसी व्यवस्था से हैं ; जिससे नगर की आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहे तथा संसाधनों का संरक्षण भी होता रहे। नगर नियोजन शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त है। सीमित दृष्टि से नगर नियोजन का अर्थ कुछ विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिये संगठित प्रयास करना है जैसे – सड़के बनाना, पानी का व्यवस्था करना, गंदी बस्तियाँ दूर करना, सविर बनाना आदि ; लेकिन इसका व्यापक अर्थ नगर के संसाधनों पर सुव्यवस्थित नियन्त्रण करना है। नगर के संसाधनों को उसकी स्थिति के अनुसार दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथम कोटि के संसाधन वे हैं, जो नगर की सीमा के अन्तर्गत पाये जाते है ; जिनमें नगर की सड़कें, संचार एवं यातायात के साधन, कार्य स्थल, स्वास्थ्य शिक्षा आदि के साधन,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

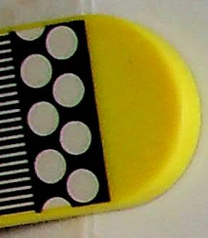

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रम शक्ति एवं जनता की सुविधा के अन्य साधन आते हैं। दूसरी कोटि के संसाधनों में भोजन और वस्त्र एवं अन्य प्रदाय है ; जिनकी पूर्ति बाह्य सीमा से होती है। नगर नियोजन का दूसरा पहलू नगर को इस प्रकार निर्मित या व्यवस्थित करने से है कि वह देखने वालों को अपनी ओर आकृष्ट कर ले। कहने का तात्पर्य है, कि नगर के सौंदर्य को बढ़ाना है । भारतीय नगरों में जयपुर का गुलाबी नगर, दिल्ली में चायक्यपुरी के भव्य भवन सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नगर के अंतर्गत भवनों, सड़कों, पार्कों तथा सार्वजनिक स्थानों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है , कि वह देखने में अच्छा लगे।

नगरीय नियोजन नगर की उपलब्ध भूमि का उत्कृष्टतम उपयोग करने की योजना बनाता है। वह सभी नगर वासियों, चाहे वे गरीब हों अथवा अमीर के लिये स्वस्थ नगरीय पर्यावरण विकसित करता है; जिसमें नगरवासियों के रहने, खेलने, मनोरंजन, आर्थिक और सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने का भरपूर अवसर मिल सके ।[1] यह वर्तमान नगरों के विकास व विस्तार से लेकर उसके पुनर्निमाण तथा उसके आसपास के नये नगरीय केन्द्रों के विकास तक की योजनायें बनाता है। इसी प्रकार नगरीय नियोजन नगरवासियों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ – साथ नगर के समीप स्थित ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों के जीवन स्तर को उठाने का भी प्रयत्न करता है। इस प्रकार नगरीय नियोजन का विषय बड़ा व्यापक है ; जिसमें नगर के बहुस्तरीय, बहुउद्देशीय एवं बहुआयामी विकास समाहित हैं। नगरीय नियोजन के इन्हीं विविध उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विभिन्न विद्वानों ने इसे भिन्न–भिन्न तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

प्रोफेसर स्टैम्प के अनुसार – "नगर नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगरवासियों के कल्याण और उनके जीवन स्तर को ऊंचा उठाना होता है।"[2]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

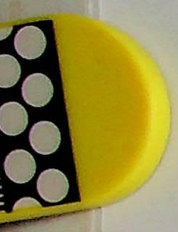

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नोलेड और बोरिंग *के मतानुसार* – "नगरीय नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगरीय जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।"[3]

प्रोफेसर जैकसन के शब्दों में – " नगर एवं ग्राम्य नियोजन भूमि उपयोग और विकास से सम्बद्ध है।"[4]

प्रोफेसर आर.एल. सिंह के विचार से – "नगर नियोजन न केवल इंजीनियर और वास्तुशिल्पी द्वारा रचित प्रस्ताव होना चाहिए ; बल्कि उसमें स्थानीय भौगोलिक सच्चाइयों का भी समावेश आवश्यक है, इसीलिए नगर नियोजन में भूगोलवेत्ता की अहम् भूमिका होती है।"[5]

स्पष्ट है, कि नगर नियोजन एक व्यवहारिक विषय बन गया है; जिसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार नगर के विविध घटकों के विकास और सुधार को ऐसा रूप देना होता है, ताकि नगरवासी स्वस्थ, सुखी और सम्पन्न जीवन–यापन के साथ ही साथ अपने दायित्वों का निर्वाह आसानी से कर सकें। अतः नगर नियोजन के आधुनिक स्वरूप में काफी व्यापकता आई है। अब इसने अन्तर्विषयक रूप ग्रहण कर लिया है; जिसमें इंजीनियर, वास्तुविद, भूगोलवेत्ता, समाजशास्त्री और कानून विशेषज्ञ एक साथ मिलकर काम करते हैं, ताकि वर्तमान और भविष्य की कठिनाइयों का मूल्यांकन कर नगर नियोजन के द्वारा सुन्दर, स्वस्थ और सुविधापूर्ण नगर निर्मित किया जा सके। जहाँ न्यूनतम कठिनाइयाँ उपस्थित हो।

अतः हम कह सकते है, कि नगर नियोजन नगरीय विकास के लिये विस्तृत कार्यक्रम करता है उसको अच्छी तरह संगठित करता है। उसका पुनर्निमाण करता है। यह नगर वासियों के उद्देश्यों को पूरा करता है। ये उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक व भौतिक हो सकते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखता है, कि जिस स्थान पर नगर का निर्माण होना है, यह उस स्थान के आर्थिक आधार का अध्ययन करता है। नगर नियोजन नगर की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

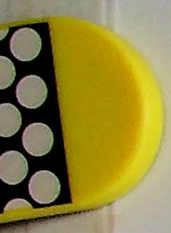

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व भौतिक विशेषताओं को सामूहिक एवं एकांकी दोनों रूप में देखता है। नगर नियोजन द्वारा नगर का ढ़ाँचा इस तरह से तैयार किया जाता है ; जिससे वह उसके भौतिक वातावरण के अनुकूल हो।

❑ नगर नियोजन से संबंधित भौगोलिक सिद्धान्त :

नगर नियोजन के संबंध में भिन्न–भिन्न विद्वानों ने अपने – अपने दृष्टिकोणों से भिन्न–भिन्न सिद्धान्त निर्धारित किये हैं। भूगोल में भी नगर नियोजन के अपने मौलिक सिद्धांत है, जिनके आधार पर नगरीय नियोजन किया जाता है। भूगोल के नगर नियोजन के सिद्धान्तों एवं अन्य विषयों के सिद्धान्तों में अंतर केवल इतना है, कि लगभग सभी विषयों के विद्वानों ने मात्र अपने विषय से संबंधित तथ्यों अथवा नगर की भौतिक विशेषताओं को ही नगर नियोजन का आधार माना है, जबकि भूगोल न केवल नगर के भौतिक तत्वों वरन् समस्त मानवीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक तत्वों को दृष्टिगत रखते हुये नगर नियोजन करता है।

नगरीय नियोजन अनेक सिद्धान्तों पर आधारित है, जिनमें समयानुसार परिवर्तन होता रहा है, जैसे नगरों के प्रारंभिक काल में नगर की भौतिक विशेषताओं – भवनों के विन्यास, सड़कों की स्थिति एवं चौड़ाई आदि पर अधिक ध्यान दिया जाता था, किन्तु वर्तमान में भौतिक विशेषताओं के साथ–साथ आर्थिक एवं सामाजिक पहलू भी नगरीय नियोजन के महत्वपूर्ण अंग बन गये हैं। इसी के अंतर्गत आज नगरों में स्कूल, अस्पताल, सुगम परिवहन, सिनेमाघर, क्रीड़ा क्षेत्र, पार्क, हरितपेटी, खुले स्थान, मलिन बस्ती सुधार, प्रदूषण नियंत्रण, रोजगार एवं आपदा प्रबंधन इत्यादि पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।[6] इसी प्रकार आर.सी. शर्मा के अनुसार नगर नियोजन के आधार सदैव ही परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तित होते रहे हैं। 20 वीं सदी तक नगरों का नियोजन उनकी भौतिक बनावट जैसे – सड़कें, उद्यान आदि तक ही सीमित था; किन्तु वर्तमान में नगर नियोजन के सिद्धान्तों में पर्याप्त परिवर्तन हो गया, जैसे – राजपूजाना शासन काल में नगरों का विकास तत्कालीन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

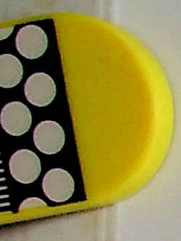

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजाओं की भिन्न–भिन्न नीतियों के परिणामस्वरूप हुआ था।[7] वर्तमान में नगर नियोजन के सिद्धान्तों में समयानुकूल परिवर्तन होना स्वाभाविक है। नगर नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगरवासियों को अधिकाधिक सुख और शांति प्रदान कराना है। भूगोलवेत्ताओं ने इसी उद्देश्य को ध्यान रखते हुये नगर नियोजन की सुविधाओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिएये जैसे नगर में नागरिक सेवाओं, उचित यातायात, नगर का आकार इत्यादि। नगर नियोजन से संबंधित प्रमुख भौगोलिक सिद्धान्त निम्नांकित है –

1. नगरीय विकेन्द्रीकरण :

इस सिद्धान्त के अनुसर नगरों से जनसंख्या दवाब, भीड़–भाड़ एवं प्रदूषण आदि को कम करने के लिये उद्योगों और जनसंख्या बसाव को विक्रेन्द्रित किया जाता है, इसके लिये नगर के उपनगरीय भग में नये नगरों का निर्माण किया जाता है ; जिससे प्रतिदिन नौकरी एवं व्यापार के लिये महानगर तक अभिगमन कर्त्ताओं की संख्या स्वतः कम हो जाती है। ऐसे उपनगरीय क्षेत्रों में कारखानों की स्थापना के साथ–साथ मजदूरों के लिये आवासीय कालोनियाँ, अस्तपताल, स्कूल, बाजार आदि की सुविधायें स्वयमेव उपलब्ध होती जाती है। ग्रेट ब्रिटेन में 19 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में सल्टायर, बोर्नबिले, पोर्ट सनलाईट इत्यादि नगरों का विकास उद्योगपतियों और खनिज मालिकों द्वारा किया गया था। बाद में इसी प्रकार के नगर फ्रांस, नीदरलैण्ड आदि यूरोप के अन्य देशों में भी निर्मित किये गये; जिनमें फेक्ट्रियों में काम करने वाले श्रमिकों के लिये नियोजित कालोनियां बनाई गई।[8]

2. उपवन, उपनगर एवं उपवन–नगर :

इस सिद्धान्त के विकास का श्रेय ऐबेनेजर होवर्ड (1898) को जाता है। इन्होंने लंदन निवास के अपने अनुभवों से प्रेरित होकर वहाँ की नगरीय समस्याओं के समाधान के लिए उपवनों से युक्त नये नियोजित नगरों को बसाने का सुझाव दिया। ऐसे नगर की आदर्श जनसंख्या 30000 होना चाहिए, तथा इसमें नगरीय एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के जीवन के सर्वोत्तम पहलुओं को समाहित किया जाना चाहिए। होवर्ड ने उपवन नगर को

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

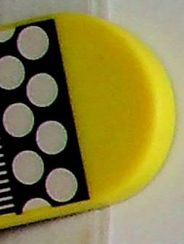

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कई वार्डों अथवा पड़ोसी इकाईयों में विभाजित किया जिन्हें अरीय ढंग से व्यवस्थित किया इनके अंदर की ओर पार्कों एवं नगर के केन्द्र में स्कूल का प्रावधान रखा। नगर के आवासीय वार्डों के चारों ओर परिधीय रूप में रेलमार्ग, सीमान्त क्षेत्रों में उद्योग धंधे जहाँ से आवासीय वार्डों और रेलमार्गों तक आना जाना आसान हो तथा नगर की बाह्य सीमा के रूप में हरित पेटी का निर्माण इन उपवन नगरों की अन्य विशेषतायें थीं । होवर्ड के अनुसार उपवन नगर कृषि क्षेत्र में स्थापित किया जाना चाहिए ; जिसमें सभी नगरीय सुविधायें उपलब्ध होना चाहिए। नगर पूर्णतया आत्म निर्भर होना चाहिए ; जिसमें आवश्यकता की सभी वस्तुएं उपलब्ध की जानी चाहिए। भावी विकास हेतु समुचित प्रावधान के लिये नगर का संपूर्ण क्षेत्र खुले स्थानों और आवासीय प्लाटों में अच्छी तरह विभाजित होना चाहिए। होवर्ड के अनुसार उपवन नगर लोगों को स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुन्दर नगरीय वातावरण प्रदान करते हैं, जिसे एक पूर्णतया आदर्श नियोजित नगर का रूप कहा जा सकता है। कृषि प्रधान देश होने के कारण भारत में उपवन नगर को स्थापित किया जा सकता है, इस प्रकार के नगर में समस्त नगरीय सुविधायें उपलब्ध कर पूर्णतया आत्मनिर्भर नगर बनाया जा सकता है।

- **पर्यावरणीय पक्ष :**

नगर नियोजन के पूर्व समस्त पर्यावणीय पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक होता है; जिससे पर्यावरणीय समस्यायें कम से कम उत्पन्न हों। ऐसे पक्षों में जलवायु, वनस्पति और धरातलीय संरचना के सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान होना आवश्यक होता है। हवा की दिशा, वर्षा का स्वरूप, और तूफान विविध रूपों में नगरीय जीवन को प्रभावित करते हैं। इसीलिये नगर नियोजन पर्यावरणीय समायोजन द्वारा भूमि उपयोग का स्वरूप निर्धारित करता है। जैसे – हवा की दिशा को ध्यान में रखकर कल कारखानों के लिये भूमि आवंटित की जाती है ताकि नगर की धुंआ, धूल व गैस से बचाया जा सके। कल कारखानों का नगर के आर्थिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है और ये नगर के आर्थिक विकास के सूचक होते हैं। अतः कल कारखानों की स्थापना नगर के भौतिक क्षेत्र को ध्यान में रखते हुये एवं रहयशी क्षेत्र को प्रदूषित वातावरण से दूर रखना चाहिए, ताकि स्थानीय नागरिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े एवं भविष्य में वो किसी दुर्घटना का शिकार न हों।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

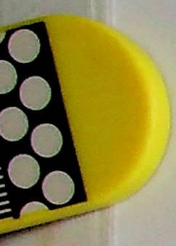

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **भौतिक विकास :**

नगर नियोजन का प्रमुख उद्देश्य नगर वासियों के लिये उचित भौतिक सुख सुविधाओं का विकास करके सुखी एवं समृद्धशाली बनाना है। एक नगर ज्यादातर भवनों, सड़कों, लोहे, कंक्रीट एवं शीशें का बना होता है, तथापि यह सामग्री ही भौतिक नगर की ढ़ांचे का निर्माण करती है। अतः नगर के प्रत्येक व्यक्ति को आय के स्तर के अनुसार आवासीय ग्रहों की व्यवस्था, सार्वजनिक स्थानों जैसे पार्क, क्रीड़ा क्षेत्र, धार्मिक स्थल, क्लब इत्यादि की व्यवस्था एवं नगर में उचित एवं सुरक्षित यातायात हेतु सड़कों का निर्माण होना चाहिए।

- **उपयुक्त कार्यक्षेत्र का विभाजन :**

नगर में भिन्न–भिन्न कार्यों के अनुरूप विभिन्न कार्य क्षेत्र का विभाजन करना चाहिए। आर्थर बी. गैलियन ने नगर नियोजन के क्षेत्र को दो वर्गों में विभाजित किया है [9] –

- **भूमि उपयोग के लिये नियोजन :**

इसके अंतर्गत आवासीय भूमि, व्यापार, उद्योग, रिक्त क्षेत्र इत्यादि भूमि उपयोग के विभिन्न रूपों को सम्मिलित किया जाता है। नगर नियोजन में सदैव इस बात का ध्यान रखना चाहिए , कि जो स्थान या भूमि जिस कार्य के लिये निर्धारित की गई है अथवा उपयुक्त है, उस भूमि पर वही कार्य सम्पादित करना चाहिए अर्थात् नगर में स्थित भूमिा बिना किसी प्रदूषण अथवा हानि के अधिकाधिक प्रयोग हो सके। किन्तु वर्तमान में भूमि का समुचित प्रयोग नहीं हो पा रहा है। जापान जैसे विकसित देशों में कृषिगत भूमि का पांचवा भाग नगरीय सीमा के अन्तर्गत आ गया है।[10]

- **परिवहन एवं संचार के लिये नियोजन :**

इसमें राजमार्गों सड़कों, रेलमार्गों, वायुयान अड्डों, जलमार्गों, संचार व्यवस्था इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

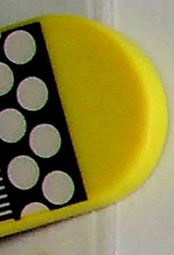

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर का विभिन्न कार्यक्षेत्रों में विभाजन होने से अनेक प्रकार की नगरीय समस्याओं जैसे प्रदूषण, दुर्धटनायें, गंदी बस्तियों का प्रसार आदि में पर्याप्त वृद्धि होती है। नगर का 40 प्रतिशत भाग लोग सम्पत्ति एवं 60 प्रतिशत निजी संपत्ति के रूप में उपयोग करना चाहिए। नगर में कार्यक्षेत्र के विभाजन से नगरवासियों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो एवं समस्त कार्यक्षेत्रों के मध्य उचित दूरी हो, जिससे समय–समय पर अनेक समस्याओं जैसे पर्यावरण, प्रदूषण अथवा गंदी बस्तियों के प्रसार को रोकने में कठिनाई न हो।

- **मलिन बस्तियों के प्रसार पर नियंत्रण :**

नगरों में जिस तीव्रता से जनसंख्या वृद्धि हो रही है, उस तीव्रता से आवासीय गृहों का विकास नहीं हो पा रहा है ; क्योंकि नगरों में बाहर से आने वाले व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है ; किन्तु आवास हेतु उचित व्यवस्था न होने पर इन्हें नगर के आन्तरिक अथवा उनके कार्यक्षेत्र के आसपास के स्थानों में कच्चा मकान बनाकर निवास करना पड़ता है, किन्तु संपूर्ण नागरिक सुविधाओं की आपूर्ति के अभाव में कुछ समय पश्चात् यह स्थान एक मलिन बस्ती का रूप धारण कर लेता है। परिणामस्वरूप यहाँ का वातावरण अस्वस्थ्यकर एवं अनेक सामाजिक विसंगतियों को जन्म देने वाला हो जाता है, इसी कारण इन्हें नगरों का कलंक भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त इन्हें शैंटी, स्क्वैटर्स, चाल, कट्टा, अहाता, कबाल या गंदी बस्ती इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

डिकिन्सन के अनुसार – स्लम नगर के उस भाग को कहते हैं, जहाँ पर रहने योग्य मकान न हो और जहां का वातावरण नागरिको के स्वास्थ्य एवं नैतिकता के लिये हानिकारक हो। वह घना बसा हुआ क्षेत्र जहाँ भूमि का मूल्य गिर रहा हो। जहाँ के निवासियों का आर्थिक स्तर निम्न हो, जहाँ अपराध का आधिक्य हो, तथा मृत्यु एवं बीमारियों की दर उच्च हो। यहाँ पर निवास करने वाले गरीब, अशिक्षित, अस्वस्थ एवं अधिकांश प्रवासी होते हैं।[11] गंदी बस्तियाँ सामान्यतया व्यापारिक, औद्योगिक केन्द्र के चारों ओर विकसित पाई जाती है भारत में नगरीय जनसंख्या का लगभग 10 से 60 प्रतिशत तक भाग गंदी बस्तियों में निवास करना है।[12]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

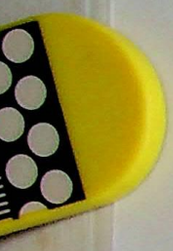

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मलिन बस्तियों के प्रसार के परिणामस्वरूप जहाँ एक ओर नगर की सुन्दरता में कमी आती है वहीं दूसरी ओर वहाँ के नागरिकों को अस्वस्थ जीवन जीने के लिये मजबूर होना पड़ता है। इसके साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक बुराइयों का सामना करना पड़ता है ; जिससे नगर का विकास अवरूद्ध होता है। अतः इन मलिन बस्तियों के प्रसार को रोकने के लिये समुचित आवास व्यवस्था करना चाहिये तथा नगर की ओर ग्रामीण पलायन पर नियन्त्रण करने के लिये उपयुक्त उपाय करना चाहिए।

- **भविष्य परक नियोजन :**

नगर नियोजन भविष्यपरक अर्थात् दूरदर्शी होना चाहिए अर्थात् नगर के क्रमबद्ध विकास की एक सुव्यवस्थित योजना निर्मित करना ताकि भविष्य में नगर के बढ़ने पर किसी भी प्रकार की बाधा सामने न आये। अनेक नगरों में भविष्यगत आंकलन के अभाव में अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। कहने का तात्पर्य है , कि नगर की विकास योजना बनाते समय सदैव भविष्य में होने वाले नगरीय विकास एवं परिवर्तन को ध्यान में रखना चाहिए तथा नगर की वर्तमान समस्याओं को दूर करने के उद्देश्य से समन्वित योजनायें तैयार करना चाहिए। नगर नियोजन का समय निर्धारण, नगर के विकास की गति निर्धारित करके करना चाहिए। नियोजन में इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि नियोजन न तो इतनी अल्प समयावधि के लिये हो, कि नगर शीघ्र ही अनियोजित प्रतीत होने लगे और न ही इतनी दीर्धावधि के लिये हो कि वर्तमान में नगर नियोजन संबंधी बनाये गये आधार या सिद्धान्त आने वाले समय में परिस्थिति अनुकूल न रहे और उनकी उपादेयता ही समाप्त हो जाये।

7. व्यापक नियोजन :

नगर नियोजन व्यापक होना चाहिए अर्थात् किसी भी नगर का नियोजन करते समय न केवल प्रशासकीय सीमाओं को ध्यान में रखते हुये नियोजन करना चाहिए वरन् विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र का भी नियोजन करना चाहिए अर्थात् नगर की भौतिक स्थिति व

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

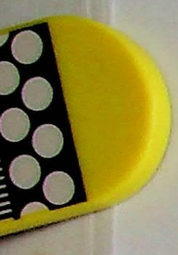

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आकार का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त नगर नियोजन के अन्तर्गत समस्त मानवीय तत्वों (जैसे – सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक) एवं भौतिक तत्वों (जैसे जलवायु, आकार, आकृति व स्थिति) को ध्यान में रखकर नियोजन करना चाहिए।

- **नगरीय सुविधाओं की व्यवस्था :**

नगरों को सुन्दर, स्वस्थ्य और सुविधाजनक तभी रखा जा सकता है, जब वहाँ आवश्यक नगरीय सुविधाओं की व्यवस्था की जाये। इसके लिये उचित जल स्त्रोत, मलजल निस्तारण की व्यवस्था, मनोरंजन स्थल, स्वास्थ्य और शिक्षा की सुविधा, सामाजिक संस्था आदि की उचित व्यवस्था हो इसीलिये नगर नियोजित नगरों की आवश्यकता वर्तमान एवं भविष्य के परिप्रेक्ष्य में आंकलित की जाती है। अतः नगरीय सुविधायें नगर नियोजन को आधार प्रस्तुत कराती है।

- **नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त :**

आधुनिक नगरों में अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे गंदी बस्तियों का प्रसार मानवीय एवं पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक आपदायें, अशांति आदि ने लगभग सभी नगरों को अपने आगोश में ले लिया है, इसके विपरीत ऐतिहासिक साक्ष्यों से प्रमाणित होता है, कि वैदिक काल में अनेक बड़े–बड़े नगर थे ; परंतु इतनी अधिक समस्यायें नहीं थी। इसका क्या कारण है ? कि आधुनिक नगर समस्याओं के जाल में फँसे हुये हैं और इन समस्याओं को हल करने में अपनी संपूर्ण शक्ति लगाने के बावजूद समस्याओं से मुक्ति नहीं मिल रही है, परिणामतः दिन–प्रतिदिन नगरीय जीवन–स्तर में गिरावट आ रही है ; जबकि प्राचीन नगरों में इस प्रकार की समस्यायें नहीं थी। इन समस्याओं का प्रमुख कारण भौतिक क्षेत्र में आशातीत उन्नति है, इसके विपरीत हमारा आध्यात्मिक जीवन अविकसित रह गया है। हम अपने मूल से दूर होते जा रहे हैं ; जिसके परिणामस्वरूप हमारा एकांगी विकास हो पाया है। अतः वर्तमान समय में नगरीय मानव प्राकृतिक सहयोग से वंचित होने के कारण अपना सर्वांगीण विकास करने में असमर्थ है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

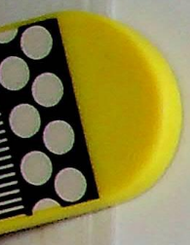

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर नियोजन उतना ही पुराना है, जितने स्वयं नगर हैं। मानव इतिहास में नगर हमेशा सभ्यता के सूचक रहे हैं।[13] इसकी उत्पत्ति विकास और अवनति रूप एवं संरचना विभिन्न युगों की विशेषता बतलाते हैं। प्राचीन नगरीय संरचनाओं के अवशेष इस बात का प्रमाण है; कि भारत में नगर–निर्माण सबसे अधिक विकसित कला थी। इसके माध्यम से स्थानीय नगरीय और क्षेत्रीय क्रियाशील विकास के दबाव एवं आवश्यकतानुसार आर्थिक विकास और उन्नत जीवन स्तर की निरन्तर प्रक्रिया को विकसित करना ही नगर नियोजन का प्रमुख सैद्धान्तिक पक्ष है; जिसमें जनसंख्या, भौगोलिक स्थिति, जलवायु, तापमान, वर्षा, वायु दबाव एवं दिशा, प्राकृतिक जल स्त्रोत एवं विकास की व्यवस्थित संभावनाओं को देखते हुए वास्तुशास्त्र में नगर–नियोजन के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया गया है। भारत में वास्तुसिद्धांत कब बनाये गये, यह कहना कठिन है; किंतु वैदिक काल और पौराणिक काल से ही वास्तु के सिद्धांत अनमोल मोतियों की भांति विभिन्न वेदों पुराणों आदि ग्रंथों में पड़े है। भारतीय वास्तुकला अपने विलक्षण सिद्धांतों के कारण अद्वितीय है। ''नगर नियोजन का आधार प्रकृति के साथ समरसता एवं तादाम्य स्थापित कर प्राकृतिक नियमानुसार चहुमुखी विकास करना है तथा नगर वासियों के कार्यक्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान रखते हुये वृद्धि करना है। वास्तुशास्त्र के पुरातन ग्रंथों में नगर नियोजन के सिद्धान्तों (आधारों) की मीमांसा की गई है। इन पुरातन ग्रन्थों जैसे – मयमतम् मत्स्यपुराण, विश्वकर्माप्रकाश, मानसागरी, नारदसंहिता, समराङ्गणसूत्रधार, श्रीमद्भगवतगीता रामायाण, कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि में नगर नियोजन का वर्णन मिलता है। जैसे नदी या पर्वत के किनारे पर स्थित शूद्रों के गृह से समन्वित होने पर तथा ऊंची दीवार से आवृत्त होने पर वह खेत कहलाता है।[14] शुद्र का अर्थ यहॉ किसी जाति अथवा सम्प्रदाय विशेष से नही है, वरन् हमारे प्राचीन ग्रंथों में वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म है। इसी प्रकार समराङ्गणसूत्रधार में नगरों का वर्णन इस प्रकार है –

पुरस्थ त्रिविधस्थापि प्रमाणमथ कथ्यते।

प्राकारपरिरवाट्टालद्वार रहयाध्वभिः सह ।।1।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्येष्ठं तत्र चतुश्रचापसहस्त्रं पुरमिष्यते ।
मध्यं द्वाभ्यां सहस्त्राभ्यामकेने व्यासतोऽधमम् ।।2।।
साष्टमाशां सपादं वा सार्धं वा व्यासमायतम् ।
कुर्यादेकैकमायामं चतुरश्रीकृतं शुभम् ।।3।।
चतुःषष्टिपदारव्येन पुरं सर्वं प्रकल्पयेत्।
द्विरष्टकोष्ठं तत् कुर्यात् षटपथं नवचत्वरम् ।।4।।

पुर अर्थात् नगर तीन प्रकार के होते हैं –ज्येष्ठ, मध्यम एवं कनिष्ठ ज्येष्ठ नामक पुर (नगर) चार हजार चाप के व्यास का कहा गया है, मध्यम पुर दो हजार चाप के व्यास का तथा अधमपुर एक हजार चाप के व्यास का होता है। व्यास के आइवे अथवा चौथे अथवा आधे भाग के साथ प्रत्येक का क्रमशः विस्तार करना चाहिए और वह चौकोर करना चाहिए। चौंसठ पढ वाले वास्तु–पद से सबपुर बनाने चाहिए। सोलह कोष्ठ, छः प्रधान मार्ग नौ चबूतरे वहाँ बनाना चाहिए।[15] इसी प्रकार कौटिल्य के अनुसार ''श्रयः प्राचीना राजमार्गस्त्रय उदीचीना इति वास्तुविभागः। द्वादशद्वारों युक्तोदक भूमिच्छलपथः।''[16]

अर्थात् जिस भूमि का नगर निर्माण के लिये चुना जाये , उसमें पूर्व से पश्चिम की ओर और उत्तर से दक्षिण की ओर जाने वाले तीन–तीन राजमार्ग हों। इन छः राजमार्गों में नगर–निर्माण या गृह निर्माण की भूमि का विभाग करना चाहिए। चारों दिशाओं में कुल मिलाकर बारह द्वारों हों, जिसमें जल, थल तथा गुप्त मार्ग बने हों। नगर नियोजन में मार्गों तथा वीथियों का विशेष महत्व है।[17] मयमतम् में मार्गों तथा वीथियों का वर्णन इस प्रकार है – वीथियों एवं मार्गों का प्रारंभ उत्तर तथा पूर्व से निर्देशित है तथा वीथियों एवं मार्गों की चौड़ाइयों के लिए 13 प्रकार की संभावनाओं का वर्णन उपयोग एवं आवश्यकताओं की दृष्टि से किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रकार वास्तुरत्नाकर में भी निम्न वर्णन मिलता है –[18]

ग्रामोदेरनुकूलत्वं दिशो भूतगृहस्य च।
गृहचिण्ष्यादिकं शुद्धं वीक्ष्यायव्ययमंशकान् ।।
सुगेहं रचयेद्वीमान् वास्तुशास्त्राऽनुसारतः ।।11।।

पहले ग्राम की अनुकूलता फिर दिशा की अनुकूलता, इसके बाद भूमि की अनुकूलता का और तत्पश्चात् पिण्ड, आय वार, नक्षत्रादि का शास्त्रानुसार विचार करके मकान बनावें ।।11।। अतः नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त निम्नप्रकार हैं –

1. दिक् विन्यास :

दिक् विन्यास को दिक् निर्धारण भी कहा जाता है। किसी भी भाग को कार्य की उचित दिशा में स्थापन करने, अर्थात् दिशाओं का सही ज्ञान प्राप्त करने को दिक् विन्यास कहते हैं। वास्तुशास्त्र के प्रत्येक नियम सभी स्थानों एवं सभी वास्तु रचनाओं पर समान रूप से लागू होते हैं। दिक् निर्धारण , ब्रह्माण्ड से वास्तु को प्राप्त होने वाली धनात्मक ऊर्जा के अधिकतम उपयोग एवं ऋणात्मक ऊर्जा के दुष्परिणाम से सुरक्षा की दृष्टि से किया जाता है। वास्तुशास्त्र में चार प्रमुख दिशायें – उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम चार उपदिशायें – ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य एवं वायत्य तथा आकाश व पाताल को मिलाकर कुल दस दिशायें होती हैं। प्रत्येक दिशा के अलग–अलग स्वामी है और उनका अपना–अपना महत्व है। वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र, पश्चिम के वरूण, उत्तर के कुबेर तथा दक्षिण दिशा के स्वामी यम देवता हैं।

किसी भी वास्तु की स्थापना वास्तुशास्त्र के अनुसार स्थापित होने वाले वास्तु के विभिन्न अंगों द्वारा उचित निर्धारित दिशानुसार किया जाता है। इन दिशाओं का वर्गीकरण और निर्धारण पूर्णतः प्रकृति के नियमों पर आधारित होता है। चाहे कोई भी वास्तु हो, दिक् सामुख्य की सर्वाधिक महत्ता है। वास्तुशास्त्र में पूर्व दिशा को सर्वाधिक महत्व दिया

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया है और पृथ्वी पर सूर्योदय और सूर्यास्त से इसका संकेत मिलता है। प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों में इन्फ्रारेंड रश्मियों का बाहुल्य रहता है, मध्याहन में सूर्य रश्मियाँ रेडियो धर्मिता से ग्रस्त रहती हैं और सूर्यास्त के समय पराबैंगनी किरणें होती है। सूर्य की प्रातःकालीन रश्मियों से लाभ एवं मध्यह्यन व सूर्यास्तकालीन रश्मियों के प्रभाव से बचने के लिये ही पूर्व एवं उत्तर दिशा को महत्ता दी गई है, इसलिये पूर्व व उत्तर दिशा को खुला व नीचा रखा जाता है, ताकि शुद्ध वायु का आवागमन भलीभांति होता रहे। जिस प्रकार सूर्य से ऊर्जा पाने की दृष्टि से पूर्व एवं पश्चिम दिशाओं का महत्व है। इसी प्रकार उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं का महत्व पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों के प्रभाव से संबंद्ध है, उत्तरी ध्रुव से चुम्बकीय किरणें दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रवाहित होती है। सूर्य के प्रभाव की भांति ही इन किरणों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ता है, इसीलिये विभिन्न दिशाओं का महत्व को भिन्न–भिन्न स्थानों में विभाजित किया गया है। इसीप्रकार अलग–अलग महीनों में सूर्य की किरणों का प्रभाव अलग–अलग होता है क्योंकि पृथ्वी की गति के कारण इसकी दिशा बदलता रहती है इसके कारण ही सूर्य 22 दिसम्बर से 20 जून तक उत्तरायण तथा 21 जून से 21 दिसम्बर तक सूर्य दक्षिणायन होता है, उत्तरायण सूर्य में दिन बड़े होते हैं, मौसम में नमी नहीं होती ; जिसके कारण मनुष्य के शरीर में चेतनता एवं शरीर स्वस्थ होता है इसीलिये सभी शुभकार्य उत्तरायण सूर्य में ही सम्पन्न होते है। इन दिनों मस्तिष्क का तीव्र विकास होता है , इसीलिये अन्य दिनों की अपेक्षा शरीर में ज्यादा गतिशीलता होती है, इसका प्रमुख कारण है सूर्य की किरणें। इसीकारण हिन्दू धर्म में सूर्य को देवता मानकर इसकी पूजा की जाती है और सूर्य के उदय होने की दिशा पूर्व को सर्वश्रेष्ठ दिशा माना जाता है। इसीकारण घरों के पूर्व एवं उत्तर पूर्व दिशा को खुला रखने का नियम है इसके कारण घर में इन समस्त दिशाओं में पूजा घर, बरामदे, खिड़कियाँ, दरवाजे और पानी का स्थान बनाया जाता है; जिससे भवन या नगर ऊर्जावान रहे। जैसा कि नारद संहिता में उल्लेखित है [19]–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्नानागारं दिशि प्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम् ।

याम्यायां शयनागारं नैऋत्यां शस्त्रमन्दिरम् ।।50।।

एवं कुर्यादिदंस्थानं क्षीरपानाज्यशालिकाः ।

शय्यामूत्रास्त्रतद्विद्याभोजनामंगलाश्रयाः ।। 51 ।।

धान्यस्त्रीभोगवितं श्रृङ्गरायतनानि च ।

ईशान्यादिक्रमस्तेषां गृहनिर्माणकं शुभम् ।। 52 ।।

पूर्व दिशा में स्नानागार, अग्निकोण में भोजनालय, दक्षिण में शयनागार, नैऋत्य में शस्त्रागार, ईशान कोण में दूध जलपान धृत, अग्निकोण में शय्या, मूत्र शस्त्र तथा भोजन, नैऋत्य कोण में धान्य स्त्री भाग, धन तथा वायव्य कोण में श्रृङ्गारादि प्रसाधन का स्थान बनावें।। 50–52 ।। इसी प्रकार प्रत्येक दिशा में नगर के बाहर जो देवगण निवेश्य हैं, उनका वर्णन भवन निवेश निम्नप्रकार है –

नगरों के पूर्व दिशा में विष्णु, सूर्य, इन्द्र तथा धर्मराज के मंदिर, पूर्व दक्षिण में सनत्कुमार सावित्री, मारूतों तथा मारूत के मंदिर, दक्षिण दिशा में गणेश, माताओं, भूतों एवं प्रेतपति यमराज के मंदिर, दक्षिण – पश्चिम में भद्रकाली का मंदिर तथा पितरों के चैत्य, पश्चिम दिशा में – सागर नदियों, विश्वकर्मा, ब्रह्मा तथा वरूण के मंदिर, पश्चिमोत्तर दिशा में नागों, शनि, कात्यायनी के मंदिर, उत्तर दिशा में कार्तिकेय और विशाखा, चन्द्रमा तथा कुबेर के प्रासाद पूर्वोत्तर दिशा में शिव, लक्ष्मी और अग्निदेवता के मंदिर बनाने चाहिए। नगर के चारों ओर नदियों तथा सागरों के मंदिर निवेश्य हैं और जंगलों और पहाड़ों के साथ–साथ सभी जगह उमापति भगवान् शंकर का स्थान इष्ट है।[20]

हस्ते हस्ते ऽङगुलद्वन्द्वमायतः सभ्यगुच्छ्रयात्

यस्य वा द्वादशकरा मूले भवति विस्तृतिः ।।29।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर के बाहर देवालयों का जिस प्रकार से विधान कहा गया है, वैसे ही नगर के भीतर अपनी–अपनी दिशाओं में उनका विधन करना चाहिए। नगर के मध्य भाग में ब्रह्मा, इन्द्र, बलराम तथा कृष्ण के मंदिर बनाने चाहिए । नगर के भीतर माताओं, यक्षों, गणाधीश, रूद्रों, भूतसंघों को, बिना उनके मंदिर बनाये ही, चबूतरों तथा मार्गों आदि पर भी निवेशित किया जा सकता है।[21]

प्रत्येक नगर प्रत्येक ग्राम तथा प्रत्येक घर व प्रत्येक मंदिर में वृहस्पति, अग्नि, कार्तिकेय, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, विष्णु यक्ष और नागों के एक से अधिक मंदिर हानिकार होते हैं।

2. प्रकृतिवाद को प्राथमिकता :

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त इस प्रकार बनाये गये हैं, कि प्राकृतिक स्त्रोतों द्वारा हमें अधिकाधिक ऊर्जा प्राप्त हो सके ; जिससे हमें निरंतर उत्तम स्वास्थ्य, सुख व शांति प्राप्त होती रहे। भौगोलिक दृष्टि से पृथ्वी को दो भागों में बांटा गया है उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव। ये दोनों सिरे चुम्बक के दो सिरों की भांति कार्य करते हैं। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार मानव शरीर को दो भागों विभक्त किया गया है। सिर का भाग उत्तरी ध्रुव तथा पैरों का भाग दक्षिणी ध्रुव के समान कार्य करता है। वैज्ञानिकों के तर्क के आधार पर चुम्बक के दो समान सिरों में विकर्षण और दो विरोधी सिरों में आकर्षण होता है ; जिसके कारण यह प्रक्रिया होती है। इसी सिद्धान्त को आधार मानकर वास्तुशास्त्र के इस नियम को अपनाया गया है, कि मनुष्य को हमेशा दक्षिण की ओर सिर करके सोना चाहिए। जिससे अलग–अलग सिरों में आकर्षण और स्थिरता की प्रक्रिया होगी। हमारे शरीर का उत्तरी सिरा पृथ्वी के दक्षिणी सिरे से मिलकर शरीर को मानसिक शांति, संतुलन और पूर्ण निद्रा द्वारा स्वस्थ्यता प्रदान करता है। इसके विपरीत उत्तर की ओर सिर करके सोने पर मुनष्य अस्वस्थ हो जाता है और विकर्षण के परिणामस्वरूप हृदयगति में वृद्धि, अनिद्रा, श्वासावरोध आदि शारीरिक बीमारी उत्पन्न होने की संभावना रहती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रीमद्भगवद्गीता के सातवें अध्याय के श्लोक 4–5 में प्रकृति के संबंध में कहा गया है –

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनोबुद्धिरेव च ।
अहंकार इतीयं में भिन्न प्रकृतिरष्टधा ।।4।।
अपयरेयमित स्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि में पराम् ।
जीव भूतां महावाहो मयेदं धार्यते जगत् ।।5।।

मानव जाति की जीवरूपी चेतन प्रकृति, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से ही निर्मित है तथा जीवात्मा के अन्तःकरण पर प्रभाव, मन बुद्धि और अहंकार का ही होता है। अतः इस प्रकार आठ भेंट वाली अपरा ईश्वर की जड़ प्रकृति है।[22]

प्रकृतिवाद को प्राथमिकता देते हुये सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में वर्णन करते हुए वृहत् संहिता में लिखा है [23] कि –

आसीत्तमः किलेदं तत्राणं तैजसेऽभवद्धैमे ।
स्वर्भूशकले ब्रह्मा विश्वकृदण्डेऽर्कशशिनयनः ।।6।।

इस जगत की उत्पत्ति से पूर्व समस्त जगत अंधकारमय था। सृष्टि की इच्छा से लोग पितामह ने सर्वप्रथम जल को सृष्टि की। उस जल से अपना तेज स्थापित किया जो बाद में सुवर्णाभ अण्डे की आकृति में प्रकृट हुआ। उस अंडे को स्वयं भू ने दो भागों में बांटा जो स्वर्लोक या द्युलोक कहे गये है। इन्हीं दो लोकों के मध्यवर्ती खाली स्थान को शून्य या आकाश कहते हैं। इसी विश्व सृष्टा भगवान से सूर्य व चंद्ररूपी नेत्रधारी ब्रह्मा उत्पन्न हुए। इसका समर्थन ऋग्वेद व स्मृतियों में किया गया है।[24] कठोपनिषद् द्वितीय वल्ली के 20 वें श्लोक में कहा गया है – '' अंजोरजीयान्महतो महीयानात्मास्या'' अर्थात् चाहे कोई भी वस्तु अत्यन्त बड़ी हो या अत्यंत छोटी उसका निर्माण पंचमहाभूतों से हुआ है। इसी प्रकार भगवद्गीता के तीसरे अध्याय के श्लोक 27 में कहा गया है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः ।

समस्त कर्म प्रकृति के गुणों द्वारा ही सम्पादित होते हैं।[25] मनुष्य का शरीर व सृष्टि का निर्माण पंचमहाभूतों से मिलकर हुआ है। इस संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है [26] –

क्षिति जल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित अति अधम शरीरा ।।

अर्थात् मनुष्य का शरीर पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन पंचतत्वों से मिलकर बना है।

महान तमिल कवि सुब्रामन्यम भारती के अनुसार –

''भूतंगल एगुम पुलत्वडुम शक्तिऐ पोर्त्रुहिंरोम्
वेदंगल सोन्नपदि मनितरें मेनमयुर सेय्य वेंडुमेनरे''

वेदों के कथनानुसार मानव जाति के उत्थान हेतु हम उस ''शक्ति'' को प्रणाम करते हैं, जो पंचभूतों, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश में विद्यमान है।[27] कहने का तात्पर्य है नगर की आकारिकी, आकृति, आकार, विभिन्न प्रकार के कार्यों हेतु स्थान निर्धारण भूमि उपयोग जलपूर्ति इत्यादि की व्यवस्था प्रकृति के नियमानुसार की जाती है। 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' अर्थात् जो शरीर में है वही ब्रह्माण्ड में है। तात्पर्य है, कि चाहे कोई भी निर्माण हो प्रत्येक निर्माण में इन पंचतत्वों का महत्व है। अनेक प्राचीन ग्रंथों में इसके महत्व को समझाने का प्रयत्न किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक निर्माण में निम्नलिखित पांच तत्वों का ज्ञान कर भवन में निर्धारित स्थान प्रदान करने से वह निर्माण वास्तुशास्त्र सम्मत होता है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **पृथ्वी तत्व :**

सर्वप्रथम जहाँ से जीवन का क्रम प्रारंभ होता है वह है पृथ्वी तत्व। पृथ्वी ही वह तत्व है जिसके बिना किसी भी प्रकार का निर्माण संभव ही नहीं है। पृथ्वी के अंदर अनंत ऊर्जा, अनंत शक्ति होती है। यह सबको धारण करने की अनंत शक्ति के साथ–साथ गुरूत्वाकर्षण की शक्ति रखती है ; जिसके परिणामस्वरूप ही प्रत्येक प्रकार का निर्माण कार्य संभव है इसीलिये वास्तु का कार्य प्रारंभ ही भूमि पूजन से करते हैं पृथ्वी तत्व की शुद्धता एवं गुणात्मकता के लिये मिट्टी का रंग, उसकी गंध, आर्द्रता, उर्वराशक्ति, मिट्टी का स्वाद आदि के आधार पर करना चाहिए। भूमि में कोणों, ढलान, मार्गों, दिशाओं आदि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। राजा भोज ने अपने ग्रंथ 'युक्तिकल्पतरू' एवं समराङ्गण सूत्रधार दोनों में भूमि परीक्षण के संबंध में लिखा है –

ईशानपूर्व प्लावनो मध्यस्थानसमुन्नतः ।
उत्तमः कीर्तितो देशो गृहाय च नगराय च ।। [28]

वही भूमि गृहनिर्माण के लिये उपयुक्त होती है, जो मध्य में उठी हो तथा पूर्व और पूर्वोत्तर की ओर झुकी हो। शिल्पशास्त्र के अनुसार भूमि पूर्व प्लावनता से उगते हुये सूर्य की जीवनवाहिनी किरणों का हमें पूर्ण लाभ प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त भूमि, दक्षिण–पश्चिम की ओर ऊंची होनी चाहिए। पूर्व से पश्चिम की ओर लंबा भवन सूर्यवेधी और उत्तर से दक्षिण में लम्बा भवन चंद्रवेधी होता है। चंद्रवेधी भवन शुभ और धनकारक होता है। बाग–बगीचे हेतु सूर्यवेधी और चंद्रवेधी दोनों भवन उपयुक्त माने गये हैं। देवालयों निर्माण में सूर्य और चंदवेध का विचार नहीं किया जाता है।

- **अग्नि तत्व :**

अग्नि मानव जीवन का मुख्य आधार है पंच महाभूतों मे इसका महत्वपूर्ण स्थान है। अग्नि में तेज होता है तथा सूर्य इसका रूप है। सूर्य की जीवन दायिनी किरणें

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अग्नि का ही रूप है। अग्नि की दिशा दक्षिण पूर्व (आग्नेयकोण) है। भवन में रसोईघर में अग्नि का स्थान, गीजर, विद्युत मीटर आदि आग्नेयकोण में रखना चाहिए क्योंकि इस कोण से अग्नि की सीधा संबंध है जैसा कि ऋग्वेद मे वर्णित है –

अग्निंहोतांरंभन्येदास्वेन्तु वसुं
सूनुंसहंसोजातवैदसं विप्रंनजातवेदसम् ।
यऊर्ध्वयांस्वध्वरी देवोदेवाच्यांकृपा
धृतस्यविभ्राष्टिमनुवपिच्शोचिषा जह्यावोनस्यपिषः ।।

मैं उत्पन्न हुओं के जानने वाले, ऋषि की न्याई जीवमात्र के जानने वाले (और) बल के पुत्र अग्नि को धनवान दानशील (और) देवताओं के बुलाने वाला समझता हूँ, जो सुन्दर यज्ञ के प्रवर्तक (और) देवता, देवताओं की ओर जाने वाली महान कृपा से चारों ओर से होते हुये पिघले हुए घी की लाट को अपनी ज्वाला द्वारा अनुसरण (करके) कामना करते हैं।[29]

- **वायु तत्व :**

वायु की महत्ता सर्वविदित है निरन्तर शुद्ध वायु से मनुष्य स्वस्थ रहता है। इसके लिये आवश्यक है कि निवास स्थान (भवन) में वायु प्राण शक्ति है। इस जगत में जो भी सजीव पदार्थ है वे सभी वायु पर निर्भर है। प्राणी से लेकर वनस्पति, जीव – जन्तु सभी को जीवन के लिये पर्याप्त स्वच्छ वायु चाहिए। स्पष्ट है कि वायु जीवनाधार है। निरंतर शुद्ध वायु का प्रवाह होता रहे। वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर बने हैं, कि पूर्व एवं उत्तर दिशा का भाग सर्वाधिक खुला तथा सतह नीची रहे, जिससे प्रातःकालीन सूर्य का प्रकाश एवं शुद्ध वायु निरन्तर प्राप्त होती रहे। भवन में इसी दिशा में वायु के समस्त साधन जैसे दरवाजों, खिड़कियों, रोशनदान, कूलर, ए.सी., बरामदा, बालकनी आदि रखना चाहिए।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **जलतत्व :**

दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है जल । वर्षा, नदी, समुद्र, महासागर आदि सभी पानी अर्थात् जलतत्व के द्योतक हैं। पंचमहाभूतों में इसका अपना महत्व है ; क्योंकि जल तत्व के बिना जीवन संभव नहीं है। मानव का रक्त हीमोग्लोबिन का आक्सीजनयुक्त पानी है। अतः जल तत्व से मानव जीवन प्रभावित होता है। इसलिए भूमि या भवन पर आवास व निर्माण करने से पूर्व जल की समुचित व्यवस्था करना चाहिए, जिससे निर्माण कार्य की गति व्यवस्थित रह सके। भवन–निर्माण तथा प्राणियों का आवास, जलपरक होने के कारण इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तर–पूर्व या उत्तर भाग में जल संसाधन (कुंआ, नल) होना चाहिए। जैसा कि वृहत् संहिता में वर्णित है –

धर्म्यं यशस्यं च वदम्यतोऽहं दकार्गलं येन जलोपलब्धिः ।
पुंसां यथाङ्गेषु शिरास्तथैव क्षितावपि प्रोन्नतनिम्नसंस्थाः ।।1।।
एकेन वर्णेन चाम्भश्च्युतं नभस्तो वसुधाविशेषात् ।
ननारसत्वं बहुवर्णतां च गतं परीक्ष्यं क्षितितुल्यमेव ।। 2 ।।

जिन ज्ञान से भूमिगत जल का ज्ञान होता है उस धर्म और यश को देने वाले दकार्गल को कहते हैं। जिस तरह मनुष्यों के अंग में नाडियाँ हैं उसी तरह भूमि में ऊंची,नीची शिरायें हैं। आकाश से केवल एक स्वाद वाला ही जल गिरता है, किन्तु वही जल पृथ्वी की विशेषता से उस स्थान में अनेक प्रकार का रस और स्वाद वाला हो जाता है। इस तरह भूमि के वर्ण रस के समान जल के रस और वर्ण सिद्ध होते हैं अतः भूमि वर्ण और रस का परीक्षण – पूर्वक जल के रस और स्वाद का परीक्षण करना चाहिए ।[30] इसी प्रकार वास्तुसौख्यम् में वर्णित हैं –

प्राच्यादिस्थे सलिले सुतहानिः शिखिभयं रिपुभयं च ।
स्त्रीकलहः स्त्रीदौष्ट्यं नैस्दयं वित्तात्मजविवृद्धिः ।।284।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तु (गृहभूमि) के पूर्व में जल का स्थान होने से पुत्र की हानि अग्निकोण में अग्निभय, दक्षिण में शत्रुमय, नैर्ऋत्य में स्त्रीविवाद, पश्चिम में स्त्री की दुष्टता, वायव्य में निर्धनता, उत्तर में धनवृद्धि, ईशान में संतति की वृद्धि होती है। इस प्रकार भूमि चयन के लिये पृथ्वी तत्व का उपयोग कर जलतत्व का विचार करने के बाद ही दूसरे भौतिक तत्व को भवन में समाहित कर उपभोग करने की दृष्टि से स्थान निर्धारित करना चाहिए। वास्तुशास्त्र के नियमानुसार उत्तर पूर्व दिशा को सर्वोत्तम व शुद्ध माना गया है। स्वच्छ जल दिन मे सूर्य की किरणों से प्रभावित होता है। इस प्रकार के स्वच्छ जल के उपयोग से अनेक प्रकार की बीमारियां दूर होती हैं। कुंआ, ट्यूबवेल, स्वेमिंगपूल, स्नानगृह का जल उत्तर–पूर्व (ईशान) में जाना चाहिए एवं जल जैसे सेप्टिक टैंक और सीवर लाइन का प्रवाह या स्थापना उत्तर – पश्चिम में होना चाहिए।

- **आकाश तत्व :**

आकाश तत्व का तात्पर्य भवन ऑगन से है। भूखण्ड का मध्य भाग ब्रह्मा का स्थाना माना गया है, जिसे वास्तुशास्त्रानुसार खुला रखा जाता है। मयमतम् के अनुसार – *''ब्रह्मा मध्य स्थितः शम्भुस्त मुखस्थाश्चतुः सुराः।* [31] ब्रह्मा वास्तु रचना के मध्य में स्थित होते हैं। खुले स्थान से नैसर्गिक ऊर्जाओं का प्रवाह निर्वाध रूप से होता रहता है। इसलिये प्राचीन भवनों में आंगन की प्रथा प्रचलित थी। इससे पूरे मकान में सूर्य की किरणें एवं शुद्ध वायु का प्रवाह सम्यक रूप से बना रहता है एवं दूषित वायु भवन से निकलती रहती है। भवन का दक्षिण–पश्चिम भाग ऊंचा रखा जाता है। इसका कारण यह है, कि दोपहर के बाद सूर्य की हानिकारक रश्मियों से रक्षा हो सके और वर्षा ऋतु में पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली हानिकारक वायु से भी रक्षा होती रहें। ब्रह्म स्थान में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य अर्थात् स्नानगृह, सेप्टिकटैंक, गैरिज, स्टोररूम इत्यादि नहीं होना चाहिए ।[32] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जिस प्रकार हृदय से रक्त सपूर्ण शरीर में संचारित होता है ठीक उसी प्रकार आकाश तत्व (आँगन) से संपूर्ण वास्तुरचनाओं में ऊर्जा का संचार होना है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. वर्णानुसार आवास व्यवस्था :

वैदिक काल से ही हमारे यहाँ वर्ण व्यवस्था रही है।[33] प्राचीनकाल में वर्ण का निर्धारण कर्मानुसार किया जाता था जबकि वर्तमान समय में वर्ण व्यवस्था का आशय जन्म से लगाया जाता है। ''हमारे यहाँ प्रमुख चार वर्ण हैं और चारों वर्णों को चार अलग–अलग दिशाओं, उत्तर दिशा में ब्राह्मण, पूर्व दिशा में क्षत्रिय, दक्षिण दिशा में वैश्य तथा पश्चिम दिशा में शूक्षों को बसाना चाहिए।''[34] जैसा वृहत् संहिता में वर्णित है –

वासगृहाणि च विद्याद्विप्रादीनामुदग्दिगाद्यानि।
विशतां च यथा भवनं भवन्ति तान्येव दक्षिणतः ।। 68 ।।

ग्राम या नगर के यथा संभव उत्तर में ब्राह्मण, पूर्व में क्षत्रिय, दक्षिण में वैश्य व पश्चिम में शूद्रों का निवास, रखना चाहिए।[34] नारद संहिता के अनुसार –

मधुपुष्पाम्ल पिशितगन्धान् विप्रानुपूर्वकम् ।
सितरक्तेश हरित कृष्णवर्ण यथा क्रमात् ।।2।।

ब्राह्मण के लिये श्वेत वर्ण तथा शहद की भांति गंध वाली भूमि, क्षत्रिय के लिये रक्त वर्ण तथा पुष्प की भांति गंध वाली भूमि, वैश्य के लिये हरित वर्ण तथा अम्ल गंध युक्त भूमि तथा शूद्र के लिये कृष्णवर्ण एवं मांस की भांति गंध वाली भूमि सुखद होती है।[35] वर्तमान समय में भी वर्ण व्यवस्था दृष्टिगोचर होती है, जो कि आर्थिक स्थिति पर आधारित है, न कि कर्म पर । वैदिक काल में शूद्रों के लिए अन्य वर्णों की अपेक्षा सबसे छोटे आकार के आवास की व्यवस्था थी।[36] वर्तमान समय में आय के आधार पर एच.आई.जी., एम. आई.जी. तथा एल. आई. जी के मकानों को व्यवस्था उपरोक्तानुसार रखी गई है।

सफेद रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में मधुरता का अनुभव कराने वाली व सुन्दर गंध वाली ब्राह्मण वर्ण भूमि होती है। इस प्रकार की भूमि पर साहित्यिक संस्था,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्वविद्यालय, विद्यालय, मंदिर, धर्मशाला व मांगलिक कार्यों हेतु निर्माण करना चाहिए। लाल रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में कषैली व रक्तगंध से युक्त भूमि क्षत्रिय वर्ण की होती है। इस प्रकार की भूमि पर राजकीय कार्यालय, सैनिक कॉलोनी आदि बनाना चाहिए। हरे या पीले रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में खट्टी व शहद सदृश गंध से युक्त भूमि वैश्य वर्ण होती है नगर के इस क्षेत्र में दुकानें, व्यवसायिक प्रतिष्ठान, धनिकों के भवन, बंगला या कोठी निर्मित करना चाहिए। काले रंग की मिट्टी वाली, स्वाद में कड़वी व मदिरा के सदृश गंध से युक्त भूमि शुद्र वर्ण की होती है नगर में उद्योग धंधो के लिए यह भूमि उपयुक्त होती है, ऐसी भूमि में श्रमिक कॉलोनी, कुष्ठ आश्रम या शमशाम आदि के लिए उपयोग में लाना चाहिए। यह भूमि जनता के लिए कॉलोनी बसाने योग्य नहीं होती।

सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित नगर नियोजन का कार्य प्राचीनकाल से चला आ रहा है। भारतीय धार्मिक व ऐतिहासिक ग्रन्थों में हस्तिनापुर, द्वारिका, अयोध्या पाटिलीपुत्र, श्रावस्ती, उज्जयिनी आदि नगरों का उल्लेख मिलता है। यदि वर्तमान में भी नगर नियोजन की योजना के समय वास्तु सिद्धान्तों को ध्यान रखते हुये इनका भरपूर प्रयोग किया जाये, तो हम थोड़े से प्रयास से ही लाभान्वित हो सकते है। वर्तमान समय में नगर नियोजन निम्न वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों को ध्यान रखकर किया जाना चाहिए –

पूर्व दिशा में	–	व्यापारी, शिल्पकार, प्रधान, कारीगर,
पूर्व–उत्तर दिशा में	–	आचार्य, पुरोहित, यज्ञस्थान, तालाब, कुआँ, बावड़ी आदि।
उत्तर–पूर्व दिशा में	–	राजकीय कोष, गौशाला या पशुशाला, डेरी आदि ।
उत्तर दिशा में	–	नगर देवता का मंदिर, यन्त्रशाला, जौहरी, सुनार, ब्राह्मण, सन्यासियों के आश्रमो ।
पश्चिम–उत्तर दिशा में	–	वाहन, यान व रथशाला आदि।
उत्तर–पश्चिम दिशा में	–	अस्पताल, बाजार, औषधालय आदि।
पश्चिम दिशा में	–	लघुउद्योग, कारीगर, लौहार, जुलाहा, चमड़े के कारखाने, सेवक आदि।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दक्षिण पश्चिम दिशा में	–	शस्त्रागार, वनौषधि, भण्डार आदि।
पश्चिम दक्षिण दिशा में	–	पशुशाला एवं फैक्टरी आदि ।
दक्षिण दिशा में	–	सुरा एवं मांस व्यापारी, वेश्याएं, नाट्यशाला, चित्रशाला आदि।
पूर्व–दक्षिण दिशा में	–	राजकोष, कर्मशालाएं, लेखापाल आदि

वर्तमान समय में नगर नियोजन उपर्युक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर करना चाहिए ; जिससे नगर का चहुमुखी विकास होता रहे। वास्तुशास्त्र के सिद्धान्त इस प्रकार बनाये गये हैं, कि प्राकृतिक स्त्रोतों द्वारा हमें सर्वाधिक ऊर्जा व लाभ प्राप्त हो सके, जिससे हम निरन्तर उत्तम स्वास्थ्य, सुख, शांति, समृद्धि प्राप्त करते रहें। प्रकृति और पंचमहाभूतों से सर्वाधिक लाभ प्राप्त करने के लिए, वास्तुशास्त्र का ज्ञान व उपयोग आवश्यक है। अधिकांश व्यक्तियों/विद्वानों एवं वैज्ञानिकों का यह तर्क है, कि पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि व आकाश इस सृष्टि पर सर्वत्र व्याप्त है और इनका उपभोग किसी भी दिशा से किया जा सकता है। यह बात एकदम सत्य है, कि पृथ्वी पर समस्त तत्वों का संचरण होता है, किंतु उपभोग की दृष्टि से जिस तत्व की जो दिशा शास्त्रों में निर्धारित है उस दिशा से उस तत्व विशेष को प्राप्त करना अधिक लाभकारी व फलदायक होता है।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं, कि आधुनिक समय में आवश्यकता इस बात की है कि वैदिक ज्ञान को वर्तमान समय के अनुरूप ढालकर परिस्थिति विज्ञान, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था के बीच समन्वय स्थापित कर नगर नियोजन किया जाये, ताकि सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

❑ नगर नियोजन के भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन :

नगर नियोजन के भौगोलिक सिद्धान्त वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों का परिवर्तित रूप है। जहाँ एक ओर ये दोनों ही प्रकार के सिद्धान्त ; जिनमें बाह्य रूप से तो अंतर दृष्टिगोचर होता है; किन्तु दोनों का लक्ष्य समस्त नगरवासियों को अधिकाधिक सुखी एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

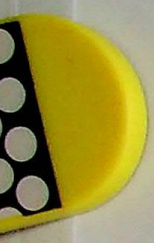

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समृद्धशाली बनाना है। आधुनिक नगरों में भूमि उपयोग पर सर्वाधिक ध्यान दिया जा रहा है। कार्यात्मक वर्गीकरण दृष्टि से भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों में मुख्य अंतर यह है , कि वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों में कार्यात्मक क्षेत्रों का वर्गीकरण कार्य की प्रवृत्ति एवं दिशाओं पर आधारित होता है, जबकि भौगोलिक सिद्धातों में केवल भौतिक दृष्टि के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है। इसके साथ–साथ आधुनिक नगरों में दिशाओं का महत्व लगभग समाप्त हो गया। वास्तुशास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धान्त पूर्णतः प्राकृतिक नियमों का आधारित है, वहीं दूसरी ओर भौगोलिक नगर नियोजन के सिद्धान्त प्राकृतिक शक्तियों की उपेक्षा कर केवल उपभोगवादी प्रकृति एवं सौन्दर्य को ध्यान में रखते हुये निर्धारित किये गये हैं। वर्तमान समय में नगरवासियों को प्राकृतिक सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है जैसा कि हमारे ऋषि मुनियों ने भी कहा है –

''यथा देह तथा गेह''[37]

अतः वर्तमान समय में नगर के भौतिक विकास के साथ–साथ प्राकृतिक विकास पर भी ध्यान देना आवश्यक है तथा नगर नियोजन इस आधार पर किया जाना चाहिए, कि नगर वासियों का आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक विकास हो, इसके साथ–साथ प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन न हो।

वास्तुशास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धान्तानुसार नगर में वर्णानुसार आवास की व्यवस्था की जाती है। इन चारों वर्णों की प्रकृति के अनुरूप इनकी दिशाओं के आधार पर आवास की व्यवस्था की गई है।

नगर के उत्तर में ब्राह्मण, पूर्व में क्षत्रिय, दक्षिण में शूद्र एवं पश्चिम में वैश्य के लिये सामान्य रूप से आवास व्यवस्था का प्रावधान है। भौगोलिक सिद्धान्तों में वर्णानुसार आवास व्यवस्था की पूर्ण रूपेण उपेक्षा कर दी गई है। इस वर्ण व्यवस्था का आशय व्यक्ति की कार्य प्रकृति से है, जातिवाद या सम्प्रदायवाद से नहीं है। आज भी हमें समाज में यह

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

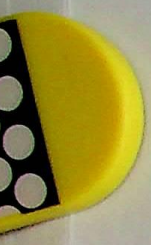

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्ण व्यवस्था अप्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होती है, क्योंकि वर्तमान समय में प्रमुख चार वर्णों उच्चतर, उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्णों में विभाजित किया गया है। अतः इस विभाजन का आधार कार्यानुसार न होकर आर्थिक है दूसरी ओर अगर देखा जाये तो आज भी हमें वर्णव्यवस्था देखने को मिलती है ; क्योंकि जो व्यक्ति प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत् है। उसमें हमें यह वर्ग देखने को मिलते है। इस प्रकार वर्तमान नगरों में वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर वर्ण व्यवस्थानुसार आवास व्यवस्था की जाये; जिससे अधिकाधिक नगरीय समस्याओं का समाधान सरलता से किया जा सके ,क्योंकि आज नगरीय मानव अधिकाधिक धनोपार्जन के लिये कार्यों की नैतिकता एवं अनैतिकता को ध्यान में न रखकर कार्य करते हैं एवं प्राप्त धन से अच्छे से अच्छा आवास प्राप्त करना चाहते हैं; जिसके परिणामस्वरूप अनेक सामाजिक बुराईयों जैसे नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, मानवीय संवेदन शून्यता, गंदी बस्तियों का प्रसार इत्यादि बढते जा रहे हैं; इसके विपरीत वास्तुशास्त्रीय वर्ण व्यवस्थानुसार आवास–व्यवस्था में भिन्न–भिन्न वर्णों के लिये भिन्न–भिन्न आकार प्रकार एवं दिशानुसार भवनों का प्रावधान है इससे व्यक्ति धनोपार्जन की अंधी दौड़ से स्वंय ही हटकर अनेकानेक नगरीय समस्याओं का समाधान स्वतः ही कर सकता है।

जहाँ वैदिककालीन भारतीय नगर वास्तुशास्त्रानुसार बनाये गये थे। वहीं आर्वाचीन नगरों की आकारिकी में पर्याप्त अंतर दृष्टिगोचर होता है। वैदिक कालीन नगरों में नगर को चारों ओर से दीवार या परकोटा एवं गहरी खाई, शत्रुओं से सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए आवृत्त किया जाता था; जिसका वर्णन विश्वकर्मा प्रकाश में मिलता है। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है इसलिये अर्वाचीन नगरों में इस प्रकार की व्यवस्था का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर होता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि वैदिककाल में जहाँ जनसंख्या कम थी वहीं तत्कालीन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियाँ भी आधुनिक काल से भिन्न थी इसीलिये वैदिक कालीन नगरीय आकारिकी एवं वर्तमान नगरीय आकारिकी में अंतर होना स्वाभाविक है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में ब्रह्म स्थान का वही महत्व है, जो मानव शरीर में हृदय का अर्थात् वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तानुसार सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में ब्रह्मस्थान का निर्धारण अनिवार्य होता है।[38] ब्रह्म स्थल से आशय आकाश तत्व या खुले भाग से है एवं ब्रह्म स्थान को खुला छोड़ने का प्रावधान है इसके अभाव में प्राकृतिक सहयोग प्राप्त नहीं होता । भौगोलिक सिद्धान्तों में नगर में ब्रह्म स्थान का सर्वथा अभाव होने के कारण प्रायः समस्त नगरवासी साधन सम्पन्न होने के बावजूद भी सुखी नहीं है। वास्तुशास्त्र में नगर के बाहर एवं भीतर अपनी–अपनी दिशाओं में देवालयों में देवताओं के निवेश्य का विधान है। इसी प्रकार जलतत्व की अपनी दिशा एवं अपना महत्व है ; जबकि आधुनिक कालीन नगरों में अपनी आवश्यकतानुसार कहीं भी किसी भी स्थान पर व किसी भी दिशा में है पंप, कुंआ, मंदिरों एवं किसी भी देवता की स्थापना एवं कर दी जाती है। आधुनिक कालीन नगरों में इन तत्वों का सर्वथा अभाव पाया जाता है।

समस्त ज्ञान के पार्श्व में सृष्टि की ऐसी प्राकृतिक व्यवस्था है; जिसमे सभी वस्तुऐं एक दूसरे पर अन्योनाश्रित हैं, इस व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुये हमारा यह कर्तव्य हो जाता है, कि हम सृष्टि की व्यवस्था को समझकर अपना जीवन इसके अनुरूप व्यवस्थित करें, क्योंकि भारतीय दर्शन समस्त ज्ञान के पीछे आत्म–विकास की बात करता है और जहाँ आत्म–विकास होता है, वहाँ के ग्राम, नगर एवं राष्ट्र का विकास स्वतः ही हो जाता है।

अतः वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि नगरीय विकास, वैदिक कालीन ज्ञान को आधार बनाकर भौगोलिक विज्ञान में परिवर्तित करके किया जाये। वास्तव में भौगोलिक सिद्धान्तों के मूल में वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्त ही है ये दोनों सिद्धान्त एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, लेकिन आधुनिकता की होड में इनका मूल रूप विकृत हो गया। नगर नियोजन के वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों एवं भौगोलिक सिद्धान्तों के मध्य संतुलन स्थापिक कर एवं प्राकृतिक सहयोग प्राप्त कर समस्याविहीन, समस्त साधन सम्पन्न, सुख–सुविधाओं से युक्त, शांतिप्रिय नगरों का अधिकाधिक विकास किया जाये।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप आदर्श नगर की संकल्पना :

नई सहस्त्राब्दी में हम विस्तृत आकाशीय अपेक्षाएं लेकर प्रवेश कर रहे हैं। वास्तव में हमने जो कुछ बोया है उससे इस पर्यावरण को प्रदूषित किया है। यह हमारी आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व के लिये खतरा बन चुका है; जबकि हमारा लक्ष्य आने वाली पीढ़ी के लिये खुशियाँ, स्वस्थता, मस्तिष्क व आत्मा के लिये शांति होना चाहिए। अतः हमारी पहली प्राथमिकता है, कि हमारा घर/नगर का पर्यावरण उसमें रहने वाले लोगों की ऊर्जा के साथ सामन्जस्य में हो। एक नगरीय बस्ती तभी एक आदर्श नगर का रूप धारण कर सकती है, जब वह अपने नगरवासियों के चहुँमुखी विकास (आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक) में सहायक हो। यह तभी संभव है, जब मानवीय पर्यावरण एवं प्राकृतिक पर्यावरण के मध्य सामन्जस्य स्थापित हो। 'प्रकृति' पृथ्वी का पर्यावरण है। जीवन उत्पत्ति का कारण है। ब्रह्मण्डीय, विद्युत–चुम्बकीय एवं पार्थिव ऊर्जा जीवन में अस्तित्व के लिये सहयोग करती है। मनुष्य प्रकृति, भवन एवं भूमि के मध्य सामान्जस्य स्थापित कर जीवन को खुशहाल बनाने के लिये बाह्य एवं आंतरिक ऊर्जाओं में समन्वय अत्यावश्यक है ; किन्तु आधुनिक नगरों में प्राकृतिक संरक्षण के बजाये इसका खुलकर विनाश किया जा रहा है अतः नगरों के चहुँमुखी विकास के नाम पर प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन कर मानव प्रकृति का स्वामी बनने में प्रयासरत है। परिणामस्वरूप मानव एवं प्रकृति के मध्य सत्ता संघर्ष प्रारंभ हो गया है, जो कि वर्तमान में चरमसीमा पर पहुँच गया है; जबकि मानव का जीवन संघर्षपरक न होकर आनंदपरक होना चाहिए। परिणामस्वरूप नगर आज अपनी संपूर्ण शक्ति का प्रयोग समस्याओं को हल करने में लगा देते हैं फिर भी नगरीय विकास के लिये सर्वदा शक्ति का अभाव बना रहता है। अतः आधुनिक नगरों में मानव एवं प्रकृति के मध्य सत्ता संघर्ष के कारण दिन प्रतिदिन नगरीय समस्याओं में वृद्धि के कारण नगरवासियों का विकास अवरूद्ध हो रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है, कि मानव एवं प्रकृति के मध्य उत्पन्न संघर्ष को समाप्त कर नगरीय जीवन को समृद्धशाली बनाया जाये। भारतीय मनीषियों ने वैदिक काल में स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों के अन्तर्गत नगर नियोजन के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिससे नगरवासियों के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। भारतीय वास्तुशास्त्र के दो पहलू हैं एक धार्मिक दूसरा वैज्ञानिक। धार्मिक पक्ष में भूमि शुद्धि, नींव का मुहूर्त, भवन, प्रतिष्ठा (पूजा–पाठ) एवं वास्तु यज्ञ इत्यादि आते हैं इसे वास्तुशास्त्र का उत्तरार्द्ध खण्ड भी कह सकते हैं। वास्तुशास्त्र का पूर्वार्द्ध खण्ड जो पंचमहाभूत एवं दस दिशाओं पर आधारित है शत्–प्रतिशत विज्ञान की श्रेणी में आता है। वर्तमान में नगरों को स्थापत्यवेद के अनुरूप नियोजित एवं विकसित करना न केवल उचित होगा वरन् अत्यंत आवश्यक भी हैं –

- **आकार :**

नगर सदैव ही परिवर्तनशील अवस्था में रहे हैं। इस कारण इनकी जनसंख्या एवं आकार संबंधी धारणाओ में भी समयानुरूप परिवर्तन होता रहा है जैसे वैदिक काले में जनसंख्या सीमित होने के कारण उनका आकार भी निश्चिम होता था।[39] इसी कारण नगरों को परकोटा बनाकर सीमाबद्ध किया जाता था; किन्तु वर्तमान में सीमित संसाधनों एवं तकनीकि उन्नति के कारण किसी भी नगर की जनसंख्या एवं आकार को सीमाबद्ध करना संभव नहीं है। अतः नगर की जनसंख्या एवं आकार का निर्धारण समयानुकूल आवश्यकता के अनुसार किया जाना चाहिए। ''नगरों के आदर्श आकार से तात्पर्य उस आकार से है, जो न केवल संबंधित नगर के संपूर्ण नगरीय जीवन बल्कि संबंधित नगरीय प्रदेश के भी सामाजिक–आर्थिक जीवन को ध्यान में रखते हुये सर्वोत्तम वांछित है। नगरों का आकार अधिक से अधिक उस सीमा तक बढ़ाना चाहिए, जहाँ तक उसमें या उसके द्वारा अधिक समस्यायें पैदा न हो तो ऐसे नगर को आदर्श आकार का नगर कह सकते हैं।''[40] इसके अतिरिक्त नगरीय भूमि का औसत ढाल उत्तर या ईशान दिशा में होना चाहिए। ईशान कोने में नगर का ढाल होने से सुख समृद्धि निवास करती है।[41]

- **आकृति :**

एक आदर्श नगर अन्य वास्तु रचनाओं के समान ही आयताकार या वर्गाकार आकृति में होना चाहिए, क्योंकि इससे नगर में सौंदर्य वृद्धि के साथ–साथ नगरीय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्यवस्था एव प्रशासन तंत्र को नगर में स्थापित करने में सुलभतः होती है। इसके अतिरिक्त ब्रह्म स्थान से उत्सर्जित ऊर्जा का सभी भागों में आवश्यकतानुसार प्राप्ति (अन्य वास्तु शास्त्रीय नियमानुरूप स्थापित होने पर) सरलता होती है।

- **आवास व्यवस्था :**

मानव की तीन प्रमुख मूलभूत आवश्यकताओं में से आवास तीसरी प्रमुख आवश्यकता है। स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप नगर में आवास व्यवस्था वर्णानुसार होना चाहिए। यहाँ वर्ण से तात्पर्य कर्म से है। वर्तमान समय में विश्व के लगभग सभी देशों में वर्ण व्यवस्था आर्थिक आधार पर अप्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलती है। अतः नगर में नगरवासियों के निवास हेतु उनकी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए आवास व्यवस्था होना चाहिए। इससे नगरों में गंदी बस्तियों के उन्मूलन में सहयता मिलेगी साथ ही साथ आवास की समस्या का समाधान भी संभव हो सकेगा। इसके अतिरिक्त विभिन्न वर्णों के लोगों की प्रवृत्ति के अनुसार उन्हें नगर के उचित स्थान एवं दिशा में आवास सुलभ हो सकेगें ।

- **ब्रह्म स्थल :**

ब्रह्म स्थल से तात्पर्य वास्तु रचना के मध्य भाग से हे। वास्तु रचना में ब्रह्म स्थान का वही महत्व है, जो मानव शरीर में हृदय का होता है। इसीलिए सभी प्रकार की वास्तु रचनाओं में ब्रह्म स्थल का निर्धारण आवश्यक कहा गया है।[42] समस्त प्रकार की वास्तु रचनाओं में ऊर्जा का प्रवाह ब्रह्म स्थल के माध्यम से ठीक उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार संपूर्ण शरीर में रक्त प्रवाह का नियंत्रण हृदय द्वारा होता है। नगर का निर्माण अनेक वास्तु रचनाओं से मिलकर होता है। इसलिये नगर में ऊर्जा के समुचित प्रवाह के लिये ब्रह्म स्थल का होना अति आवश्यक होता है। इसी कारण ब्रह्म स्थल में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य वर्जित कहा गया है। कहने का तात्पर्य है, कि नगर के मध्य भाग में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य नहीं होना चाहिए ; क्योंकि ब्रह्म स्थान का संबंध प्राकृतिक ऊर्जा से है और ब्रह्म

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थान के खुले होने से नैसर्गिक ऊर्जाओं का प्रवाह निर्वाध रूप से होता रहता है, जो उस नगर में निवास करने वाले लोगों की मानसिक शांति व जीवन शक्ति के विकास हेतु अनिवार्य है।

- **परिवहन व्यवस्था :**

इसके अन्तर्गत सड़कमार्ग, रेलमार्ग एवं वायुमार्ग आदि आते हैं। किसी भी नगर में यातायात मार्गों का वही स्थान होता है, जो मानव शरीर में रक्तवाहनियों का होता है। जिस प्रकार रक्त वाहनियों के द्वारा रक्त संपूर्ण शरीर में प्रवाहित होकर शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। उसी प्रकार नगरीय यातायात के समस्त नगरीय कार्य सम्पादित होते हैं। नगर के मुख्य मार्ग उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम की ओर होना चाहिए।[43] इसके साथ –साथ नगर के समस्त मार्ग इस प्रकार होना चाहिए कि वे एक दूसरे को समकोण पर काटें। नगर में सड़कों की संख्या एवं माप का निर्धारण यातायात दबाव के अनुरूप करना चाहिए। बस स्टैण्ड, रेल्वे स्टेशन, हवाई अड्डा नगर के खुले क्षेत्र में वायव्य दिशा में होना चाहिए तथा इनका संबंध नगर के अन्य भागों से सुलभ यातायात द्वारा होना चाहिए।

- **अपवाह तंत्र :**

किसी भी नगर को वहाँ का प्राकृतिक अपवाह तंत्र प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है; क्योंकि इसका सीधा प्रभाव नगर की जलापूर्ति पर पड़ता है।[44] इसीलिए प्राचीनकालीन नगरों का विकास प्रायः नदी के किनारे होता था। (उदा. सिंधुघाटी की सभ्यता) वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तानुरूप जल स्त्रोत नगर की ईशान दिशा में उचित कहा गया है। अतः नगर नियोजन के समय नगरीय प्राकृतिक अपवाह तंत्र का भी अध्ययन करना चाहिए। जल व्यवस्था के साथ–साथ नगर में अवशिष्ट पदार्थों का विसर्जन एवं मल विसर्जन की उचित व्यवस्था भी होना चाहिए। मल विसर्जन के लिये उचित नालियों का प्रबंध आवश्यक है ; क्योंकि प्रदूषित जल से नगर में अनेक प्रकार की बीमारियों के प्रकोप की संभावना होती है। अतः एक आदर्श नगर में जल मल निकासी की व्यवस्था पश्चिम और

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वायव्य के मध्य होना चाहिए; क्योंकि इस दिशा में नगरीय भूमि का ढाल होने से प्रदूषित जल आसानी से नगर के बाहर निकल जाता है। किसी अन्य दिशा में जलमल निकासी स्थल बनाने से ढाल न होने के कारण निकासी की सदैव समस्या बनी रहेगी और प्रदूषण के कारण नगर के व्यक्ति अधिकांशतः बीमारियों के शिकार रहेंगे। इसके अतिरिक्त प्रदूषित जल का पुनर्शुद्धिकरण कर नगर के समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य हेतु सिंचाई के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

- **नगरीय सेवायें एवं सुविधायें :**

एक आदर्श नगर में नगरीय जीवन को स्वस्थ, सुखमय और कार्यशील बनाये रखने के लिये आधारभूत सेवाओं एवं सुविधाओं का होना अत्यंत आवश्यक है। नगरों में शिक्षा का सर्वाधिक महत्व होता है। अतः नगरों में आवश्यकतानुसार उचित स्थान में शिक्षा केन्द्रों का होना आवश्यक है। नगर का प्रमुख शिक्षा केन्द्र नगर की उत्तर दिशा में होना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। एक आदर्शनगर में उचित चिकित्सा व्यवस्था होना आवश्यक है अतः नगर का प्रमुख चिकित्सालय नगर की वायव्य दिशा में होना चाहिए क्योंकि चिकित्सालयों एवं उनमें उपचारित मरीजों पर नगरीय दिशा का परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही साथ नगरीय आकार एवं जनसंख्या दबाव के अनुरूप नगर के उचित स्थानों पर चिकित्सा केन्द्रों की व्यवस्था करना चाहिए। इसीप्रकार नगर के प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र नगर की पूर्व दिशा में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। इससे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कार्यप्रणाली एवं कार्य क्षमता अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। इसका कारण यह है, कि इस दिशा में वायु शुद्ध एवं प्रातःकालीन सूर्य की किरणें पड़ने के कारण व्यक्ति स्वस्थ्य और सक्रिय रहता है ; जिससे कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। इसके साथ ही एक आदर्श नगर में सभी व्यक्तियों के लिये उचित स्थानों पर मनोरंजन के स्थल होना अत्यावश्यक हैं। नगर में मनोरंजन के साधन या स्थल उत्तर या वायव्य दिशा में होना चाहिए। नगरवासियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुये नगर में उचित स्थान में पुलिस चौकी या थाना होना चाहिए। नगर का पुलिस मुख्यालय या छावनी क्षेत्र नगर की पूर्व दिशा की ओर स्थित होना चाहिए। इसके अतिरिक्त ऊर्जा से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संबंधित स्थल आग्नेय दिशा में होना चाहिए। जैसे भारत का सबसे अधिक विकसित मुंबई नगर की आग्नेय दिशा में ट्राम्बे स्थित है, जो अणु ऊर्जा शक्ति निर्माण का प्रमुख केन्द्र है।

- **व्यापारिक क्षेत्र :**

व्यवसाय को नगर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मौलिक अंग कहा गया है। इसे नगरीय जीवन का आधार भी कहा गया है; क्योंकि छोटे–बड़े सभी प्रकार के नगरों में इसकी उपस्थिति एक अनिवार्य पक्ष है। वास्तव में जीवनोपयोगी विविध प्रकार की वस्तुओं का फुटकर एवं थोक क्रय–विक्रय तथा अनेक प्रकार की सेवाओं की उपलब्धता नगरवासियों और सेवा केन्द्रों के लिये व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के माध्यम से ही होती है। अतः किसी भी नगर में बाजार की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। नगर में बाजारों का निर्धारण वास्तुशास्त्रीय आधार पर किया जाना चाहिए । जैसे – अनाज, दाल मिल, चावल व पशु धन से संबंधित बाजार नगर के पश्चिम और वायव्य दिशा के मध्य उपयुक्त होते हैं। होटल, रेस्टोरेन्ट आदि नगर की पश्चिम दिशा होना शुभफलदायक होते हैं। आभूषण रत्न आदि से संबंधित व्यवसाय नगर के उत्तर में होना शुभ माने गये हैं। सौन्दर्य प्रसाधन से संबंधित बाजार नगर के आग्नेय कोण में उत्तम माने गये हैं।

- **औद्योगिक क्षेत्र :**

उद्योग या वास्तु निर्माण के दृष्टिकोण से नगरों की महत्ता आदिकाल से चली आ रही है। वस्तु–निर्माण की प्रक्रिया मूलतः घरेलू उद्योग के रूप विकसित हुई; जिसमें वस्त्र, पोशाक, लकड़ी और धातु के समान, घरेलू बर्तन, औषधि, चमड़े के सामान, जेवरात, प्रसाधन सामग्री खाद्य बर्तन, औषधि, चमड़े के सामान, जेवरात, प्रसाधन सामग्री खाद्य आदि के प्रधानता थी। वर्तमान समय में औद्योगिक विकास के कारण अनेक नगर औद्योगिक नगरों (जैसे टाटा बोकारो, भिलाई, मुंबई, कलकत्ता) के नाम से जाने जाते हैं। किसी भी नगर का औद्योगिक विकास वहीं तक उचित होता है, जहाँ तक वह नगर वासियों के विकास में सहायक हों, किन्तु वर्तमान में औद्योगिक विकास से अनेक प्रकार की समस्यायें (पर्यावरण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

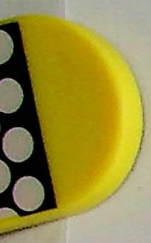

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रदूषण, आवास, गंदी बस्ती) उत्पन्न हो रही हैं, जोकि अनुचित है। इन समस्याओं के समाधान के लिये स्थापत्यवेद में उद्योगों की प्रकृति के अनुसार ही उन्हें विभिन्न दिशाओं में स्थापित करने का प्रावधान है जैसे – लोहे से संबंधित वस्तुओं का निर्माण या उद्योग नगर के दक्षिण – पश्चिम कोने में स्थापित करना चाहिए। दूध, दही, घी से संबंधित व्यवसाय में उसका निर्माण स्थान पूर्व तथा आग्नेय कोण के मध्य में बनाना चाहिए। औषधि से संबंधित उद्योग की स्थापना उत्तर और ईशान के मध्य के खण्ड में करना चाहिए।

- **हरित पट्टिका :**

वर्तमान समय में दिन प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरण अवनयन होने से अनेक समस्यायें उपस्थित हो गई हैं। आज आवश्यकता इक बात की है, कि प्रकृति तथा मानव के मध्य उपजे इस संघर्ष को समाप्त कर उसके मध्य सामन्जस्य स्थापित किया जाये। इसलिये नगरीय विकास में स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों का अनुसरण करना आवश्यक हो गया है। स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार वास्तु रचना। नगर की पश्चिमी दिशा में मोटी दीवार (घनी हरी पेटी) होना चाहिए। इसके पार्श्व में वैज्ञानिक कारण यह है, कि मध्यान्ह के पश्चात् सूर्य की हानिकारक किरणों का प्रभाव नगर पर न्यूनतम पड़े। इसके साथ ही साथ सड़कों के दोनों ओर वृक्षारोपण कर औद्योगिक क्षेत्र और वाहनों आदि द्वारा किये जाने वाले पर्यावरण प्रदूषण से नगर अधिकाधिक सुरक्षित रहे।

इस प्रकार स्पष्ट है, कि नगर नियोजन की आदर्श नगर की संकल्पना द्वारा सौम्य सुखद संवेदनाओं के साथ नगरीय वातावरण को अनुकूल व सुख समृद्धिमय बनाने के लिये वास्तुकला के नियमों का पालन करना हितकर होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्राचीन (आदर्श) नगर नियोजन

गोदाम	पशुशाला	किसान	कोषागार	जल स्थान	पूजा स्थल मंदिर
राजाधिकारी	भण्डारण	दण्डरक्षक			पूजन स्थल स्नानागार
भोजनालय					कोषालय लक्ष्मी राजा
ब्राह्मण गृह					निवास
धनागार					
अध्ययनशाला			ब्रह्म स्थान		द्वार कुबेर गुप्तचर
पाठशाला			सभाग्रह चौराहा		
व्यापारिक					
मंत्रीघर शिल्पी					पाठशाला मंदिर ब्रह्माण
शूद्र					क्षत्रिय बस्ती
सैनिक घर					सेनापति कक्ष लक्ष्मी, कुबेर
व्यापारी					मंदर
शास्त्रागार	शस्त्रागार नट,		स्वर्णकार लोहार	शयन कक्ष	पाक शाला
	मल्लाह नतर्क वेश्य				
	शमशान, गोशाला				

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. तिवारी आर.सी 1999 अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ क्र. 324
2. The underlying idea of town planning is the welfare of the citizens and to rise the standard of living of the people - Stanap, L.D. Planning and Agriculture, journal of town planning institute, London 36, 1950 p. 141.
3. '.....essential aim is to improve the quality of urban life' - R. Knowled and J. wareing, 1976.
4. 'Town and country planning is concerned with the use and development of land' - Jackson.
5. Singh, R.L. Bangalore, An Urban Survey, op. cit p. 210.
6. तिवारी आर.सी 1999 अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ क्र. 324
7. शर्मा, आर.सी., सेटिलमेंट ज्योग्राफी ऑफ दा इंडिया डिजर्ट, 1972, पृ. 86
8. Knowled, R. and Wareing, J. 1990 : Economic and Social Geography made simple Heinemann Professional Books, London p. 268.
9. मिश्र, डॉ. कृष्ण कुमार 1994 अधिवास भूगोल, कुसुम प्रकाशन पृ. 171.
10. शर्मा, आर.सी., आइबिड (Ibid) पृ. 166
11. सिंह, उजागर, वही पृ. 178.
12. उपरोक्त पृ. 290
13. वंसल सुरेशचंद्र, नगरीय भूगाल, चौथा संस्करण मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ पृ. क्र. 454.
14. वर्मा शिव, मानसार, अध्याय 10 पृ. 51.
15. समराङ्गणसूत्रधार, अध्याय 23 श्लोक 1 – 4.
16. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, दुर्ग निवेशः अध्यायः
17. कौटिल्य का अर्थशास्त्र, गौरेला वाचस्पति पृ. 91
18. द्विवेदी विन्ध्येश्वरी प्रसाद, वास्तुरत्नाकर, सप्तम संस्करण, श्लोक 11 पृ. क्र. 2
19. मिश्र आचार्य रामजन्य, नारद संहिता, तृतीय संस्करण वि.स. 2052 खण्ड अध्याय 31 श्लोक 50–52 पृ. क्र. 220
20. शुक्ल, डॉ. द्विजेंद्रनाथ, भवन निवेश, अध्याय 23 श्लोक 115–122 पृ. क्र. 110
21. शुक्ल, डॉ. द्विजेंद्रनाथ, भवन निवेश, अध्याय 23 श्लोक 29 पृ. क्र. 111
22. मिश्र, डॉ. सुरेशचंद्र, वृहत् संहिता 1997 भाग 1 पृ. क्र. 35

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

23. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 7, श्लोक 4–5 पृ. क्र. 112
24 श्रीमदभगवत्गीता , अध्याय 3 श्लोक 27
25. गोस्वामी तुलसीदास, रामायण, किष्किन्धाकाण्ड,
26. ऋग्वेद, मंडल प्रथम, खण्ड सप्तम सूक्त 127/1
27. रामन वी. वी. , वैभवपूर्ण जीवन के लिये वास्तुशास्त्र पृ. क्र. 11, 1998
28. झाझरिया नंदकिशोर, भारतीय भवन निर्माण योजना पृ. 36
29. वराहमिहिर वृहत् संहिता, दकार्गलाध्यायः श्लोक 1 – 2
झा पंडित अच्चुतानंद, वृहत् संहिता, दकार्गलाध्याय – श्लोक 1–2
चौखम्बा विद्याभवन, प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 1988 पृ. 355
30. वास्तुसौख्यम्, सप्तमोभागः श्लोक 284
31. मयमतम् 7/40
32. तारखेडकर अनिल कृष्णकुमार/वास्तुशास्त्र 1996 पृ.क्र. 32
33. मत्स्यपुराण 254/27
34. शास्त्री रामतेज, कौटिलीय अर्थशास्त्र पृ.क्र. 83
35. मिश्र आचार्य रामजन्य, नारद संहिता, तृतीय संस्करण अध्याय 31, श्लोक 2 पृ. क्र. 208
36. मत्स्यपुराण 254/35–36
37. शर्मा, सुरेश्वर, संपादक विज्ञान भारती प्रदीपिका, उदयाचल गुप्तेश्वर, जबलपुर अक्टूबर 1996.
38. शर्मा, सुरेश्वर, संपादक विज्ञान भारती प्रदीपिका, उदयाचल गुप्तेश्वर, जबलपुर अक्टूबर 1996.
39. मानसार 10/2
40. सिंह, डॉ. ओमप्रकाश, नगरीय भूगोल 1979 तारा पब्लिकेशन, वाराणसी पृ. क्र. 336
41. मानसार 4/1
42. मयमतम् 7/39
43. मयमतम् 10/17
44. विश्वकर्मा प्रकाश 8/14

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

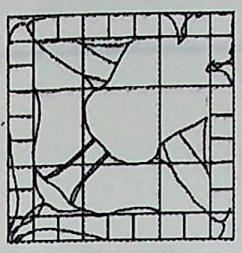

वास्तु पुरुष

परगेहे कृतास्सर्वाः श्रीतस्मात्क्रिया शुभाः।
निष्फलाः स्युर्गतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते ॥७॥
(वृहद्वास्तुमाला/श्लोक ७/पृ.२)

अध्याय चतुर्थ

सागर नगर की परिचयात्मक अध्ययन

- सागर नगर की स्थिति
- विस्तार
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
- सागर सरोवर
- उच्चावच
- भूगर्भिक संरचना
- जलवायु
- अपवाह प्रतिरूप
- प्राकृतिक वनस्पति
- खनिज
- यातायात एवं परिवहन
- संचार
- जनसंख्या
- भाषा
- धर्म तथा जाति
- संस्कृति तथा रीति-रिवाज
- कृषि
- भूमि उपयोग
- उद्योग
- राजनीतिक पृष्ठभूमि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

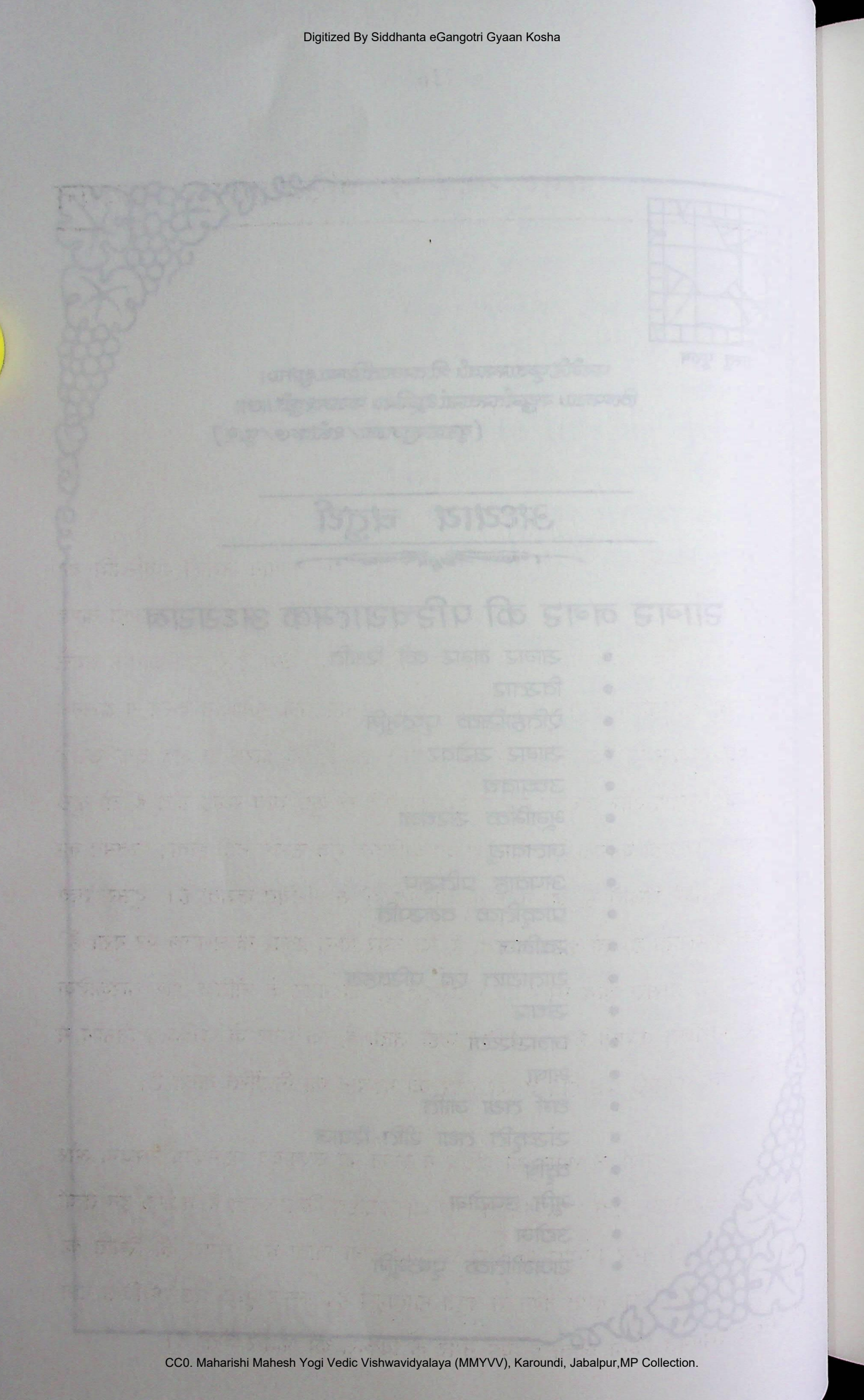

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर का परिचयात्मक अध्ययन

नगरों के भौगोलिक अध्ययन का प्रथम सोपान उसकी अवस्थिति का ज्ञान प्राप्त करना होता है। कोई नगर कहाँ स्थित है, वह किस प्रकार के धरातलीय खण्ड पर बसा है और उस स्थान का भौतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश कैसा है ? यह जानना सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है; क्योंकि बिना इन तथ्यों को जाने हम नगर का मूल्यांकन करने में असमर्थ होंगे। अतः अवस्थिति (स्तमन) नगर का आधारी पक्ष है, जो प्रारंभ से अंत तक उसके व्यक्तित्व का निर्माण और विकास करता है, अवस्थिति के कुछ तत्व स्थाई होते हैं, तो कुछ परिवर्तनशील । यही कारण है, कि नगरों का व्यक्तित्व एक समान नहीं होता। स्तमन का स्थाई तत्व उसकी स्थिति है, जो नगर कहाँ स्थित है? से परिचित कराती है। दूसरा तत्व बसावस्थल कहलाता है, जो ज्ञाता कराता है, कि नगर किस प्रकार के धरातल पर बसा है? और स्तमन का तीसरा तत्व नगर की परिस्थिति है, जो नगर के भौतिक और सांस्कृतिक परिवेश से परिचित कराती है। इसीलिये कहा जाता है, कि नगर के व्यक्तित्व निर्माण में स्तमन के तत्व आधारी पक्ष होते हैं जो नगर की पहचान को निर्धारित करते हैं।

नगरों के स्थल की परिधि में स्थल का उच्चावच भौमिकीय संरचना और जल स्त्रोतों – तालाब, नदी और भूमिगत जल को समाहित किया जाता है, क्योंकि इन तत्वों से समृद्ध स्थल ही नगर निर्माण के लिये उपयुक्त माना जाता है। नगरों की स्थिति का धरातलीय पक्ष भौगोलिक दृष्टि कौन से बहुत महत्वपूर्ण है। नगर पृथ्वी तल के जिस भाग को घेरकर स्थापित किया जाता है, वह नगर के विकास का आधार होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ सागर नगर की स्थिति :

सागर बुन्देलखंड का प्रमुख नगर होने के साथ–साथ बुन्देलखण्ड का प्रवेश द्वार एवं राजस्व संभाग का मुख्यालय है। सागर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध है । इस नगर की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है। नगर की प्रमुख पहचान यहाँ पर स्थापित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, पुलिस प्रशिक्षण संस्थान एवं बीड़ी उद्योग से की जाती है।

शहर का नाम हिन्दी शब्द 'सागर' के आधार पर पड़ा। बिट्रिश काल में यह अंग्रेजी के Saugar अथवा Saugor लिखा जाता था; जिसका अर्थ 'सरोवर' या 'समुद्र' होता है। नगर का निर्माण एक विशाल सरोवर के चारों ओर किया गया है। इसी कारण इसे 'सागर' कहा जाता है।[1] हाल ही की पुरातत्वीय खोजों से ज्ञात होता है, कि सागर और उसके आसपास का क्षेत्र प्राचीन प्रस्तर युगीन मानव का आवास स्थान था। समझा जाता है कि यह 'तालेमी' का 'आगार' (सागर) है।[2] सर हरीसिंह गौर के अनुसार सागर, सागर इसलिये कहलाता है, क्योंकि यह एक विशाल झील के इर्द–गिर्द बसा है, जो इसकी कुल भूमि के 300 एकड़ में फैली हुई है, प्राचीन समय में यह पानी के गहरे वृत्तांकार झील के रूप में विस्तृत था, जिसके चारों ओर घेरियों पर नगर बसा हुआ था, जिससे जल का सुन्दर दृश्य हर कहीं से दिखाई देता है।[3] **(नक्शा : भारत में)**

सागर झील की नगरी है, पं. नेहरू ने सागर की तुलना स्विटजरलैण्ड से कर सागर को महिमा मंडित किया था। यहाँ सावन में एक निराला वृन्दावन उभर उठता है। सागर सुन्दर मंदिरों का शहर है। ये मंदिर मध्यकालीन वास्तुकला और आधुनिक शैली पर आधारित हैं।[4] सागर विश्वविद्यालय होने के कारण यह एक वहुत बड़ा शिक्षा के केन्द्र है। सागर को स्थापित हुये 341 वर्ष हो चुके हैं। आधुनिक काल में सागर रेल्वे–स्टेशन की शुरूआत, पुलिस अकादमी का प्रवर्तन, सागर विश्वविद्यालय का खुलना, सागर संभाग का बनना और आकाशवाणी का प्रवर्तन ये सागर को आधुनिकता की छवि प्रदान करते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर रेलमार्ग तथा राष्ट्रीय राजमार्ग क्रंमाक 26 एवं राजमार्ग क्र. 14 एवं 15 द्वारा राज्य के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र से जुड़े होने के कारण क्षेत्रीय व्यापार एवं परिवहन का मुख्य केन्द्र है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थापित होने वाले 6000 करोड़ की लागत के भारत – ओमान तेलशोधक कारखाने एवं बीना पावर प्रोजेक्ट स्थापित होने से इस क्षेत्र में औद्योगिक एवं व्यापारिक गतिविधियॉ तीव्रगति से बढ़ने की संभावना है। सागर को रीतिकाल के अंतिम प्रतिनिधि कवि "पद्माकर" म.प्र. के जनक पुराण पुरूष "रविशंकर शुक्ल" और हिंदी के प्रथम व्याकरणाचार्य "कामताप्रसाद" की जन्मस्थली होने का श्रेय प्राप्त है। इसी धवल पंक्ति में एक और मोरपंख "सर हरीसिंह गौर" के रूप में लगा। वे सागर विश्वविद्यालय की स्थापना (18 जुलाई 1946) से लेकर अपने जीवन पर्यन्त (25 दिसम्बर 1949) तक विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। देश एवं राज्य के प्राचीनतम विश्वविद्यालय एक है! जिसके कारण सागर नगर देश में अपनी पृथक पहचान बनाये हुए है। सागर को शिक्षा के क्षेत्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।

सागर नगर म. प्र. के उत्तर मध्य भाग में स्थित है। नगर, मध्य रेल्वे के बीना कटनी रेलमार्ग पर बीना से 75 किमी. की दूरी पर स्थित बंबई, दिल्ली , कलकत्ता एवं भोपाल जैसे प्रमुख नगरों से जुड़ा है। यह सड़क मार्ग से 195 किमी. की दूरी पर राज्य की राजधानी भोपाल से तथा 184 किमी. की दूरी पर जबलपुर से तथा झांसी से उत्तर पश्चिम की ओर जुड़ा हुआ है।[5] आपातकाल के समय एवं उच्चपदाधिकारियों के आगमन पर सागर हवाईमार्ग ढ़ाना हवाई पट्टी द्वारा जो सागर से 20 किमी. दक्षिण की तरफ स्थित है, से संबंधित हो जाता है।

❑ **विस्तार :**

सागर नगर म. प्र. के हृदय स्थल अर्थात् मध्य में बसा हुआ है। इसकी भौतिक स्थिति ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में ही तैयार हुई है।[6] यह शहर बुन्देली बोली वाला शहर है। सागर नगर 23^0,50′ उत्तरी अक्षांश और 78^0,45′ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। समुद्र तल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से इसकी ऊंचाई 540 मीटर है। सागर जिले के उत्तर में झांसी, दक्षिण नरसिंहपुर और रायपुर, पश्चिम में विदिशा तथा पूर्वी में दमोह जिला स्थित है। सागर को जनवरी 1981 में नगरपालिका निगम की श्रेणी प्राप्त हुई।[7] वर्तमान नगरनिगम सीमा के अन्तर्गत 3375 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है; जिसमें 48 वार्ड हैं। इसमें से केवल 624.5 हेक्टेयर विकसित क्षेत्र है, जो कुल क्षेत्र का 18.0% है।[8]

❑ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

सागर नगर का इतिहास 1660 ईसवी से प्रारंभ होता है।[9] 1960 में ऊधमशाह ने उसी स्थान पर जहाँ वर्तमान जिला है, उसके पास परकोटा नामक एक गाँव (छोटी बस्ती) बसाया था, जो कि अब नगर का एक भाग है। चूंकि यह गाँव एक सागर (झील) के के किनारे स्थित था इस कारण इसका नाम 'सागर' पड़ा। ऐसा माना जाता है, कि सागर नगर का नाम सतगढ़ अर्थात् सात गढ़ (किले)पड़ा। सागर नगर को प्राचीन काल से वर्तमान काल तक के विकास को विश्लेषित करने पर यह समझ में आता है, कि इसका विकास चार कालों मे पूर्ण हुआ, जो निम्नानुसार हैं –

1. प्राचीन निर्माणकारी काल
2. प्रारंभिक बिट्रिश काल
3. अंतिम बिट्रिश काल
4. स्वतंत्रता पश्चात् काल **(मानचित्र क्र. 1)**

1. प्रारंभिक निर्माणकारी काल :

1735 में पेशवा के अधिकारी गोविन्द राव पंडित ने वर्तमान किले का निर्माण किया। इसके पश्चात् सागर को आसपास के प्रदेशों की राजधानी बनाया गया।12 वीं शताब्दी में वर्तमान सागर जिले अन्य ग्रामीण क्षेत्रों मे परमार राजाओं का राज्य था। 16 वीं शताब्दी मेंगौंड राजाओं ने इस पर अपना राज्य स्थापित किया । 18 अक्टूबर 1635 में जब सकारसिंह राजा पर औरंगजेब की सेनाओं ने आक्रमण किया उस समय जिले की राजधानी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

(विकास क्रम)

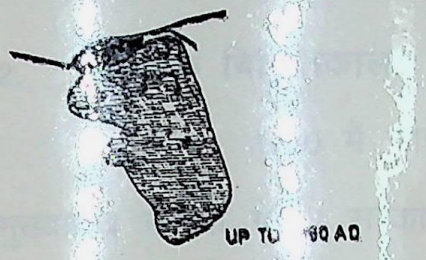

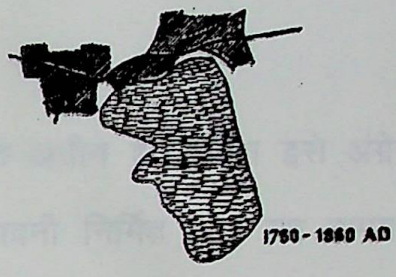

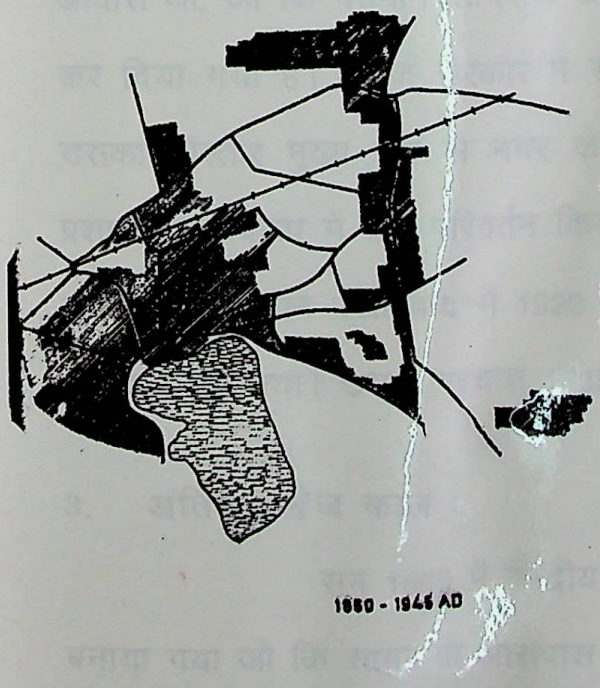

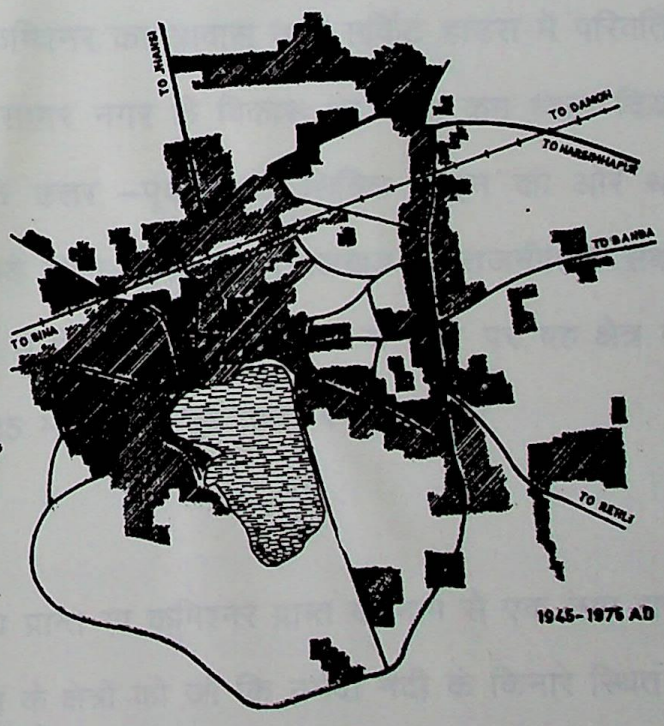

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

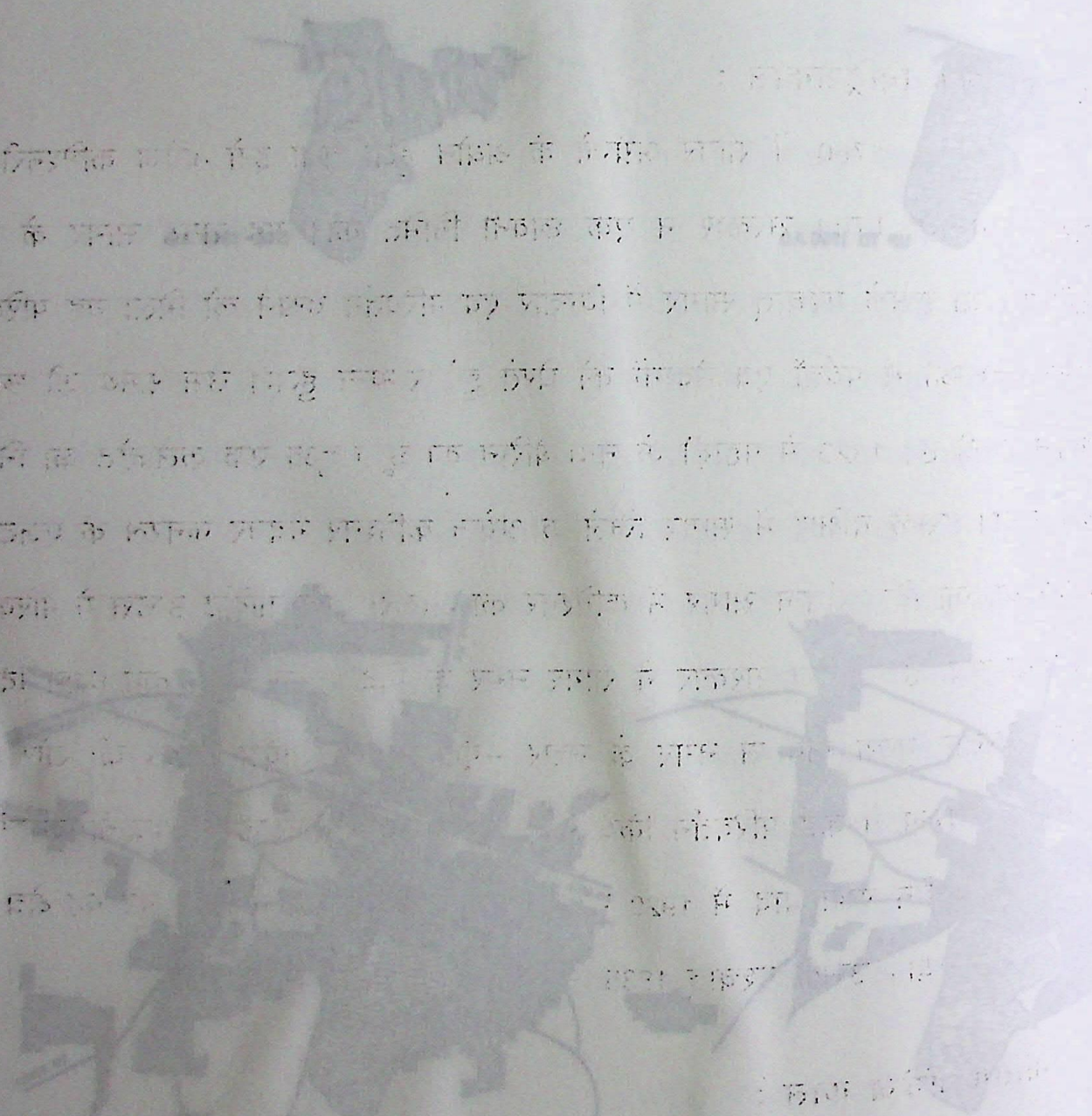

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धामौनी थी, जो वर्तमान में जिले का एक गाँव हैं। शीघ्र ही बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध राजा छत्रसाल ने औरंगजेब की सेनाओं को हराकर सागर को अपने अधीन कर लिया। प्रारंभ में सागर नगर का विस्तार झील के उत्तर में हुआ था, जहाँ वर्तमान में परकोटा तथा शनीचरी स्थित हैं। ये दोनों सागर नगर की प्राचीन बस्तियाँ हैं।

2. प्रांरभिक बिट्रिशकाल :

1760 में सागर अग्रेंजों के अधीन हुआ तथा इसे अंग्रेज कमिश्नरी का मुख्यालय बनाया गया। सरकार ने एक छावनी निर्मित की। यह समय सागर के लिये क्रांतिकारी था इसके पश्चात् सागर में विस्तार एवं परिवर्तन देखने को मिला यह परिवर्तन विभिन्न दिशाओं में पर्वतों एवं मैदानों को घेरते हुये सम्पन्न हुआ। उस समय की छावनी वर्तमान में भी है। 1820 में पहाड़ी के नदी बेसिन को छूता हुआ एक कलेक्ट्रेट का निर्माण किया गया। इसके दक्षिण में सागर जिले के अंग्रेज कमिश्नर गवर्नर जनरल के एजेंट का आवास था, जो कि वर्तमान सागर में कमिश्नर का आवास तथा सर्किट हाउस में परिवर्तित कर दिया गया है। अंग्रेज सरकार ने सागर नगर के विकास पर बहुत कम ध्यान दिया। उसका विस्तार मुख्य रूप से नगर के उत्तर –पूर्व अर्थात् सिविल लाइन की ओर था। प्रशासनिक स्वरूप में कई परिवर्तन किये गये। पहले यह बुन्देलखंड के राजनीतिक संबंधी अधीक्षक के अधीन रखा बाद में 1920 में बिट्रिश गवर्नर जनरल के आने पर वह क्षेत्र का अधिकारी हो गया। उसके पश्चात् 1835 में उत्तर –पूर्व प्रान्त बनाया गया।

3. अंतिम अंग्रेज काल :

सन् 1860 में केन्द्रीय प्रान्त या कमिश्नर प्रान्त के नाम से एक नया राज्य बनाया गया जो कि सागर के आसपास के क्षेत्रों को जो कि नर्मदा नदी के किनारे स्थित थे तथा इसमें नागपुर राज्य भी सम्मिलित था। लेकिन सन् 1863 – 64 में यह व्यवस्था समाप्त कर सागर को जबलपुर कमिश्नरी के अतंर्गत लाया गया। सन् 1867 में एक अलग स्थानीय के रूप में सागर में नगर पालिका स्थापित हुई। यह नगर सन् 1889 में बीना कटनी रेलमार्ग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(रेलव्यवस्था) से जुड़ने के कारण देश के महत्वपूर्ण नगरों से इसका संपर्क स्थापित हुआ। इसी कालवधि में इस नगर को जोड़ने वाले अनेक सड़क मार्ग निर्मित होने से नगर के विकास को प्रोत्साहन मिला।

4. स्वतंत्रता पश्चात् काल :

स्वतंत्रता पश्चात् काल में यह नगर राजमार्गो एवं रेलमार्गो द्वारा राज्य के प्रमुख नगरों सें जुड़ जाने से माल एवं यात्री यातायात की स्थिति में बहुत सुधार हुआ। इसी कालवधि के पूर्वार्द्ध की महत्वपूर्ण घटना यह थी, कि 1947 में भारत–पाक विभाजन के कारण यहाँ सिंधी शरणार्थी आ गये। इन्हें नगर के समीपवर्ती क्षेत्रों में बसाया गया अर्थात् पूर्व में सिविल लाईन के किनारे और पश्चिम मे सुभाष नगर के किनारे बसाया गया। सन्1946 के पश्चात् नगर में विश्वविद्यालय स्थापित होने से नगर का विकास पूर्व की ओर होने में मदद मिली। वर्तमान छावनी क्षेत्र में सेना के लोगों का आगमन होने से तथा विश्वविद्यालय को पथरिया पहाड़ी पर वर्तमान स्थान में स्थानान्तरित किये जाने से नगर का पूर्व तथा दक्षिण–पूर्व दिशा में तीव्रगति से विस्तार होने में मदद मिली जिससे नये क्षेत्र खुल गये। सन् 1956 में सागर, खुरई ,देवरी, रहली तथा बंडा तहसीलों को शामिल करते हुये सागर जिले की अलग से निर्मित होकर यह जिला मुख्यालय बना। 26 जनवरी 1973 को सागर राजस्व संभाग बनाया गया, जिसमें सागर, दमोह, छतरपुर , पन्ना और टीकमगढ़ आदि जिलों को सम्मिलित किया गया। सागर कमिश्नरी बनने के पश्चात् सागर नगर का बहुआयामी विकास व वृद्धि होने लगी।[10] हालाकि सागर की छावनी क्षेत्र का निर्माण 19 वीं शताब्दी में ही हो गया था परंतु उसका वर्तमान स्वरूप 1906 के पश्चात् ही सामने आया। 1946 में सर हरिसिंह गौर द्वारा सागर विश्वविद्यालय स्थापित किया गया जो कि उस समय मकरोनिया में पुराने छावनी क्षेत्र बैराक में था। बाद में इसे पथरिया पहाड़ी में स्थांतरित किया गया । सागर झील व सागर के द. पू. में रहली सड़क की ओर विश्वविद्यालय परिसर को गौर नगर के नाम से जाना जाने लगा। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति बने।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर का बुन्देली संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। सागर के महान व्यक्तित्व जैसे पद्माकर व हरिसिंह गौर ने कला, साहित्य, शिक्षा व कानून में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज सागर नगर अपने विश्वविद्यालय , पुलिस प्रशिक्षण मुख्यालय सेना की छावनी और राजस्व विभाग के मुख्यालय (कमिश्नरी) के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही सागर बीड़ी उद्योग में प्रथम है। सागर विश्वविद्यालय राज्य का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा व शोध का केन्द्र है।

❑ सागर सरोवर :

सागर नगर का नाम हिंदी शब्द 'सागर' के आधार पर पड़ा; जिसका अर्थ होता है 'सरोवर'या 'समुद्र'। नगर का नाम सागर पड़ने का कारण है, नगर के मध्य बड़े प्राकृतिक झील का होना।[11] सागर तालाब लाखा बंजारा द्वारा 16 वीं शताब्दी में निर्मित कराया गया था। इस सरोवर के किनारे सागर किला भी स्थित है। सागर सरोवर की उत्पत्ति के विषय में प्रो. डब्ल्यू. डी. वेस्ट ने यह कहा है कि "जब उपरिस्थ ट्रप के हट जाने के कारण विन्ध्य दृश्यांश (आउट क्राप) जो अंशतः सरोवर को घेरे हुये है, अनावृत्त हो गये, तो इस सरोवर का प्रादुर्भाव हुआ, क्योंकि अधिक प्रतिरोधी विन्ध्य क्वार्टजाइट दक्षिण से उत्तर की ओर के जल प्रवाह पर बांध का काम करती है अब पश्चिम की ओर का जल प्रवाह एक छोटे बांध से रोका गया है।" [12] तालाब का वर्तमान क्षेत्रफल 137 हेक्टेयर है; जबकि वर्षाकाल में तालाब का जल विस्तार क्षेत्र 347 हेक्टेयर हो जाता है।[13] सुसंहृत विन्ध्य शैल रचना और ट्रैप चट्टानों में जल संचय क्षमता बहुत कम है, यही कारण है कि गर्मी के महीनों में पानी की बहुत कमी रहती है। नगर की स्थिति एवं रचना पर इस सरोवर (तालाब) का अत्याधिक प्रभाव है। इस तालाब ने नगर के विस्तार को दिशा प्रदान करने तथा नगर के वर्तमान विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस तालाब के कारण इससे आसपास के क्षेत्र का भू–जल स्तर संबर्द्धन हुआ है। वर्तमान में इसका उपयोग आमोद–प्रमोद गतिविधियों एवं जल विहार के लिये किया जा रहा है। वर्तमान में गर्मी में पानी की समस्या के निवारण के लिये यहाँ प्रशासन द्वारा तालाब गहरीकरण का कार्य चल रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर तालाब तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा है, वर्षा ऋतु में विन्ध्याचल की इन श्रंखलाओं से पानी चारों ओर से बरसाती नालों द्वारा बहकर आता है जिससे यहाँ बारिश मे एक निराला दृश्य/वृन्दावन उभर उठता है।

❑ **उच्चावच :**

जिले के वर्तमान उच्चावच पर भू–संरचना और अपरदन की प्रक्रियाओं का प्रभाव देखा गया है। यह जिला वृहद् मालवा के दक्षिण–पूर्वी किनारे पर स्थित है, जिसका विस्तार उत्तर व उत्तर–पश्चिम की ओर है। सागर नगर नर्मदा घाटी के उत्तर में स्थित है, जो कि ढालू कगार द्वारा अलग होता है। यह नगर ढक्कन, ड्रेप और विन्ध्य चट्टानों पर स्थित है। सागर की समुद्र तल से औसतन ऊँचाई लगभग 1,500–1750 फुट (447.2–533.4मी.) है।[14] **(मानचित्र क्र. 2)**

इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण स्थलाकृति यहां पायी जाने वाली पर्वत श्रेणियां हैं। ये पर्व श्रेणीयां मुख्यतः सपाट और वनाच्छादित एवं विभिन्न ऊचाईयों वाली हैं। तहसील का सबसे ऊंचा भू भाग पथरिया पहाड़ी है, जिसकी ऊंचाई लगभग 615 मी. है जो नगर को दक्षिण पूर्वी भाग से घेरती हुई, नगर के दक्षिण पूर्वी भाग तक विस्तृत है। इसके अतिरिक्त अन्य पहाड़ियां जैसे पुरब्याऊ पहाड़ी शुक्रवारी पहाड़ी, शनीचरी पहाड़ी, इतवारी पहाड़ी इत्यादि है, जो यहाँ के आवासीय क्षेत्र में विस्तृत हैं। ईमानुल पहाड़ी जो 591 मी. ऊँची है। जिला न्यायालय, शनीचरी पहाड़ी पर स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 520 मी. ऊंची है। इसके अलावा परकोटा, चकराघाट और तीनबत्ती भी पहाड़ी क्षेत्र है। नगर में गौरमूर्ति से चकराघाट पहाड़ियाँ आरंभ हो जाती है। पुलिस स्टेशन, कोतवाली इसी मार्ग पर स्थित है। यहाँ से एक मार्ग बड़ा बाजार, चमेली चौक और मोतीनगर की ओर जाता है; जिसके दाहिने ओर इतवारी पहाड़ी स्थित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

प्राकृतिक जलसंवहन एवं भू संरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ भूगर्भिक सरंचना :

भौतिकी रूप से सागर शहर गुलाबी रंग के रेत, पत्थर पर क्वार्टजाइट पर स्थित है तथा दक्कन ट्रेप वेसाल्टिक (कत्थई रंग का) लावा का प्रवाह है। एक दो स्थानों पर चूना पत्थर पतले बंधन के रूप में पाया जाता है। उदाहरण के लिए रेल्वे ओव्हर ब्रिज तथा केन्ट में इस बंधन का क्षेत्र 5 फीट मोटा चूना पत्थर का टुकड़ा दो लावा प्रवाह के बीच पाया जाता हैं सागर नगर की भूगर्भीय सरंचना को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

● विन्ध्यन समूह :

यह पुराने प्रकार की चट्टान सागर नगर के अंदर तथा चारों तरफ है। इसका रंग गुलाबी है। विन्ध्यन समूह में केवल रीवा श्रेणी ही सागर नगर में प्राप्त होता है यह श्रेणी मुख्यतः सागर के उत्तर में है। यह मेसोजाइक किस्म का खनिज, जो बहुत लंबे समय के बाद लावा के बाहर निकलकर कड़ा होने के परिणामस्वरूप खनिज में परिवर्तित हो गयां यह बारीक दानेवाला, कड़ा सुसंहृत क्वार्टजाइट, कांचंभ बलुआ पत्थर है। इसे शहर के कुछ स्थानों पर देखा जा सकता है उदाहरण– रेल्वे स्टेशन के पास यह बहुत अच्छी किस्म का है इसके साथ ही साथ शुक्रवारी शनीचरी टौरी , एम.एल.बी. स्कूल परकोटा, तीनबत्ती, पुरप्याऊ टौरी तथ इतवारी टौरी आदि है।

बहुत कड़ा एवं बजनी होने के कारण इसका प्रयोग भवन निर्माण में किया जाता है, चूंकि यह कड़ा प्रकृति का है इसलिए यह भूमिगत जल में प्रयोग होता है। विशेष बात यह है कि सागर शहर की घनी क्षेत्र में यह पर्वतीय रूप में विद्यमान है इसी के परिणामस्वरूप शहर में पानी की समस्या निर्मित है। विन्ध्य श्रंखला की प्राकृतिक बनावट जहाँ ओर सागर झील (तालाब) के लिए रूकावट है वहीं दूसरी ओर यह सागर नगर को भौतिक (प्राकृतिक) उपहार है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **ढ़क्कन ट्रेप :**

मेसोजाइक किस्म के खनिज के समय लावा पुराने क्षेत्र के ऊपर निश्चित समय अवधि के बीच में विस्फोट होकर बहता रहा इसलिए लावा बहने की श्रृखंला देखी जा सकती है। प्रत्येक प्रवाह की मोटाई के अनुसार (40 से 100 फीट) उसे पहचान सकते हैं। ये पानी का टपकना और बहना रोकते है। बरसात के मौसम में चट्टानी क्षेत्र में पानी रूकता दृष्टिगोचर होता है।

सागर शहर के चारों तरफ विश्वविद्यालय पहाड़ी (टौरी) मेनपानी टौरी, कोर्ट तथा टावर टौरी, पश्चिम काकागंज टौरी यह इस प्रकार की बनावट के अच्छे उदाहरण है। इसके ऊपर चूने का जमाव भी हुआ है। बनावट के आधार पर इसकी प्रकृति एवं प्रवृत्ति में भिन्नता प्राप्त होती है। इसका उपयोग भवन निर्माण एक सड़क निर्माण में किया जाता है।

- **अन्तर–ट्रेपीय :**

लावा के क्रमबद्ध प्रवाह के बीच में 10–15 फीट मौटा चूना पत्थर प्राप्त होता है। यह रेल्वे ओव्हरब्रिज, केन्टोमेन्ट क्षेत्र तथा मकरोनिया (पद्माकर नगर) में प्राप्त होता है। यह स्थानीय स्तर पर सफेद पुताई के लिए घरों में छुई के रूप में प्रयोग होता है।

- **जलवायु :**

किसी प्रदेश की जलवायु वहाँ के वायुमण्डलीय तत्व जैसे सूर्यताप, वायुदाब , आर्द्रता, वर्षा इत्यादि का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनके मिले जुले प्रभाव को स्थानीय दशायें परिवर्तित करती है। उदा. जल का वितरण।

जलवायु का लोगों के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव अनुकूल या प्रतिकूल हो सकता है। जलवायु और मानव के भौतिक पर्यावरण का बहुत गहरा संबंध है। किसी भी प्रदेश की कृषि, खान–पान व स्वास्थ्य दशायें आदि में भिन्नता भी जलवायु द्वारा ही प्रभावित होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर की जलवायु सामान्यतया सुखद स्वास्थ्यप्रद एवं आनंददायक मानी जाती है। सागर नगर में मानसूनी प्रकार की जलवायु (समशीतोष्ण) पाई जाती है। "इस जलवायु की यह विशेषता है, कि अन्य भागों की तुलना में यहाँ न तो अधिक गर्मी और नही अधिक ठडं पड़ती है।"[15] यहाँ वर्ष में प्रमुख रूप से तीन ऋतुएं होती है –

1. ग्रीष्म ऋतु – मार्च से मध्य जून तक पाई जाती हे।
2. वर्षा ऋतु – मध्य जून से सितम्बर के अंत तक तथा
3. शीत ऋतु – अक्टूबर से फरवरी माह के अंत तक

मानसूनी जलवायु होने के कारण यहां का मई माह सबसे गर्म तथा जनवरी माह सबसे ठंडा होता है। नगर का अधिकतम तापमान औसतन 48^0 सेन्टीग्रेड तथा न्यूनतम तापमान 7^0 सेन्टीग्रेड तक पाया जाता है।[16] ग्रीष्मकाल में कभी–कभी दोपहर में गर्म हवा चलती है, जिसे स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है। सामान्यतया दिन और रात का तापमान जनवरी से मई माह तक प्रगामी रूप से बढ़ता है, किन्तु मई से जनवरी के बीच केवल रात का तापमान प्रगामी रूप से नीचे गिरता है। जिससे शीत लहर चलती है।

नगर में वर्षा मध्य जून तक मानसूनी हवाओं के आगमन से प्रारंभ हो जाती है। नगर में वर्षाकाल में औसतन 1100 मिलीलीटर वर्षा होती है।[17] तथा अक्टूबर के आरंभ में वर्षा समाप्त हो जाती है। नगर में 90% से अधिक वर्षा जून से सितम्बर माह के मध्य में होती है। शेष महीने लगभग वर्षा रहित रहते है। 10% वर्षा दिसम्बर से 15 फरवरी तक प्राप्त होती है। यहां वायुदाब लगभग सामान्य रहता है। ग्रीष्मकाल में वायुदाब सबसे कम होता है, इसलिए इस समय यहा लू चलती है तथा शीतकाल में सबसे अधिक वायुदाब के कारण शीतलहर का प्रकोप रहता है। वर्षा ऋतु में हवाएं मुख्यतया दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। शीत ऋतु में हवाऐं उत्तर तथा उत्तर पूर्व से दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर प्रवाहित होती है। ग्रीष्म ऋतु में हवाओं की प्रवाह दिशा पश्चिम से पूर्व या उत्तर पूर्व से उत्तर पश्चिम हो जाती है। नवम्बर में औसतन वायुवेग 20.8 किलोमीटर प्रति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घंटा होता है। शीतकाल में कभी–कभी अरब सागर से उठने वाले तूफान के कारण वर्षा होती है। सागर नगर में मार्च से मई तक आर्द्रता की मात्रा 20 से 30% तक, जून से सितम्बर तक आर्द्रता की मात्रा 80 से 100% तक तथा अक्टूबर से फरवरी तक आद्रता की मात्रा 30 से 40% तक होती है। आर्द्रता का स्पष्ट प्रभाव नगर के आसपास प्राप्त वनस्पति, जीवजन्तु तथा अन्य तत्वों पर देखने को मिलता है।

❑ **अपवाह प्रतिरूप :**

भूगोल में अपवाह तंत्र का विशेष स्थान है। नगरों के विकास में अपवाह तंत्र महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाते है। अपवाह तंत्र नगर के प्रकार एवं प्रतिरूप को प्रभावित करता है । अपवाह तंत्र द्वारा नगर की संरचना, उच्चावच ढाल एवं जलवायु संबंधी विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है । **(मानचित्र क्र. 3)**

- **जमनी धसान :**

नदी सागर नगर को घेरे हुए है, पूर्व में यह बेतवा नदी से मिल जाती है जो यमुना की सहायक नदी है। बेतवा नदी से कुछ आगे सुनार नदी प्रवाहित होती है जो वर्मा की सहायक नदी है ।

- **वेरमा**

नदी आगे चलकर केन नदी से मिल जाती है जो यमुना की सहायक नदी है । इस प्रकार सागर नगर का संपूर्ण अपवाह तंत्र यमुना नदी क्रम द्वारा निर्धारित होता है सागर नगर यमुना वेसिन का एक भाग है तथा धसान, वेरमा और बेबस इस नगर के चारों ओर प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियां हैं ।

- **धसान नदी :**

धसान नदी सागर नगर के प. में स्थित जसार्ती पहाड़ी से जो वेसाल्ट की बनी हुई है तथा जिसकी समुद्र सतह से ऊँ. 667.67 मी. है, निकलती है। उत्तर दिशा में 30

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

(नैसर्गिक जल विसर्जन प्रणाली)

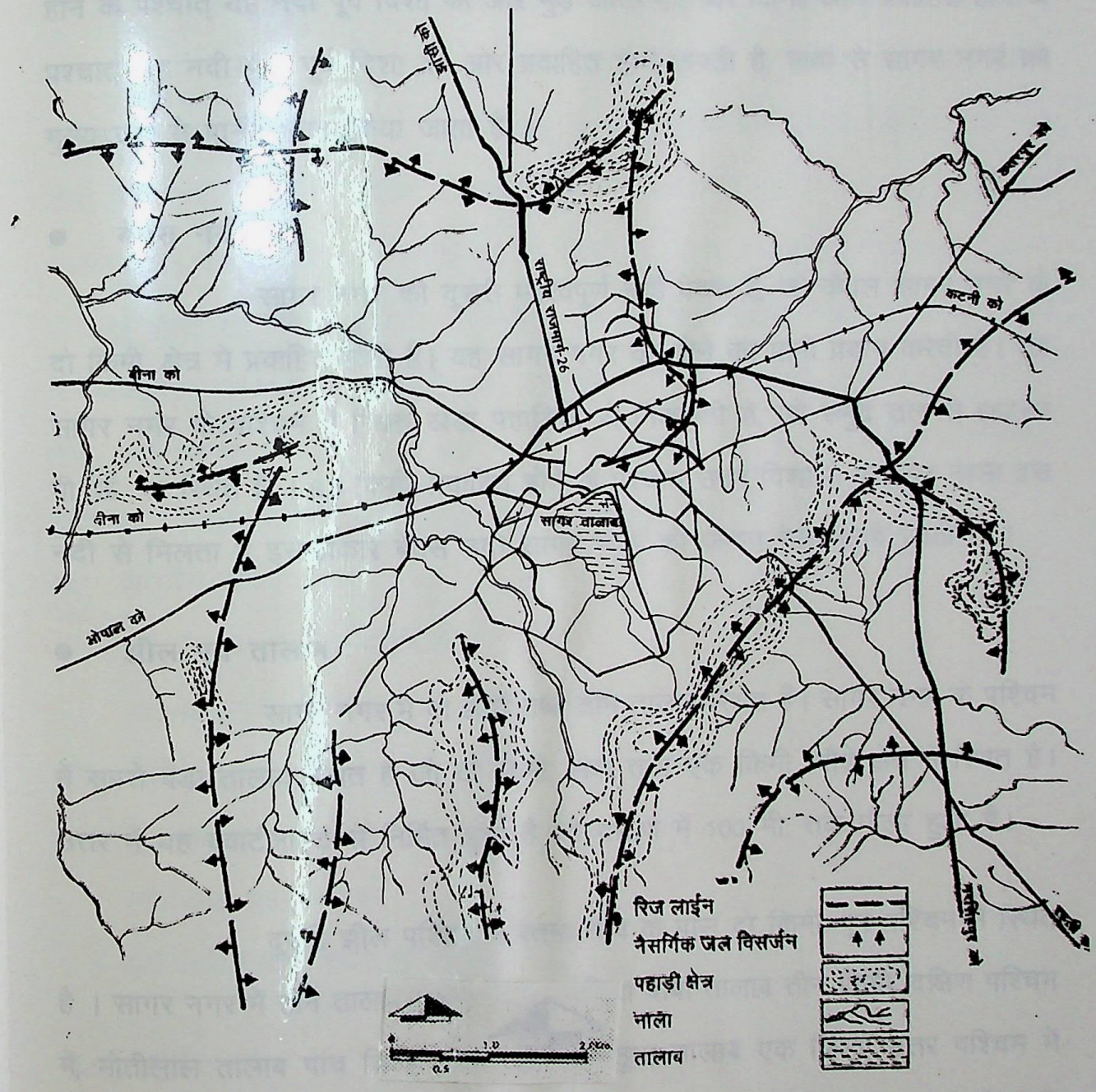

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

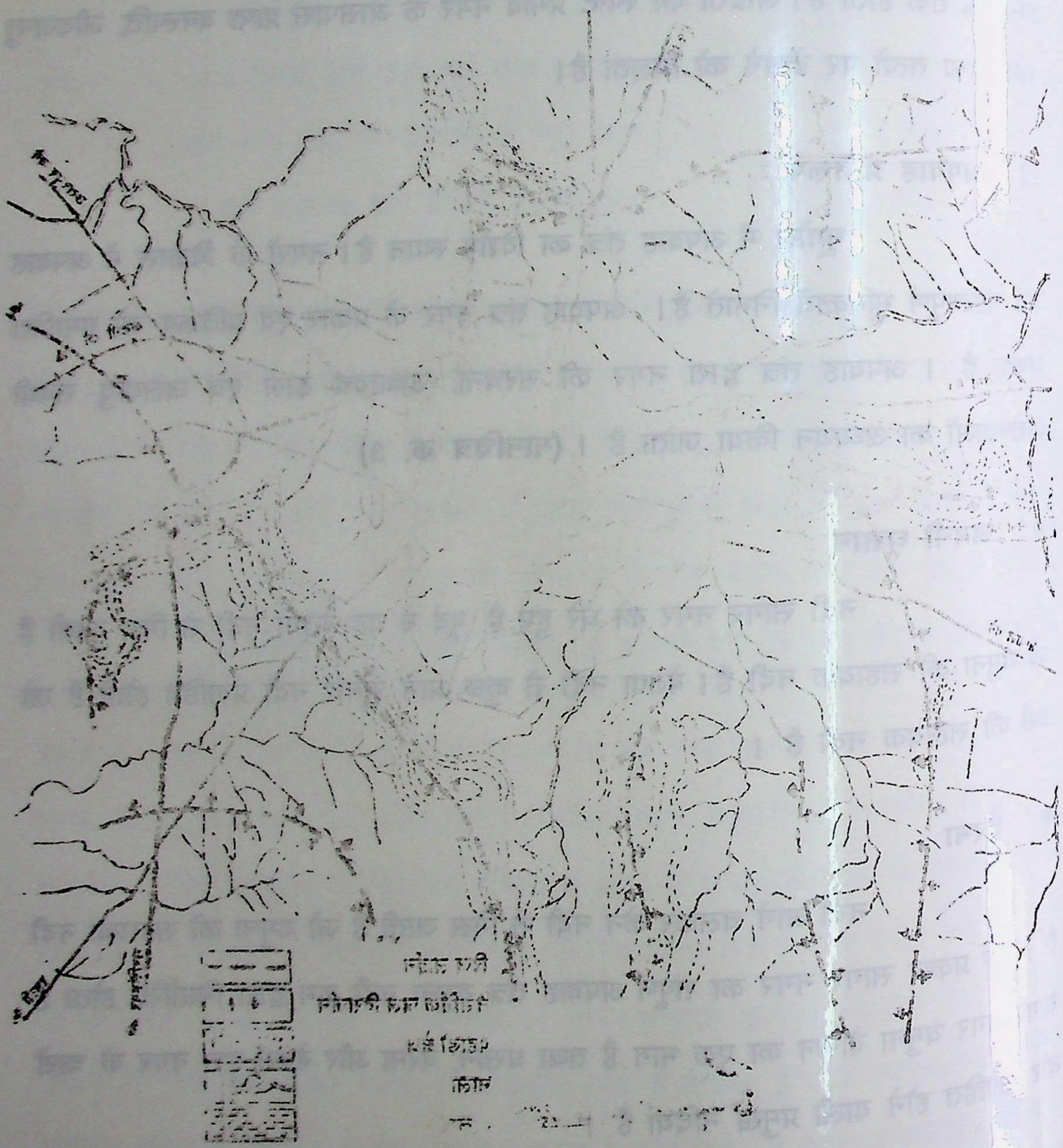

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

(नैसर्गिक जल विसर्जन प्रणाली)

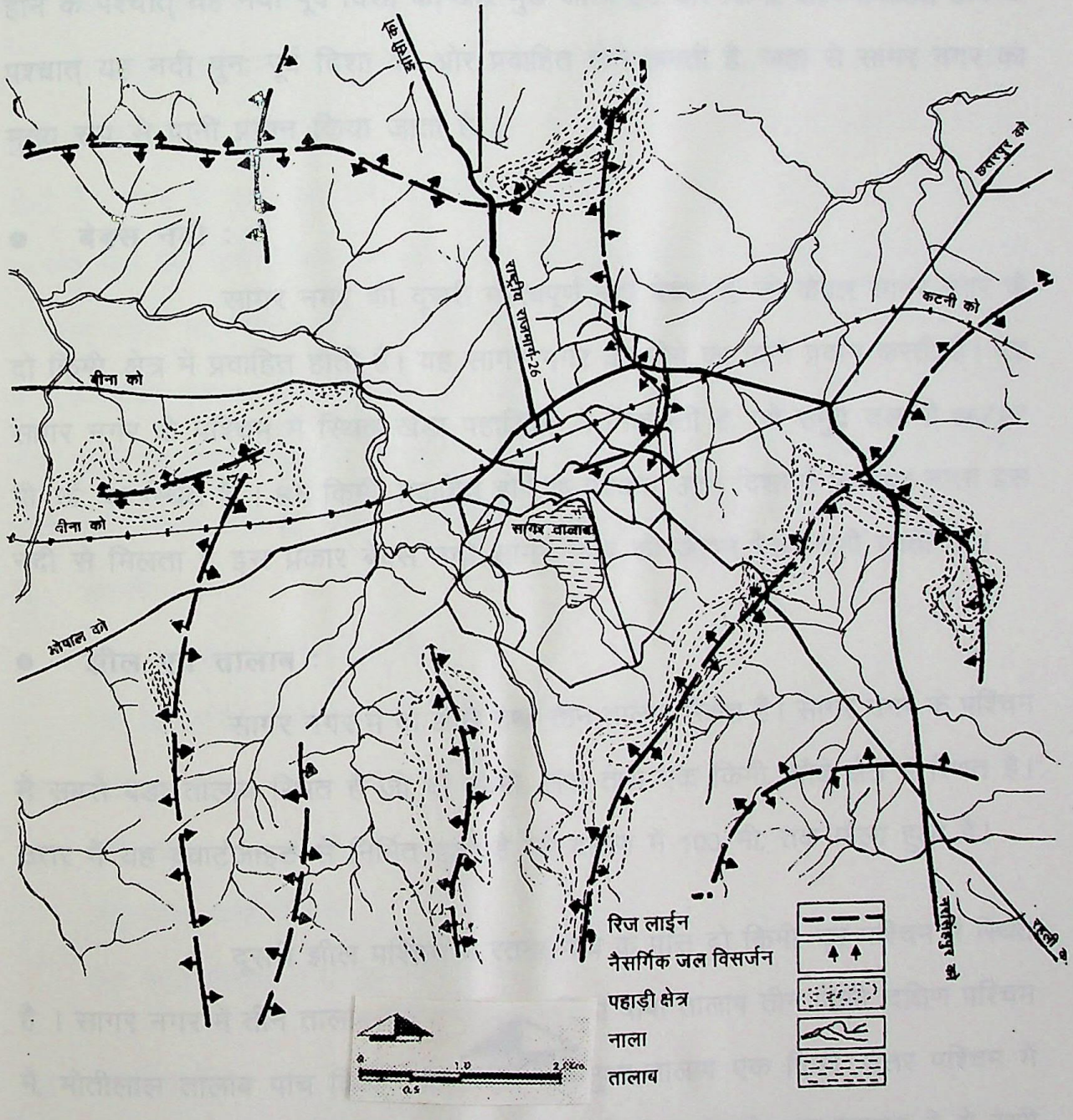

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किमी. प्रवाहित होने के पश्चात्, सागर नगर में प्रवेश करती है । जहां पर पूर्व में तीन किमी. दूरी पर स्थित कंगाारा नाला इस नदी में आकर मिल जाता है। इस नदी के दो किमी. और आगे बहने के पश्चात् उ. में इस नदी में सोधनी नाला मिल जाता है । दो किमी. आगे प्रवाहित होने के पश्चात् यह नदी पूर्व दिशा की ओर मुड़ जाती है। चार किमी. आगे प्रवाहित होने के पश्चात् यह नदी पुनः पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होने लगती है, जहां से सागर नगर को मुख्य रूप से पानी प्रदान किया जाता है ।

- **बेबस नदी :**

सागर नगर की दूसरी महत्वपूर्ण नदी बेवस है, जो केवल सागर नगर के दो किमी. क्षेत्र में प्रवाहित होती है। यह सागर नगर को पीने का पानी प्रदान करती है। यह सागर नगर के पश्चिम में स्थित खेड़ा पहाड़ियों से निकलती है, जो समुद्र तल से 667.67 मी. ऊँ. पर स्थित है । 8.5 किमी. प्रवाहित होने के पश्चात् उत्तर दिशा में परकोटा नाला इस नदी से मिलता है इस प्रकार बेवस नदी सागर नगर की जीवन रेखा मानी जाती है ।

- **झील एवं तालाब :**

सागर नगर में दो झीलें तथा तीन तालाब स्थित हैं। सागर नगर के पश्चिम में सबसे बड़ा तालाब स्थित है जो दो किमी. लंबा तथा एक किमी. चौड़े क्षेत्र में स्थित है। उत्तर में यह क्वार्टजाइट से निर्मित हुआ है जो दक्षिण में 100 मी. तक फैला हुआ है।

दूसरी झील पश्चिम में रतना गांव के पास दो किमी. दूर पश्चिम में स्थित है । सागर नगर में तीन तालाब स्थित हैं । लखड़िया बाबा तालाब तीन किमी. दक्षिण पश्चिम में, मोतीलाल तालाब पांच किमी. उत्तर तथा तिनसुआ तालाब एक किमी. उत्तर पश्चिम में स्थित है। तिनसुआ सबसे छोटा तालाब है तथा लखड़िया सबसे बड़ा तालाब है ये सभी तालाब तत्कालीन शासकों द्वारा बनवाये गये थे ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **प्राकृतिक वनस्पति :**

सामाजिक एवं व्यापारिक रूप से वनों का अत्याधिक महत्व है। प्राकृतिक वनस्पति राष्ट्रीय सम्पदा है तथा सभ्यता के प्रतीक है। प्राकृतिक वनस्पति न केवल ईधन के लिए लकड़ी प्रदान करती है, अपितु बड़ी संख्या में राज्य के लिए कच्चा माल एवं आकस्मिक आय भी पैदा करती है। चेम्पियन[18] के वर्गीकरण के अनुसार सागर के वन 'उत्तरी उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती प्रकार के हैं, ' क्योंकि इस नगर में औसत वार्षिक वर्षा 40से 50 इंच तक होती है। नगर के एक बड़े भाग में ढ़क्कन ट्रेप प्राप्त होता है। प्राप्त जलवायु मिट्टी एवं सरंचना तथ जैव कारको के अन्तर्गत ट्रैप पर विशुद्ध सागौन की बहुलता है। बलुआ पत्थरों से बलुई दोमट का निर्माण होता है, जो मिश्रित वनों के लिए उपयोगी है और आच्छादित क्षेत्रों में मरूद्भिदी स्वरूप की वनस्पति का प्रादुर्भाव होता है। समस्त स्थानीय विभिन्नतायें धीरे– धीरे एक दूसरे में विलीन हो जाती हैं और तुलनात्मक दृष्टि से छोटे क्षेत्रों में अन्तर्मिश्रित होती हुई दिखाई देती है तथापि निम्नलिखित स्थानीय प्रकार के वन पाये जाते है। –

अ. सागौन वन

(क) ट्रैप आच्छादित पहाड़ियाँ पर।

(ख) जलमार्गो के किनारे की जलोढ़क पर।

आ. मिश्रात वन

(क) बलुआ पत्थरों पर

(ख) आर्द्र घाटियों पर

(ग) भारी मिट्टी वाली भूमियों पर

अ. सागौन वन :

सागौन ट्रैप निर्मित पहाड़ियों पर अधिकर सागर में प्रमुख जाति के रूप में पाया जाता है। वह शिखरों पर एवं मैदानों में बड़े जलमार्गो के किनारे दिखाई देता है। सागौन शिखरों पर अधिक अनुपात में निचले ढालों पर छोटे और कम वृक्ष है। सागौन और उस जैसी अन्य अग्नि प्रतिरोधक जातियाँ अर्थात् तेंदू सेजा, टिन्सा, धावड़ा व साल हैं। इसके

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अलावा छेओला या पलास, मोवई, गुंजा, सलाई या सालेह, बेल महुआ, गोगंल हरूआ, कांकर, बेल आदि वृक्ष है। पूरी बाढ़ के वृक्ष मिट्टी की गहराई और उर्वरता के अनुसार 40 से 60 फुट तक ऊंचे होते हैं और उनकी गोलाई 3 से 5 फुट तक होती है।

- **मिश्रित वन :**

मिट्टी की गहराई और मात्रा के अनुसार किस्म और सघनता में अंतर पाया जाता है गहरी भूमि पर जहाँ वर्षा की मात्रा अन्य भागों की अपेक्षा अधिक होती है वहां वृक्ष 60 फुट तक ऊंचे होते हैं मुख्य जातियां सेजा, साज, तेन्दू धावड़ा , आमला टिन्सा, आचार, बेलकारी, कसई भोख , सेमल , हरूआ, भिर्रा, भिलावा पपरा, अमलंतास, अर्जुन, कुम्भी आदि है। इसके साथ साल इमारती लकड़ी के वृक्ष जैसे बीजा शीशम, सेवाल धामन और हल्दू है। इसके अतिरिक्त बहेड़ा, चिरोल, चिचुआ, मुभार , या कुंभी आदि ट्रैप आच्छादित पहाड़ियों पर बहुतायत से पाई जाने वाल पादप जातियाँ भर्रारी, बनराहर, जामरासी, गेंगुर्वा, हरसिंगार, इन्द्रजात आदि एवं शैलमय विवृत भूमि पर धवाई, चिलोटी , मकोर तथा सामूहिक रूप से पाई जाने वाली सामान्य जातियाँ – वनहार, निगुंडी, इन्द्रजटा, गोखरू आदि वृक्ष है।

- **लगाएं गए वृक्ष :**

नगर में लगाये गए वृक्ष बरगद, गूलर, पीपल, इमली, आम, जामुन बेल, मुनगा, लसोढ़ा, नीम, महुआ, सीताफल कहीं–कहीं नारियल आदि है।

- **खनिज :**

सागर नगर खनिज संपदा से धनी नहीं है। अतः इस जिले में खनिज संपदा पर आधारित कोई विशेष उद्योग स्थापित नहीं है सका है। नगर से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित हीरापुर, अमरमऊ तथा तिगोड़ा नाम स्थानों में रॉक फास्फेट और लोहा आदि प्राप्त होता है, परंतु ये इतनी कम मात्रा में प्राप्त होते हैं, कि उद्योगों की बहुत सी इकाईयाँ स्थापित नहीं की जा सकती है। इन स्थानों में जो लोहा प्राप्त होता है, वह एक तो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कम मात्रा में मिलता है तथा दूसरे घटिया किस्म का भी होता है। यही कारण है कि नगर में लोहे का कोई विशेष कारखाना स्थापित नहीं हो सका है।

नगर से दूर कुछ स्थानों पर बलुआ पत्थर चूना, सफेद मिट्टी आदि प्राप्त होती है। कहीं कहीं पर कुछ चट्टानें तोड़कर गट्टी तैयार की जाती है, जो सड़क निर्माण आदि के काम आती है, तथापि जिले में फिर भी खनिज पर आधारित उद्योग हैं जिनमें मुख्य रॉक फास्फेट कारखाना, रोलिंग शटर आदि है।

नगर में खनिज संपदा पर आधारित कुछ प्रमुख उद्योग निम्न प्रकार है –

1. रॉक फास्फेट कारखाना :

सागर नगर में मकरोनिया पर एक रॉक फास्फेट का कारखाना खोला गया है। इसमें करीब 46 व्यक्ति कार्यरत है। इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 6000 टन है।

2. रोलिंग शटर :

सागर नगर में 3 रोलिंग शटर के पंजीकृत कारखाने है, इनमें लगभग 19 व्यक्ति कार्यरत है। इनमें प्रायः रोलिंग शटर बनाने का कार्य होता है। इस कारखाने के चलाने के लिए मशीन यंत्र लगभग 82,000 रूपये के आते है।

3. प्रिटिंग प्रेस :

नगर में प्रिटिंग प्रेस इकाईयों की संख्या बहुत अधिक है। इसमें मशीन, कटिंग मशीन, रोलिंग, नंबरिंग, टाइप आदि मुख्य है। प्रिटिंग प्रेस का कार्य विद्युत द्वारा किया जाता है।

4. सीमेंट जाली व सीमेंट पोल बनाना :

सीमेंट की जाली तथा सीमेंट के पोल तैयार करने का कार्य भी सागर में होता है। सीमेंट की उपलब्धता सागर में न होने के बावजूद भी इसकी पूर्ति करके यह कार्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किया जाता है। सीमेंट की जाली तैयार करने के लिए एक विशेष सांचे की आवश्यकता होती है ये सांचे कई डिजाइनों के होते हैं इसकी सहायता से सीमेंट जाल तैयार की जाती है सीमेंट पोल भी इसी तरह तैयार किये जाते है।

इसके अतिरिक्त खनिज पर आधारित ईंट बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना व खिलौने बनाना, पत्थर का सामान आदि अन्य उद्योग धंधे है।

❑ **यातायात एवं परिवहन :**

यातायात के साधन नगरीय जीवन के आधार होते हैं । बिना यातायात के किसी नगर की कल्पना नहीं की जा सकती । प्राचीनकाल में जल यातायात के कारण सर्वाधिक नगर नदियों के तट पर बसे, लेकिन आधुनिक काल में सड़क और रेल नगरीय यातायात के आधार हैं इसीलिये इन्हें नगरीय जीवन की धमनी कहा जाता है । नगरीय कार्यों के सुसंचालन के लिये इन साधनों का व्यवस्थित विकास किया जाता है, ताकि नगर के एक भाग से दूसरे भाग में वस्तुओं और सवारियों को सुविधापूर्वक पहुंचाया जा सके । यातायात के मार्ग नगरीय सेवा के साथ नगर को उसके सेवा क्षेत्र से भी जोड़ते हैं, जिससे नगर अपने केन्द्र स्थलीय कार्य को सम्पादित कर पाता है । **(मानचित्र क्र. 4)**

जिले के पुरानी मुख्य सड़के सागर झांसी, कानपुर, राहतगढ़ नरसिंहपुर तथा सागर दमोह जबलपुर आदि सड़के है।

नगर के बढ़ते हुए आकार के कारण यातायात एवं परिवहन की सक्षम व्यवस्थ की नितांत आवश्यकता है, जो कि नगर की सरंचना पर निर्भर है। नगर की चलित यातायात व्यवस्था नगर के प्रमुख कार्य केन्द्र एवं भूमि उपयोग पर निर्भर है। नगर परिभ्रमण सरंचना यातायात स्वरूप,यातायात की मात्रा, मार्ग क्षमता आदि सभी नगर में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में लगने वाले समय दूरी आदि को निर्धारित करती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

वर्तमान परिभ्रमण संरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर
वर्तमान परिभ्रमण संरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

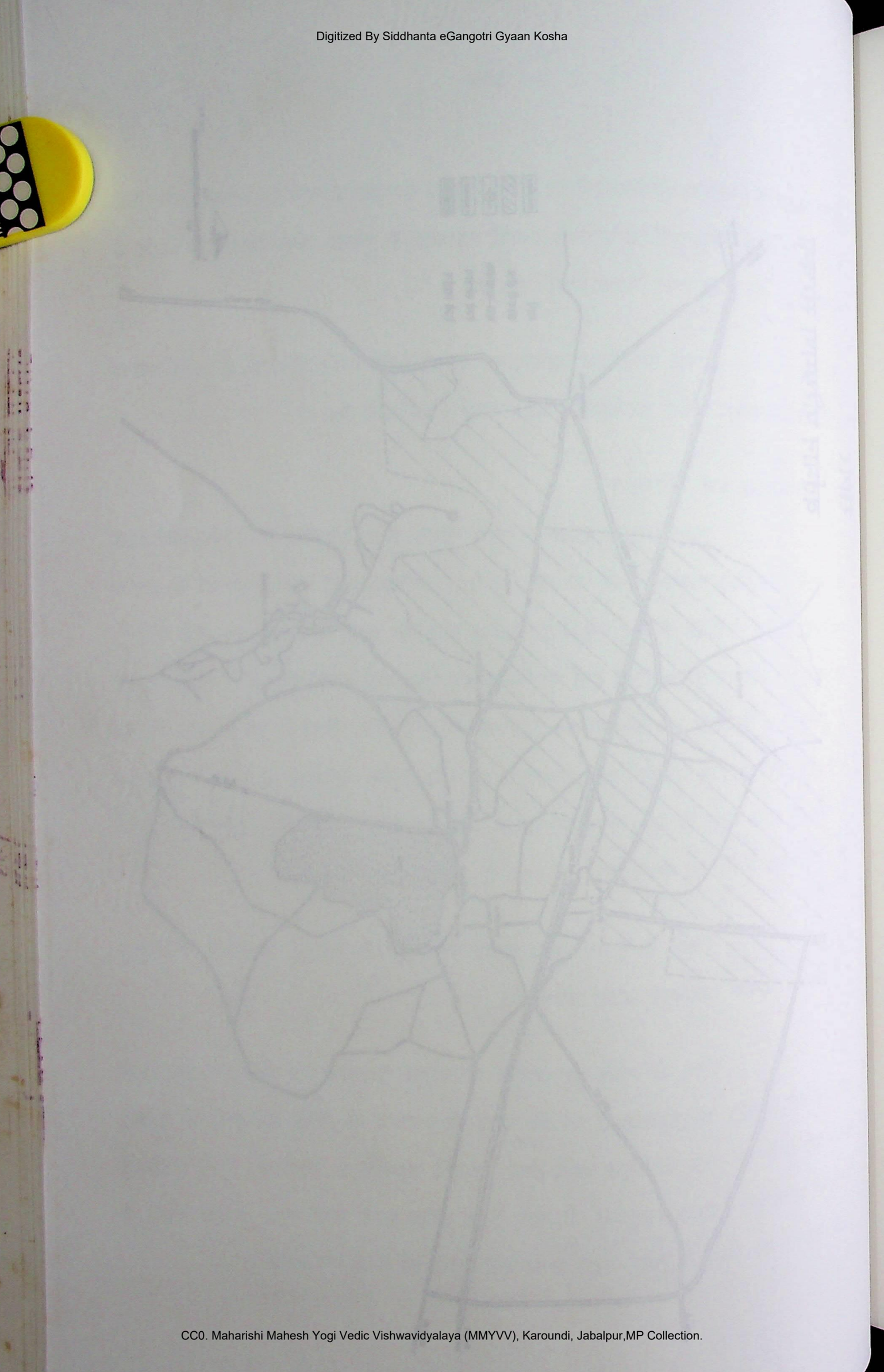

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **क्षेत्रीय परिभ्रमण संरचना :**

नगर में यातायात के प्रमुख साधन के रूप में सड़क एवं रेलमार्ग दोनों सुविधाऐं उपलब्ध है। राष्ट्रीय राजमार्ग 26 नागपुर – झांसी शहर से गुजरात है। इसके अतिरिक्त राज्य राजमार्ग क्रंमाक 14 (बीना – दमोह) राजमार्ग क्रंमाक – 15 सागर – छतरपुर, प्रमुख जिला मार्ग (सागर – भोपाल) द्वारा यह नगर प्रदेश के विभिन्न नगरों से जुड़ा हुआ है। रेल मार्ग द्वारा यह दिल्ली, बंबई , कलकत्ता , भोपाल , पुरी तथा देश के अन्य प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। नगर के समीप ढ़ाना में एकमात्र हवाई पट्टी काविस्तार एवं उन्नयन किया जाना आवश्यक है ताकि इसे उड्डयन विभाग द्वारा संयुक्त रूप से उपयोग में लाया जा सके।[19]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ सड़क मार्ग :

● क्षेत्रीय यातायात (यात्री) :

यह नगर राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित होने के कारण बस द्वारा विभिन्न शहरों से जुड़ा हुआ है वर्तमान में म. प्र. राज्य परिवहन निगम द्वारा विभिन्न मार्गो पर 113 बसें तथा निजी बस एसोसियेशन द्वारा 129 बसें संचालित की जाती है। जिसकी जानकारी निम्न सारणी में दर्शायी गई है।

तालिका क्र. 4.1

सागर : क्षेत्रीय यातायात (बस)

क्रंमाक	मार्ग का नाम	म. प्र. राज्य परिवहन निगम	निजी	योग
1.	सागर–भोपाल	45	5	50
2.	सागर–जबलपुर	30	8	38
3.	सागर–छतरपुर	15	36	51
4.	सागर–झांसी	03	14	17
5.	सागर –नरसिंहपुर	20	15	35
6.	सागर–रहली	–	27	27
7.	सागर–बीना	–	24	24
	योग	**113**	**129**	**242**

स्त्रोत : म.प्र. राज्य परिवहन निगम एवं निजी बस एसोसिएशन, सागर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **क्षेत्रीय यातायात (माल)**

सागर बुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्रमुख व्यावसायिक एवं व्यापारिक केन्द्र होने के कारण क्षेत्रीय परिवहन का प्रमुख केन्द्र है। वर्तमान में सागर में लगभग 1780 ट्रक आते है तथा लगभग 1665 विभिन्न मार्गो पर जाते हैं क्षेत्रीय यातायात (माल) के संबंध में विस्तृत जानकारी निम्न सारणी में दी गई है।[20]

तालिका क्र. 4.2

सागर : क्षेत्रीय यातायात (माल)

क्रमांक	मार्ग का नाम	प्रतिदिन ट्रकों कीसंख्या	
		आने वाले	जाने वाले
1.	सागर–भोपाल	521	493
2.	सागर–भोपाल	150	145
3.	सागर–झांसी	375	342
4.	सागर– दमोह	431	412
5.	सागर–नरसिंहपुर	221	195
6.	सागर–रहली	52	43
7.	सागर–जैसीनगर	30	35
	योग	**1780**	**1665**

- **नगर परिवहन संरचना :**

नगर का प्रमुख यातायात तीन बत्ती राधा टॉकीज मार्ग, सिविल लाइन–तीन बत्तीमार्ग, कबूलापुल – राहतगढ़ रेल्वे क्रांसिग पर है। इसके अतिरिक्त निम्न मार्गो पर भी नगरीय यातायात का दबाव है –

1. भगवान गंज से राधा टॉकीज चौराहा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. राहतगढ़ बस स्टैण्ड नरयावली नाका मार्ग
3. टंकी मार्ग
4. मस्जिद चौराहा – विजय टॉकीज – राहतगढ़ बस स्टैण्ड
5. तीन बत्ती चौराहा – कोतवाली
6. चमेली चौक – मोती नगर तिराहा
7. बस स्टैण्ड – तिली मार्ग
8. बस स्टैण्ड – सिविल लाइन

नगर में भारी वाहनों का आवागमन जबलपुर – छतरपुर – नरसिंहपुर मार्ग से मकरोनिया – कबूलापुल – राहतगढ़ मोतीनगर – भोपाल मार्ग पर मुख्यतः होता है जिससे इन मार्गो पर यातायात में बाधा तथा दुर्घटनाएं होती है।

- **यातायात उदित केन्द्र :**

नगर के विभिन्न मार्गों पर विभिन्न प्रमुख कार्य केन्द्र स्थित हैं। इन कार्य केन्द्रों द्वारा सम्पादित क्रिया कलापों के आधार पर विभिन्न प्रकार का यातायात उदित होता है। इनको तीन श्रेणियों में ,यात्री यातायात, माल यातायात तथा मिश्रित यातायात में विभाजित किया जा सकता है। इस प्रकार नगर में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न यातायात उदित केन्द्र हैं जो निम्नानुसार है –

अ. प्रमुख यात्री यातायात उदित केन्द्र :

1. रेल्वे स्टेशन एवं बस स्टैण्ड
2. कटरा, गुजराती बाजार, भीतरी बाजार, बड़ाबाजार, मकरोनिया, सिविल लाइन
3. जिलाधीश कार्यालय, जिला न्यायालय, गौर नगर, तहसील कार्यालय, तिली क्षेत्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब. माला यातायात उदित केन्द्र :

1. थोक बाजार – गल्ला मंडी, सब्जी मण्डी, नमकमण्डी, कटरा, भीतर बाजार, भगवानगंज, तिलकगंज ।

स. मिश्रित यातायात (यात्री एवं माल)

कटरा, गुजराती , बड़ा बाजार, विजय टाकीज मार्ग , नमक मंडी भगवान गंज मकरोनिया ।

- **नगरीय यातायात आवास केन्द्र :**

नगर के मुख्य यातायात अवसान केन्द्र निम्नानुसार हैं –

	स्थान	उपलब्ध यातायात सुविधाएं
1	रेल्वे स्टेशन	ऑटो, टैम्पो
2	बस स्टैण्ड	ऑटो, टैम्पो
3	नमक मंडी	ऑटो, टैम्पो
4	मकरोनिया	ऑटो, टैम्पो
5	तिली ग्राम	टैम्पो
6	चमेली ग्राम	ऑटो
7	राहतगढ़	ऑटो, टैम्पो

नगर में जनपरिवहन सुविधा के रूप में शहर में विभिन्न मार्गो पर टैम्पो तथा ऑटो चलते है।

अ. टैम्पो संचालन मार्ग

1. नमक मंडी – बस स्टैण्ड – गोपालगंज – तहसीली – तिलीग्राम
2. नमक मंडी – बस स्टैण्ड – सिविल लाईन – मकरोनिया
3. राहतगढ़ – बस स्टैण्ड – नरयावली नाका

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब. माला यातायात उदित केन्द्र :

1. **थोक बाजार** – गल्ला मंडी, सब्जी मण्डी, नमकमण्डी, कटरा, भीतर बाजार, भगवानगंज, तिलकगंज ।

स. मिश्रित यातायात (यात्री एवं माल)

कटरा, गुजराती , बड़ा बाजार, विजय टाकीज मार्ग , नमक मंडी भगवान गंज मकरोनिया ।

- **नगरीय यातायात आवास केन्द्र :**

नगर के मुख्य यातायात अवसान केन्द्र निम्नानुसार हैं –

	स्थान	उपलब्ध यातायात सुविधाएं
1	रेल्वे स्टेशन	ऑटो, टैम्पो
2	बस स्टैण्ड	ऑटो, टैम्पो
3	नमक मंडी	ऑटो, टैम्पो
4	मकरोनिया	ऑटो, टैम्पो
5	तिली ग्राम	टैम्पो
6	चमेली ग्राम	ऑटो
7	राहतगढ़	ऑटो, टैम्पो

नगर में जनपरिवहन सुविधा के रूप में शहर में विभिन्न मार्गो पर टैम्पो तथा ऑटो चलते है।

अ. टैम्पो संचालन मार्ग

1. नमक मंडी – बस स्टैण्ड – गोपालगंज – तहसीली – तिलीग्राम
2. नमक मंडी – बस स्टैण्ड – सिविल लाईन – मकरोनिया
3. राहतगढ़ – बस स्टैण्ड – नरयावली नाका

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब. ऑटो रिक्शा संचालन मार्ग

1. नमक मंडी – बस स्टैण्ड सिविल लाईन
2. चमेली चौक – कटरा मस्जिद
3. चमेली चौक – मोती नगर
4. नमक मण्डी – भगवानगंज
5. नमक मण्डी – विजय टॉकीज – राहतगढ़ बस स्टैण्ड

- **सागर : वर्तमान मार्ग**

अ. नगर से गुजरने वाले क्षेत्रीय मार्ग

1. सागर–झांसी (कबुला पुल से कजलीवन शाला तक)
2. सागर–नरसिंहपुर (कबुलापुल से मकरोनिया चौराहा तक)
3. सागर–भोपाल (राहतगढ़ रेल्वे संगम से मोतीनगर थाना तक)
4. सागर–बीना (राहतगढ़ रेल्वे संगम से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तक)
5. छतरपुर–जबलपुर मार्ग (मकरोनिया से बहेरिया चौराहा)

ब. प्रमुख नगर मार्ग

6. मकरोनिया मार्ग

(क) तीन मड़िया तिराहे ससे कबूतर चौराहा

(ख) कबूतर चौराहे से मकरोनिया चौराहा

7. तिली हास्पिटल सड़क (तीन मड़िया तिराहे से तिली ग्राम)
8. गोपालगंज सड़क

(क) स्टेडियम से मधुकर शाह स्कूल

(ख) मधुकरशाह स्कूल से तहसील तिराहा

(स) तहसील तिराहा से तिली ग्राम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब. ऑटो रिक्शा संचालन मार्ग

1. नमक मंडी – बस स्टैण्ड सिविल लाईन
2. चमेली चौक – कटरा मस्जिद
3. चमेली चौक – मोती नगर
4. नमक मण्डी – भगवानगंज
5. नमक मण्डी – विजय टॉकीज – राहतगढ़ बस स्टैण्ड

- **सागर : वर्तमान मार्ग**

अ. नगर से गुजरने वाले क्षेत्रीय मार्ग

1. सागर–झांसी (कबुला पुल से कजलीवन शाला तक)
2. सागर–नरसिंहपुर (कबुलापुल से मकरोनिया चौराहा तक)
3. सागर–भोपाल (राहतगढ़ रेल्वे संगम से मोतीनगर थाना तक)
4. सागर–बीना (राहतगढ़ रेल्वे संगम से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तक)
5. छतरपुर–जबलपुर मार्ग (मकरोनिया से बहेरिया चौराहा)

ब. प्रमुख नगर मार्ग

6. मकरोनिया मार्ग

(क) तीन मड़िया तिराहे ससे कबूतर चौराहा

(ख) कबूतर चौराहे से मकरोनिया चौराहा

7. तिली हास्पिटल सड़क (तीन मड़िया तिराहे से तिली ग्राम)
8. गोपालगंज सड़क

(क) स्टेडियम से मधुकर शाह स्कूल

(ख) मधुकरशाह स्कूल से तहसील तिराहा

(स) तहसील तिराहा से तिली ग्राम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

9. कबूतर चौराहा से तहसील तिराहा
10. पथरिया जाट ग्राम से तिली ग्राम मार्ग
11. तिलक मार्ग/टंकी सड़क
12. स्टेशन रोड (अप्सरा टॉकीज से रेल्वे स्टेशन)
13. रेल्वे क्रासिंग रोड
14. कबुलापुल से स्टेशन रोड
15. कबुलापुल से राहतगढ़ रेल्वे क्रासिंग
16. नमकमंडी तिरहा से भंडारी तिराहा
17. तिली ग्राम वाईपास मार्ग (तिली ग्राम से मोतीनगर थाना)

(स) मध्यवर्ती क्षेत्र के मार्ग

18. कटरा बाजार सड़क (तीन बत्ती से जामा मस्जिद)
19. गुजराती बाजार सड़क
    (क) जामा मस्जिद से मनोहर टॉकीज
    (ख) मनोहर टॉकीज से राधा टॉकीज तिराहा
20. विजय टॉकीज सड़क
    (क) जामा मस्जिद से माणिक चौक
    (ख) माणिक चौक से माता मड़िया तिराहा
    (ग) माता मड़िया तिराहा से राहतगढ़ रेल्वे क्रासिंग
21. नमक मण्डी मार्ग (जामा मस्जिद से रोझा तिराहा)
22. तीन बत्ती से मोतीनगर थाना
    (क) तीन बत्ती से कोतवाली
    (ख) कोतवाली से चमेली चौक
    (ग) चमेली चौक से मोतीनगर थाना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

23. आर्य समाज सड़क (आर्य समाज स्कूल से गल्ला बाजार चौराहा)
24. भट्ट मार्ग (गल्ला बाजार चौराहा से छावनी क्षेत्र)
25. गल्ला बाजार से रजा तिराहा 28 भंडारी तिराहा
26. रजा तिराहा से भण्डारी तिराहा से माता मढ़िया तक
27. भंडारी तिराहा से तीनबत्ती
28. भंडारी तिराहा से माता मढ़िया तक

इस प्रकार सड़क सुविधा में सागर शहर के रोड की कुल लम्बाई 38 किलोमीटर है। पक्की और सीमेंट रोड़ की लम्बाई 22 किलोमीटर है। कच्ची सड़क जीवन स्तर पर प्रभाव डालती है, सागर शहर में इस प्रकार के रोड की लम्बाई 12 किलोमीटर है। (जैन रेखा पृ. 169) पक्की सड़क मुख्य रूप से सागर शहर की आधार रोड है, जबकि बहुत से छोटे –छोटे रास्ते तथा कच्चे रोड शहर के विभिन्न भागों को जोड़ते हैं।

- **रेलमार्ग :**

जिले में रेलमार्ग की कुल लम्बाई 181.52 किमी. है। जो बड़ी लाइन (ब्राडगेज) की है। सागर–कटनी रेललाइन बाहरी स्टेशन से मकरोनिया लिधोरा, खुर्द, भिखार तथा गणेशगंज होती हुई गुजरती है, बीना सागर सेक्शन केन्द्रीय रेल्वे की शाखा है तथा सागर को दिल्ली मुंबई एवं दिल्ली मद्रास के ट्रक मार्गो से जोड़ती है। तीसरी लाइन बीना गुना होती हुई कोटा गई है। बीना झांसी सेक्शन की जिले में कुल दूरी 30 किमी. की है। बीना जिले का महत्वपूर्ण रेल्वे जंक्शन है।[21] सागर नगर से जाने वाली मुख्य ट्रेन निम्नलिखित है –

1. क्षिप्रा एक्सप्रेस – इन्दौर से हावड़ा (सप्ताह में 3 दिन)
2. उत्कल एक्सप्रेस – दिल्ली (निजामुद्दीन) से पुरी
3. बीना इटारसी एक्सप्रेस
4. भोपाल – बिलासपुर पेसिंजर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5.	बीना	–	कटनी पेसिंजर
6.	दमोह	–	कोटा शटल
7.	महामाया एक्सप्रेस/गोंडवाना एक्सप्रेस	–	दिल्ली से जबलपुर
8.	रेवांचल एक्सप्रेस	–	रीवा से भोपाल (सप्ताह में 3 दिन)

- **वायु परिवहन :**

सागर नगर में कोई नियमित वायुसेवा नहीं है। किन्तु सागर रहली सड़क के 11 वें मील पर ढ़ाना ग्राम के पास यदा – कदा छोटे मोटे हवाई जहाजों के उतरने के लिए एक हवाई जहाजों के उतरने के लिए एक हवाई पट्टी है। सन् 1950 तक यह निदेशक , सैन्य भूमि तथा छावनी दक्षिणीकमान पूना के प्रबंध तथा नियंत्रण में था। सन् 1950 में यह राज्य के लोक निर्माण विभाग को हस्तांतरित कर दिया गया। यह हवाई पट्टी यदा–कदा ही उपयोग में लाई जा सकती है। अग्रिम सूचना मिलने पर ये छोटे हवाई जहाज उतरने योग्य बना दी जाती है।

❑ **संचार :**

नगर में एक मुख्य डाकघर एवं एक तारघर छावनी क्षेत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त नगर में 2 डाकघर , 39 उपडाकघर , 1 दूरभाष केन्द्र एवं 1 रेडियो केन्द्र इत्यादि है।

❑ **जनसंख्या :**

प्रत्येक नगर का अस्तित्व वहाँ निवास करने वाली जनसंख्या पर निर्भर करता है। अतः प्रत्येक नगर का जन्म जनसंख्या के दबाव के परिणाम–स्वरूप होता है। कुशल जनसंख्या एवं उपलब्ध प्राकृतिक साधन किसी भी स्थान के औद्योगिक विकास के मापक होते हैं। प्राचीनकाल में धनी जनसंख्या वाले देश ही सबसे अधिक धनी एवं शक्तिशाली माने जाते थे एवं जनसंख्या की अधिकता को हितकर माना जाता था। आज भी जनंसख्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्व कम नहीं है। किसी भी स्थान की वास्तविक स्थिति का पूर्वानुमान लगाने के लिए आवश्यक है, कि उस स्थान की जनसंख्या की जानकारी प्राप्त की जाये।

- **सागर नगर की जनसंख्या वितरण :**

सन् 1991 की जनगणनानुसार सागर नगर में कुल 195346 व्यक्ति लगभग 33.75 वर्ग किसी क्षेत्र में निवास करते हैं, जिसमें से 52.8% पुरूष एवं 47.2% स्त्रियॉ है। 1991 की जनगणना के अनुसार सागर शहर की वार्ड अनुसार जनसंख्या 3177 से 7924 के मध्य प्राप्त होता है। सागर शहर में सबसे ज्यादा जनसंख्या लाल बहादुर शास्त्री वार्ड में 7924 है तथा मध ुकरशाह वार्ड, सरदार भगतसिंह वार्ड तिली वार्ड मे क्रमशः 6772, 6644 एवं 6352 जनसंख्या है। बरियाघाट वार्ड में सबसे कम जनसंख्या 3177 व्यक्ति है। वार्ड के अनुसार जनसंख्या का विवरण निम्न लिखित तालिका में दर्शाया गया है। **(मानचित्र क्र.5,6,7,8)**

तालिका क्र. 4.3

सागर नगर की जनसंख्या : 1991

क्रमांक	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
1.	इंदिरा नगर	5179	2762	2417
2.	सिविल लाइनस	4352	2325	2827
3.	मधुकरशाह नगर	6772	3918	2854
4.	गोपाल गंज	4969	2571	2398
5.	वृन्दावन बाग	4487	2460	2828
6.	कृष्णागंज	4196	2190	2006
7.	शनीचर वार्ड	3804	1986	1818
8.	परकोटा	3872	1593	1479

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रमांक	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
9.	लाजपतपुरा	4311	2258	2053
10.	शुक्रवारी वार्ड	4027	2184	1923
11.	महर्षि दयानंद वार्ड	4058	2081	1977
12.	तिलकगंज	4942	2602	2340
13.	भगवानगंज	4090	2174	1916
14.	विट्ठल नगर	4098	2196	1972
15.	गुरूगोविन्द सिंग	5173	2725	2452
16.	सुभाष नगर	5518	2912	2606
17.	लालबहादुर शास्त्री	7924	4908	3616
18.	संत कुंवर राम	4978	2568	2410
19.	सरदार भगतसिंह	6644	3446	3198
20.	बल्लभनगर	5450	2913	2537
21.	मोतीनगर	5363	2868	2495
22.	चंद्रशेखर वार्ड	3823	2005	1818
23.	कटरा	4232	2251	1981
24.	जवाहरगंज	3325	1759	26.37.1566
25.	रामपुरा	4128	2149	1979
26.	इतवारी	4545	2385	2160
27.	गांधी चौक	3804	2000	1804
28.	नरयावली नाका	4142	2186	1956
29.	रविशंकर नगर	4590	2409	2181
30.	मोहन नगर	3974	2089	1885
31.	विवेकानंद नगर	4447	2287	2160

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR TOWN

Scale : 3" - 1MILE
1 = 8000

Name of Wards

Sir Harising Gour	Guru Govind Singh	Nayasoli Naka
Indira Nagar	Subhash Nagar	Nidhan Nagar
Civil Line	Tulshi Nagar	Rajeev Nagar
Madhukar Shah	Lal Bahadur Shastri	Vivekanand
Sivaji Nagar	Sant Kawar Ram	Diwala Naka
Gopal Ganj	Ravidas	Keshav Gunj
Vindrawan Bag	Bhagat Sing	Subhedar
Krishan Ganj	Vallabh Nagar	Chakraghat
Sanichari	Motinagar	Bahaghat
Parkota	Chandra Shekar	Laxmipura
Laj Pat Pura	Katra	Purbiaa
Shukurwari	Jawahar Gunj	Kaka Gunj
Maharshi Dayanand	Rampura	Punit nagar
Tilak Gunj	Itwari	Tilli
Bhagwan Gunj	Gandhi Chowk	Bagraj
Vithal Nagar	Ravi Shankar Nagar	Ambedkar

Index

M. C. Boundary	==== =====
Ward Boundry	==== =====
Reserved Ward	==== =====

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR CITY

Distribution of Population
(Ward wise 1991)

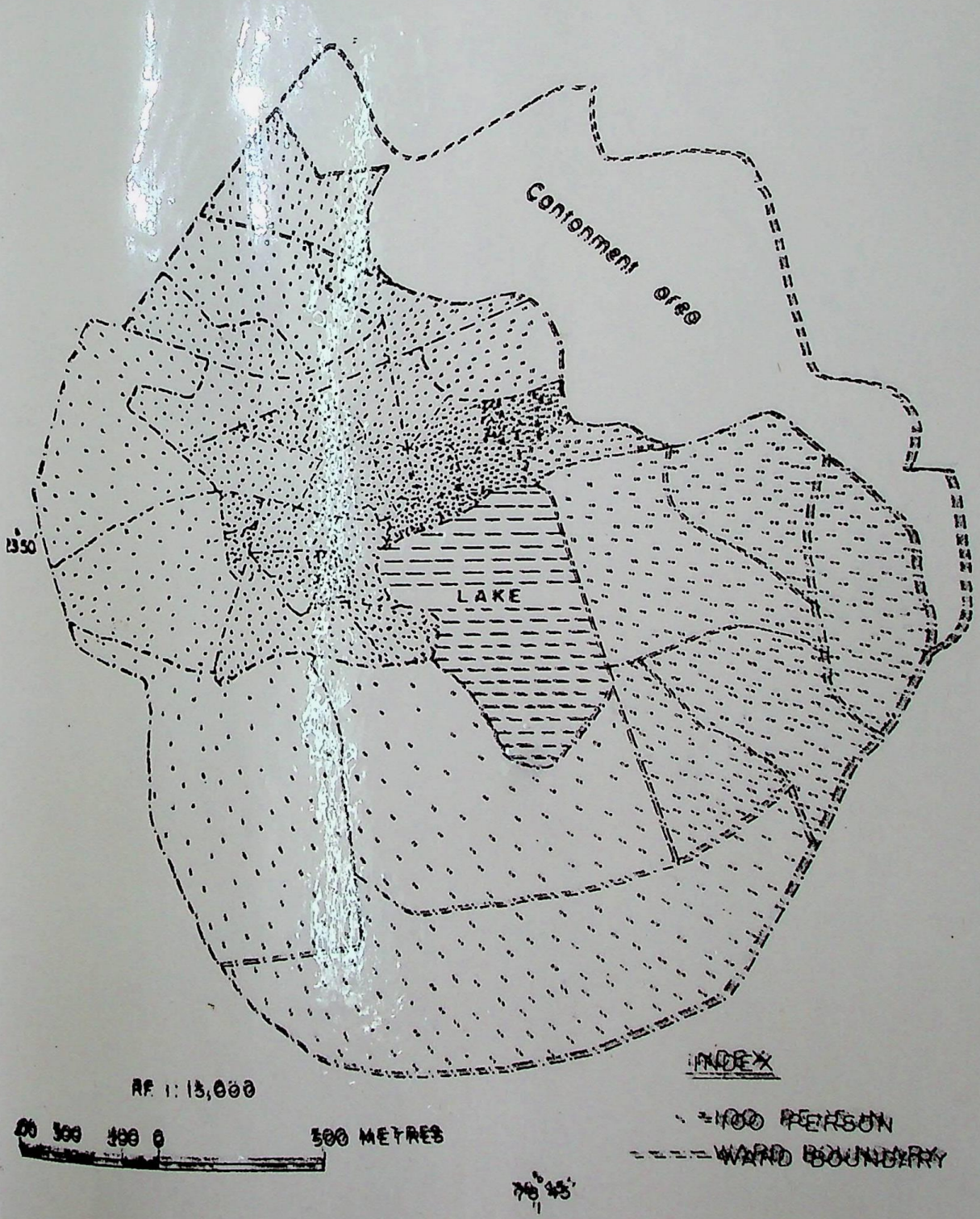

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR CITY

Distribution of Population
(Ward wise 1951)

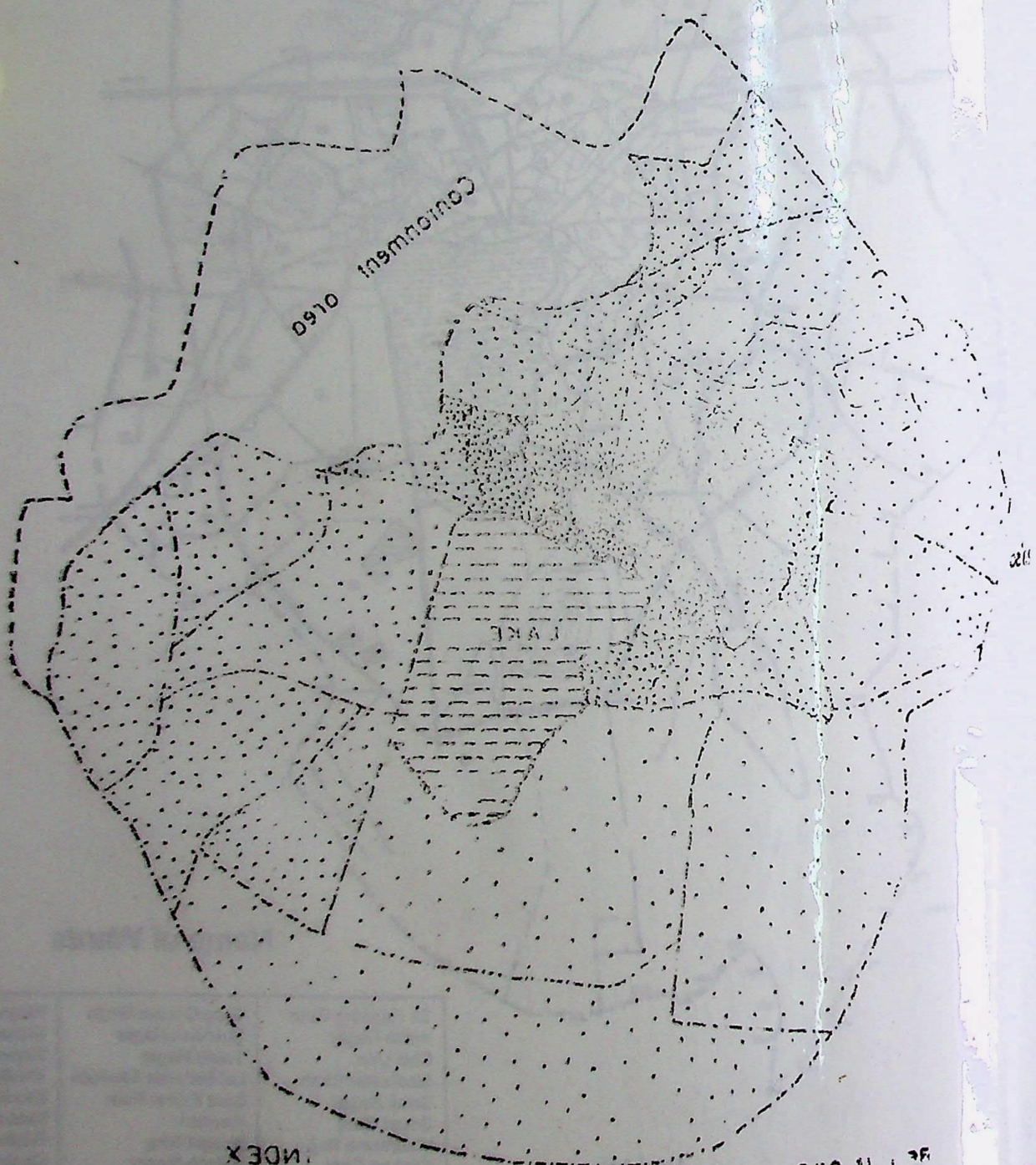

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR CITY

Distribution of Population (Ward wise 1991)

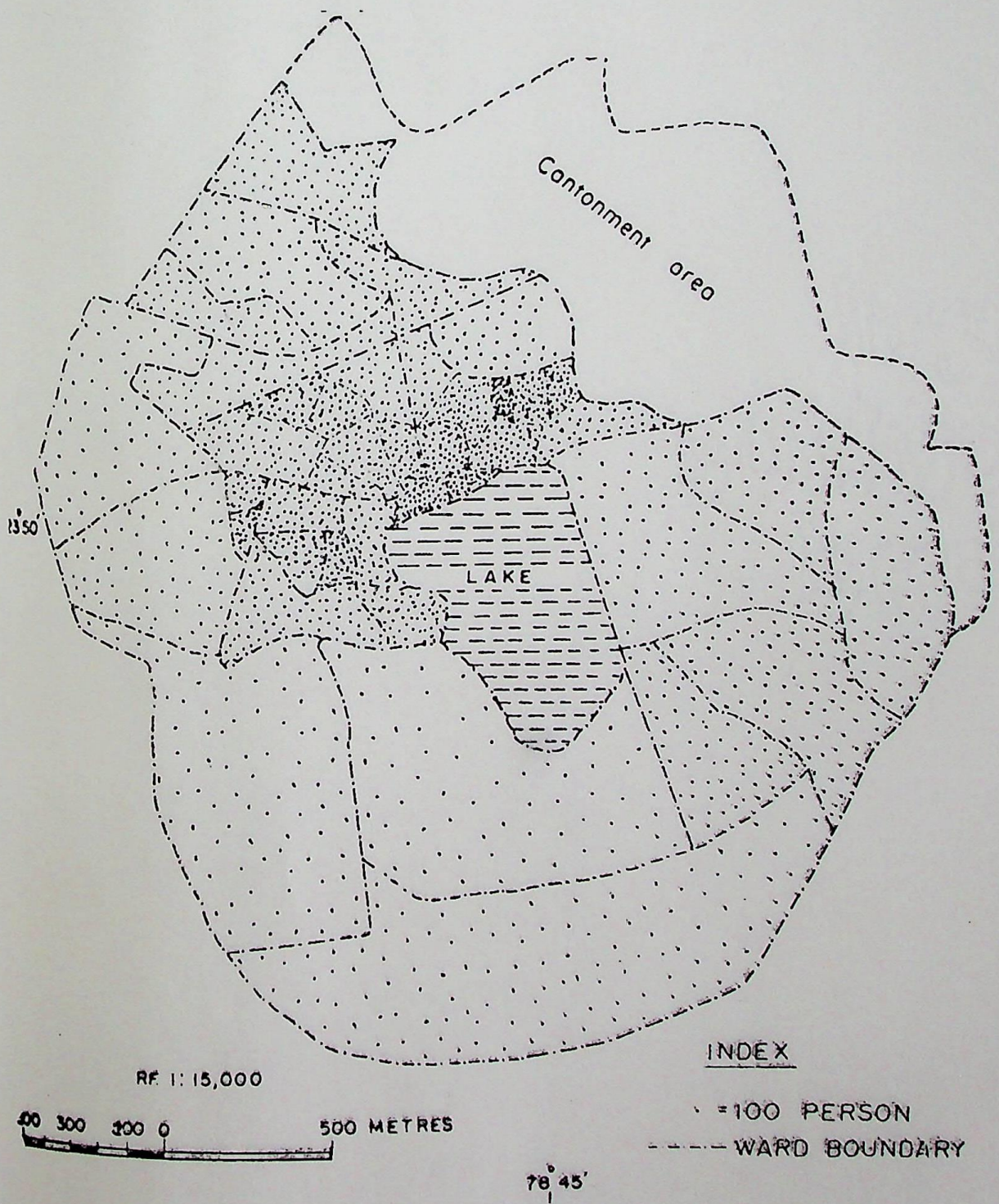

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR CITY

Distribution of Population (Ward wise 1991)

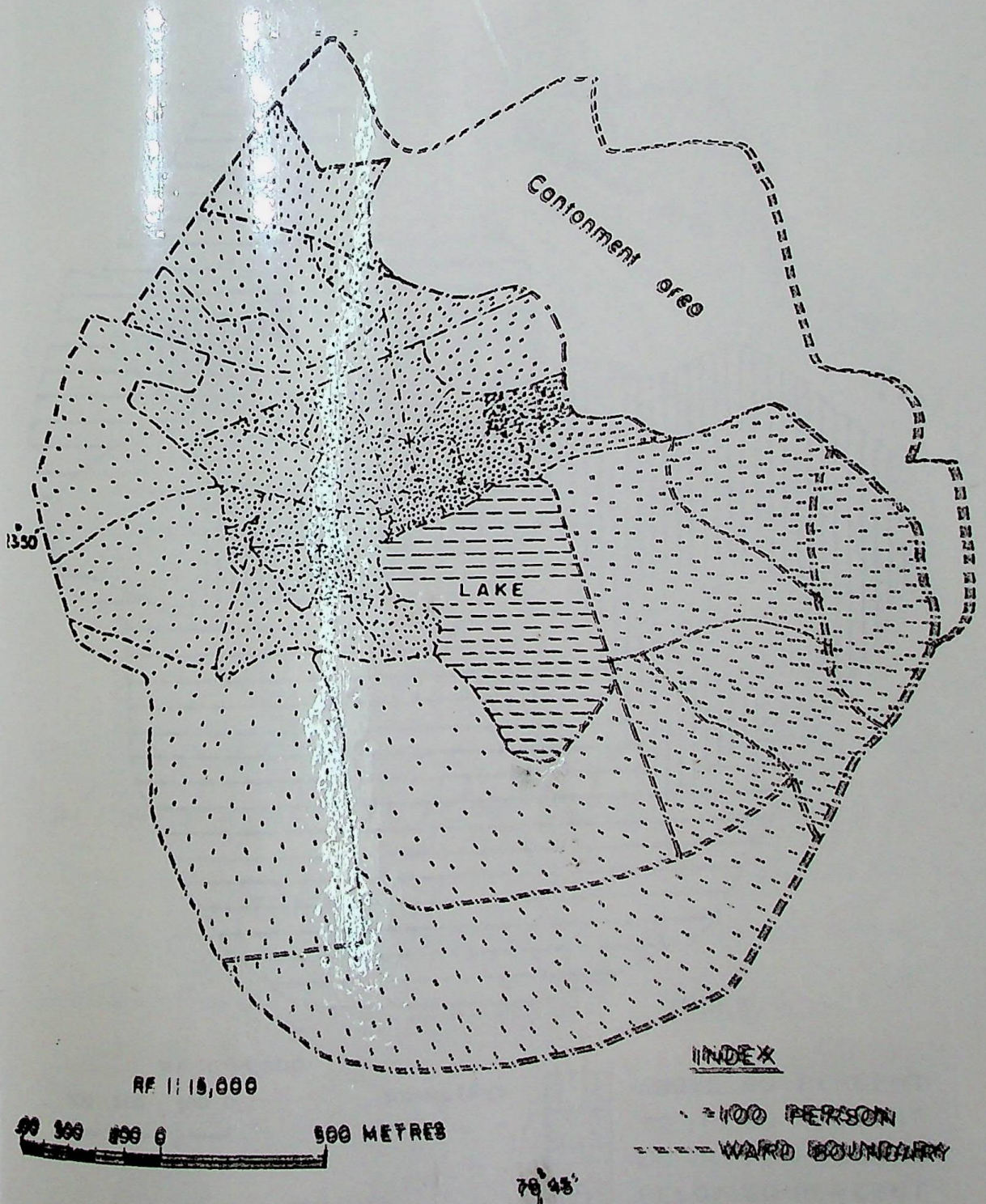

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

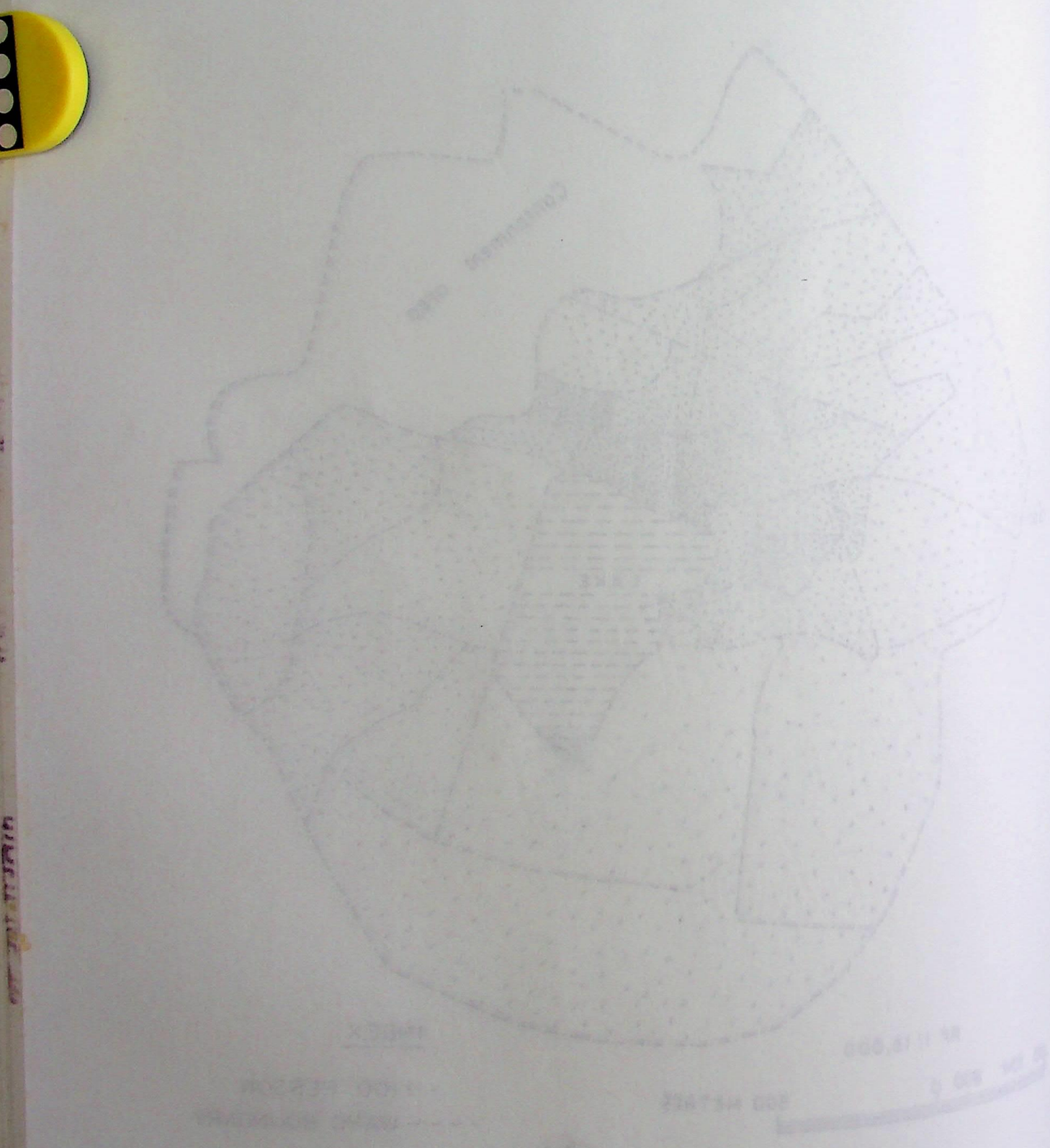

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR CITY

Male Literacy - Ward wise 1991

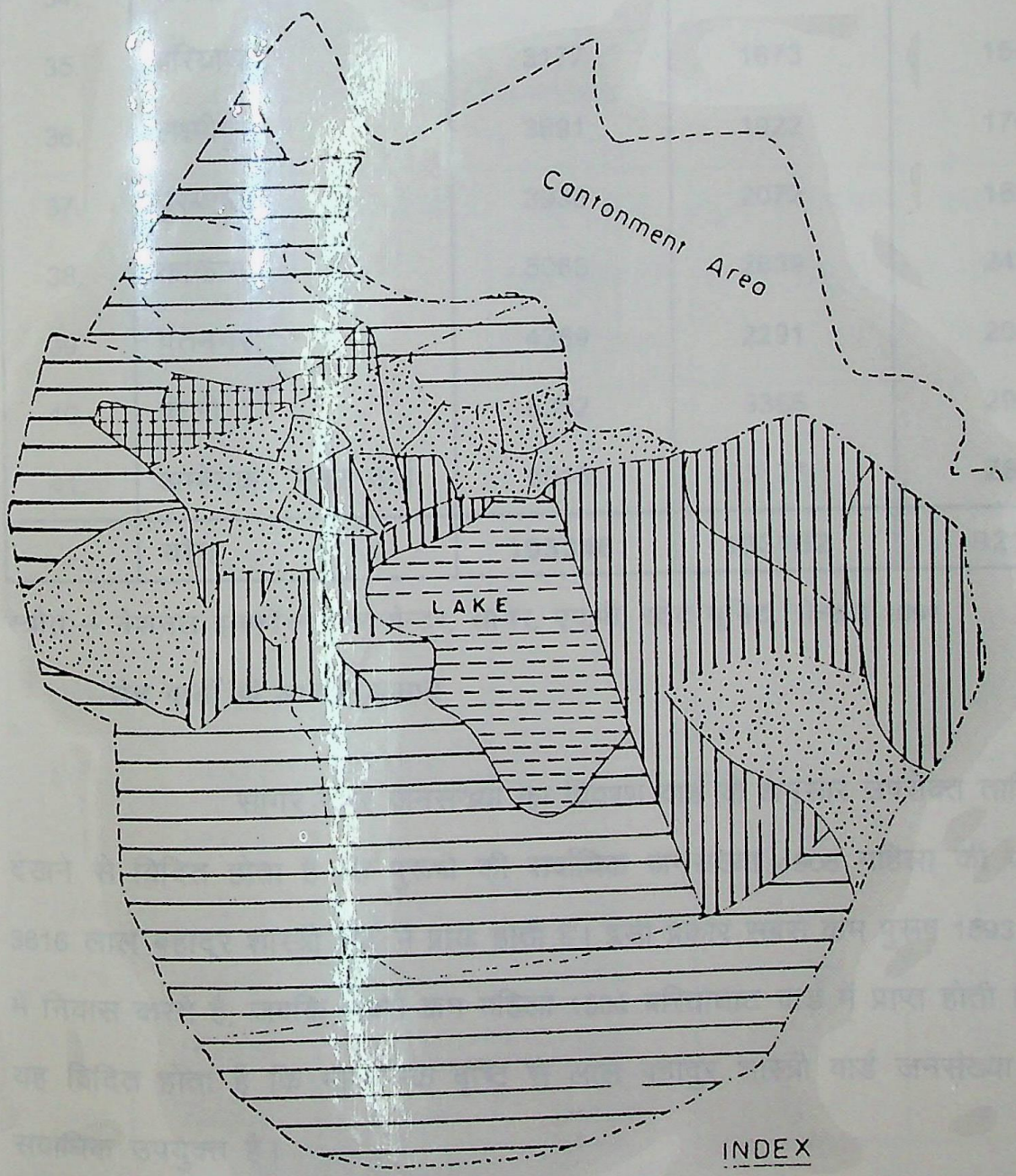

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

SAGAR CITY

Male Literacy - Ward wise 1991

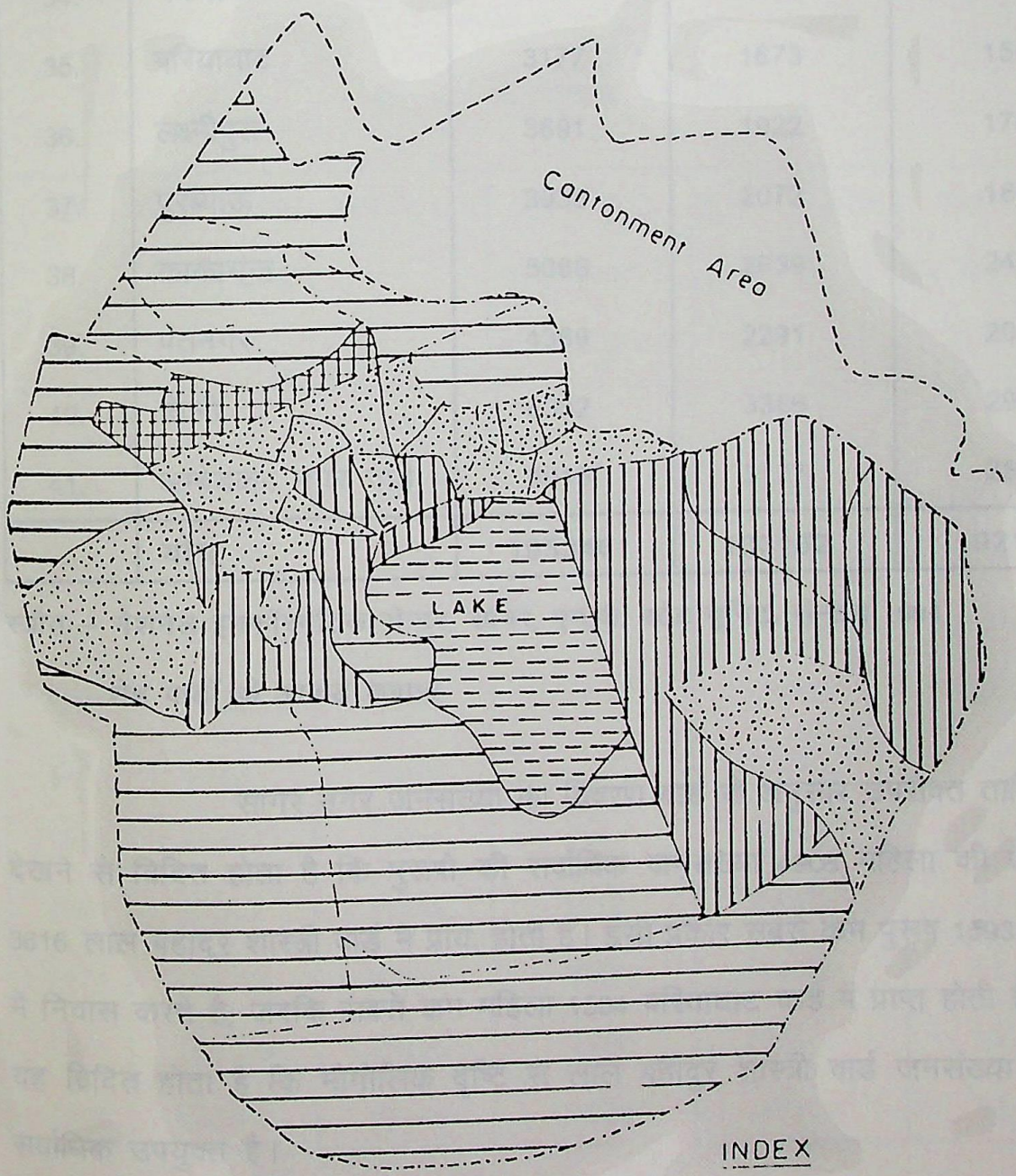

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

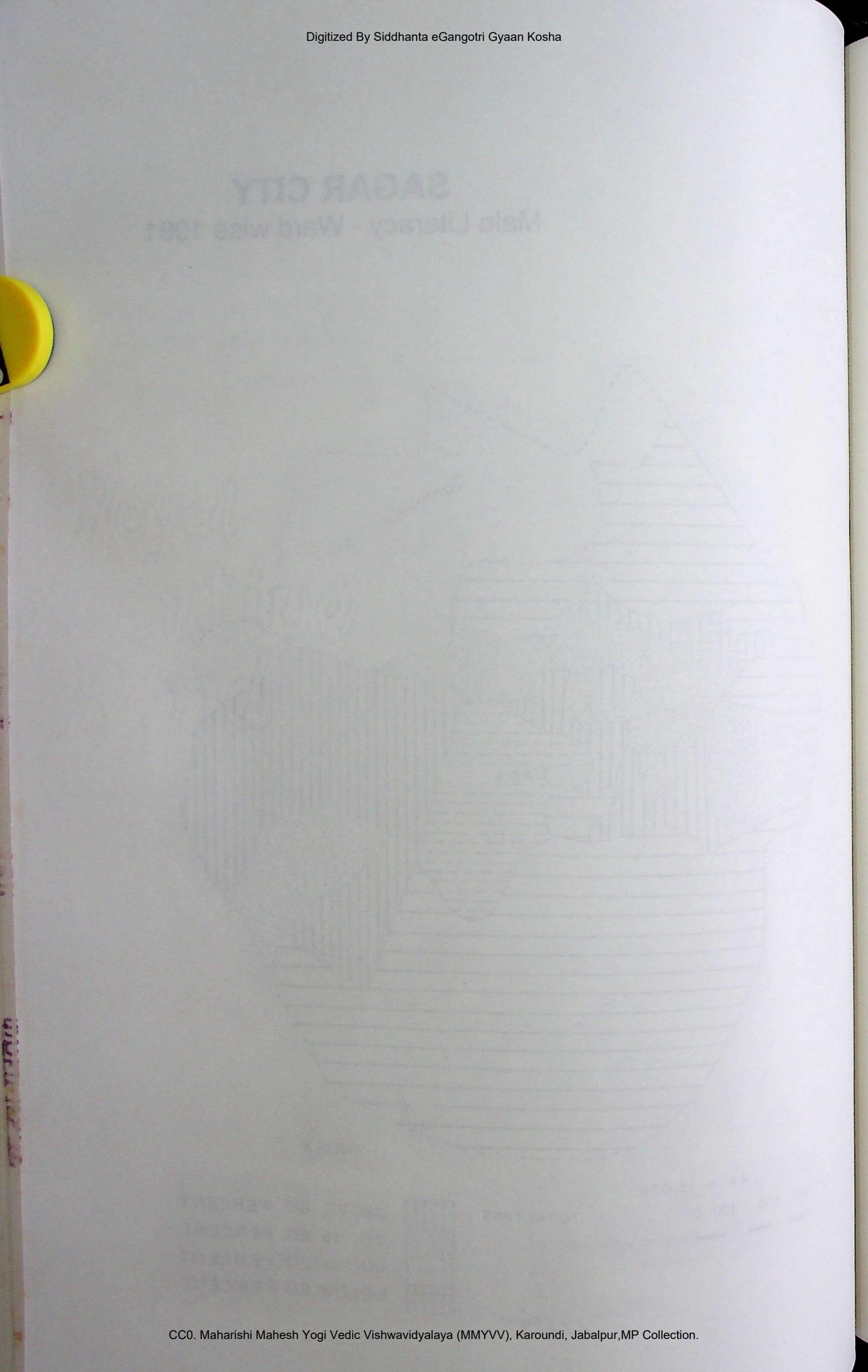

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रमांक	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
32.	केशवगंज	4058	2085	1973
33.	वासुदेव राव सूवेदार	5503	2914	2589
34.	चकराघाट	3829	2002	1823
35.	बरियाघाट	3177	1673	1504
36.	लक्ष्मीपुरा	3691	1922	1769
37.	पुरब्याऊ	3938	2072	1866
38.	काकागंज	5068	2639	2429
39.	पंतनगर	4369	2291	2078
40.	तिली	6352	3386	2966
41.	अम्बेडकर नगर वार्ड	6015	3177	2838
	योग	**195346**	**103162**	**92184**

स्त्रोत – नेशनल इनफॉरमेटिक सेन्टर, सागर, एम.पी. स्टेट यूनिट, सेन्सस 1991

शेष वार्डों के आकड़े अप्राप्त

सागर नगर जनसंख्या का विवरण वार्ड के अनुसार उपरोक्त तालिका को देखने से विदित होता है कि पुरूषो की सर्वाधिक जनसंख्या 4908 महिला की जनसंख्या 3616 लाल बहादुर शास्त्री वार्ड में प्रायः होती है। इसी प्रकार सबसे कम पुरूष 1593 परकोटा में निवास करते है; जबकि सबसे कम महिला 1504 बरियाघाट वार्ड में प्राप्त होती है। इससे यह विदित होता है कि भौगोलिक दृष्टि से लाल बहादुर शास्त्री वार्ड जनसंख्या के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **जनसंख्या परिवर्तन :**

विभिन्न वर्षो में सागर शहर की जनसंख्या एवं उसमें परिवर्तन निम्न तालिका 2.2 में दर्शाया गया है –

तालिका क्र. 4.4

सागर : जनसंख्या परिवर्तन

वर्ष	नगरपालिका निगम क्षेत्र	छावनी क्षेत्र	बाहृय वृद्धि क्षेत्र (छावनी क्षेत्र छोड़कर)	कुल जनसंख्या (नगर समूह)	दशक वृद्धि दर नगर समूह (प्रतिशत)
1	2	3	4	5	6
1901	31412	10918	—	43420	—
1911	34876	11022	—	45908	8.45
1921	28571	10748	—	39310	(–)14.35
1931	29822	9040	—	48862	24.28
1941	50733	13200	—	63933	30.84
1951	66442	13626	—	80068	25.24
1961	84372	19185	1119	104676	30.73
1971	118754	27343	8868	154785	47.87
1981	160329	32696	14376	207401	33.99
1991	195346	37135	24638	257119	23.97

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 1991

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सागर शहर की जनसंख्या 19 वीं शताब्दी के प्रारंभ में 43,420 थीं। वर्ष 1901 से 1911 को कालवधि तक जनसंख्या में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपेक्षाकृत बहुत कम वृद्धि देखी गई; जबकि वर्ष 1921 में नगर की जनसंख्या अकाल एवं 1921में नगर की जनंसख्या अकाल एव महामारी के कारण घटकर 39,310 हो गई। वर्ष 1921 के पश्चात् इसकी जनंसख्या में धीमी गति से वृद्धि होकर 1991 में नगर की जनसंख्या जनगणना अनुसार लगभग 6 गुना बढ़कर 2.57 लाख हो चुकी है; जिसमें छावनी क्षेत्र की जनसंख्या भी सम्मिलित है। इस प्रकार वर्ष 1981–91 के दशक में नगरीय जनसंख्या में 23.97% वृद्धि पाई गई है; इससे स्पष्ट होता है, कि जनसंख्या में शहरीकरण की प्रवृत्ति तीव्रता से बढ़ी है।

- **लिंगानुपात :**

सागर नगर में लिंगानुपात प्रति 1000 पुरूषों के पीछे औसतन 86 वे महिलायें प्राप्त होती है तालिका क्रमांक 2.3 को देखने से विदित होता है, कि 1901 में लिंगानुपात प्रति एक हजार पुरूषों पर 926 महिलायें थी जो 1991 में घटकर 869 हो गया; जिसका कारण महिलाओं के प्रति पुरूषों की उदासीनता है, महिलाओं की मृत्युदर अधिक और पुरूषों की मृत्यु कम है। सागर नगर में लिंग अनुपात अग्र तालिका में दर्शाया गया है–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्र. 4.5

सागर नगर में लिंग अनुपात

वर्ष	स्त्रियां प्रति हजार पुरूषों पर
1901	926
1911	887
1921	824
1931	931
1941	915
1951	912
1961	859
1971	846
1981	860
1991	869

स्त्रोत : डिस्ट्रिक सेन्सस हेण्ड बुक, सागर 1981, भाग द्वितीय, पृष्ठ 345. सेन्सस ऑफ इण्डिया, 1991, सिरीज प्रथम, पेपर – द्वितीय, पृष्ठ 244–245.

तालिका क्रंमाक 4.6 एवं 4.7 को देखने से विदित होता है, कि सवार्धिक अनुसूचित जाति 71.47% विट्ठलनगर वार्ड में प्राप्त होती है जहां अनुसूचित जाति के पुरूषों की संख्या 51.38 % तथा महिलाओं की संख्या 48.6% है तथा सबसे कम अनुसूचित जाति शनीचरी वार्ड में प्राप्त होती है। यहाँ पर कुल जनसंख्या की 1% जनंसख्या अनुसूचित जाति की है इनमें 52.63% पुरूष तथा 47.37% महिलायें है।

तालिका क्रमांक 4.7 में अनुसूचित जनजाति का प्रदर्शन किया गया है सागर नगर में कुल जनसंख्या का केवल 79% जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है। सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति अंबेडकर वार्ड में प्रायः होती है।यहाँ 7.03% जनसंख्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुसूचित जनजाति की है इनमें 52.01% पुरूष तथा 47.99% महिलायें हैं इसी प्रकार सबसे कम अनुसूचित जनजाति कृष्णगंज में कुल जनसंख्या का 0.02% प्राप्त होती है यहाँ पर केवल अनुसूचित जनजाति के पुरूष निवास करते है महिलाओं का अभाव है।

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है। सागर नगर के अनुसूचित जाति एवं जनजाति का प्रतिशत 19.66% एवं 0.79% है जो इस बात का द्योतक है, कि सागर नगर अनसूचित जाति एवं अनुसूचितजनजाति विहीन नगर है। यहाँ का भौगोलिक पर्यावरण इनके लिये अनुकूल नहीं है।

तालिका क्र 4.6

सागर नगर की अनुसूचित जाति की जनसंख्या का प्रतिशत

क्र.	वार्ड	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	पुरुष	महिलायें
1.	इंदिरा नगर	4.17	56.48	43.52
2.	सिविल लाइनस	11.21	54.30	45.70
3.	मधुकरशाह नगर	8.96	67.22	32.78
4.	गोपाल गंज	9.62	49.58	50.42
5.	वृन्दावन बाग	7.87	54.20	45.80
.6.	कृष्णागंज	3.53	53.38	46.62
7.	शनीचर वार्ड	1.00	52.63	47.37
8.	परकोटा	1.72	52.00	48.00
9.	लाजपतपुरा	19.25	55.78	44.22
10.	शुक्रवारी वार्ड	4.72	54.21	45.79
11.	महर्षि दयानंद वार्ड	1.45	50.85	49.15

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	वार्ड	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	पुरुष	महिलायें
12.	तिलकगंज	21.00	52.70	47.30
13.	भगवानगंज	63.64	53.09	46.91
14.	विट्ठल नगर	71.47	51.38	48.62
15.	गुरूगोविन्द सिंग	49.57	52.84	47.16
16.	सुभाष नगर	49.55	52.23	47.77
17.	लालबहादुर शास्त्री	35.95	54.33	45.84
18.	संत कंवर राम	4.20	55.98	44.02
19.	सरदार भगतसिंह	38.12	50.97	49.03
20.	बल्लभनगर	40.13	53.13	46.87
21.	मोतीनगर	1.57	59.52	40.48
22.	चंद्रशेखर वार्ड	17.42	50.90	49.10
23.	कटरा	6.99	53.04	46.96
24.	जवाहरगंज	0.15	60.00	40.00
25.	रामपुरा	1.50	51.61	48.39
26.	इतवारी	0.26	50.00	50.00
27.	गांधी चौक	2.31	59.09	40.91
28.	नरयावली नाका	4.32	56.98	43.02
29.	रविशंकर नगर	14.68	52.23	47.77
30.	मोहन नगर	1.23	51.02	48.98
31.	विवेकानंद नगर	15.25	52.95	47.05
32.	केशवगंज	43.31	52.41	47.59
33	बरियाघाट	2.01	51.24	48.76

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	वार्ड	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	पुरुष	महिलायें
34.	लक्ष्मीपुरा	3.28	51.24	48.76
35.	पुरब्याऊ	5.61	52.04	47.96
36.	काकागंज	46.84	53.58	46.42
37.	तिली	9.71	53.32	46.68
38.	अम्बेडकर नगर	44.04	53.15	46.85

स्त्रोत – नेशनल इनफॉरमेटिक सेन्टर, सागर, एम.पी. स्टेट यूनिट, सेन्सस 1991
शेष वार्डों के आंकड़े अप्राप्त

तालिका क्र. 4.7

सागर नगर की अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या का प्रतिशत : 1991

क्रमांक	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
1.	इंदिरा नगर	1.00	69.23	30.77
2.	सिविल लाइनस	1.15	40.00	60.00
3.	मधुकरशाह नगर	2.64	68.16	31.84
4.	गोपाल गंज	0.60	43.33	56.67
5.	वृन्दावन बाग	1.09	69.39	30.61
6.	कृष्णागंज	0.02	100.00	–
7.	शनीचर वार्ड	0.95	61.11	38.89
8.	परकोटा	0.75	65.22	34.78
9.	लाजपतपुरा	–	–	–
10.	महर्षि दयानंद वार्ड	0.94	47.37	52.63
11.	शुक्रवारी वार्ड	0.22	44.44	55.56

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रमांक	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
12	तिलकगंज	1.19	54.24	45.76
.13	भगवानगंज	1.17	47.92	52.08
14.	विट्ठल नगर	—	—	—
15.	गुरूगोविन्द सिंग	2.85	64.44	35.56
16.	सुभाष नगर	0.63	48.57	51.43
17.	लालबहादुर शास्त्री	0.18	78.57	21.43
18.	संत कंवर राम	0.06	66.67	33.33
19.	सरदार भगतसिंह	0.57	44.74	55.26
20.	बल्लभनगर	0.02	100.00	—
21.	मोतीनगर	0.82	59.09	40.91
22.	चंद्रशेखर वार्ड	0.21	75.00	25.00
23.	कटरा	1.30	56.36	43.64
24.	जवाहरगंज	0.12	100.0	—
25.	रामपुरा	0.02	100.0	—
26.	इतवारी	0.11	40.00	60.00
27.	गांधी चौक	—	—	—
28.	नरयावली नाका	0.43	50.00	50.00
29.	रविशंकर नगर	—	—	—
30.	मोहन नगर	—	—	—
31.	विवेकानंद नगर	0.20	77.78	22.22

स्त्रोत – नेशनल इनफॉरमेटिक सेन्टर, सागर, एम.पी. स्टेट यूनिट, सेन्सस 1991
शेष वार्डों के आंकड़े अप्राप्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्रं. 4.8

सागर की नगरीय जनसंख्या का आयुनुसार

आयु वर्ग	आयुनुसार प्रतिशत भाग
0 – 14	39.65
15 – 19	11.25
20 – 24	10.29
25 – 29	7.39
30 – 39	11.24
40 – 49	8.80
50 – 59	5.61
60 और अधिक	5.46
अकथित आयु	0.01
कुल	**100.0**

स्त्रोत : भारत की जनगणना 1991

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 1991 में नगरीय जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग 14 वर्ष से कम आयु का (39.65%) है। इसी प्रकार 60 वर्ष से कम वर्ग में जनसंख्या का 5.46% भाग है; जबकि गैर क्रियाशील जनसंख्या का प्रतिशत 45.11 है।

❑ **भाषा :**

सागर नगर भाषा विज्ञान की दृष्टि से एक भाषा–भाषी नगर है जहाँ के 90% से भी अधिक लोग केवल एक भाषा अर्थात् हिन्दी बोलते हैं। यह बुन्देलखण्ड के पश्चिमी भाग पर स्थित है इसलिये यहाँ पश्चिमी हिन्दी की 'बुन्देली बोली' बोली जाती है। बुन्देली लिखते समय देवनागरी तथा सजातीय कैथी वर्णमाला का उपयोग किया जाता है।[23] सागर नगर की संयुक्त शहरी जनसंख्या में से लगभग 92.8 %जनसंख्या को हिन्दी भाषा–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भाषी है, एवं सागर नगर के बहुत छोटे से भाग 7.2 प्रतिशत जनंसख्या भाग की भाग की मातृभाषा हिन्दी को छोड़ अन्य भाषा है। कहने का तात्पर्य है, कि नगर में हिन्दी को छोड़ अन्य भाषा– भाषियों की संख्या बहुत कम है। अन्य भाषाओं में सिन्धी, मराठी, उर्दू, गुजराती, पंजाबी तथा मारवाड़ी आदि है। इन अन्य भाषाओं में मराठी बोलने वालों का प्रतिशत अधिक है। सागर की मराठी भाषा का स्वरूप पूना की परिष्ठित मराठी है, न कि नागपुर की बोली। इसका दिलचस्व कारण यह है, कि सागर पेशवा के प्रतिनिधियों द्वारा सीधा पूना से शसित होता था और वह नागपुर के भौंसलों के अधीन नहीं आया। मराठी के बाद क्रमशः सिन्धी, उर्दू, गुजराती, पंजाबी व मारवाडी बोलने वालों का स्थान आता है।

सागर की भाषा के संबंध में रसेल ने लिखा है कि "इस जिले की भाषा बुन्देलखंडी या पश्चिमी हिन्दी की बुंदेली बोली है।" विभक्ति प्रत्यय की दृष्टि से इसमें और उर्दू मे कुछ अंतर है। "बुन्देली में संज्ञा तथा विशेषणों के अंत में प्रयुक्त 'आ' 'ओ' हो जाता है जैसे 'घोडा' का 'घोड़े'। क्रियाओं के कृदन्त रूप में भी परिवर्तन होता है जैसे–'खाया' के लिये 'खाव' 'नहाना' के लिये 'नहाव'। दूसरी प्रवृत्ति महाप्राण ध्वनि का उच्चारण न करना है यदि वह शब्द का आद्याक्षर न हो, जैसे 'पहला' के स्थान पर 'पेलो' और 'पहर' (3 घंटे) के स्थान पर 'पैर' आदि। अप्रधान कारक 'का' 'को' 'ए' में बदल जाता है जैसे 'तुम बाजार को गये थे' के स्थान पर 'तुम बाजारे गये हते'। सहायक क्रिया का भूतकाल 'या' 'ये' 'हतो' 'हते' में बदल जाता है 'वह जाता था' 'वो जात हतो'।

बुन्देली में बहुत ही कम साहित्य लिखा गया जो कुछ लिखा गया है वह अठारहवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षो में पन्ना के शासक छत्रसाल और उनके ठीक पहले के पूर्वजों और उत्तराधिकारियों के बीच के काल में लिखा गया है। हिन्दी साहित्य के महान् कवियों में से एक महाकवि (पद्माकर) का जन्म सागर में हुआ था एवं उनकी कविताओ में जो अत्याधिक लोकप्रिय है, वह बुन्देली पुट है।"[23]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ धर्म तथा जाति :

सागर में बसने वाले प्रधान समुदाय हिन्दू, मुस्लिम और जैन में सर्वाधिक जनंसख्या हिन्दुओं की है। हिन्दू कई जातियों तथा उपजातियों में विभाजित है। हिन्दुओं में ब्राह्मण वर्ण उच्च वर्ग है, तथा ब्राह्मणों की अनेक जातियाँ एवं वर्ग हैं इनमें से अधिकांश सजातीय जैसे सनाढ्य, कानकुज, सखारिया और जिझोतिया आदि है। ब्राह्मणों के अन्य उल्लेखनीय वर्गों में भार्गव तथा महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों के विभिन्न वर्ग है। इसके अतिरिक्त गुजरात के खेडावाल ब्राह्मणों तथा आन्ध्र के तेलगु ब्राह्मणों के कुछ परिवार है। कर्मकाण्ड इत्यादि कार्य करने वाले कुछ ब्राह्ममणों को छोड़कर अधिकांश ब्राह्मण भूस्वामी तथा किसान है।

दूसरों वर्ण क्षत्रिय है जिसमें राजपूत, यादव, डांगी (दांगी) तथा लोधी आते हैं इनमें लोधियों की संख्या सर्वाधिक है। यादव, राजपूत तथा दांगी (डांगी) विभिन्न छोटे–छोटे समूहों में विभाजित है, जिनकी अपनी सामाजिक स्थिति के अनुसार विभिन्न पारंपरिक रूप से अलग–अलग श्रेणियाँ है। इनकी स्वयं की भूमि है एवं कृषि इनका मुख्य व्यवसाय है। इसके साथ–साथ यादव कृषि के साथ ही साथ पशुपालन एवं डेरी का व्यवसाय भी करते है। नगर में वैश्य समुदाय का तीसरा स्थान है जिनमें गहोई, नेमा और अग्रवाल आते हैं इनका मुख्य कार्य व्यवसाय करना है। नगर के हिन्दुओं की एक अन्य महत्वपूर्ण जाति कायास्तों की है। जिनका पारंपरिक व्यवसाय हिसाब किताब तथा मुंशीगिरी है, किन्तु अब इनमें से कुछ व्यक्ति कारोबार, व्यवसाय, कृषि तथा नौकरी मे लगे हुये है।

कारीगर जातियों में सुनारों की उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा है, और वे सामान्यतः सम्पन्न है तथा समाज के प्रभावशाली व्यक्ति हैं। अन्य कारीगर जातियों में तेली, कुम्हार, लुहार हैं। कुम्हारों की मुख्य उपजातियॉ बडडिया, गढेरा और सुंगारिया हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अन्य जातियों कुर्मी, काछी, घोसी नाई ढीमर , धोबी आदि है। जहॉ एक ओर कुर्मी काछी व घोसी पूर्णतः कृषि पर आश्रित है। वहीं दूसरी ओर ढीमर पानी भरने का तथा घरेलू नौकरों का काम करते है। धोबी कपड़े धोने तथा नाई हजामत करने का कार्य करते है। अनुसूचित जनजातियों में बहना, बलाई, बंसोर, चमार, डोम, गांडी, खटीक, मांग मेहतर,सांसी, चढ़ार, धानक, कतिया, खंगार, कोरी मेहरा आदि है।

सागर नगर मे मुसलमानों का दूसरा स्थान है। मुसलमानों के प्रमुख वर्ग अन्यत्र के समान ही शिया और सुन्नी है। उनमें जो विभेद हैं वह खलीफा के आध्यात्मिक नेतृत्व की मान्यता के आधार पर है। संपूर्ण सुन्नत जमात विभिन्न वर्गो में विभाजित हैं इनमें मुख्य काजी (पुरोहित) , जुलाहा कुंजड़ा (फल और शाक सब्जी बेचने वाले) कसाई, नाई, मिश्ती, मुखेरी (पशुओं का धंधा करने वाले) पहना (कपास साफ करने वाले) और रंगरेज है। जैनियों के दो सागर नगर में जैन समुदाय का तीसरा स्थान है। सागर नगर में जैनियों के दो समुदाय है। – 1 दिगम्बर 2. श्वेताम्बर जैनियों के दोनों समुदायों में से दिगम्बर समुदाय की अधिकता है। दिगम्बर समुदाय के उपवर्ग गोलापूरब ,समैया आदि है। श्वेताम्बर और दिगम्बर परिवार में प्रमुख भेद यह है, कि श्वेताम्बर समुदाय भगवान की राजसी अवस्था को मानते है; जबकि दिगम्बर समुदाय भगवान की वैराग्य अवस्था को मानते है।

जैन के महत्वपूर्ण उपवर्ग गोलापुरव, ओसवाल आदि है, जिनमें परिवारों की संख्या अधिक है वे अपने विशिष्ट धार्मिक रीति–रिवाजों का पालन करते है, उनके अपने धार्मिक ग्रंथ , पूजा स्थल और त्यौहार आदि है। नगर में जनसंख्या के आधार पर दो अन्य उल्लेखनीय समुदाय सिक्ख और ईसाई है।

❑ संस्कृति तथा रीति–रिवाज :

नगर में विभिन्न समुदायों द्वारा पालन की जाने वाली धार्मिक मान्यतायें और प्रथायें देश के अन्य भागों में प्रचलित मान्यताओं और प्रथाओं के समान ही है। हिन्दुओं के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विभिन्न वर्ग अपने–अपने विश्वास के अनुसार पूजा अर्चना की विधियाँ और धार्मिक विधानों का अनुसरण करते हैं और हिन्दुओं के प्रमुख धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं।

सागर नगर की धार्मिक व सामाजिक परंपरायें अत्यंत महान है। पारस्परिक सौहार्द्र, धार्मिक उदारता एवं सांस्कृतिक समन्वय उन्ही महानपरंपराओं एवं रीतिरिवाजों एवं संस्कृति के अनुरूप फलते फूलते रहे है। नगर में त्यौहारों का सिलसिला अप्रैल माह में अखतीज (अखती) से प्रारंभ होता है। जब कृषि कार्य की शुरूआत होती है। अच्छी वर्षा और सल के लिये जून–जुलाई क माह में किसानों का त्यौहार पखबंदी, सर्पवंश से रक्षा के लिये जुलाई–अगस्त के माह में नागपंचमी, रक्षाबंधन, कजलियाँ, बैलों के कल्याण हेतु। वोला, जन्माष्टमी, पति और बच्चों की कल्याण कामना से तीज एवं हरचट के त्यौहार मनाये जाते है। ये त्यौहार अगस्त–सितम्बर महीनों मे मनाये जाते है। अक्टूबर के महीने में नवरात्रि, दशहरा में विभिन्न देवियों एवं काली देवी की आराधना की जाती है इसके बाद नवम्बर माह में दीपावली पर सम्पत्ति की देवी लक्ष्मी जी का पूजन होता है। देवउठनी एकादशी त्यौहार से विवाह नवम्बार माह से आरंभ हो जाते हैं। विवाह हिन्दूसंस्कृति रीति–रिवाजों के अनुसार ही होते है। जिनमें लगुन फलदान , ओली, द्वारचार , जयमाला, भांवर, देवी पूजन इत्यादि। दस्तूर होते है। जनवरी माह में संक्राति बसंतपंचमी, फरवरी माह में शिवरात्रि और मार्च में होली का त्यौहार मनाया जाता है। अप्रैल माह में पुनः नवरात्रि आती है। अंतिम दिन रामनवमी की श्रीरामचन्द्र जी का जन्मदिवस मनाया जाता है।[24] मुसलमानों में शिया समुदाय में मुहर्रम विशेष रूप से मातम की अवधि माना जाता है, जिसके दौरान उन सभी रीति रिवाजों का पालन किया जाता है जो परिवार में किसी की मृत्यु से संबंधित होते है अर्थात् कई जगह तो महिलायें अपनी चूड़ियाँ तक फोड़ डालती हैं और इस अवधि में आभूषण पहनना त्याग देती है। इसके अलावा मुसलमानों में अपनायें जाने वाले मुख्य धार्मिक रीतिरिवाज 'कालिमा' या धार्मिक श्रद्धा, 'सुला' या पाँच बार की दैनिक नमाज, 'रोजा या रमजान' का तीस दिन का उपवास, 'जकब'कानूनी भिक्षा और 'हज्ज' अर्थात् मक्का की तीर्थ यात्रा जो कि प्रत्येक मुसलमान द्वारा अपने जीवन काल में एक बार की जाती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट है, कि शेष भारत के समान ही सागर में भी सामाजिक संस्कृति एवं रीतिरिवाज की अपनी विशेषतायें जैसे सजातीय विवाह, संस्कार गत शुद्धता एवं अशुद्धता संबंधी विचारों के आधार सामाजिक अलगांव, समाज का स्तरित गठन, व्यवसायगत विशिष्टता आदि के अनुसार रीतिरिवाज एवं त्यौहार प्रचलित है।

❑ **कृषि :**

सागर का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण अधिकांश लोगों का जीवन यापन कृषि पर आधारित है। इसी कारण संपूर्ण क्षेत्र में पुरातन एवं नवीन ढ़ंग से कृषि की जाती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व बतलाते हुए जनरल वार्ड मेयो ने कहा था "भविष्य में अनेक पीढ़ियों तक धन एवं सभ्यता के विकास की दृष्टि से भारत की प्रगति प्रत्यक्ष रूप से उनकी कृषि की प्रगति पर निर्भर करेगी। संसार में संभवतः कोई भी ऐसा देश नहीं है; जिसका कृषि में इतना प्रत्यक्ष एवं घनिष्ठ स्वार्थ निहित है।[25]

सागर मुख्यतः दो फसली कृषि उत्पादक क्षेत्र है 1 रवी 2 खरीफ। रवी फसल अक्टूबर के अंतिम सप्ताह एवं नवम्बर के प्रथम सप्ताह से मार्च के अंतिम एवं अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक तथा खरीफ फसल जून के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक होती है। रवी फसलों के अन्तर्गत गेंहू, चना, मसूर , मूंग, उड़द आदि का उत्पादन होता है। सागर मुख्यतः रवी फसली क्षेत्र है। यहाँ रवी की मुख्य फसल गेहूँ तथा खरीफ की मुख्य फसल सोयाबीन है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के सागर क्षेत्र में सर्वाधिक सोयाबीन उत्पन्न होता है। व्यापारिक फसलों में कही–कही गन्ना पैदा किया जाता है।बागवानी फसलों के अन्तर्गत मटर, मूली, बैंगन, आल, प्याज, गोभी, मिर्च पालक की भाजी मैंथी की भाजी तथा टमाटर आदि सब्जियाँ सागर में उगाई जाती हैं। फलों में अमरूद पपीता, केला, आम, नीबू, सीताफल आदि पैदा किया जाता है।सागर में बसे बरइयों द्वारा अच्छे पान पैदा किये जाते हैं ये बरई लगभग 250 वर्ष पहले रीवा तथ महोवा से आकर यहां बस गये थे। सागर नगर तथा छावनी के आसपास शाक फल इत्यादि की अनेक बाडियां है। यहाँ भूमि बहुत ऊंचे दामों पर दी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाती है एवं भूमि मालिकों द्वारा उस पर गहन कृषि की जाती है। आलू और शाक–सब्जी के लिए यहाँ की जलवायु अनुकूल है।

सागर में उत्पादित महत्वपूर्ण फसलों की बुबाई तथा कटाई का समय नीचे सारणी मे बताया गया है –

फसलें	बुबाई का मौसम	कटाई का मौसम
गेहूँ	1 अक्टूबर से 1 नवम्बर	15 मार्च से 30 अप्रैल
चना	1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर	15 फरवरी से 1 मार्च
अलसी	15 अक्टूबर से 1 नवम्बर	15 मार्च से 1 अप्रैल
ज्वार	25 जून से 10 जुलाई	15 नवम्बर से 15 दिसम्बर
धान	25 जून से 10 जुलाई	1 अक्टूबर से 31 अक्टूबर
आलू	1 नवम्बर से दिसम्बर	15 अप्रैल से 15 मई
सोयाबीन	25 जून से 10 जुलाई	25 सितम्बर से 15 अक्टूबर
मसूर	1 अक्टूबर से 30 अक्टूबर	15 फरवरी से 15 मार्च

कृषि अनुसंधान के क्षेत्र में काफी अच्छे परिणाम प्राप्त हुए है। गेहूं की परंपरागत बोनी किस्मों जिनका उत्पादन स्थिर हो गया था। उसके स्थान परलोक 1 , डब्लु. एच. 147 , 153 , 3077, 977, 1077 , एच. डी. 2236 . सोनालिका. मंगला, सुजाता। चना में, जे. जी. 315 , उज्जैन 21 कटोला, के. 820 , राधे, गुलाबी, देशी। मसूर में जे. एल. एस. 1 , मल्लिका देशी, काला मसरा सोयाबीन में जे. एस. 315 , 9041 , टी 5 , पंजाब 1 पी. के. 472 जे. एस. 7546.1 चाँवल में पूसा 33, आई . आर. 36 . जलकेसर. गाजरकली, क्षत्रिय, बासमति आदि किस्मों को बुन्देलखंड विशेषकर सागर में लाभदायक पाया गया है। बीजोंपचार तथा संतुलित उर्वरकों का प्रयोग उपज बढ़ाने में अत्याधिक सहायक रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ भूमि उपयोग :

नगरीय जीवन का स्तर उसकी कार्यक्षमता गतिविधियाँ जो भूमि उपयोग द्वारा परिलक्षित करती हैं उसके स्थान पर स्थित होने पर निर्भर करती हैं। नगर के विभिन्न उपयोग के अन्तर्गत, भूमि उपयोग सघनता एवं अव्यवस्थित रूप से वर्तमान में किया जाता है, जो कि पुराने समय में भी होती थी। प्राचीनकाल में नगरों की भूमि उपयोग व्यवस्था हेतु राजा एवं उसके मंत्रीमंडल उत्तरदायी होते हैं। वे सभी निर्णय लेते थे, कि नगर की कौन सी भूमि का उपयोग किस कार्य के लिये किया जाये, वही व्यवस्था वर्तमान में भी नगरों पर लागू हो रही है। प्रशासन भूमि स्वामी के उपयोग को जानकर उसके नाम भूमि आवंटित कर देता है।

नगर क्रमबद्ध भौतिक विस्तार से निर्मित होता है। नगर के आकार के अनुरूप ही एवं भूमि की उपयोगिता विशेषता के अनुसार ही उसका उपयोग निर्धारित किया जाता है इसलिये ही उचित एवं सही भूमि उपयोग के लिये नगर की आंतरिक विशेषताओं का भौतिक एवं कार्यात्मक दोनों तरह का विश्लेषण किया जाता है, इसमें मकान, सड़क निर्माण संस्थाएं, भूमि के स्वामी एवं प्रशासनिक लोगों के समन्वय से ही इसका निर्धारण किया जाता है।

किसी भी नगर के भावी स्वरूप का अनुमान करने एवं नगर का विकास योजना बनाने के लिए उसके वर्तमान भूमि उपयोग का अध्ययन आवश्यक है। नगर में भिन्न–भिन्न कार्यों के अनुरूप भूमि उपयोग का निर्धारण होता है; जिसका नगर की गतिविधियों से सीधा संबंध रहता है। भूमि उपयोग का आपसी सहसंबंध एवं भूमि उपयोगिता का अध्ययन आवश्यक है। निवेश क्षेत्र में स्थित विभिन्न भूमि उपयोगों का विभाग द्वारा सर्वेक्षण कर विभिन्न भूमि उपयोगों में क्या क्रियात्मक संबंध है तथा नगर में कितने भूमि उपयोग आकर्यक्षम एवं असंगत है इसके बारे में पता कर विश्लेषण किया जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **उपलब्ध भूमि :**

सागर निवेश क्षेत्र के अंतर्गत छावनी क्षेत्र को छोड़कर कुल 21837.17 हेक्टेयर भूमि समाहित है, तथा वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार निवेश क्षेत्र की जनसंख्या 264088 है; जिसमें छावनी क्षेत्र की जनसंख्या सम्मिलित नहीं है वर्तमान नगरपालिका निगम सीमा में कुल 928 हेक्टेयर (27.50%) तथा बाह्य वृद्धि क्षेत्र में लगभग 427 हेक्टेयर (26.19%) क्षेत्र विकसित श्रेणी में आता है। इस प्रकार छावनी क्षेत्र छोड़कर सागर नगर में 1355 हेक्टेयर भूमि विकसित है, जो कुल क्षेत्र का 26.7% आता है।

- **वर्तमान भूमि उपयोग :**

सागर नगर के विभिन्न भूमि उपयोगों को प्रमुख 10 वर्गों में विभाजित/वर्गीकृत किया गया है जो निम्नानुसार हैं –

1. आवासीय
2. वाणिज्यिक
3. औद्योगिक
4. सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक
5. सार्वजनिक सेवाऐं एवं सुविधाएं
6. यातायात एवं परिवहन
7. आमोद–प्रमोद
8. कृषि
9. रिक्त
10. जलाशय/जनस्त्रोत

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार वर्तमान सागर नगर का भूमि उपयोग वर्गीकृत निम्न सारणी में दर्शाया गया है – **(मानचित्र क्र. 9, आलेख क्र. 1)**

तालिका क्र. 4.9

सागर : वर्तमान भूमि उपयोग 2001

क्रं.	भूमि उपयोग	नगर निगम क्षेत्र	बाह्य वृद्धि क्षेत्र छावनी छोड़कर	योग	नगर निगम बाह्य क्षेत्र का %	विकसित क्षेत्र हेक्टेयर में	विकसित क्षेत्र का %	भूमि उपयोग दर
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	आवासीय	587.0	258.0	845.0	16.8	845	62.3	3.02
2	वाणिज्यिक	55.0	11.0	66.0	1.3	66	4.9	0.23
3	औद्योगिक	27.0	13.0	40.0	0.8	40	3.0	0.14
4	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	58.0	45.0	103.0	2.0	103	7.6	0.37
5	सार्वजनिक सेवा सुविधाऐं	18.0	5.0	23.0	0.5	23	1.7	0.08
6	आमोद प्रमोद	20.0	18.0	38.0	0.8	38	2.8	0.14
7	यातायात एवं परिवहन	163.0	77.0	240.0	4.8	240	17.7	0.86
8	रिक्त भूमि	806.0	439.0	1245.0	24.8	–	–	–
9	कृषि/अन्य	1433.0	759.0	2192.0	44.0	–	–	–
10.	जलाशय	208.8	5.0	213.0	4.2	7	–	–
	योग	**3375.0**	**1630.0**	**5005**	**100.0**	**1355**	**100.0**	**4.84**

टीप : 1. भूमि उपयोग दर, हेक्टेयर प्रति हजार जनसंख्या में आंकी गई है।
2. वर्ष 2001 की अनुमानित जनसंख्या 2.80 लाख मानी गई है।

स्त्रोत – नगर तथा ग्राम निवेश द्वारा सर्वेक्षण पर आधारित ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर : वर्तमान भूमि उपयोग 2001

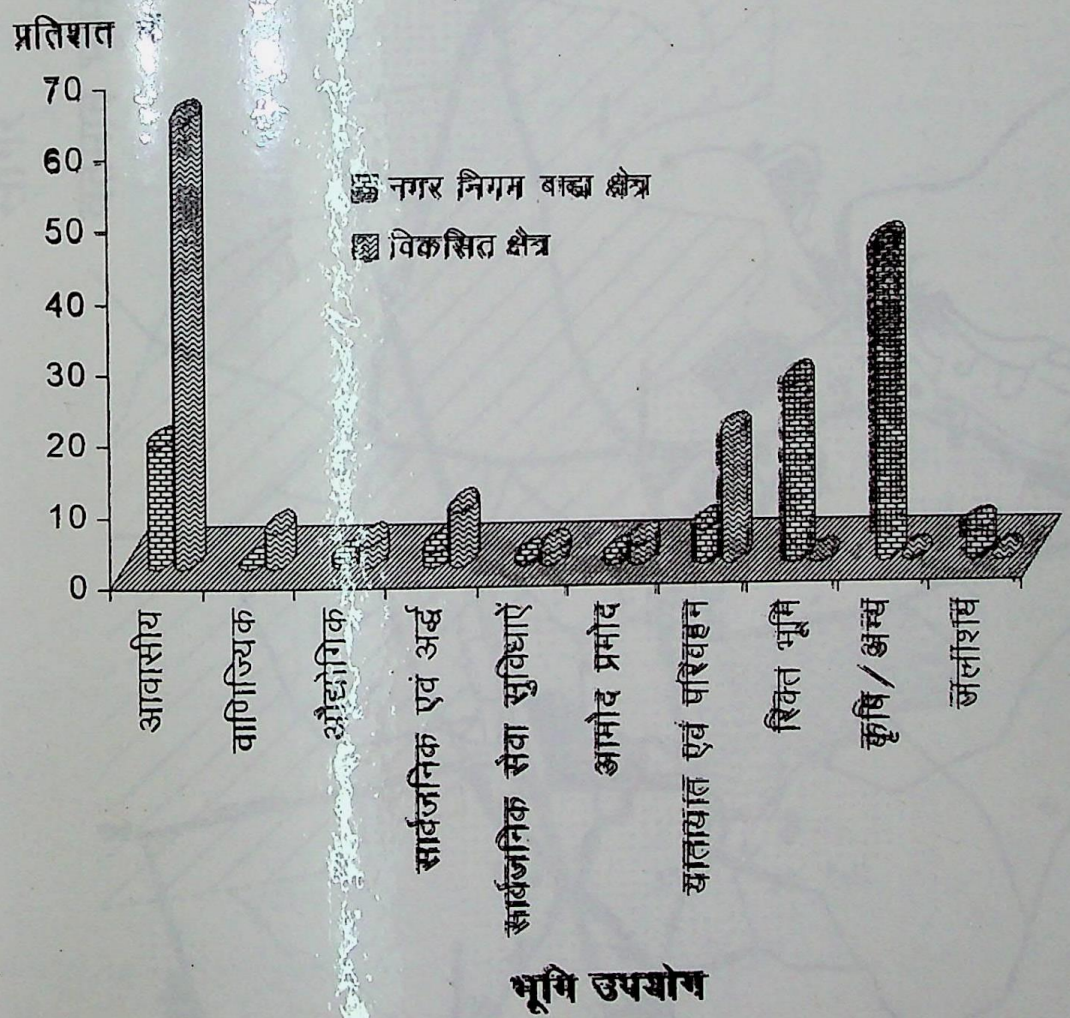

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर : वर्तमान भूमि उपयोग 2001

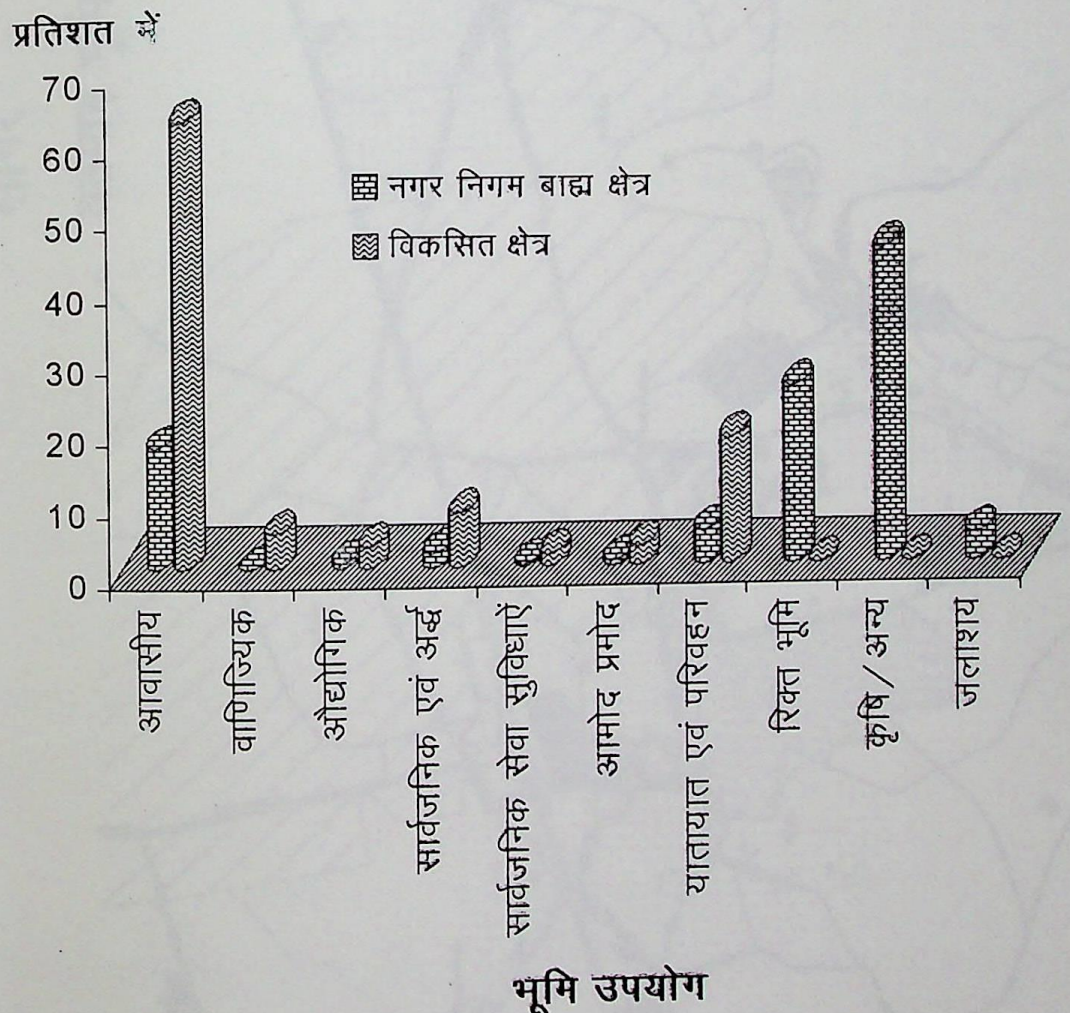

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

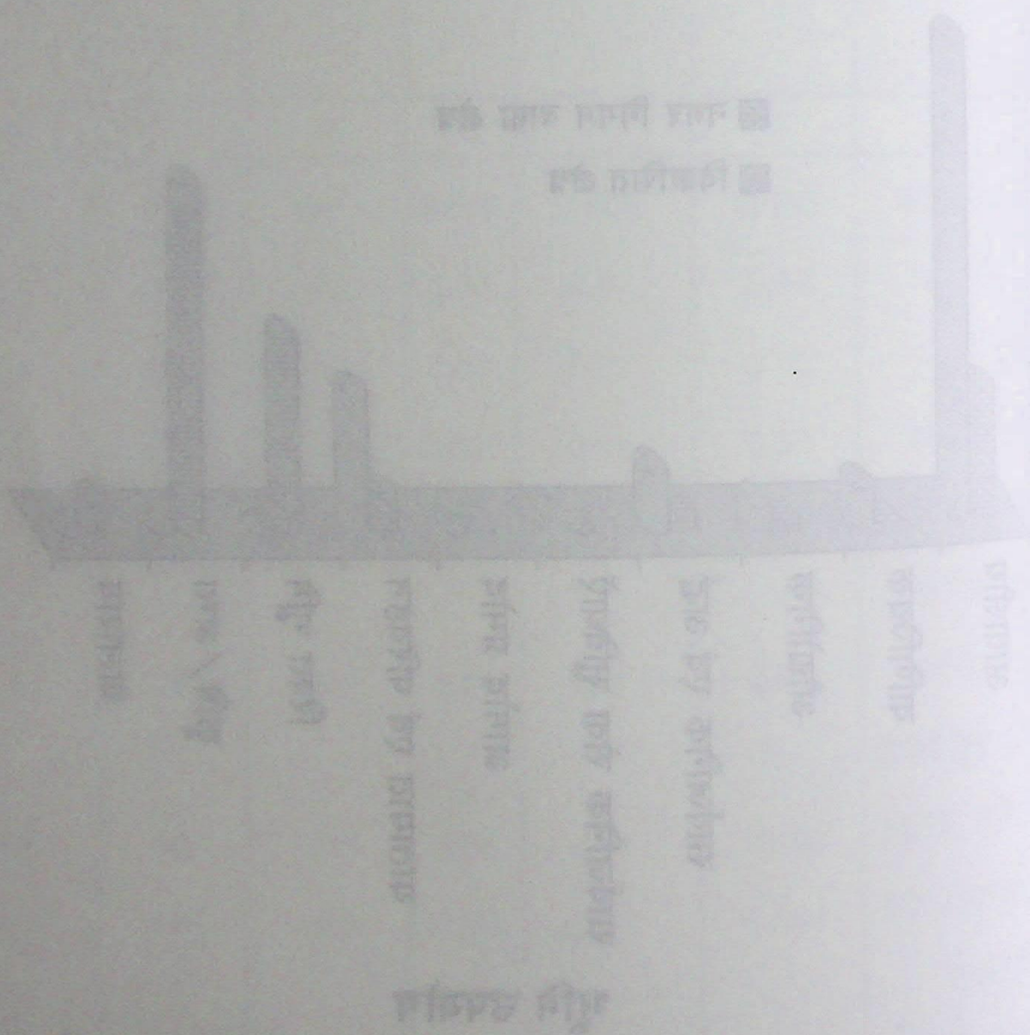

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

वर्तमान भूमि उपयोग

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

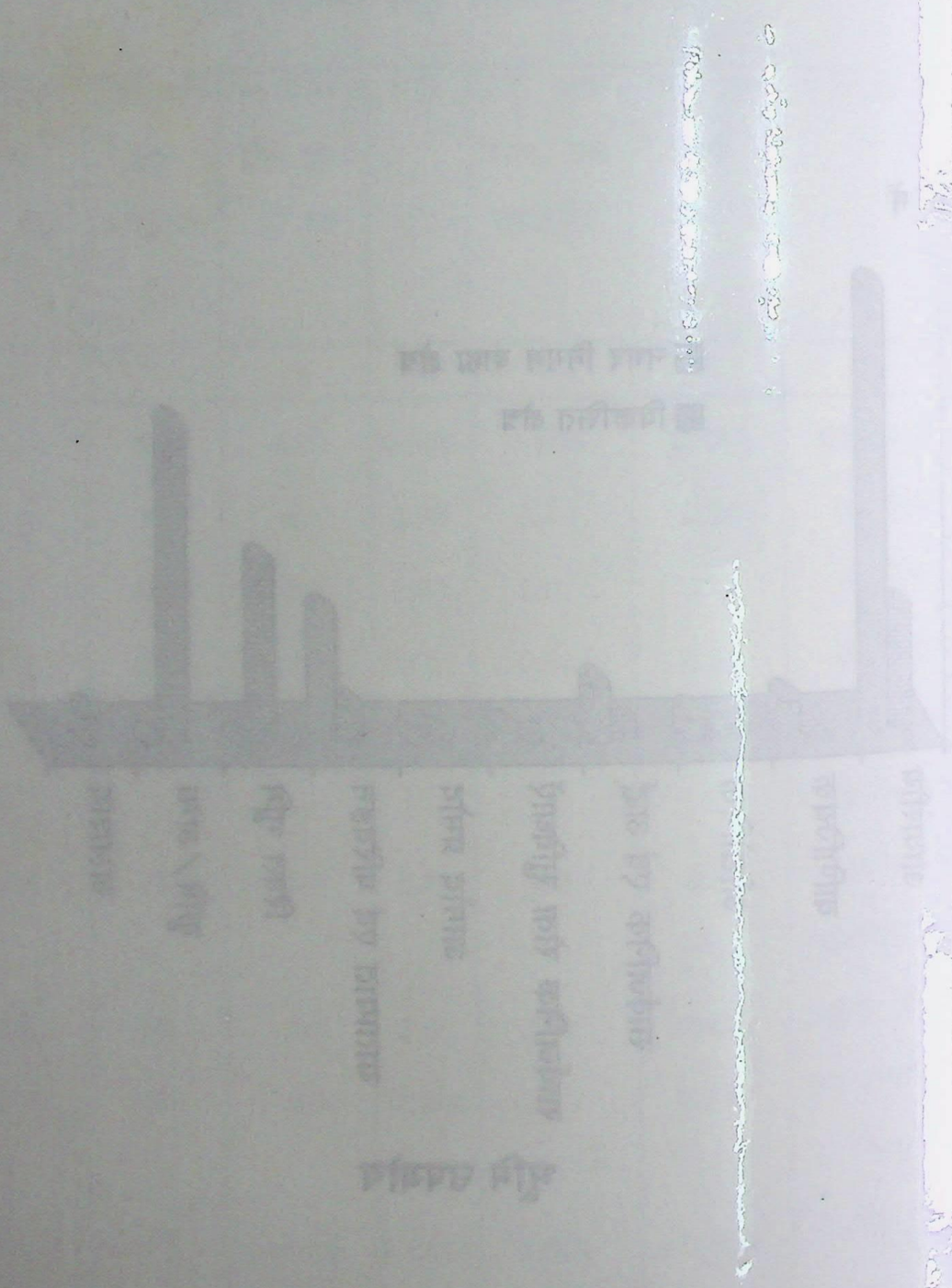

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि सागर नगर में आवासी क्षेत्र सर्वाधिक (62.31) है। इसके बाद (17.7%) यातायात एवं परिवहन का द्वितीय स्थान है। सार्वजनिक अर्द्धसार्वजनिक एवं सेवाओं के अन्तर्गत कुल 9.3% भूमि आती है। जो नगर की आवश्यकता की पूर्ति की दृष्टि से कम है। आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत 2.8% भूमि अत्यंत अल्प है। औद्योगिक क्षेत्र के अन्तर्गत 3% भूमि है, जो कि सिद्धगवां औद्योगिक केन्द्र स्थापित होने के कारण है अन्यथा यहाँ बड़े औद्योगिक क्षेत्रो का विकास नहीं हुआ था। कुल 1355 हेक्टेयर विकसित क्षेत्र के आधार भूमि उपयोग दर 4.84 हेक्टेयर प्रति हजार जनसंख्या आती है। जो सघन विकास का द्योतक होकर अन्य सामान्य नगरों की तुलना में कम प्रतीत होता है। अतः विकास योजना प्रस्तावों में वर्तमान सघन विकास को कम करते हुए भावी नगरीय विकास हेतु भूमि प्रस्तावित करना चाहिए।

❑ **उद्योग :**

नगर और उद्योग एक सिक्के के दो पहलू है; क्योंकि जब किसी स्थान पर उद्योग की स्थापना होती है तो उसके आस–पास नगर निर्मित हो जाता है। आशीष बोस के अनुसार "नगर और उद्योग का आपस में समानुपातिक संबंध हैं।"[26] इसी प्रकार एक बड़ा उद्योग यह क्षमता रखता है कि कुछ ही वर्षो में उसके चारों ओर एक नगर स्थापित हो जाता है।[27]

सागर नगर रेल तथा सड़क से देश के प्रमुख नगरों से जुड़े रहने के बावजूद औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है तथा औद्योगिक विकास की गति लगभग नाममात्र है। वर्तमान में नगर में मुख्यतः गृह उद्योग तथा कुछ छोटै उद्योग विद्यमान है।[28] नगर के दो परंपरागत उद्योग बीड़ी तथा अगरबत्ती ही प्रमुख रोजगार मूलक उद्योग है। सागर नगर प्रकृति की ओर से कृपा पात्र होकर वन, खनिज–संपदा एवं अन्य अनुकूल साधनों से सम्पन्न है। इन समस्त नैसर्गिक साधनों एवं सुविधाओं के कारण एवं जिले में 1978 से जिला उद्योग केन्द्र की स्थापना के पश्चात् औद्योगिक प्रगति को गति प्राप्त हुई है। वर्तमान मे सागर नगर में एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

औद्योगिक संस्थान सुभाषनगर में स्थित है।[29] सागर जिले में कोई बड़ा उद्योग नहीं है। इसका कारण यह है, कि एक तो यह कृषि प्रधान क्षेत्र है, और दूसरा इस क्षेत्र मे उद्योगों के लिए आवश्यक कच्ची सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नहीं है और यहाँ की जलवायु ऐसी नहीं है कि यहाँ बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक फसलें जैसे कपास या गन्ना पैदा की जा सकें; तथापि नगर में लघु और कुटीर उद्योगों की संख्या अपेक्षाकृत ठीक है, जिनमें अधिकतर व्यक्ति कार्यरत है।

सागर नगर के कुटीर उद्योगों को निम्नलिखित चार वर्गो में विभाजित किया जाता है –

क. कृषि पर आधारित कुटीर उद्योग

ख. वन सम्पदा पर आधारित कुटीर उद्योग

ग. पशु सम्पदा पर आधारित कुटीर उद्योग

घ. खनिज सम्पदा पर आधारित कुटीर उद्योग

ड. मांग पर आधारित कुटीर उद्योग

क. कृषि पर आधारित उद्योग :

यदि उद्योगों का विकास करना है, तो कृषि व्यवसाय को भी सुदृढ़ बनाना होगा। कृषि और उद्योग से समन्वय पर जोर डालते हुए पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि "बिना कृषि विकास के औद्योगिक प्रगति नहीं की जा सकती, क्योंकि दोनों क्षेत्रों को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है। एक के अभाव में दूसरा उन्नति नहीं कर सकता इसलिए आर्थिक नियोजन की व्यवस्थ में दोनों क्षेत्रों को समुचित स्थान दिया गया है।"[30]

अतः सारांश में हम कह सकते है कि औद्योगिक दृष्टि से कोई देश चाहे कितना भी विकसित क्यों न हो वह कृषि और उद्योगों में उचित और परिवर्तनशील समन्वय स्थापित किये बिना अपना आर्थिक विकास नहीं कर सकता। उन्नत कृषि व्यवस्था ही उद्योगों

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के विकास एवं स्थापना का आधार है। कृषि आधारित उद्योगों में दाल मिल, आटा व मैंदा मिल, बिस्कुट, बाल आहार के कारखाने आदि प्रमुख हैं। सागर नगर के चारों तरफ गेहूँ चना, तिवरा, दालें, मिर्च, मसाले, फल सब्जियों, मूंगफली तिल अलसी, सरसों, सोयाबीन इत्यादि फसलें बहुतायत से उत्पन्न की जाती है। अतः इन पर आधारित उद्योगों की स्थापना स्वभाविक ही है।

इसके अतिरिक्त कृषि पर आधारित अन्य कुटीर उद्योग तेलघानी, मसाला ग्राइडिंग, पापड़ निर्माण, रस्सी निर्माण, गन्ना एवं गुड निर्माण, कपड़े धोने का साबुन एवं डिटर्जेन्ट (बेसन, सोड़ा, तेल) पान उत्पादन, चावल (पोहा), मुरमुरा, अचार चटनी, मुरब्बे पिपरमेंट आदि है।

ख. वन सम्पदा पर आधारित उद्योग :

श्री चटरवक के अनुसार –"वन राष्ट्रीय सम्पत्ति है और सभ्यता को इनकी नितान्त आवश्यकता है। वे केवल ईधन की लकड़ी ही प्रदान नहीं करते, वरन् एक बड़ी संख्या में कच्चा माल भी उत्पन्न करते है।"[31]

वनों से ईधन इमारती लकड़ी , बहुमूल्य औषधियाँ सुगन्धित तेल अन्य गौण पदार्थ (जैसे कत्था, गोंद, मोंम, शहद, चमड़ा रंगने की छाल रेशा आदि)। सागर नगर के चारों ओर सागौन साल, तेंदू बीजा, देवदार इमारती एवं बहुमूल्य जैसे वृक्षों के वनों की अधिकता है परिणाम स्वरूप यहाँ बीड़ी उद्योग, अगरबत्ती उद्योग, आरामशीन, जैसे उद्योगों का विकसित होना स्वभाविक है इसके अतिरिक्त वनों पर आधारित अन्य कुटीर उद्योगों में आरा मशीन, बैलगाड़ी के पहिए, लकड़ी के खिड़की, चौखट दरवाजे पलंग खूंटी, लकड़ी का बिजली फिटिंग का सामान, बांस की टोकरी एवं चिटाई, झांडू बनाना, लकड़ी के खिलौने, रस्सी और बान, कंघी (लकड़ी की) मधुमक्खी पालन आदि है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग. पशु सम्पदा (धन) पर आधारित उद्योग :

नगर में पशु सम्पदा की विपुलता है यहाँ कई तरह के पशु पाये जाते हे। जैसे – गाय, बैल, बछड़े , भैंस, भेड़, बकरी, घोड़े, टट्टू आदि। नगर में पशु सम्पदा पर आधारित कई उद्योग चल रहे है; जिनमें चमड़े की वस्तुऐं, चमड़ा पकाना, जूता बनाना, चप्पल व बेल्ट बनाना, सरेस व हड्डी की खाद बनाना, सींग के पंखे बनाना आदि है।,

घ. खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योग :

खनिज पर आधारित उद्योगों के अन्तर्गत लुहारी, उद्योग, कुम्हारी उद्योग, पीतल के बर्तन बनाना, ईट निर्माण, दंत मंजन (चूना मिट्टी एवं अन्य तरह के केमीकल की सहायता से) गिट्टी निर्माण, मिट्टी के बर्तन एवं खिलौने, पत्थर का सामान, स्टेट पेंसिल, सीमेंट का सामान आदि हैं।

ड. मांग पर आधारित उद्योग :

इसके अन्तर्गत लोहे के विभिन्न ग्रामीण उपकरण, कृषि उपकरण, तवा, कढ़ाई, तसला, रेहट, गाड़ी, टीन की पेटी, डिब्बे , मोटर एवं पंप, मरम्मत का सामान, साइकिल, स्टोप्स, पेट्रोमेक्स टार्च मरम्मत, रेडियों एवं ट्रान्जिस्टर, घड़ी मरम्मत का सामान, लालटेन चिमनी तैयार पोशाखें, पिपरमेंट लोहे की ढलाई मूस भट्टी आदि।

च. अन्य उद्योग :

इसके अन्तर्गत तार के ब्रुश, मिट्टी उद्योग, प्रिंटिंग प्रेस, छोटा बर्फ कारखाना, टायर रिट्रेडिंग, जनरल वर्क शॉप, ट्रेक्टर आटो रिपेयर, मोमबत्ती, धातुओं पर नक्काशी व खुदाई, स्टेशनरी, चूना भट्टी एवं कीलें कागज के लिफाफे, हाथकरधा, रंगाई एवं छपाई, फिनाइल की गोलियाँ आदि हैं।

औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण नगर में बड़े उद्योगों का अभाव है। यहाँ के प्रमुख प्राचीन उद्योगों में सोने–चांदी के जेवर पीतल और तांबे के बर्तन, लोहे के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपकरण बर्तन आदि सूत कताई, वस्त्र रंगाई, बढ़ईगिरी, कास्ट शिल्प , कुम्हारगिरी एवं चमड़े के सामान बनाने वाले उद्योग है। यहाँ लघु उद्योग वृहद् स्तर पर फैले हुए है, जिनमें से कुछ इस प्रकार है –

1. बीड़ी उद्योग :

सागर नगर, राज्य में बीड़ी उद्योग में अग्रणी है।[32] इसका कारण नगर के चारों तरफ वनों में तेंदू पत्ते के रूप में कच्चे की प्राप्ति थी सस्ते एवं कुशल श्रमिकों की उपलब्धता है। यह नगर का महत्वपूर्ण उद्योग है। इसमें अन्य उद्योगों की अपेक्षा अधिक श्रमिकों को काम पर लगाया जाता है। सागर नगर में प्रतिदिन 20 मिलियन से अधिक बीड़ी बनती है।

सागर में इस उद्योग को सर्वप्रथम सन् 1915 में श्री अब्दुल गफूर मोहम्मद ने फूल छाप बीड़ी का निर्माण कर प्रारंभ किया था। इस प्रकार 88 वर्ष पुराने इस उद्योग में लगभग 146 औद्योगिक इकाईयाँ सम्मिलित है, जिनमें श्रमिकों की संख्या 9892 के लगभग है किंतु मजदूरी कम होने के कारण श्रमिकों की आर्थिक दशा बहुत कमजोर है। ये श्रमिक स्वयं के मकान में बीड़ी बनाकर उद्योगपतियों तक पहुँचाते है।

2. अगरबत्ती उद्योग :

बीड़ी की तरह अगरबत्ती उद्योग भी सागर नगर का अग्रणी उद्योग हे। बीड़ी की भाँति अगरबत्ती का निर्माण भी घरों–घरों में होता है। इस उद्योग ने बड़ी तेजी से से विकास किया, और अब तो अगरबत्तरी यहां से विदेशों में भी निर्यात की जाने लगी है। सागर नगर में इस उद्योग की स्थापना सन् 1925 में मनमोहनी अगरबत्तरी फैक्टरी के नाम से एक लाख रूपये की लागत से की गई थी। वर्तमान में नगर मे प्रमुख 26 अगरबत्तरी के कारखाने हैं, जिनमें करीब 210 श्रमिक कार्यरत है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. लकड़ी चीरने के कारखाने :

वन संपदा पर आधारित इस उद्योग में लगभग 180 लकड़ी चीरने के कारखाने (आरा मशीन) है। जिनमें लगभग 950 श्रमिक कार्यरत है। इन कारखानों की अतिशय मात्रा होने का कारण सागर के जंगलों में अधिक मात्रा में अच्छे किस्म के सागौन के मूल्यवान वृक्षों का पाया जाना हैं सागौन का प्रयोग फर्नीचर निर्माण, भवन निर्माण आदि कार्यो में बहुतायत के साथ किया जाता है। मध्यप्रदेश मे जबलपुर के पश्चात् सागर का इस उद्योग में द्वितीय स्थान पर है।

4. तेलमिल एवं दाल मिल :

मूगफली, रमतिल, अलसी आदि तिलहन एवं चना, मसूर अरहर आदि दलहन फसलों के उत्पादन में सागर का महत्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है, कि नगर में दालमिलों तथा तेलमिलों की बहुतायत है। इन मिलों में तेल के साथ–साथ खली का भी निर्माण होता है। नगर में वर्तमान मे दालिमिलों एवं तेल मिलों की संख्या 16 है, जिनमें श्रमिकों की संख्या 35 के लगभग है।

5. चमड़ा उद्योग :

पशुओं की संख्या अधिक होने के कारण चमड़ा उद्योग भी विकास कर रहा है। चमड़ा पकाने, जूता व चप्पल बनाने आदि के कार्य यहाँ अधिक मात्रा किया जाता है, इस उद्योगों के वृहद् स्तर पर विकास की अनेक सम्भावनाऐं हैं।

6. अन्य उद्योग :

इसके साथ–साथ नगर में 5 सीमेंट से बनी वस्तुओं के कारखाने, 34 मुद्रणालय, 465 आटा चक्की, 2 प्लास्टिक का सामान बनाने के कारखाने, 60 इंजीनियंरिंग सामान बनाने के कारखाने, 3 बर्फ कारखाने, 3 साबुन बनाने वाले कारखाने एवं लगभग 350 विविध इकाईयां कार्यरत है। विविध उद्योगों के अन्तर्गत फाउन्टेनपेन, हतकरघा उद्योग, सोने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चाँदी के जेवर तैयार करना, बर्तन बनाना, कपड़े की बुनाई एवं रंगाई, रबर के पाईप, प्लास्टिक की थैलियाँ मोमबत्ती, प्रिटिंग प्रेस इत्यादि उद्योग शामिल। सागर की औद्योगिक प्रगति में सिद्धगवॉ औद्योगिक केन्द्र कुछ हद तक सहायक सिद्ध हुआ है। किंतु औद्योगिक इकाईयों की स्थापना में लक्ष्य के अनुरूप सफलता प्राप्त नहीं हुई है। नगर में विद्यमान विभिन्न उद्योगों की जानकारी निम्न सारणी में दर्शायी गई है –

तालिका क्र. 4.10

सागर : औद्योगिक इकाईयाँ

क्रंमाक	औद्योगिक इकाई का नाम	औद्योगिक इकाईयों की संख्या	श्रमिकों की संख्या
1	2	3	4
1	आरा मशीन	180	950
2	बीड़ी उद्योग	146	9892
3	सीमेंट से बनी वस्तुऐं	05	200
4	दाल एवं तेल मिल	16	35
5	बर्फ कारखाना	03	06
6	अगरबत्ती कारखाना	26	210
7	साबुन कारखाना	03	85
8	मुद्राणालय	34	219
9	आटा चक्की	465	—
10	प्लास्टिक सामान	02	18
11	इंजीनियरिंग सामान	60	250
12	विविध	350	1750

स्त्रोत : सहायक श्रमायुक्त कार्यालय, सागर।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ राजनीतिक पृष्ठभूमि :

सागर नगर देश में चल रहे राजनीतिक आन्दोलन के प्रति संवेदनशील रहा है। 17 अक्टूबर 1942 को जब आचार्य विनोबा भावे ने पवनार में अपना सत्याग्रह आरंभ किया, उसके बाद के घटना क्रम ने द्रुतगति से बढ़ते हुए संकट का रूप धारण कर लिया। इसकी अंतिम परिगति 8 अगस्त 1942 को बंबई के कांग्रेस अधिवेशन में भारत छोड़ो के प्रस्ताव पारित होने के साथ हुई। सागर जिले में 9 अगस्त के बाद से ही राजनीतिक उथल–पुथल के फलस्वरूप हड़ताल सभाएं और जुलूस रोज का काम हो गया था। छात्रों और महिलाओं ने आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, जो सहज ही आकर्षित करने वाली बात थी। लाठी–चार्ज, गोल –चालन , जंगल–सत्याग्रह , घटना होने पर डाकघरों , पुलिस चौकियों, लकड़ी के भण्डारों में आग लगाने जैसी भीषण दुर्घटनायें घटी। जिले में इन आन्दोलनों को निर्दयतापूर्वक दबाया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त सन् 1947 में पंडित रविशंकर शुक्ल की अध्यक्षता में प्रान्तीय सरकार का निर्माण हुआ एवं सन् 1956 में दमोह उप संभाग को जो कि सन् 1932से ही सागर जिलें का एक भाग रहा है, सागर से अलग कर एक नया दमोह जिला बना दिया गया शेष क्षेत्र अपनी वर्तमान सीमाओं सहित नवनिर्मित मध्य प्रदेशराज्य के एवं संभाग के रूप में आज भी विद्यमान है।[33]

• राजनैतिक दल :

नगर मे अनेक राजनैतिक दल कार्यरत है तथा इनके जिला स्तरीय कार्यालय भी यहाँ हे। राजनैतिक दलों में कांग्रेस (इ), भारतीय जनता पार्टी लोकदल, जनतापार्टी, कम्युनिष्ट दल है। अनेक युवा संगठन जो राजनैतिक पार्टियों से संबंद्ध हे। वह है राष्ट्रीय छात्र संगठन (कांग्रेस इ) स्टुडेन्ट फेडरेशन (कम्युनिस्ट), युवजन सभा (लोकदल)छात्र परिषद् (भारतीय जनता पार्टी)।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर के पालिका निगम सागर में महापौर एवं वार्ड पार्षदों के नाम वार्डानुसार निम्न प्रकार हैं –

क्र.	नाम	वार्ड
1.	सुश्री मनोरमा गौर – महापौर	
2.	श्री अशोक श्रीवास्तव	डॉ. हरिसिंह गौर
3.	श्री अजय भारद्वाज	इंदिरा नगर
4.	श्रीमति ज्योत्सना दुबे	सिविल लाईन
5.	श्री अजय परमार	मधुकरशाह
6.	श्री त्रिलोकी नाथ कटारे	शिवाजीनगर
7.	श्री डॉ. राजू सेन	गोपालगंज
8.	श्रीमति डॉ. लक्ष्मी ठाकुर	वृन्दावन
9.	श्री सुल्तान कुरैशी	कृष्णगंज
10.	श्री अब्दुल नईम	शनीचरी
11.	श्री हरिनारायण यादव	परकोटा
12.	श्रीमती फरीदा बेगम	लाजपतपुरा
13.	श्री बबलू शेख रशीद	शुक्रवारी
14.	श्री पुरषोत्तम चौबे	महर्षि दयानंद
15.	श्री रामअवतार पाण्डे	तिलकगंज
16.	श्रीमती गीता चौधरी	भगवानगंज
17.	श्रीमती लल्लनबाई जाटव	बिट्ठलनगर
18.	श्रीमती लता गौतम मॉडले	गुरूगोविंद सिंह
19.	श्री गंगाराम अहिरवार	सुभाषनगर
20.	श्री केशवभाई पटैल	तुलसीनगर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	नाम	वार्ड
21.	श्री राजेश पटैल	लालबहादुर शास्त्री
22.	श्री लालचंद नागवामी	संतकवरराम
23.	श्री मुरलीधर चौधरी	संत रविदास नगर
24.	श्री विनोद तिवारी	भगतसिंह
25.	श्री भावसिंह लड़िया	बल्लभनगर
26.	श्रीमती शीलाबाई पटैल	मोतीनगर
27.	श्रीमती मनोरमा दुबे	चन्द्रशेखर
28.	श्रीमती शकुन्तला जैन	कटरा
29.	श्रीमती सुहागरानी साहू	जवाहरगंज
30.	श्रीमती किरन मिश्रा	रामपुरा
31.	श्री बलराम घोषी	इतवारी
32.	श्रीमती ममता सोनी	गांधी चौक
33.	श्री उदय यादव	रविशंकर नगर
34.	श्री संतोष सोनी	नरयावलीनाका
35.	श्री श्याम गुप्ता	मोहननगर
36.	श्रीमती तुलसाबाई पटैल	राजीवनगर
37.	श्री डॉ. वीरेन्द्र कुमार पाठक	विवेकानंद
38.	श्री धनीराम पटैल	संतकबीर
39.	श्रीमती चंचला जैन	केशवगंज
40.	श्री विष्णु प्रसाद खटीक	सूबेदार
41.	श्री पुरूषोत्तम विश्वकर्मा	चकराघाट
42.	श्री दिनेश सोनी	बरियाघाट
43.	श्री महादेव प्रसाद घोषी	लक्ष्मीपुरा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	नाम	वार्ड
44.	श्रीमती इन्द्रा चौरसिया	पुरब्याऊ
45.	श्री बलराम कोरी	काकागंज
46.	श्री डालचंद पटैल	पंतनगर
47.	श्रीमती रूपरानी पटैल	तिली
48.	श्री दानवीर पटैल	वाघराज़
49.	श्री प्रकाश	अम्बेडकर

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. जिला गजेटियर सागर 1970 पृष्ट क्रंमाक 1
2. म. प्र. संदेश (सागर संभाग पर विशेष जनसंपर्क संचालनालय, म. प्र. भोपाल अंक 10 अप्रैल 1989
3. डॉ. हरीसिंह गौर, 'सागर दर्दो,' का सागर' सात जीवन (आत्मकथा)
4. दुबे , डॉ. लक्ष्मीनारायण 'आज से ये आकाशवाणी सागर है।' नवभारत भोपाल
5. सागर विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 1
6. दुबे गिरीश शहरी क्षेत्र मे पारीवारिक बचत व्यवहार : सागर शहर के विशेष संदर्भ में पृष्ठ 9 जिला गजेटियर सागर 1970 प्रारूप पृष्ठ 4
7. सागर विकास योजना
8. सागर विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 5
9. चित्र पुराना विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 12
10. जिला गजेटियर सागर, मध्यप्रदेश भोपाल पृष्ठ 44
11. सिंघई, दीपकःबाल श्रमिकम शोषण एक सामाजिक समस्या सागर नगर के अगरबत्ती श्रमिकों के संदर्भ में 1992 पृष्ठ 49
12. जिला गजेटियर सागर पृष्ठ 8
13 सागर विकास योजना प्रारूप , संचालनायल नगर तथा ग्राम निवेश मध्यप्रदेश , भोपाल , पृष्ठ 4
14. जिला गजेटियर सागर 1970 पृष्ठ 13
15. मध्यप्रदेश संदेश, अक्टूबर 1983 पृष्ठ 25
16. सागर विकास योजना (प्रारूप) पृष्ठ 5
17. सागर विकास योजना (प्रारूप) पृष्ठ 5
18. चेम्पियन एच. जी. : फारेस्ट टाइम्स ऑफ इण्डिया
19. सागर विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 27
20. ट्रांस्पोर्ट एसोसिएशन सागर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

21. सागर विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 27 – 31

22 जी. ए. गियर्सन, लिंगुइस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया , जिल्द नौ, भाग एक, पृष्ठ 90

23. जिला गजेटियर सागर, पृष्ठ 89 – 92

24. जिला गजेटियर सागर 1970 पृष्ठ 110

25. कृष्ण कुमार उमारिया : कृषि विकास की समस्यायें , सागर शहर के विशेष संदर्भ में पृष्ठ 248

26. आशीष बोस : कोटेड फ्रॉम इंडिया सिंस इंडिपेंडेंस 1677

27. एन्साइकोपीडिया ऑफ अमेरिकाना वाल्यूम 6

28. सागर विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 16

29. पी. राघवन ,सागर विरासत एवं विकास पृष्ठ 113

30. सक्सेना एवं गुप्ता : औद्योगिक अर्थशास्त्र 1983 खण्ड 1 पृष्ठ 14

31. सक्सेना एवं गुप्ता : औद्योगिक अर्थशास्त्र 1983 खण्ड 5 पृष्ठ 3

32. सागर विकास योजना प्रारूप पृष्ठ 16

33. जिला गजेटियर सागर 1970 पृष्ठ 77

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

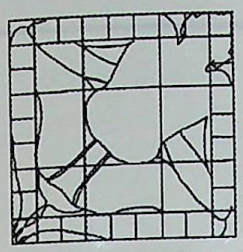

वास्तु पुरुष

क्षीयवन्त आप्नुवन्ति, सर्वर्तुसुखदं गृहम्।
भाग्यं फलति पुण्येन पुण्यं च शुभकर्मभिः॥८१॥
- वास्तुविज्ञानम् १/८

अध्याय पंचम

सागर नगर की आकारिकीय अध्ययन

- सागर नगर की स्थिति
- आवास व्यवस्था
- चिकित्सा व्यवस्था
- जलव्यवस्था
- शिक्षा क्षेत्र
- धार्मिक स्थल
- प्रशासनिक केन्द्र
- सागर छावनी क्षेत्र
- औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति
- जलमल निकासी व्यवस्था
- मनोरंजन के साधन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

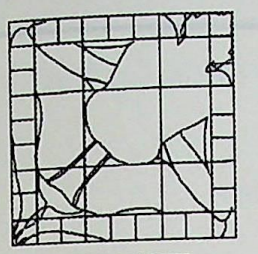

वास्तु पुरुष

भाग्यवन्तं आप्नुवन्ति, सर्वर्तुसुखदं गृहम्।
भाग्यं फलति पुण्येन पुण्यं च शुभकर्मभिः॥८१॥
- वास्तुविज्ञानम् १/८

अध्याय पंचम

सागर नगर की आकारिकीय अध्ययन

- सागर नगर की स्थिति
- आवास व्यवस्था
- चिकित्सा व्यवस्था
- जलव्यवस्था
- शिक्षा क्षेत्र
- धार्मिक स्थल
- प्रशासनिक केन्द्र
- सागर छावनी क्षेत्र
- औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति
- जलमल निकासी व्यवस्था
- मनोरंजन के साधन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर की आकारिकी अध्ययन

नगर मानव निर्मित उत्कृष्टतम रचना के प्रतीक हैं, जो मानव के पराक्रम, कौशल और बौद्धिकता को उजागर करते हैं । स्वभावतः नगर निर्माण के लिये स्थल का चुनाव बहुत सोच समझकर किया जाता है । स्थल के चुनाव में अनेक भौतिक, आर्थिक, सामरिक और राजनीतिक पक्षों पर ध्यान दिया जाता है, क्योंकि नगर एक बड़ी जनसंख्या के लिये आवास, विविध कार्यों के लिये उपयुक्त भूमि, आवागमन के लिये मार्ग निर्माण, समुचित जलापूर्ति, सुरक्षा कवच की व्यवस्था और जन स्वास्थ्य के लिये उचित भौतिक परिवेश प्रदान करते हैं । इन सुविधाओं के आधार पर ही नगर का विकास संभव होता है । नगरीय आकारिकी नगर से संबंधित एक अति महत्वपूर्ण पक्ष है ; क्योंकि इसमें नगर की उत्पत्ति एवं विकास से प्रेरित नगर का जीवन, इतिहास, नगर के विकास क्रम में इसके संरचनात्मक एवं कार्यात्मक प्रारूप, विन्यास तथा प्रकारात्मक एवं अवस्थागत स्वरूप की अभिव्यक्ति होती है ।

'आकारकी' को अंग्रेजी भाषा में Morphology कहा जाता है जो ग्रीक भाषा के दो शब्दों 'morph e' अर्थात् आकार और 'logos' अर्थात् विवरण से मिलकर बना है। नगरीय आकारिकी में नगर के भीतर की विशेषताओं का भौतिक और कार्यात्मक दृष्टि से विश्लेषण किया जाता है। नगरीय आकारिकी को परिभाषित करते हुये ए.ई. स्लेम्स ने लिखा है, कि "नगरीय आकारिकी नगर के भौतिक स्वरूप, स्थलीय व्यवस्था और इमारतों द्वारा जो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगरीय भूदृश्य की रचना करती है के अध्ययन से संबंधित है। आकारिकी में नगरों के स्वरूप और कार्यों के अध्ययन के आधार पर ही नगरीय क्षेत्रों की पहचान की जाती है।[1]

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट है, कि नगरीय आकारिकी के अध्ययन के अन्तर्गत नगर की सीमा के अंदर पायी जाने वाली समस्त प्रकार की संरचना संबंधी विशेषताओं और प्रतिरूपों का अध्ययन होता है। नगर की इन आंतरिक विशेषताओं का अध्ययन व विश्लेषण न केवल वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किया जाता है, वरन् उनको ऐतिहासिक संदर्भ में भी परखा जाता है क्योंकि इनकी रचना समय पर आधारित होती है।

❑ **भौतिक स्थिति :**

किसी भी नगर का आकार, उसके भौतिक स्वरूप एवं भौतिक विकास की प्रक्रिया पर निर्भर करता है। सागर नगर की वर्तमान आकृति एवं आकार निर्धारित करने में नगर में स्थित तालाब एवं पहाड़ी तथा छावनी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। ऊंचाई से देखने पर सागर नगर कटोरे की आकृति लिये हुये है, जिसका मध्यभाग नीचा तथा चारों और ऊंचा है। नगर का विस्तार प्रमुख रूप से तालाब के उत्तर की ओर हुआ है। जहाँ एक ओर छावनी क्षेत्र प्रमुखता ऊँची पहाड़ी पर उत्तर–पूर्व. दिशा में स्थित होकर होने से इस दिशा में नगर का विकास अवरूद्ध हुआ है। वहीं दूसरी ओर दक्षिण–पूर्व में पथरिया पहाड़ी के कारण भी नगर के विस्तार में बाधा पहुँची है।

❑ **आवास व्यवस्था :**

नगर का प्रमुख कार्य नगरीय व्यक्तियों को आवासीय सुविधा प्रदान करना होता है । नगर के क्रिया–कलाप को संचालित करने वाली जनसंख्या के लिये स्वस्थ, सुरूचिपूर्ण और उपयुक्त स्थिति का आवास उपलब्ध करना नगरीय व्यवस्था से जुड़ा एक आधारी पक्ष है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किसी भी नगर के विभिन्न उपयोगों में आवासीय उपयोग के अन्तर्गत सबसे अधिक क्षेत्र समाहित होता है। सागर नगर इसका अपवाद नहीं है। यह उपयोग नगर की संरचना, स्वरूप, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था को प्रभावित करता है। नगर में विद्यमान आवासीय व्यवस्था के गुणात्मक एवं संख्यात्मक अध्ययन एवं नगर की जनसंख्या के आधार पर, आवास गृहों की कमी, मकानों की दशा, आवासीय घनत्व, आवासीय क्षेत्र का वर्गीकरण आदि का अध्ययन किया जा सकता है।

सागर के वर्तमान आवासीय संरचना के संख्यात्मक अध्ययन के अनुसार, नगर निगम क्षेत्र में औसत आवासी घनत्व 422 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर पाया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि आवासीय दर अधिक होकर भवन, घने बसे है वर्तमान में नगर में सबसे अधिक आवासीय घनत्व 1546 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर तिलकगंज वार्ड में जबकि सबसे कम 164 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर इंदिरानगर वार्ड में है। नगर के विभिन्न वार्डों मे आवासीय घनत्व निम्न सारणी में दर्शाया गया है –

तालिका क्र. 5.1

सागर – वर्तमान आवासीय घनत्व

क्र.	वार्ड का नाम	क्षेत्र हेक्टेयर में		जनसंख्या 1998	आवासीय घनत्व
		वार्ड क्षेत्र	आवासीय क्षेत्र	(अनुमानित)	व्यक्ति (प्र.हे.)
1.	श्री हरिसिंह गौर	40.50	16.27	4546	280
2.	इंदिरा नगर	42.63	25.30	4145	164
3.	सिविल लाइन	42.75	14.30	4505	315
4.	मधुकरशाह	73.75	17.95	5232	291
5.	शिवाजी नगर	126.07	20.83	4927	236
6.	गोपालगंज	43.87	8.93	4660	520

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	वार्ड का नाम	क्षेत्र हेक्टेयर में		जनसंख्या 1998	आवासीय घनत्व
		वार्ड क्षेत्र	आवासीय क्षेत्र	(अनुमानित)	व्यक्ति (प्र.हे.)
7.	विन्द्रावन	101.12	25.43	4800	189
8.	कृष्णगंज	31.50	9.50	5328	561
9.	शनीचरी	13.50	10.04	4829	481
10.	परकोटा	6.75	5.26	3901	742
11.	लाजपतपुरा	12.37	9.79	5474	559
12.	शुक्रवारी	6.75	5.38	5113	950
13.	महर्षि दयानंद	12.37	10.38	5153	496
14.	तिलकगंज	38.88	4.06	6276	1546
15.	भगवानगंज	36.00	16.00	5193	325
16.	विठठ्ल नगर	79.00	11.95	5199	435
17.	गुरूगोविन्द सिंह	21.37	8.88	4625	521
18.	सुभाष नगर	37.75	25.12	4508	179
19.	तुलसीनगर	18.00	17.83	4436	249
20.	लालबहादुरशास्त्री	36.62	16.36	5708	349
21.	संत कंवरराम	30.37	22.57	6323	280
22.	संत रविदास	36.00	12.21	5669	464
23.	सरदार भगवतसिंह	151.25	38.92	7122	183
24.	बल्लभ नगर	90.00	16.60	6908	416
25.	मोतीनगर	28.12	13.74	6808	495
26.	चंद्रशेखर	10.12	7.29	4855	666
27.	कटरा	19.12	3.83	5375	1403
28.	जवाहरगंज	8.20	2.95	4224	1432

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	वार्ड का नाम	क्षेत्र हेक्टेयर में		जनसंख्या 1998	आवासीय घनत्व
		वार्ड क्षेत्र	आवासीय क्षेत्र	(अनुमानित)	व्यक्ति (प्र.हे.)
29.	रामपुरा	10.80	5.60	5242	936
30.	इतवारी	10.12	7.23	5772	798
31.	गांधी चौक	9.00	3.44	4829	1404
32.	रविशंकर	10.12	7.21	5828	808
33.	नरयावली नाका	6.75	6.20	5387	869
34.	मोहन नगर	9.00	6.99	5046	722
35.	राजीव नगर	160.25	18.21	4465	245
36.	विवेकानंद	6.75	6.90	5264	763
37.	संतकबीर नगर	10.32	6.58	4080	6.20
38.	केशवगंज	5.62	5.26	5153	980
39.	वासुदेपराव सूबेदार	27.00	6.48	6226	961
40.	चकराघाट	13.50	3.40	4857	1428
41.	बरियाघाट	7.87	5.40	4034	747
42.	लक्ष्मीपुरा	10.12	5.02	4770	950
43.	पुरव्याऊ	7.80	4.82	5000	1037
44.	काकागंज	27.00	14.73	6436	437
45.	पंतनगर	176.62	14.56	5548	381
46.	तिली	426.25	20.15	4234	210
47.	बाघराज	354.25	1914	4349	227
48.	अम्बेडकर	926.89	22.01	5435	247
	योग	**3375.00**	**587.00**	**247500**	**422**

स्त्रोत : नगर पालिका निगम, सागर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्तानुसार नगर के आवासीय धनत्व को तीन श्रेणी में बांटा जा सकता है –

	व्यक्ति प्रति हेक्टेयर	जनसंख्या
उच्च	851 तथा इससे अधिक	51823
मध्यम	451–850	96853
निम्न	450 तथा इससे कम	98824

अतः वर्तमान में नगर की 21% जनसंख्या उच्च घनत्व वाले क्षेत्रों में निवास करती है; जिसका मूल कारण मध्य क्षेत्र में स्थित मिश्रित भूमि उपयोग तथा इससे संलग्न पुरानी बसाहट है ; जबकि मध्यम श्रेणी तथा निम्न श्रेणी में क्रमशः 39% तथा 40% जनसंख्या निवास कर रही है।

- **गंदी एवं झुग्गी झोपड़ी बस्तियां :**

वर्तमान में नगर में कई गंदी बस्तियां है जो भगवानगंज, काकागंज, सुभाषनगर, बिठठ्लनगर एवं मोतीनगर आदि क्षेत्रों में स्थित है। इन बस्तियों मे करीब 1500–2000 व्यक्ति निवास करते हैं तथा बस्तियों के अनुकूल आवासीय परिस्थितियां जल प्रदाय, विद्युत प्रदाय तथा अन्य सेवा सुविधायें अपर्याप्त हैं। पिछले कुछ वर्षों में भवन निर्माण गतिविधियों का विस्तार होने से तथा भूखण्डों के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि के कारण नगर मे कार्य की तलाश में आने वाले श्रमिकों को आवास, सस्ती आवास सुविधा उपलब्ध न हो सकने के कारण नगर में झुग्गी झोपड़ियों के निर्माण को प्रोत्साहन मिला है। वर्तमान में ये बस्तियां मुख्यतः रेल्वे स्टेशन के करीब सुभाषनगर, नरसिंहपुर मार्ग पर स्थित है ; जिसमें करीब 2500 लोग निवास करते हैं इन बस्तियों को नियोजन एवं पर्यावरण की दृष्टि से उचित स्थान पर स्थानांतरित करने की आवश्यकता है।

CC0: Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **गृहनिर्माण गतिविधियां :**

नगर में निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या को आवास उपलब्ध करवाने हेतु गृह निर्माण गतिविधियों एवं निरंतर प्रक्रिया के रूप में चलती रहती है उसके होते हुए भी आवासीय सुविधाओं का अभाव देखने को मिलता है नगर में गृहनिर्माण गतिविधियां मुख्यतः म. प्र. गृह निर्माण मंडल, सहकारी गृहनिर्माण संस्थानों तथा निजी भवन निर्माण कर्त्ताओं द्वारा चलायी जा रही है; इसमे सबसे बड़ी भागीदारी निजी संस्थाओं की है। म.प्र. गृह निर्माण मंडल द्वारा गंभीरिया में 73.0 हेक्टेयर, तिली मार्ग पर 3.50 हेक्टेयर तथा मकरोनियां में 9.0 हेक्टेयर की आवासीय कॉलोनी विकसित कर लगभग 2000 आवास गृह का निर्माण किया गया है। नगर में लगभग 2500 आवासीय इकाईयों का निर्माण निजी भवन निर्माणकर्त्ताओं द्वारा किया गया है।

- **आवासों की कमी :**

सागर के प्रशासनिक एवं शैक्षणिक केन्द्र के रूप में विकास होने के कारण, जनसंख्या में जिस गति से वृद्धि हुई है उसकी तुलना में मकानों का निर्माण नहीं हो सकता है। इसके फलस्वरूप आवास समस्या उत्पन्न हुई है।

वर्ष 1991 की जनगणना अनुसार नगरीय क्षेत्र मे कुल 40437 मकान हैं जबकि इस नगर में 41134 परिवार निवास करते हैं छावनी क्षेत्र में 5415 आवासों में 5575 परिवार निवास करते हैं । इस प्रकार छावनी क्षेत्र को छोड़कर सागर नगरीय क्षेत्र में 35022 आवासों में 35559 परिवार निवास करते पाये गये । प्रत्येक परिवार को एक स्वतंत्र आवास की आवश्यकता के माने से 537 आवासों की कमी पाई गई । रहवास हेतु अनुपयुक्त एवं कच्चे आवासों के 80% के पुर्ननिर्माण को शमिल करते हुए कुल 2317 आवासों की कमी आंकी गई है। जिसका विवरण निम्न सारणी में दर्शाया गया है[2]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्र. 5.2

सागर : आवास गृहों की कमी

क्र.	विवरण	आवासगृह		आवास गृहों की कमी
		कुल	पुर्ननिर्माण का प्रतिशत	
1.	सन् 1991 तक शेष पूर्ति	–	–	537
2.	आवास गृह जो आवास हेतु अनुपयुक्त है	–	–	–
	अ. झुग्गी झोपड़ी	482	80%	385
	ब. गंदी बस्ती	1247	50%	623
3.	कच्चे आवास गृह	965	80%	772
	योगफल	–	–	2317

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि सागर नगर संयुक्त अधिवास का एक प्रकार है, जो अरीय प्रतिरूप पर विकसित किया गया है। सागर नगर का धरातल अत्यंत ऊबड–खाबड होने के कारण यहाँ अधिकांश अधिवास एक मंजली है। वर्तमान समय मे विकसित होने वाली आवास व्यवस्था एक मंजिलों पर आधारित है। सागर नगर का मध्यभाग बहुमंजली इमारतों द्वारा बना है; जिसमें निवास क्षेत्र एवं कार्यक्षेत्र आपस में एक ही स्थान पर प्राप्त होते हैं, बहुमंजली व्यवस्था तीनबत्ती, कटरा, सिविल लाईन, बड़ा बाजार, गोपाल गंज, शनीचरी, गोपालपुरा, चकराघाट, तिली सुभाष नगर आदि में प्राप्त होते हैं । नगर की अधिकांश आवास व्यवस्था तीन से चार कमरों वाली है। 20% से अधिक मकान अनेक कमरों वाले हैं। सागर नगर के आवास व्यवस्था में ईंट व सीमेंट का प्रयोग किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ चिकित्सा व्यवस्था :

नगरीय जनसंख्या की स्वास्थ्य सुविधा के लिये नगर में चिकित्सा संस्थाओं की उपस्थिति एक अनिवार्य पक्ष है । नगर में उपस्थित ऐसी संस्थाएं नगर के सेवा क्षेत्र की भी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं ।

नगर में तीन शासकीय चिकित्सालय हैं, जिसमें एक तिली मे स्थित जिला चिकित्सालय है। इसके अतिरिक्त खुरई मार्ग पर इंदिरा गांधी नेत्र चिकित्सालय तथा सागर तालाब के सामने महिला एवं शिशु के लिए उफरिन चिकित्सालय है। इसके अतिरिक्त नगर में 8 औषधालय हैं। पिछले कुछ वर्षो में, नगर के विभिन्न क्षेत्रों में निजी नर्सिंग होम तथा चिकित्सालय की संख्या काफी तेजी से बढ़ी है। अपनी क्षेत्र में सेना के लोगों के लिए 170 पलंग क छावनी अस्पताल तथा कैंटोमेंट जनरल अस्पताल, सदर क्षेत्र में स्थित है।[3]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

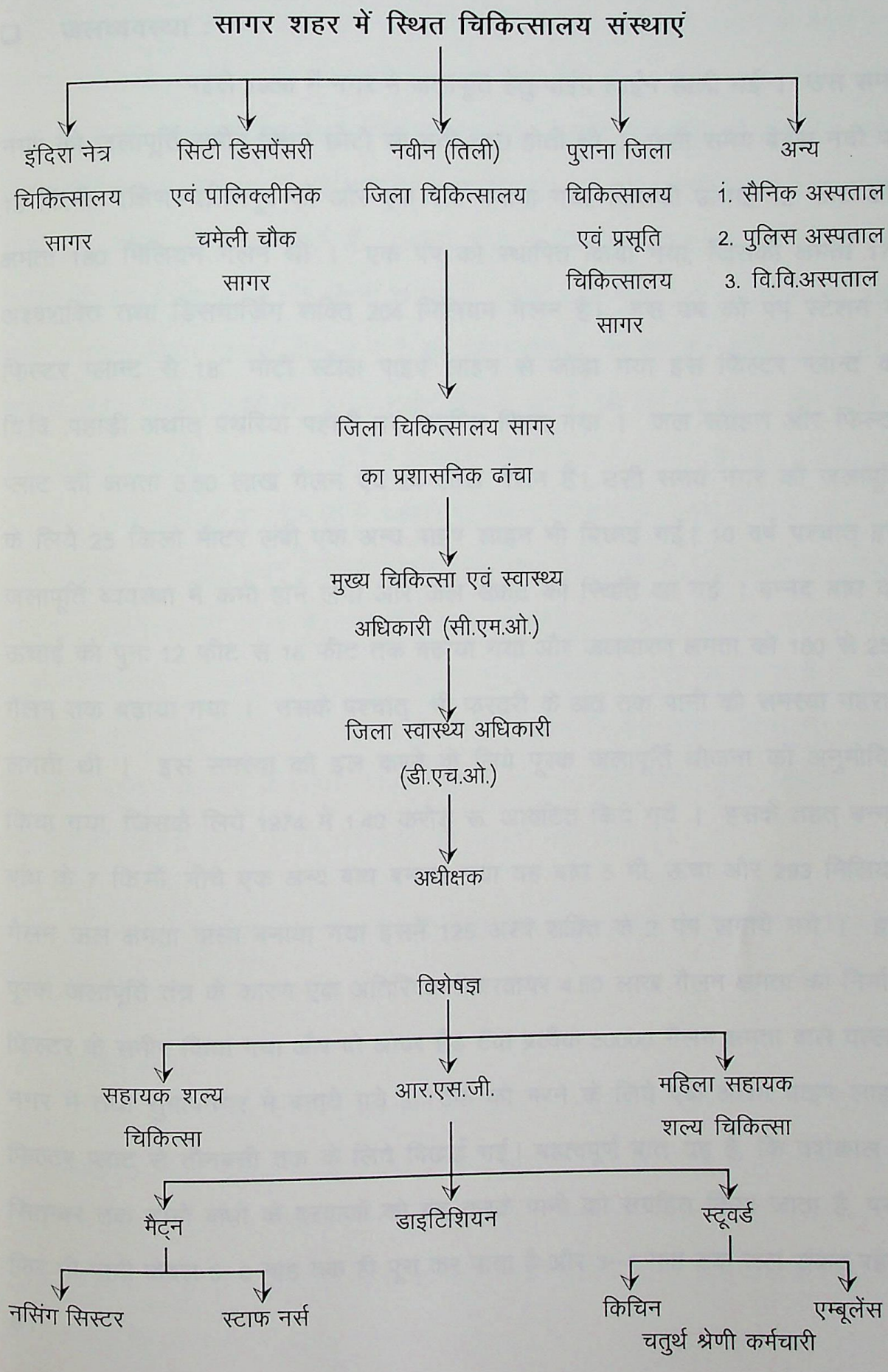

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

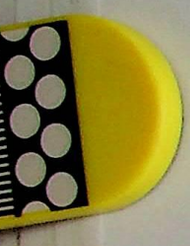

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ **जलव्यवस्था :**

पहले 1956 में नगर में जलापूर्ति हेतु पाईप लाईन डाली गई । उस समय नगर को जलापूर्ति समीप स्थित छोटी सी नदी द्वारा होती थी । उसी समय बेबस नदी पर 18 कि.मी. दक्षिण–दक्षिणपूर्व की ओर एक बांध बनाया गया; जिसकी ऊंचाई 12 फीट और क्षमता 180 मिलियन गैलन थी । एक पंप को स्थापित किया गया; जिसकी क्षमता 175 अश्वशक्ति तथा डिसचार्जिंग शक्ति 204 मिलियन गैलन है। इस पंप को पंप स्टेशन के फिल्टर प्लान्ट से 18'' मोटी स्टील पाइप लाइन से जोड़ा गया इस फिल्टर प्लान्ट को वि.वि. पहाड़ी अर्थात् पथरिया पहाड़ी पर स्थापित किया गया । जल संग्रहण और फिल्टर प्लांट की क्षमता 5.50 लाख गैलन एवं 24 लाख गैलन है। उसी समय नगर को जलापूर्ति के लिये 25 किलो मीटर लंबी एक अन्य पाइप लाइन भी बिछाई गई। 10 वर्ष पश्चात् इस जलापूर्ति व्यवस्था में कमी होने लगी और जल संकट की स्थिति आ गई । बन्नद बांध की ऊंचाई को पुनः 12 फीट से 16 फीट तक बढ़ाया गया और जलधारण क्षमता को 180 से 250 गैलन तक बढ़ाया गया । उसके पश्चात् भी फरवरी के अंत तक पानी की समस्या गहराने लगती थी । इस समस्या को इल करने के लिये पूरक जलापूर्ति योजना को अनुमोदित किया गया, जिसके लिये 1974 में 1.40 करोड़ रू. आवंटित किये गये । इसके तहत् बन्नद बांध के 7 कि.मी. नीचे एक अन्य बांध बनाया गया यह बांध 5 मी. ऊंचा और 293 मिलियन गैलन जल क्षमता वाला बनाया गया इसमें 125 अश्व शक्ति के 2 पंप लगाये गये । इस पूरक जलापूर्ति तंत्र के कारण एक अतिरिक्त रीजरवायर 4.50 लाख गैलन क्षमता का निर्माण फिल्टर के समीप किया गया और दो ओवर हैंड टैंक प्रत्येक 50000 गैलन क्षमता वाले वल्लभ नगर में तथा सुभाषनगर में बनाये गये । टैंक को भरने के लिये एक अलग पाइप लाइन फिल्टर प्लांट से तीनबत्ती तक के लिये बिछाई गई। महत्वपूर्ण बात यह है, कि वर्षाकाल में सितम्बर तक दोनों बांधों के दरवाजों को बंद करके पानी को संग्रहित किया जाता है, परंतु फिर भी पानी केवल 5–6 माह तक ही पूरा कर पाता है और 3–4 माह तक जल संकट रहता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक महत्वपूर्ण बात यह है, कि सेना ने भी अपने बांध अलग से बेवस नदी पर ही बनाये हैं ये बांध नगर जलापूर्ति में बाधक सिद्ध होते हैं । जैसे 1965–66 में ढाना सैन्य केम्प को जलापूर्ति हेतु बेवस नदी पर एक बांध बनाया गया जिसकी क्षमता 6 लाख गैलन थी एवं एक पंप 100 मी. की दूरी पर लगाया गया था । सेना, नदी से नगर की अपेक्षा तीन गुना ज्यादा पानी पंप करती है। सागर नगर के लिए बमुश्किल 10 गैलन पानी प्रति व्यक्ति मिलता है तात्पर्य है, कि किसी को बहुत अधिक पानी मिलता है तो किसी को बहुत कम । इससे सागर नगर में पीने के पानी का संकट गहराता जा रहा है। सागर नगर निगम क्षेत्र में अलग–अलग व्यास की पाईप लाईन बिछाई गई है, जो कि 1.5 से 16 इंच मोटी है इन पाइप लाइनों के जाल को 4 वर्गों मे विभाजित किया गया है – 14'' से 18'', 9'' से 12'', 4'' से 8'' और 1.5'' से 3'' तक वि.वि. पहाड़ी पर स्थित फिल्टरेशन प्लान्ट से पानी 18'' मोटी पाइप लाइन द्वारा गौर भवन सिविल लाइन तक आता है। यहाँ से 14 इंच मोटी 5 पाइप लाइन अलग–अलग भागों में जलापूर्ति करती हैं जैसे – सिविल लाइन, गोपाल गंज, न्यूकालोनी आदि। 14 इंच मोटी एक पाइप लाइन तीनबत्ती क्षेत्र पर समाप्त होती है, जहाँ से छोटी पाइप लाइन (1.5, इंच से 3 इंच) के जाल द्वारा सिविल लाइन, तीनबत्ती, रामपुरा और बड़ा बाजार से नगर के विभिन्न हिस्सों जैसे – पुख्याऊ टौरी, मोहन नगर, बिठ्ठल नगर, न्यूकॉलोनी सिविल लाइन आदि को पानी की आपूर्ति की जाती है।

उपरोक्त व्यवस्था के अतिरिक्त नगर मे 250 कुयें, 24 नलकूप, 278 बोरिंग आदि भी पाये जाते हैं।

❑ **शिक्षा क्षेत्र :**

शिक्षा भी नगर का अनिवार्य कार्य है, क्योंकि नगरीय जनसंख्या के लिये सभी स्तरों की शिक्षा सुविधा प्रदान करना नगरीय दायित्व होता है, उच्च शिक्षा संस्थान जैसे विश्वविद्यालय आदि की उपस्थिति नगर की पहचान बन जाती है। ऐसे नगर को विश्वविद्यालय नगर भी कहा जाता है । यथा डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

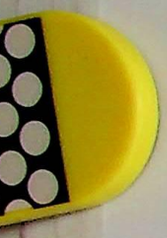

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आजादी के पूर्व से ही सागर नगर का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। नगर में सबसें प्रांरभिक पाठशाला श्री बिहारी गुरू द्वारा उस स्थान पर प्रांरभ की गई, जहाँ वर्तमान में गेंडा जी का मंदिर स्थित है। उत्तरवर्ती काल में नगर में इस तरह की संस्थायें चकराधाट,चमेली चौक,इतवारी टौरी, सदर बाजार और बरियाधाट में स्थित थी और उनका संचाालन क्रमशः नन्हे गुरू,सुंदर गुरू,शत्रुगुरू,बिहारी गुरू ओर हुसैन बख्श मास्टर किया करते थें। सन् 1827 में लेम्स पेटन ने सागर में पाश्चात्य ढंग से गौ शालायें प्रांरभ की ।[4] राज्य सरकार ने प्रायमरी शिक्षा से विश्व विद्यालय शिक्षा तक के लिये 10+2+3 की शिक्षा नीति अपनाई भारत में तीन त्रिस्तरीय शैक्षणिक योजना प्रायमरी, माध्यमिक ओर हायर सेकण्डरी स्कूल शिक्षा के तरीके को स्वीकार किया है। सागर जिले में शिक्षा का विकास निरंतर होता रहा है। माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी 1961 तक यहां उत्साहजनक प्रगति हुई। सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय की पहचान संपूर्ण राष्ट्र में है। इसके अतिरिक्त नगर में इंजीनियरिंग महाविद्यालय, महिला पॉलीटेकनिक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा कई विद्यालय स्थित है। नगर की विशिष्ट संस्थाओं के कार्यकालापों को विवरण निम्नानुसार है : **(मानचित्र क्र. 10)**

1. सर हरीसिंह गौर महाविद्यालय :

- **संक्षिप्त परिचय :**

सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्रदेश का सबसे प्राचीन विश्वविद्याालय हैं; जिसकी स्थापना 18 जुलाई सन् 1964 को प्रसिद्ध विधिक्ता शिक्षाशास्त्री स्व. डॉ. हरीसिंह गौर द्वारा की गई थी। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्य हेतु दानवीर सर हरीसिंह गौर ने अपनी समस्त पूंजी दान कर दी। डॉ. हरीसिंह और विश्वविद्यालय ही है।[5] विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति के रूप में सर हरीसिंह गौर ने विश्वविद्यालय के उस पौधे को, जिसे उन्होंने स्वयं रोपा था, सींच कर पुष्पित प्लवित किया की स्मृति में सागर विश्वविद्यालय को डां. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के रूप में सन् 1983 में पुनर्नामांकित किया गया। पूर्ववर्ती विश्वविद्यालय अधिनियम 1973 द्वरा विस्थापित किया गया जो मई 1973 से प्रभावशील है।[6]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

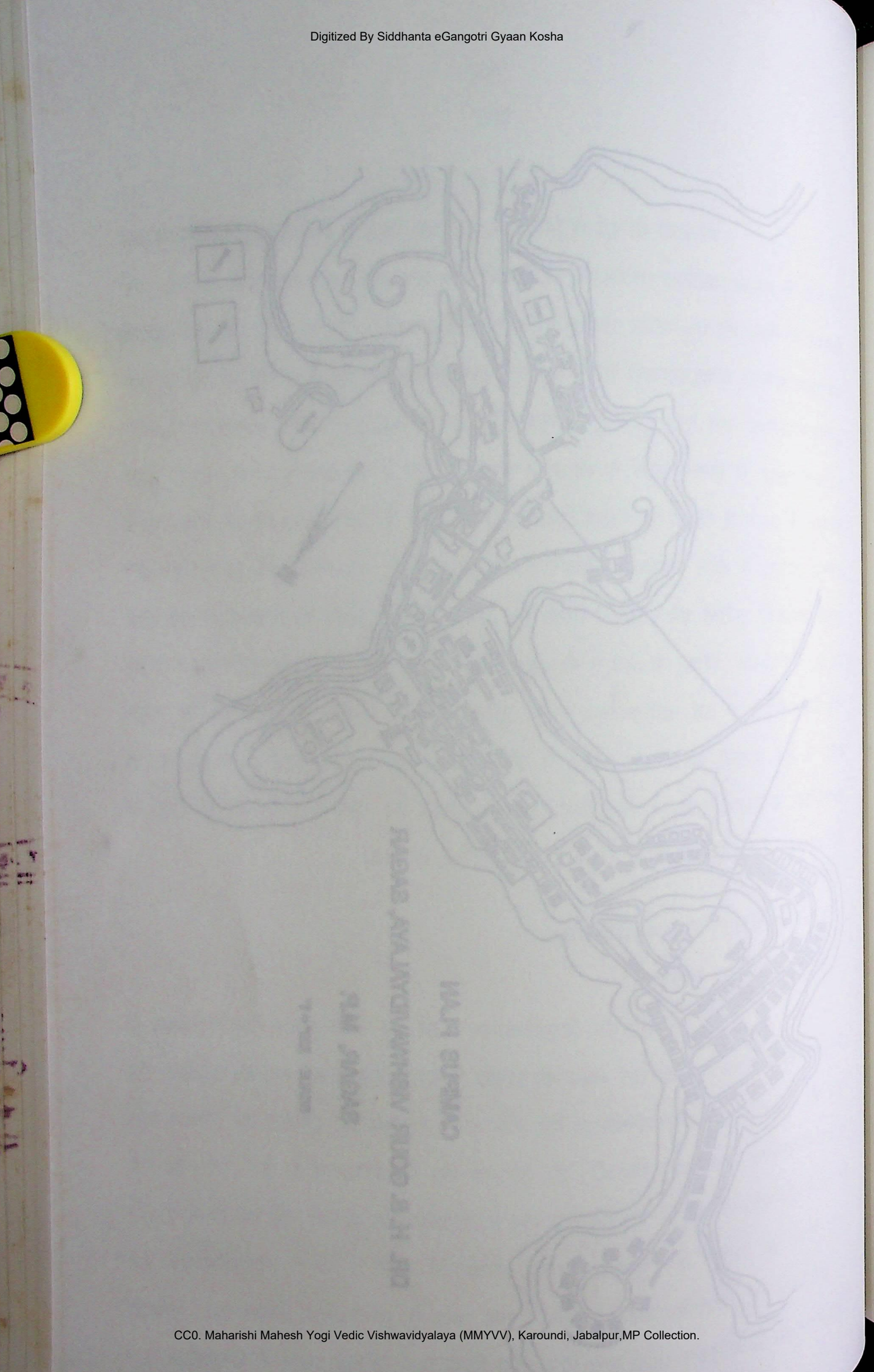

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **विश्वविद्यालय परिसर :**

यह विश्वविद्यालय सागर नगर से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पूर्व दिशा में पथरिया की सुरम्य पहाड़ी के शिखर पर लगभग 830 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तृत पठार पर स्थित हैं। पथरिया पहाड़ी की ऊचांई समुद्र सतह से लगभग 620 मी. हैं श्री हरिविनायक पास्टकर के अनुसार इसका अनिद्य सौन्दर्य और शांत वातावरण प्राचीन भारत के ऐसे परंपरागत आश्रम की याद दिलाता हैं ,जो कि आधुनिक शिक्षा का भी केन्द्र हो सकता था।[7] इस विश्वविद्याालय का अभिन्यास कलकत्ता के डॉ. ए. कारवोनी वास्तुविद के द्वारा बनाया गया था। विश्वविद्यालय परिसर में विभिन्न विभागों हेतु भवन अतिथि गृह, पुस्तकालय भवन तथा 250 आवास स्थित है। पहाड़ी पर स्थित लगभग सभी आवसीय इकाईयों से घाटी का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है। विभिन्न जिलों में लगभग 82 महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं। विश्वविद्यालय में वर्तमान में सभी संकायों के अध्यापन की सुविधायें उपलब्ध है ; जिसमें मानव विज्ञान अपराध विज्ञान एवं न्यायिक विज्ञान विभाग काफी ख्याति प्राप्त है।[8]

- **पुस्तकालय :**

जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय विश्वविद्यालय का केन्द्रीय पुस्तकालय है। केन्द्रीय पुस्तकालय तीन मंजिल इमारत में स्थित है। जो लगभग 3 लाख ग्रंथ तथा 400 पाठकों की आवश्यकतानुसार निर्मित हैं इसका शिलान्यास 30 अक्टूबर 1952 को पं. जवाहरलाल नेहरू ने किया था। 1965 में पुस्तकालय का नाम जवाहरलाल नेंहरू ग्रंथालय हुआ। इसके अतिरिक्त यहां स्नातकोंतर स्तर के 26 विभागीय पुस्तकालय भी है। जो विभागीय भवनों में स्थित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **छात्रावास :**

डॉ. हरीसिंह गौर विद्यालय कें शिक्षण विभाग में चार बालक छात्रावास हैं तों निम्न प्रकार हैं –

1. विवेकानंद
2. टैगोर
3. रमन
4. कबीर

इन छात्रावासों में 1000 छात्रों को प्रवेश दिया गया है। एक कन्या छात्रावास निवेदिता छात्रावास है ; जिसमें 244 छात्राओं को प्रवेश दिया गया है।[9]

2. पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय :

यह सागर नगर की एक विशिष्ट संस्था न होकर, राज्य में स्थित संस्थानों में से एक हैं तथा राज्य की एक मात्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय हैं। शताब्दी के आंरभ में ही पुलिस महत्व को ध्यान में रखते हुयें सेना द्वारा नागरिक प्रशासन को हस्तांरित किया गया। भारतीय पुलिस कमीशन की अनुशंसा के अनुसार यह विद्यालय जनवरी 1906 को शुरू हुआ शीध्र ही इस विद्यालय की ख्याति दूर – दूर तक फैल गई तथा पुराने मध्यप्रदेश के अलावा प्रदेश के समीपवर्ती रियासतों जैसें होल्कर, ग्वालियर, भोपाल, राजपूाना, रीवा, उडीसा, कथियावार्ड, हैदराबाद आदि राज्यों के पुलिस कर्मी भी इस संस्था में प्रशिक्षण हेतु दाखिल होने लगें इस संस्था की बढती हुई लोकप्रियता इस बात से स्पष्ट होती हैं कि यहां प्रशिक्षणार्थियों की संख्या निरतंर बढने के साथ पाठ्क्रम की विविधता स्थापित हो चुकी है। इस महाविद्यालय का क्षेत्रफल लगभग 8.45 एकड़ है। महाविद्यालय में दिनोदिन बढ़ते हुये प्रशिक्षुओं की संख्या कां दृष्टिगत रखतें हुये, वर्तमान परिसर में सुविधाओं की कमी देखनें कों मिलती है। अतः इस संस्था कों अन्य किसी उपयुक्त स्थल पर स्थानांतरित किया जाना आवश्यक हो गया हैं। वर्तमान पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाये जा रहे है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	पाठ्यक्रम का नाम	पाठ्यक्रम की अवधि
1.	उपनिरीक्षकों हेतु प्लाटून कमान्डर पाठ्यक्रम	एक साल
2.	आई.पी.एस (एस.एस.पी.) पाठ्यक्रम	तीन माह
3.	डी. एस. पी पाठ्यक्रम	छःमाह
4.	एस. आय.एस. हेतु विश्वविद्यालय द्वारा अपराध विज्ञान एवं न्यायिक विज्ञान में डिप्लोमा पाठ्यक्रम	पंद्रह माह
5.	उपनिरीक्षक, निरीक्षकों के पदों पर पदोन्नत होने हेतु सक्षमता की जांच के संबंध में पूर्व पदोन्नति पाठ्यक्रम	तीन सप्ताह
6.	भीड़ मनोविज्ञान एवं भीड़–भाड़ को नियंत्रित करने हेतु पाठ्यक्रम	छः सप्ताह
7.	उपनिरक्षकों हेतु पुनर्रचना पाठ्यक्रम	छःसप्ताह

स्त्रोत : प्राचार्य पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय, सागर से प्राप्त जानकारी के आधार पर

- **महाविद्यालय :**

नगर में इंजीनियरिंग महाविद्यालय सागर से 8 कि.मी की दूरी पर गंभीरता में महिला पॉलीटेनिक तिली मार्ग पर तथा औद्योगिक प्रशिक्षण सस्था खुरई मार्ग पर स्थित है। इसके अतिरिक्त विज्ञान महाविद्यालय तिली मार्ग में तथा कन्या महाविद्यालय बस स्टैण्ड के समीप स्थित हैं नगर मे छात्राओं हेतु शहर के विभिन्न क्षेत्रों में कन्या महाविद्यालय की आवश्यकता हैं।

- **विद्यालय :**

नगर में 18 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं, इनमें से 2 शासकीय विद्यालय नगर निगम द्वारा संचालित किये जाते है। इसके अतिरिक्त 12 विद्यालय निजी क्षेत्र द्वारा संचालित किये जाते हैं इन सभी विद्यालयों में खेल की सुविधा उपलब्ध है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर में विभिन्न भागों में 61 माध्यमिक विद्यालय तथा 84 प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक शालायें स्थित है।[10]

- **शिक्षा का स्तर :**

तालिका क्र. 5.3 में वार्ड के अनुसार शिक्षा के स्तर कों समझाया गया है। नगर में कुल शिक्षित जनसंख्या का प्रतिशत 65.76 है। जिसमें से कुल शिक्षित पुरूषों का प्रतिशत 73.30 तथा कुल महिलाओं का प्रतिशत 57.31 हैं। नगर में उच्चतम शिक्षा का स्तर वरियाधाट वार्ड में 81.74 प्रतिशत हैं ; जिसमें शिक्षित पुरूष 85.89 प्रतिशत तथा कुल शिक्षित महिलाओं का 77.13 प्रतिशत है। जवाहरगंज वार्ड कुल साक्षरता 81.11 प्रतिशत हैं जिसमें 84.93 प्रतिशत पुरूष एवं 76.82 प्रतिशत महिला साक्षर हैं ओर न्यूनतम साक्षरता सरदार भगतसिंह वार्ड में 43.93 प्रतिशत हैं जिसमें साक्षर पुरूष 52.87 प्रतिशत एवं महिला 34.30 प्रतिशत हैं इसी प्रकार विभिन्न वार्डो में साक्षरता का प्रतिशत भिन्न–भिन्न हैं। साक्षरता का प्रतिशत इंदिरा नगर वार्ड में 78.26 प्रतिशत, सिविल लाईन में 76.40 प्रतिशत, मधुकरशाह नगर में 75.19 प्रतिशत, गोपालगंज में 77.40 प्रतिशत, भगवानगंज में 52.22 प्रतिशत, वृन्दावन वाग मे 73.86 प्रतिशत, कृष्ण गंज में 69.57 प्रतिशत, शनीचरी वार्ड में 73.55 प्रतिशत, परकोटा में 79.69 प्रतिशत, लाजपतपुरा में 70.73 प्रतिशत, शुक्रवारी में 63.60 प्रतिशत महर्षि दयानंद वार्ड में 68.88 तिलकगंज में 61.80 प्रतिशत, विट्ठलनगर में 48.51 प्रतिशत, गरूगोविन्द सिंह में 54.16 प्रतिशत, सुभाष नगर में 54.95 प्रतिशत, लालबहादुर शास्त्री वार्ड में 55.41 प्रतिशत संत कंवरराम वार्ड में 71.98 प्रतिशत, वल्लभ नगर में 54.77 प्रतिशत, मोतीनगर में 68.15 प्रतिशत, चद्रशेखर वार्ड में 66.54 प्रतिशत, कटरा में 70. 65 प्रतिशत, रामपुरा में 79.87 प्रतिशत, इतवारी में 75.20 प्रतिशत गांधी चौक में 77.68 प्रतिशत, नरयावाली नाका में 74.22 प्रतिशत, रविशंकर नगर में 72.16 प्रतिशत, मोहन नगर में 77.73 प्रतिशत, विवेकानंद नगर में 71.12 प्रतिशत अन्य वार्डो में शिक्षा का स्तर पुरूषों में 55 से 85 प्रतिशत के मध्य प्राप्त होता हैं जबकि महिलाओं में 33से 75प्रतिशत तक प्राप्त होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्र. 5.3

सागर नगर के साक्षरता स्तर 2001

क्र.	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
1.	इंदिरा नगर	78.26	82.80	73.07
2.	सिविल लाइनस	76.40	81.76	70.25
3.	मधुकरशाह नगर	75.19	78.82	70.22
4.	गोपल गंज	77.40	82.92	71.48
5.	वृन्दावन बाग	73.86	80.08	66.30
6.	कृष्णागंज	69.57	76.43	61.76
7.	शनीचर वार्ड	73.55	80.56	65.90
8.	परकोटा	79.69	84.49	74.51
9.	लाजपतपुरा	70.73	77.90	62.83
10.	शुक्रवारी	63.60	71.86	54.55
11.	महर्षि दयानंद	68.88	74.20	63.28
12.	तिलकगंज	61.80	70.56	52.05
13.	भगवानगंज	52.22	62.10	41.02
14.	विट्ठल नगर	48.51	61.99	34.84
15.	गुरूगोविन्द सिंग	54.16	62.79	44.58
16.	सुभाष नगर	54.95	68.17	43.25
17.	लालबहादुर शास्त्री	55.41	65.65	43.45
18.	संत कुंवर राम	71.98	77.45	66.14
19.	सरदार भगतसिंह	43.93	52.87	34.30
20.	बल्लभनगर	54.77	66.29	41.55

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	वार्ड	योग	पुरुष	महिलायें
21.	मोतीनगर	68.15	7493	60.36
22.	चंद्रशेखर वार्ड	66.54	73.42	58.97
23.	कटरा	70.65	76.19	64.36
24.	जवाहरगंज	81.11	84.93	76.82
25.	रामपुरे	79.87	82.74	76.76
26.	इतवारी	75.20	79.79	70.14
27.	गांधी चौक	77.63	82.25	72.51
28.	नरयावली नाका	74.22	79.73	68.05
29.	रविशंकर नगर	72.16	78.91	64.70
30.	मोहन नगर	77.73	82.24	75.96
31.	विवेकानंद नगर	71.22	77.48	64.58
32.	केशवगंज	68.41	74.24	62.24
33.	वासुदेव सूबेदार वार्ड	55.75	71.44	43.61
34.	चकराघाट	79.81	84.12	75.10
35.	बरियाघाट	81.74	85.89	77.13
36.	लक्ष्मीपुरा	79.38	82.67	75.81
37.	पुरव्याऊ	73.18	79.97	65.65
38.	काकागंज	51.50	62.98	39.03
39.	पंतनगर	54.20	65.83	41.39
40.	तिली	55.65	66.24	42.48
41.	अम्बेडकर नगर	47.93	60.59	33.76
	योग	**65.76**	**73.30**	**57.31**

स्त्रोत : नेशनल इनफॉरमेटिक सेन्टर, सागर मध्यप्रदेश स्टेट यूनिट सेन्सस डेटा 2001.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट होता है। कि दस वर्ष की अवधि तक में अध्ययन क्षेत्र में साक्षरता व शिक्षा में प्रगति हुई हैं जों व्यक्तियों की बदलती मनोवृत्ति का प्रतीक हैं वर्तमान समय में विभिन्न वर्गो में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ी हैं जो तालिका क्रमांक 5.4 में प्रदर्शित की गई है।

तालिका क्र. 5.4

शहर में शिक्षा का स्तर

क्र.	शिक्षा का स्तर	पुरुष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	460	40.42	678	59.58	1138	19.73
2.	प्राथमिक से कम	168	53.16	148	46.84	316	5.48
3.	प्राथमिक	286	50.53	280	49.47	566	9.81
4.	पूर्व माध्यमिक	417	40.05	624	59.95	1041	18.05
5.	मैट्रिक	766	55.67	610	44.55	1376	23.86
6.	इन्टर (बी.ए.) प्रथम वर्ष	277	64.87	150	35.13	427	7.42
7.	स्नातक	443	70.43	186	29.57	629	10.91
8.	स्नातकोत्तर	194	84.34	36	15.66	230	3.99
9.	तकनीकी शिक्षा	39	90.69	04	9.31	43	0.75
	योग	**3050**	**52.89**	**2716**	**47.11**	**5766**	**100**

स्त्रोत – जिला सांख्यिकीय कार्यालय, सागर

तालिका क्र. 5.4 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि कुल जनसंख्या में से 19.73 प्रतिशत व्यक्ति अशिक्षित है। जिनमें 40.42 पुरूष व 59.58 प्रतिशत स्त्रिया हैं कुल में सें 5.48 प्रतिशत व्यक्ति प्राथमिक से कम शिक्षित है। जिनमें 53.16 प्रतिशत पुरूष व

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

46.48 स्त्रिया है। कुल जनंसख्या से 49.47 प्रतिशत स्त्रियां है। कुल जनसंख्या में सें 18.05 प्रतिशत व्यक्तिपूर्व माध्यमिक तक शिक्षित हैं जिनमें 40.05 पुरूष व 59.95 स्त्रिया है। 23.86 प्रतिशत व्यक्ति मैट्रिक तक शिक्षित है; जिनमें 55.67 पुरूष व 44.33 स्त्रियां हैं इन्टर प्रथम वर्ष तक शिक्षित कुल 7.42 व्यक्ति हैं; जिनमें 64.87 पुरूष व 35.99 व्यक्ति स्नातकोतर तक शिक्षित है; जिनमें 84.34 पुरूष व 15.66 प्रतिशत स्त्रियां हैं। तकनीकि शिक्षा प्राप्त 0.75 प्रतिशत व्यक्ति है जिनमें 90.69 प्रतिशत पुरूष व 9.31 स्त्रियां हैं।

अतः स्पष्ट होता हैं, कि संपूर्ण शहर में सबसें अधिक हैं 23.86 प्रतिशत व्यक्ति मैट्रिक तक शिक्षित हैं जिनमें पुरूषों की संख्या अधिक 55.67 प्रतिशत हैं व सबसे कम व्यक्ति 0.75 प्रतिशत तकनीकि; शिक्षा प्राप्त हैं जिनमें पुरूषों की संख्या अधिक हैं 90.69 प्रतिशत हैं कुल जनसंख्या में से 19.73 प्रतिशत व्यक्ति अशिक्षित हैं ; जिनमें स्त्रियों की संख्या अधिक 59.58 प्रतिशत हैं। इससे स्पष्ट है, कि सागर में पुरूषों की अपेक्षा अधिकतर स्त्रियां ही अशिक्षित है। इसी आधार पर यदि सागर शहर में शिक्षित अशिक्षित अनुपात देखा जायें तों संपूर्ण शहर में एक शिक्षित व्यक्ति पर 0.24 अशिक्षित व्यक्ति हैं अर्थात शिक्षित अशिक्षित व्यक्तियों का अनुपात 1:0.24 है। जो कि निम्नांकित तालिका में प्रदर्शित है।

तालिका क्र. 5.5

शहर में शिक्षित–अशिक्षित अनुपात

शिक्षा का स्तर	पुरुष		स्त्री		योग		शिक्षित
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	अशिक्षित अनुपात
अशिक्षित	460	40.42	678	59.58	1138	19.73	1:0.24
शिक्षित	2590	55.96	2038	44.04	4628	80.26	
योग	**3050**	**52.89**	**2716**	**47.11**	**5766**	**100.0**	

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है, कि कुल 19.73 प्रतिशत व्यक्ति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अशिक्षित व 80.26 प्रतिशत व्यक्ति शिक्षित है। शिक्षित व्यक्तियों में पुरूषों की संख्या अधिक हैं 55.96 प्रतिशत तथा अशिक्षित व्यक्तियों में स्त्रियों की संख्या अधिक 59.58 प्रतिशत हैं तथा शिक्षित अशिक्षित अनुपात 1:0.24 है।

❑ धार्मिक स्थल :

नगर में तथा नगर के आसपास अनेक ऐतिहासिक एवं नवीन धार्मिक स्थल स्थित है; जिनमें से कुछ धार्मिक स्थलों के संबंध में जानकारी नीचे प्रस्तुत है।

1. गढ़पहरा

यह मंदिर झांसी मार्ग पर सागर के उत्तर में 10 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां पहाड़ी पर हनुमानजी का एक प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। यह स्थान प्रथम संग्राम शाह गौर शासक के अधीन था और बाद में दांगी शासकों के अधीन रहा, जिन्होंने पहाड़ी पर किला निर्मित कर इस स्थान को अपनी राजधानी बनाया । बाद में मराठों के शासनकाल में यहाँ से राजधानी स्थानांतरित की गई । इस स्थान पर दांगी शासक के शीशमहल के अवशेष देखें जा सकते हैं। इस महल को राजा मानसींग द्वारा रंगीन काँच एवं खपरई द्वारा बनाया गया था । पहाड़ी के नीचे मोती ताल नामक एक छोटी सी झील है । इस पहाड़ी से घाटी का मनोहारी दृश्य दिखाई देता है। दूर–दूर से लोग हनुमान जी के दर्शन करने एवं किला देखने आते हैं।

2. बाघराज मंदिर :

बाघराज मंदिर नगर से तीन किलोमीटर दक्षिण दिशा में एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित हरसिद्धि माँ का मंदिर है । इस क्षेत्र का नाम बाघराज क्यों पड़ा; इसकी भी कई रोचक दंतकथाएं हैं । प्राचीनकाल में बाघराज क्षेत्र में बहुत घना जंगल था। जंगल में कई खुंखार जानवर रहते थे । दोपहर में भी यहाँ आदमी आने से घबराते थे। दूर–दूर से भ्रमण करने वाले बंजारे इस जंगल में विश्राम करते थे। इन्हीं 'बंजरों में' था लाखा बंजारा,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिसे देवी माँ ने स्वप्न देकर कहा था कि आज के बाद किसी व्यक्ति या जाानवर को बाघ के द्वारा कोई हानि नहीं होगी। उस दिन के बाद जंगली जानवरों सहित बाघ का आतंक समाप्त हो गया । वहाँ रहने वाले लोगों का कहना है, कि बाघ सुबह, शाम एवं रात को दैवी दर्शन करने के लिये आने लगा और फिर लाखा बंजारा में 1400 ई. के अंत में अपने पड़ाव पर हरसिद्धि भॉका एक छोटा सा मंदिर बनाकर देवी प्रतिमा स्थापित कराई। लाखा बंजारा ने आठ स्थानों पर हरसिद्धि देवी के मठ स्थापित कराये थे उन्हीं में से एक मठ हरसिद्धि देवी का बाघराज मंदिर है। बाघराज मंदिर में 11 फुट ऊँचे हनुमान जी का मंदिर है, यह मंदिर गुफाओं के ऊपर बना है। इस सिद्धेश्वर हुनमानजी के मंदिर के चारों तरफ गुफायें हैं । प्रतिवर्ष चैत्रमास की नवरात्रि पर यहाँ मेला भरता है ।

3. पीली कोठी :

यह बसस्टैण्ड से सिविल लाइन रोड पर कचहरी तिगड्डा पर स्थित है। पीली कोठी में स्थित पुरानी मदार का बड़ा धार्मिक महत्व है। यहाँ साल में दो बार उर्स लगता है यहाँ दूर–दूर से लाग उर्स देखने आते हैं।

4. महाकाली मंदिर :

शहर के सदर क्षेत्र में काबुला पुल स्थित शनिदेव मंदिर के सामनों विराजमान माँ महाकाली की प्रतिमा लगभग 6 फुट लंबी है। इसके बारे में बताया जाता है, कि माँ महाकाली की स्थापना लगभग 107 वर्ष पूर्व सदर बाजार स्थित उत्कटा मंदिर में तांत्रिक पुजारी दुर्गाप्रसार द्वारा की गई थी ।

5. बीजासेन मंदिर :

ऐतिहासिक किले के बाजू में सागर झील के पास परकोटा स्थित लगभग 53 वर्ष पुराना माँ बीजासेन मंदिर श्रृद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। माँ बीजासेन को संतान दात्री माता भी कहा जाता है। चैत्रमास की नवरात्रि पर यहाँ श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। परकोटा स्थित सिद्धपीठ बीजासेन देवी मंदिर की स्थापना लगभग 55 वर्ष पूर्व केशवप्रसाद मिश्र एवं उनके परिजनों द्वारा कराई थी । इस सिद्ध दरवार में हर भक्त की मनोकामना पूर्ण होती है। चैत्रमास की नवरात्रि में यहाँ भीड़भाड़ काफी बढ़ जाती है। श्रद्धालुओं का कहना है, कि यहाँ संतान प्राप्ति की इच्छा अवश्य पूर्ण होती है। संताहीन भक्तों को संतान प्राप्ति के लिये नारियल रखना होता है। जब भक्त के यहाँ संतान हो जाती है तब नारियल उठाना पड़ता है तथा बच्चे के सिर के बाल उतारकर मुंडन कराया जाता है। ऐसी मान्यता है ,कि बहुत अधिक उत्पात मचाने वाले पागल व्यक्ति मंदिर में आकर ठीक हो गये। बताया गया है, कि माता बीजासेन दिन में तीन रूप बदलती है सुबह माता का युवा रूप दिखाई देता है। दोपहर में माता सुहागन रूप में दिखाई देती हैं जबकि शाम से रात्रितक माँ बीजासेन वृद्धावस्था में श्रद्धालुओं को दर्शन देती हैं। दूर–दूर से लोग माँ के दर्शन करने आते हैं।

इसके अलावा एक मंदिर शहर के रविशंकर बार्ड में विश्वकर्मा के निवास पर स्थित माँ बीजासेन की स्थापना लगभग 200 वर्ष पूर्व की गई थी। एक और मंदिर इतवारी वार्ड स्थित माँ बीजासेन माता का दरवार लगभग 250 वर्ष पुरान है। पहले मंदिर कच्चा तथा खपरैलनुमा था वर्तमान में मंदिर का जीर्णोद्वार हो चुका है। बताया जाता है कि कई वर्ष स्वयं माता जी ने कन्या का रूप धारण कर अपने दिवाले की लिपाई–पुताई स्वयं कर ली थी यहाँ मंदिर में धर्मप्रेमी श्रृद्धालुओं को मनमांगी मुराद अवश्य पूरी होती है। गोपालगंज स्थित माँ बीजासेन देवी का मंदिर है जिसमें देवी की स्थापना लगभग 100 वर्ष पूर्व लाला गंगाप्रसाद श्रीवास्तव ने की थी। ऐसा कहा जाता है, कि माता की मूर्ति जमीन से प्राप्त हुई थी, जिसे मंदिर में स्थापित कराया गया था ।

इसके साथ–साथ नगर में अन्य मंदिर स्थित हैं जिनमें से रिमझिरिया में गोवर्धन मंदिर, गोपालगंज में वृन्दावन बाग मंदिर, काकागंज में गोपाल मंदिर एवं रामबाग मंदिर, सदर में ठाकुर मंदिर, बड़ा बाजार में गेंडाजी का मंदिर, मोतीनगर में भूतेश्वर मंदिर,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चकराघाट में स्थित मंदिर, परेड मंदिर, बाबा सिद्धधाम आदि प्रमुख व कामनापूर्ण करने वाले मंदिर स्थित हैं। इसके साथ ही सागर नगर के झूला बहुत प्रसिद्ध हैं, जो कि नागपंचमी से लेकर जन्माष्टमी तक डलते हैं।

नगर में समय–समय पर विभिन्न स्थानों पर उर्स एवं मेले लगते हैं। जो निम्नानुसार हैं [11]–

मेले का नाम	स्थान	पर्व
रिमझिरिया मेला	तिली रोड	गोवर्धन पूजा
भूतेश्वर मेला	भूतेश्वर मार्ग	शिवरात्रि एवं मकर संक्रांति
दुर्गाजी मेला	हरसिद्धि मंदिर (बाघराज)	नवरात्रि
चकराघाट	चफाघाट (तलाब)	सावन एवं मकर संक्राति
वृन्दावन बाग	गोपालगंज	रक्षाबंधन

उर्स	स्थान
उर्स हजरत शाह	पीली कोठी
उर्स टिकरी वाले	पीली कोठी
उर्स तालाब बादशाह बाबर	छावनी क्षेत्र
उर्स जंजीरवाले बाबा	काजी मोहल्ला (रामपुरा)

❑ **प्रशासनिक केन्द्र :**

नगर स्वशासी केन्द्र होते हैं । फलतः नगर प्रबंधन के लिये प्रशासकीय संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका नगरीय संरचना में देखने को मिलती है इसके साथ नगर केन्द्र स्थल का कार्य भी सम्पादित करते हैं जिसके कारण क्षेत्रीय प्रबंधन की संस्थायें जैसे कचहरी, पुलिस लाइन, तहसील, जनपद या प्रान्तीय मुख्यालय भवन, जल, सिविल लाइन जैसी संस्थायें नगर के अंदर सुविधाजनक क्षेत्रों में अवस्थित होती हैं ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजस्व संभाग का संभागीय मुख्यालय होने के कारण, सागर में संभागीय एवं जिला स्तर के अनेक शासकीय एवं अर्द्ध – शासकीय कार्यालय स्थित हैं । इसके अतिरिक्त नगर में केन्द्रशासन उपक्रम तथा स्वायत्त संस्थाओं के भी कार्यालय स्थित हैं; जबकि अन्य विभागों के कार्यालय, विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं, जो कि शासकीय भवनों के अभाव में किराये के भवनों में लगते हैं । यह इस नगर का अहोभाग्य है, कि अधिकांश कार्यालय इस नगर में एक ही जगह स्थित हैं । यहाँ तक कि पुलिस लाईन, विश्वविद्यालय कार्यालय, छावनी क्षेत्र में स्थित कार्यालय, सिविल लाइन एवं गोपालगंज में स्थित कार्यालय भी जिला कार्यालय के समीप ही स्थित है। विभिन्न कार्यालयों की संख्या निम्न सारणी में दर्शायी गई है।[12]

तालिका क्र. 5.6

सागर : कार्यालयों की सूची

क्र.	प्रकार	संख्या	कार्यरत् कर्मचारियों की संख्या
1.	केन्द्र शासन	21	2552
2.	राज्य शासन	192	18546
3.	स्वायत्त संस्थाऐं	47	2463
4.	बैंक	54	1643
	योग	**314**	**25204**

❑ **सागर छावनी क्षेत्र :**

सागर छावनी, भारत में स्थापित पुरानी छावनियों में से एक है, एवं पुराने म.प्र. की प्रथम छावनी है। इसकी स्थापना सन् 1835 में हुई थी। यहाँ इन्फीटेशन स्कूल, इन्फेंटरी एवं स्माल आर्मी स्कूल आदि संस्थायें स्थित थीं। सन् 1949 में यहाँ से इन्फेन्टरी स्कूल अन्यत्र स्थानांतरित किया गया तथा 1949 में ही महार रेजीमेंटल सेंटर स्थापित हुआ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अप्रैल 1966 में इन्फेंटरी डिवीजन हैड क्वार्टर स्थापित हुये। सन् 1924 का छावनी अधिनियम लागू होने पर छावनी के प्रशासन का काम कैन्टोमेंट बोर्ड द्वारा सम्पन्न होने लगा। छावनी अधिनियम की धारा 13 के अनुसार सागर छावनी, एक वर्ग की छावनी में शामिल है। वर्तमान छावनी क्षेत्र के अन्तर्गत 1635 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है तथा वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र की जनसंख्या 37,135 है। सागर छावनी द्वारा जल प्रदाय, स्वास्थ्य एवं शिक्षा सुविधायें आदि सेवा सुविधाओं की व्यवस्था है। छावनी क्षेत्र में सड़कों के किनारे नालियाँ आदि बनाई गई हैं एवं वृक्ष संवर्धन किया गया है। इस क्षेत्र का रख–रखाव छावनी बोर्ड द्वारा किया जाता है। सागर निवेश क्षेत्र में यह दो भागों में स्थित है – एक भाग सागर मकरोनिया उपनगर के मध्य स्थित होकर विभाजक की भूमिका निभाता है तथा दूसरा भाग निवेश क्षेत्र सीमा पर स्थित है, जो शूटिंग रेंज उपयोग में आता है।

❑ औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति :

नगरों की व्यवसायिक संरचना नगरीय जीवन का आधार है । नगरों के आर्थिक आधार को पुष्ट करने में फुटकर व्यवसाय, थोक व्यापार, वित्तीय कार्य और कुछ विशेष आर्थिक सेवाओं के महत्वपूर्ण भूमिका होती है । कहा जाता है, कि बिना आर्थिक आधार किसी भी नगर का अस्तित्व ज्यादा देर तक नहीं रह सकता है ।

आधुनिक नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में औद्योगिक विकास की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । प्राचीनकाल से नगर गृह उद्योग को प्रश्रय देते रहे हैं, क्योंकि औद्योगिक उत्पादन की सर्वाधिक खपत नगरों में होती है ।

- **विशिष्ट बाजार :**

सागर बुंन्देलखंड का प्रमुख नगर होने के कारण यहाँ व्यापारिक एवं वाणिज्यिक वस्तुओं का विपणन, परिवहन, क्रय, विक्रय आदि होता है। आर्थिक विकास व शहरीकरण में वृद्धि उद्योग/वाणिज्य एवं व्यापार की प्रगति पर निर्भर होती है जिला व

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संभागीय मुख्यालय होने के कारण अनेक वाणिज्य व व्यापारिक गतिविधियों का सागर नगर केन्द्र रहा है ; किन्तु फिर भी सागर नगर में विशिष्ट बाजारों का अभाव है। तात्पर्य है, कि नगर में विशिष्ट बाजार का कोई विशिष्ट क्षेत्र स्थित नहीं है। नगर के उत्तरी क्षेत्र में स्थित कटरा बाजार, गुजराती बाजार, जवाहरगंज, सुभाष मार्केट आदि में मिश्रित व्यापारिक गतिविधियाँ हैं। कटरा बाजार में मामूली सुई से लेकर फ्रिज तक का सारा सामान मिलता है। यह सबसे पुरातन बाजार होने से इस स्थान पर थोक एवं फुटकर व्यापार का सामान रूप से बहुत अधिक दबाव पाया जाता है। गुजराती बाजार, सुभाष मार्केट, जवाहरगंज आदि सभी बाजार कटरा बाजार से जुड़े हुये हैं। नगर में कोतवाली मार्ग से बड़ा बाजार तक एक अन्य बाजार स्थित है, यहाँ विशेषतया अलंकार बर्तन कपड़ा एवं दवाईयों की दुकानें स्थित हैं। नगर के प्रमुख वाणिज्यिक क्षेत्र में फुटकर व्यापार की दुकानें फुटपाथ पर तथा गुमटियों में स्थित हैं ; जिसके फलस्वरूप यातायात संकुलता की स्थिति निर्मित होती है, जो सागर नगर के यातायात की प्रमुख समस्या है। मार्गों एवं फुटपाथों पर अतिक्रमण करके दुकान लगाना इस बात की ओर इंगित करता है, कि नगर में फुटकर व्यापार क्षेत्रों में बहुत अधिक दबाव पड़ रहा है।

- **साप्ताहिक हाट :**

नगर में दो साप्ताहिक हाट लगते हैं। एक विजय टाकीज मार्ग पर और दूसरा रजाखेड़ी में अव्यवस्थित रूप से लगते हैं। इन हाटों में सामान्यतया सब्जी एवं रोजमर्रा की आवश्यकता का सामान व अन्य सामान आदि की बिक्री की जाती है।

- **थोक व्यापार एवं मण्डियाँ :**

नगर के मिश्रित बाजारों में अनेक वस्तुओं की थोक व्यापार की दुकानें हैं, जो मध्य क्षेत्र में स्थित हैं ; जिसके कारण इन क्षेत्रों में मध्यम एवं हल्के वाहनों का आवागम होता है । नगर में थोक व्यापार के संपादन में अपर्याप्त स्थान तक पहुँचने में कठिनाई एवं भीड़–भाड़ के कारण कठिनाई का सामना करना पड़ता है। वर्तमान में थोक फल एवं सब्जी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंडी स्टेशन के समीप मंडी प्रांगण में स्थित (कार्यरत) है ;, जबकि कृषि उपज मंडी खुरई मार्ग पर स्थित है। यह स्थान बहुत ही संकुलित है ; जिसके कारण यहाँ ट्रकों के आने जाने के लिये एवं माल को चढ़ाने – उतारने के लिये पर्याप्त स्थान उपलब्ध नहीं है। अनाज मंडी ट्रंक मार्ग पर तिलकगंज में लगभग 3.6 हेक्टेयर क्षेत्र में स्थित है। लोहे का सामान एवं भवन निर्माण सामगी से संबंधित दुकाने कटरा एवं गुजराती में स्थित हैं तथा आरा मशीन एवं इमारती लकड़ी का व्यापार मुख्यतः भोपाल मार्ग, भगवानगंज एवं तिलकगंज क्षेत्र में है। इन दुकानों द्वारा यातायात एवं पर्यावरण से संबंधित समस्यायें निर्मित होती है। पशुओं को साप्ताहिक हाट एवं घास मंडी राहतगढ़ बस स्टैण्ड के समीप खुले क्षेत्र में स्थित है। इस मंडी में घास बैलगाड़ियों में लाकर मार्ग पर एवं रेल्वे सीमा में संग्रहित किया जाता है। पशुबाजार एवं घास मंडी का वर्तमान स्थान इस प्रकार के कार्यकलापों के लिये अपर्याप्त है। यातायात एवं स्थान की दृष्टि से भी सुविधाजनक है।

नगर में (यातायात) परिवहन अभिकरण का कार्यालय मुख्यतः भगवानगंज एवं तिलकगंज में स्थित है, ट्रको की मरम्मत, माल उतारना, चढ़ाना, माल गोदाम, ट्रांसपोर्ट ट्रकों की पार्किंग आदि गतिविधियाँ ट्रकों को मार्गों पर खड़ा रखकर होने से यातायात हेतु बाधायें निर्मित होने के कारण यातायात नगर एवं मैकेनिक नगर की अत्यंत आवश्यकता है। कबाड़ी बाजार सुभाष कपड़ा मार्केट के समीप नया बाजार में स्थित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रस्तुंत तालिका में कुछ बाजार तथ्यों के विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो निम्नानुसार है –

सागर शहर के विशेष बाजार

व्यापारिक	वर्तमान स्थान या बाजार
अनाज, किराना, सूखे मेवे	गल्ला बाजार, भीतर बाजार कटरा
हार्डवेयर, इस्पात पेन्ट्स	नयाबाजार, गुजराती बाजार, भगवान गंज
कपड़ा बाजार	कटरा, तीनबत्ती क्षेत्र
सोना चांदी	सराफा बाजार (बड़ा बाजार)
सब्जी एवं फल	नया बाजार कटरा बाजार एवं मस्जिद से एवं विजय टॉकीज
कबाड़ी बाजार	नया बाजार एवं मकरोनिया तिगड्डा
जनरल स्टोर्स	कटरा बाजार, तीनबत्ती, बड़ा बाजार
स्टेशनरी, किताबें	कटरा बाजार
लकड़ी फर्नीचर	विजय टॉकीज रोड़, भगवानगंज, सदर बाजार
खेलका सामान	परकोटा
टी.व्ही., रेडियो, कूलर	कटरा बाजार, तीनबत्ती नमक मंडी
परिवहन अभिकरण	भगवानगंज, गुजराती बाजार एवं मध्यवर्ती क्षेत्र
पशु एवं घास मंडी	राहतगढ़ नाका
औद्योगिक	**वर्तमान स्थान या बाजार**
रिपेयर वर्कशाप	भगवानगंज तिलकगंज, बल्लभनगर
आरा मशीनें	भोपालमार्ग, भगवानगंज, स्टेशन
दाल एवं तेल मिलें	तिलकगंज, भगवानगंज कटरा
बीड़ी गोदाम	गुजराती बाजार, कटरा

स्त्रोत : सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के आधार पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ जलमल निकासी व्यवस्था :

• जल निकास

वर्षाकाल में जल प्रवाह प्रमुख रूप से उत्तर–पश्चिम में स्थित नाले द्वारा होता है; जबकि विभिन्न क्षेत्रों का एकत्रित पानी तालाब में विसर्जित होता है। शहर के मध्य तथा निचले क्षेत्र में भूमिगत तथा खुले नालों की व्यवस्था का अभाव हाने से पानी की निकासी नहीं हो पाती, जिससे मध्य तथा निचले क्षेत्र सामान्य वर्षा में भी जलमग्न हो जाते है ;जबकि ऊँचाई पर स्थित क्षेत्रों में पहाड़ियों के कारण पानी का निकास बहुत जल्दी हो जाता है।

• मल निकास :

नगर में भूमिगत मल विसर्जन प्रणाली उपलब्ध न होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों में स्थित भवनों का मल निकास, स्वतंत्र सेप्टिक टैकों के द्वारा किया जाता है। कुछ नई विकसित कॉलोनी में भूमिगत मल विसर्जन की व्यवस्था उन्हीं के क्षेत्र में ही की जा रही है, जो एक दीर्धकालीन व्यवस्था नहीं है। सागर नगर की भूमि के भौतिक स्वरूप को देखते हुये विभिन्न क्षेत्रों विभिन्न क्षेत्रों के लिये अलग–अलग मल विर्सजन योजना को क्रियान्वित करना आवश्यक है।

नगर मे वर्तमान में ठोस अवशिष्ट को विससिर्जत करने के लिये कोई व्यवस्था नहीं है। इसके साथ ही साथ कचरा डालने के लिये कोई ठोस स्थल ट्रेचिंग ग्राउण्ड के रूप में नियत नहीं है। इसी कारण नगर निगम द्वारा वर्तमान में कचरा, खुरई– भोपाल वायपास पर डाला जाता है ; जिसके कारण इस क्षेत्र का पर्यावरण प्रदूषित होता है। इसके लिये ट्रचिंग ग्राउण्ड प्रस्तावित करना अत्यंत आवश्यक है तथा दीर्धकालीन व्यवस्था के रूप में आधुनिक प्रबंधन की योजना क्रियान्वित कर ठोस अवशिष्ट का उपयोग, खाद के रूप में फलोद्यान/वनस्पति उद्यान/कृषि/नर्सरी आदि में किया जा सके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ **मनोरंजन के साधन :**

मनोरंजन के साधन मनुष्य के शारीरिक विकास एवं पर्यावरण विकास के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। वस्तुतः आज के वैज्ञानिक एवं आधुनिक युग में वैज्ञानिक एवं भौतिक सुविधाओं के कारण आम मनुष्य का जीवन मशीनी रूप धारण कर चुका है। इसके संतुलन का एकमेव उपाय मनोरंजन के साधन हो सकते है।

इस वर्ग में पार्क, गार्डन, स्टेडियम, बड़े खुले स्थान स्वीमिंग पूल, पिकनिक केन्द्र इत्यादि आते हैं। नगर के मास्टर प्लान में ऐसे क्षेत्र आरक्षित हैं जहाँ पर नगर के लोगों को नगरीय कौतूहल तथा तनाव से आराम मिल सके। वर्तमान नगर में दो छोटे उद्यान हैं, जो सिविल लाइन्स तथा कन्या महाविद्यालय के समीप स्थित है। इसके अलावा छावनी क्षेत्र में भी एक छोटा उद्यान स्थित है। लाख बंजारा तालाब के किनारे विकसित पट्टीनुमा उद्यान एवं तालाब, स्वयं नगर के मनोरंजन का साधन है। इसके अलावा नगर में एक स्टेडियम भी है जहाँ पर विभिन्न खेलकूद गतिविधियाँ होती हैं। ये स्थल नगर के सभी क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते एवं आकार में छोटे होने के कारण बहुत अधिक उपयोगी भी नहीं हैं। विश्वविद्यालय पहाड़ी के नीचे तिली मार्ग पर क्रीडांगन है। जहाँ पर अन्तर्विश्वविद्यालयीन प्रतियोगिता आयोजित की जाती है, लेकिन यह भी अपर्याप्त है। इसके अतिरिक्त गोपालगंज मार्ग पर पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय का भी एक खेल का मैदान है। पीली कोठी से बस स्टैण्ड मार्ग पर स्टेट बैंक के सामने खेल परिसर स्थित है ; जिसका निर्माण एवं विकास प्रगति पर है। राहतगढ़ जल प्रपात सागर से 36 किलोमीटर की दूरी पर सागर, भोपाल मार्ग पर स्थित है। राहतगढ़ से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जलप्रपात में 80 फीट की ऊँचाई से पानी नीचे गिरता है। यहाँ प्रसिद्ध राहतगढ़ दुर्ग स्थित है। यह एक अच्छा पिकनिक का स्थल है यहाँ वर्षाकाल में बहुत से लोग पिकनिक मनाने आते हैं।

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. Smailes, A. E. Geography of towns op. cit, p. 84 " It can be described in terms of physical forms and arragements of the spaces of buildings that compose the urban lands caps cape or townscape of, as it may be called, difference in either or both these intimalely related aspects or urban marphology, function and form, gives a basis for the recognition of urban regions.
2. सागर विकास योजना प्रारूप, पृष्ठ 11 – 15
3. सागर विकास योजना प्रारूप, पृष्ठ 17
4. जिला गजेटियर सागर 1977 पृष्ठ 407
5. Common wealth Universities Year Bood , 1991 p. 1812
6. Universities Handbood (A. I. U.) 1989, p. 339
7. वार्षिक प्रतिवेदन (डॉ. हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय सागर) 1990 – 91
8. सागर विकास योजना प्रारूप, पृष्ठ 17
9. वार्षिक प्रतिवेदन (डॉ. हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय सागर) 1990 – 91
10. सागर विकास योजना प्रारूप, पृष्ठ 18
11. सागर विकास योजना, प्रारूप पृष्ठ 18
12. रोजगार कार्यालय, सागर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

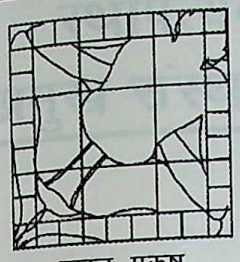

वास्तु पुरुष

पुरे चोपपुरे वाऽपि, वापीकूपजलाशयाः।
बालोद्यानं धर्मशाला, देवालय-सभालयाः॥ १०॥
चिकित्सा-सदनं चाऽपि, शिक्षा न्यायालयौ तथा।
यथास्थितेषु स्थानेषु, संस्थाप्याः जनताहितं॥ ११॥
मठसंकर-स्थानानि, श्मसानानि च दक्षिणे।
सुदूरे वसतिप्रासाद्भवेयुः स्वास्थ्य दृष्टितः॥ १२॥
(वास्तुविज्ञानम् १/१०-१२)

अध्याय षष्ठ

स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप सागर के प्रमुख संस्थानों एवं विभिन्न तथ्यों की स्थिति

- ब्रह्म स्थान
- आवास व्यवस्था
- चिकित्सा व्यवस्था
- शिक्षा क्षेत्र
- जलव्यवस्था
- पूजा स्थल
- जलमल निकासी व्यवस्था
- मनोरंजन के स्थान
- प्रशासनिक व्यवस्था
- औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

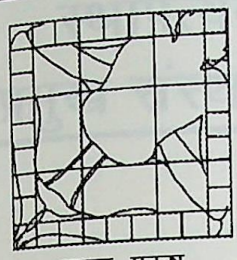

वास्तु पुरुष

पुरे चोपपुरे वाऽपि, वापिकूपजलाशयाः।
बालोद्यानं धर्मशाला, देवालय-सभालयाः॥ १०॥
चिकित्सा-सदनं चाऽपि, शिक्षा न्यायालयौ तथा।
यथाचितेषु स्थानेषु, संस्थाप्याः जनताहितं॥ ११॥
मलसंकर-स्थानानि, श्मसानानि च दक्षिणे।
सुदूरे वसतिप्रासाद्भवेयुः स्वास्थ्य दृष्टितः॥ १२॥
(वास्तुविज्ञानम् १/१०-१२)

अध्याय षष्ठ

स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप सागर के प्रमुख संस्थानों एवं विभिन्न तथ्यों की स्थिति

- ब्रह्म स्थान
- आवास व्यवस्था
- चिकित्सा व्यवस्था
- शिक्षा क्षेत्र
- जलव्यवस्था
- पूजा स्थल
- जलमल निकासी व्यवस्था
- मनोरंजन के स्थान
- प्रशासनिक व्यवस्था
- औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तों के अनुरूप सागर के प्रमुख संस्थानों प्रतिष्ठानों एवं विभिन्न तत्थों की स्थिति

नगर मनुष्य की सामाजिक, आर्थिक एवं वैज्ञानिक प्रगति के प्रतीक होते हैं ; किंतु इन नगरों के विकास के साथ – साथ इनमें अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। वर्तमान में नगरों का विकास अनियोजित, अनियमित एवं अनियंत्रित ढ़ंग से होता है। सामाजिक सेवाओं ,नगरीय सुविधाओं का अभाव एवं अन्य कठिनाइयों के फलस्वरूप नगरीय जीवन में आर्थिक – सामाजिक संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। नगरों में तेजी से हो रही जनंसख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप नगरों के आकर में वृद्धि के साथ–साथ नगरीय समस्याओं में भी तीव्रगति से वृद्धि होती है ; क्योंकि नगरीय विकास जिस गति से होता है, उस गति से नगरीय सुविधाएं उन क्षेत्रों तक नहीं पहुॅच पाती । सभी बड़े नगरों में मलिन बस्तियों की उपस्थिति आवासीय भूमि का अभाव, कारखानों में कार्य संबंधी असंतोषजनक स्थितियाँ, बेरोजगारी की समस्या, मनोरंजन तथा अन्य सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। सामजिकता एवं शिष्टाचार में भी कमी दिखाई देती है। इसीलिये बड़े नगरों की समस्याओं से संबंधित मम्फोर्ड का मत है – "कि एक बड़ा नगर आर्थिक दृष्टि से अवांछनीय, राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर, जैविक दृष्टि से पतन की दिशा में उन्मुख तथा सामाजिक दृष्टि से असंतोषजनक होता है।[1] ये समस्त समस्यायें किसी न किसी रूप में एक दूसरे से संबंधित हैं। यही कारण है, कि वर्तमान समय में प्रत्येक स्तर पर नगरीय जीवन को इन समस्याओं से मुक्त करने के प्रयत्न किये जा रहे है। आज के भौतिकवादी युग में मानव जीवकोपार्जन का एकमात्र यंत्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बनकर रह गया है। इसीलिये इसका ऐसा विकल्प खोजना आवश्यक हो गया है, जिससे मानव भौतिक विकास के साथ–साथ आध्यात्मिक विकास कर अधिकाधिक समय सुख शांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सके । हमारे भारतीय मनीषियों ने अपने अथक परिश्रम एवं अनुभव के द्वारा एक ऐसे ही वेद का अविष्कार किया वह है ,स्थापत्य वेद।

स्थापत्यवेद के सिद्धान्त समस्त प्रकार के वास्तु रचनाओं पर सार्वभौमक रूप से लागू होते है।[2] फिर चाहे वह किसी की झोपड़ी हो, भवन हो, राजमहल हो, गाँव हो, नगर हो, राज्य हो, राष्ट्र हो या विश्व हो। जिस प्रकार स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार किसी भवन आदि का निर्माण अधिकाधिक प्राकृतिक सहयोग को ध्यान में रखकर किया जाता है, ठीक उसी प्रकार किसी भी नगर का नियोजन करते समय भी प्राकृतिक शक्तियों एवं उनके सहयोग का समुचित ध्यान में रखा जाता है; क्योकि भवन नगर की इकाई है, जिसके समूह से नगर व ग्राम आदि बनते है। यदि हम ग्राम व नगर की इकाई को प्राकृतिक व्यवस्था के अनुकूल बना लें तो प्राकृतिक प्रदूषण से स्वयं को बचा सकते है; जिससे नगरवासी नगर में सुखशांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर नगर का चहुमुँखी विकास करने में अपना योगदान दें। नगर में स्थापित विभिन्न कार्य क्षेत्रों जैसे – आवासीय, औद्योगिक व्यापारिक आदि। एवं प्राकृतिक तत्वों जैसे धरातल, आकार एवं विस्तार अपवाह तंत्र, जलवायु , प्राकृतिक वनस्पति, खनिज आदि का नगरवासियों के कार्यकलापों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है; जिससे मानव जीवन एवं कार्यक्षमता प्रभावित होती है; क्योंकि समस्त प्रकृति एवं मानव शरीर का निर्माण पंचतत्वों से हुआ है इसीलिये प्राकृतिक तत्वों का प्रभाव मानव कार्यकलाप पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से पड़ता है। स्वाभाविक हैं, इस प्राकृतिक प्रभाव को भारतीय मनीषी एवं भूगोलवेत्ता स्वीकार्य करते है। वास्तुकला के सिद्धान्त भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप बनाये गये हैं और यह ध्यान रखा गया है, कि प्राकृतिक स्त्रोंतों द्वारा लोक कल्याण हेतु ऊर्जा को समुचित ढंग से ग्रहण करते हुये भवन में इसका उपयोग किस प्रकार किया जा सके। वस्तुतः प्राकृतिक स्त्रोंतों से सूक्ष्म से सूक्ष्मतम शक्ति को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करने के लिये वास्तुनियमों का प्रतिपादन किया गया है, जिससे इनका सर्वाधिक उपयोग किया जा सके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर के मानचित्र को देखकर यह स्पष्ट होता है, कि नगर का ईशान कोण बढ़ा हुआ है , जो कि वास्तु सिद्धान्तानुसार अनुकूल प्रभाव डालता है, अर्थात् शुभ फलदायक है, किंतु नगर का आग्नेय , नैऋत्य एवं वायव्य कोण कटा हुआ है, जो कि अशुभ फलदायक है। सागर नगर की आकृति कटोरे के समान है। कहने का तात्पर्य है, कि सागर का मध्यभाग नीचा एवं चारों ओर का भाग ऊँचा है, जो कि नगर की प्रगति के लिये उपयुक्त नहीं है।

❑ **ब्रह्म स्थान** :

वास्तुसिद्धान्तानुसार नगर का मध्य भाग खुला होना चाहिए ; क्योकि खुले स्थान से नैसर्गिक ऊर्जाओं का प्रवाह निर्वाध रूप से होता रहता है। इसीलिये प्राचीनतम भवनों/नगरों के मध्य भाग को खुला या हल्का रखने की प्रथा प्रचलित थी। वास्तुनियमानुसार मध्यभाग में किसी भी प्रकार का निर्माण या गड्ढ़ा वर्जित माना गया है। जबकि यदि हम वर्तमान समय में किसी भी नगर को देखें, तो पायेंगें कि नगर के मध्यभाग में सबसे अधिक निर्माण एवं सुविधायें होती हैं। नगरों में इस प्रकार की व्यवस्था व्यक्ति की सुविधानुसार की जाती है, जो कि वास्तु सिद्धान्तानुसार विपरीत प्रभाव डालने वाली होती है। सागर नगर भी इससे अछूता नहीं है। नगर के मध्यभाग में तालाब , कटरा गुजराती बाजार, तीनबत्ती ,बड़ा बाजार, बस स्टैण्ड , गर्ल्स कॉलेज एवं पार्क आते हैं। जैसा कि पहले बताया है, कि इस नगर की आकृति कटोरे के समान है। इसीलिये ब्रह्म स्थान का नीचा होना नगर की प्रगति में बाधक है। संपूर्ण नगरीय क्षेत्र का ढ़ाल मध्यभाग की ओर है, जो कि वास्तुदोष है। यह नगर को प्रगति के स्थान पर गर्त की ओर ले जाने वाला है।

❑ **आवास व्यवस्था** :

भारत में वैदिक काल से ही वर्णानुसार आवास व्यवस्था रही है। इसी आधार पर स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धन्तानुरूप आवास व्यवस्था का निर्धारण वर्णानुसार किया गया है, जिससे नगर में निवास करने वाले समस्त वर्ण के व्यक्तियों का चहुमुँखी विकास होता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। प्राचीनकाल में वर्ण का निर्धारण कर्म के आधार पर किया जाता था ; जबकि वर्तमान समय में वर्ण का आशय जन्म से लगाया जाता हैं। यहाँ पर वर्ण के निर्धारण का आशय व्यक्ति के जीवकोपार्जन के लिये किये जाने वाले कर्म से है अर्थात् यहाँ पर व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले कर्म की प्रकृति के आधार पर ही व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण किया गया है। हमारे वैदिक कालीन समाज को प्रमुख चार वर्णो में बॉटा गया है –

1. **ब्राह्मण :**

इस वर्ग में समाज के वे व्यक्ति आते हैं जो पूजा, शिक्षा एवं धर्म (पंडित शिक्षक) आदि से संबंधित कार्यो से जीवकोपार्जन करते हैं।

2. **क्षत्रिय :**

इस वर्ग में समाज के वे व्यक्ति आते हैं जो समाज की रक्षा (सेना व पुलिस) आदि से संबंधित कार्यो से जीवकोपार्जन करते है।

3. **वैश्य :**

इस वर्ग में समाज के वे व्यक्ति आते हैं, जो उद्योग , व्यापार एव वाणिज्य आदि संबंधित कार्यो से जीवकोपार्जन करते हैं।

4. **शूद्र :**

इस वर्ग में समाज के निम्न आय वर्ग के व्यक्ति आते हैं, इस वर्ग में मजदूर वर्ग एवं दैनिक वेतन भोगी व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है।

सागर नगर में गौरनगर, सिविल लाइन्स, जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय परिसर, महिला पॉलीटेकनिक महाविद्यालय परिसर (तिली रोड), इंजीनियरिंग महाविद्यालय परिसर, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, परिसर एवं शासकीय विद्यालय परिसर (बस स्टैण्ड),चकराघाट, सिद्धधाम एवं पीलीकोठी आदि क्षेत्रों में ब्राह्मण वर्ण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के व्यक्तियों के आवासीय परिसर हैं। इसके अलावा क्षत्रिय वर्ण के आवासीय परिसरों में नगर निगम सीमा के बाहर स्थित छावनी क्षेत्र, सागर जेल एवं सिविल लाइन्स में पुलिस के आवासीय परिसर, सेन्ट्रल कोतवाली, पुलिस चौकी, गोपालगंज थाना, मोतीनगर थाना, कटरा में स्थित थाना, केन्टोमेंट थाना, परकोटा (पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय) आदि हैं। इसके अतिरिक्त वैश्य वर्ण से संबंधित व्यक्ति कटरा बाजार, गुजराती बाजार, सुभाष मार्केट, जवाहरगंज, भगवानगंज, तिलकगंज आदि में निवास करते है। शूद्र वर्ण से संबंधित व्यक्तियों के आवास काकागंज, केशवगंज, भगवानगंज, मोतीनगर, विट्ठलनगर, सुभाषनगर, अंबेडकर, संत कंवरराम, संत रविदास, संत कबीर नगर आदि क्षेत्रों में है। स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार नगर की उत्तर दिशा में ब्राह्मण वर्ण, पूर्व दिशा में क्षत्रिय वर्ण, दक्षिण दिशा में वैश्व वर्ण एवं पश्चिम दिशा में शूद्र वर्ण के व्यक्तियों के आवास होना चाहिए। नगर निगम सीमा के पूर्व में गौरनगर, ईशान में जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय परिसर, महिला पॉलीटेकनिक महाविद्यालय परिसर, शासकीय विद्यालय परिसर बस स्टैण्ड, पीली कोठी आदि स्थित हैं। नगरनिगम सीमा के बाहर ईशान कोण में ही इंजीनियंरिंग महाविद्यालय एवं उत्तर में शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, वायव्य में औद्योगिक प्राशिक्षण केन्द्र स्थित हैं। नगर निगम सीमा के बाहर स्थित शासकीय विज्ञान महाविद्यालय जो कि वर्तमान में निर्माणधीन है, वर्णानुसार आवास व्यवस्था के अनुकूल है। शेष समस्त आवासीय क्षेत्र वर्णानुसार आवास व्यवस्था के प्रतिकूल हैं इसके अतिरिक्त क्षत्रिय वर्ण के आवासीय परिसर नगरनिगम सीमा से बाहर स्थित छावनी क्षेत्र, सागर जेल, पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय सिविल लाइन्स में स्थित पुलिस आवासीय परिसर, गोपालगंज थाना आदि नगर के ईशान कोण में स्थित हैं एवं सेन्ट्रल कोतवाली, कटरा में स्थित थाना आदि नगर की उत्तर दिशा में है, जो कि स्थापत्यवेद के प्रतिकूल हैं। इसी प्रकार वैश्य वर्ण से संबंधित व्यक्ति नगर के उत्तरी भाग में निवास करते हैं ,जो कि वास्तुनियमों के प्रतिकूल है। इसी प्रकार शूद्र वर्ण से संबंधित आवासीय परिसरों में भी वास्तुदोष दृष्टिगोचर होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहने का तात्पर्य है, कि सागर नगर की आवासीय व्यवस्था अत्यल्प वास्तु नियमों का पालन करती है । वास्तुनियमों के प्रतिकूल आवासीय व्यवस्था के कारण ही नगर का विकास जिस गति से होना चाहिए, उस गति से नहीं हो पा रहा है।

❑ **चिकित्सा व्यवस्था** :

वर्तमान में नगरों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक एवं सामाजिक प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण मनुष्यों में रोग प्रतिरोधक क्षमता दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है; जिससे मनुष्यों में नित नये रोग जन्म ले रहें हैं। रोगों के जन्म से नगरीय मनुष्य की औसत आयु में निरन्तर गिरावट दृष्टिगोचर हो रही है। इसी कारण नगरों में सुविधायुक्त चिकित्सालयों की आवश्यकता महसूस की जाती है। चिकित्सालय दो प्रकार के होते है। छोटे चिकित्सालयों को डिस्पेंसरी भी कहा जाता है। डिस्पेंसरी में रोगी देखकर दवा दे दी जाता हैं, परंतु बड़े चिकित्सालयों में रोगियों के रहने के लिये भी स्थान की व्यवस्था होती हैं। यहां चिकित्सा व्यवस्था से आशय बड़े चिकित्सालयों से है। इसीलिये नगरों में चिकित्सालयों की व्यवस्था इस प्रकार होना चाहिए, कि प्रत्येक नगरवासी को इसका लाभ उसकी स्थिति एवं परिवेश के अनुरूप शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त हो सके तथा इसका दुष्प्रभाव आसपास के पर्यारवरण पर न पड़े एवं रोगी शीघ्र स्वस्थ्य हो जाये।

स्थापत्यवेद के सिद्धान्तनुसार चिकित्सालय नगर की वायव्य दिशा में (उत्तर–पश्चिम) होना शुभ माना गया है। वायव्य दिशा स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से सर्वाधिक उपयुक्त है। इसका कारण यह है, कि भारतीय स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों में भारतीय भौगोलिक स्थिति का विशेष ध्यान रखा गया हैं। विश्व के विभिन्न भागों में स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों में आंशिक रूप से अंतर होने का कारण यही हैं। सामान्यतया भारतवर्ष में वायुप्रवाह उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की ओर रहता है; जिसके कारण आग्नेय कोण की अपेक्षा वायव्य कोण में तापमान कम होता है। इसीलिये रोगी व्यक्ति को स्वस्थ्य वातावरण (जैसे उचित तापमान, स्वच्छ वायु, प्रकाश आदि) उपलब्ध कराना आवश्यक हो जाता है, इसी दृष्टि से स्थापत्यवेद में वायव्य दिशा में चिकित्सालय रखे जाने का प्रावधान है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर में जिला चिकित्सालय नगर की पूर्व दिशा में एवं डफरिन चिकित्सालय उत्तर दिशा में स्थित है। नगर की वायव्य दिशा में खुरई मार्ग पर इंदिरा गाँधी नेत्र चिकित्सालय स्थित है। जहाँ एक ओर नगर में स्थित जिला चिकित्सालय स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों के अनुकूल है; क्योंकि अस्पताल का मध्यभाग खुला हुआ है ; जिसमें वृक्षादि लगे हुये है, किसी भी वास्तु का मध्यभाग या ब्रह्म भाग खुला होना शुभ फलदायक होता है।अस्पताल का मुख्य दरवाजा पश्चिम दिशा में है। पार्किंग पश्चिम दिशा में होती है। अस्पताल के सामने अर्थात् पश्चिम दिशा में ही पूर्व मुखी मंदिर हैं ऊपर पानी की टंकी पूर्व दिशा में है। अस्पताल से थोड़ा हटकर दक्षिण दिशा में कार्यालय स्थित है। लंका वार्ड अर्थात् I.C. C. U. अस्पताल के पूर्वी भाग में स्थित पूर्व में पानी की टंकी एवं दक्षिण दिशा में कार्यालय स्थित होना शुभदायी है। कहने का तात्पर्य है, कि जिला चिकित्सालय वास्तु सिद्धान्तों के अनुकूल है। जिला चिकित्सालय वास्तु सिद्धान्तों के अनुरूप होने के कारण ही यह जिले का प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय चिकित्सालय है। दूसरी ओर डफरिन चिकित्सालय है। यह एक ऐतिहासिक इमारत है यह इमारत वास्तु सिद्धान्तों के प्रतिकूल है, यह एक सीढ़ीनुमा इमारत है यह इमारत उत्तर दिशा में ऊंची एवं दक्षिण दिशा में नीची है। कहने का अर्थ है, कि इस इमारत का ढ़ाल उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर है, जो कि एकदम गलत है; क्योंकि वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तारूप भूमि या भवन का ढ़ाल दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की ओर होना शुभ माना जाता है। ऐसा इसलिये कि प्रातः कालीन सूर्य की किरणें भवन पर पड़ने से उस स्थान में निवास करने वाले लोग ऊर्जावान, रोगमुक्त दीर्धायु होते है। उत्तर दिशा में ऑपरेशन थियेटर एवं ईशान में पानी की टंकी फलदायक है। इसके दक्षिण भाग में कार्यालय है डफरिन में डिलेवरी होती है, जो कि परिसर के पूर्वी भाग में स्थित दक्षिणमुखी भवन है शुभ है।

इस ऐतिहासिक भवन का निर्माण ढ़ाल उत्तर से दक्षिण दिशा में होने के कारण वर्तमान में यह जीर्णशीर्ण अवस्था में है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ **शिक्षा क्षेत्र :**

आजादी के पूर्व से ही सागर नगर को शिक्षा के क्षेत्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। संपूर्ण राष्ट्र में नगर में स्थित सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण संस्थान की शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान है। इसके अतिरिक्त महिला महाविद्यालय, महिला पॉलीटेकनिक महाविद्यालय, इंजीनियरिंग महाविद्यालय, औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र एवं कई विद्यालय स्थित है। सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्रदेश का प्रचीनतम् विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय नगर के पूर्व में पथरिया पहाड़ी पर स्थित है इस विश्वविद्यालय का अभिन्यास कलकत्ता के डॉ. ए. कारवोनी वास्तुविद् द्वारा बनाया गया था। पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय राज्य में स्थित संस्थानों में से एक है। यह महाविद्यालय नगर के उत्तर में स्थित है। इसके अलावा महिला महाविद्यालय नगर के ईशान में स्थित है। महिला पॉलीटेकनिक महाविद्यलाय पूर्व दिशा, में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र नगर की वायव्य दिशा में स्थित है। गर्ल्स स्कूल, बालक स्कूल एवं केन्द्रीय महाविद्यालय नगर की ईशान दिशा में स्थित हैं। इंजीनियरिंग महाविद्यालय नगर से 8 किलीमीटर दूरी पर ईशान दिशा में स्थित है।

स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार अध्ययन केन्द्र या शिक्षा क्षेत्र का सर्वोत्तम स्थान उत्तर दिशा में माना गया है।[3] इसके अलावा पूर्व एवं ईशान में विद्या केन्द्र हो सकता है।[4] उत्तर , पूर्व एवं ईशान ज्ञानवर्द्धक दिशायें कहलाती हैं। इसीलिये नगर के उत्तर पूर्व एवं ईशान में विद्यास्थान या अध्ययन केन्द्र होना चाहिए। इन दिशाओं में विद्यालय होने से विद्याबल बढ़ता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर में स्थित शैक्षणिक केन्द्रों की स्थिति वास्तुशास्त्रनुरूप है। विद्यार्थियों को चाहे वे किसी भी स्तर के हों अपनी पढ़ाई करते समय इस तरह वैठना चाहिए कि उनका चेहरा ईशान दिशा की ओर रहे। इससे उनका ध्यान पढ़ाई की ओर लगेगा तथा उन्हें सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा केन्द्रों की वास्तुनुकूल स्थिति के कारण ही नगर को शिक्षा के क्षेत्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ **जलव्यवस्था** :

जल प्रकृति प्रदत्त पंचमहाभूतों में से एक है तथा मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता है। जल जीवन का प्रतीक है, नेत्रों को प्रिय लगता है तथा मन को हर्षित करता है। बाहरी हवा में गर्मी को दूर कर नमी पैदा करता है एवं मनुष्य के मन के अंदर की उद्विग्नता को दूर कर मानव को मानसिक शीतलता प्रदान करता है। नगर एवं भवन निर्माण के पूर्व एवं पश्चात् तक तथा मानव जन्म से मृत्यु तक जल की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि अधिकांश प्राचीन सभ्यतायें जल स्त्रोंतों के समीप विकसित हुई है, जिसमें सिंधु घाटी की सभ्यता रोम की सभ्यता आदि प्रमुख हैं। किसी भी गांव, बस्ती, शहर या आवासीय कालोनी अथवा निजी भवन के आग्नेय कोण नैऋत्य कोण अथवा वायव्य कोण में जल स्थान (कुआँ या वाटर टैंक) नही बनवाना चाहिए क्योंकि ऐसा कुंआ /नदी / घर नगर के सदस्यों की जान को खतरनाक, भयावाह एवं भूतो प्रेतों का स्त्रोत बन जाता है। अतः नगर में जलापूर्ति की उचित व्यवस्था होना चाहिए, क्योंकि जल जहाँ एक ओर मानव जीवन का आधार है, वहीं दूसरी ओर जल प्रदूषित होने पर जीवन के लिये घातक सिद्ध हो सकता है। इसीलिए स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार जलपूर्ति व्यवस्था उत्तर पूर्व दिशा (ईशान) में उत्तम मानी गई है। नगर में जलापूर्ति वर्तमान में नगर से 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बेवस नदी पर स्थित संग्राहक जलाशय ,द्वारा की जाती है, जो कि नगरीय सीमा के बाहर, किंतु नगर की पूर्व दिशा में स्थित है एवं नगर का वाटर फिल्टर भी नगर की पूर्व दिशा में पथरिया पहाड़ी पर पूर्व दिशा में स्थित है, जो कि नगर पर अनुकूल प्रभाव डालने वाला है।

❑ **पूजा स्थल** :

सागर नगर के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश मंदिर नगर के उत्तर, ईशान एवं पूर्व दिशा में स्थित है। स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार पूजा क्षेत्र ईशान, पूर्व एवं उत्तर दिशा होना शुभ माना गया है। नगर में अधिकाशं संतोषी, शांतिप्रिय एवं धार्मिक प्रवृत्ति के लोग निवास करते हैं। इसका कारण नगर के अधिकाशं मंदिरों का उत्तर,पूर्व एवं ईशान में स्थित होना है, जो कि स्थापत्यवेदानुरूप है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ जलमल निकासी व्यवस्था :

नगरीय मनुष्य को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने के लिए एवं उत्तम स्थास्थ्य के लिए नगर में जलमल निकासी की उचित व्यवस्था अत्यंत आवश्यक हैं। नगर में जलमल निकासी व्यवस्था का पर्याप्त अभाव है वर्षाकाल में जल प्रवाह मुख्य रूप से उत्तर पश्चिम में स्थित नाले द्वारा होता है; जबकि विभिन्न क्षेत्रों का प्रदूषित जल नगर के उत्तर एवं मध्यभाग में स्थित सागर तालाब में होता हैं। इसका प्रमुख कारण नगर में भूमिगत एवं खुले नालों की व्यवस्था न होना है एवं चारों ओर पहाड़ियों के कारण पानी का निकास शीघ्र संभव नहीं होता है। नगर में मल विसर्जन स्वतंत्र टैंकों के द्वारा किया जाता है, जो कि एक दीर्धकालीन व्यवस्था नहीं हैं। नगर में ठोस अवशिष्ट पदार्थ का विसर्जन नगर निगम सीमा से दूर खुरई भोपाल मार्ग पर पश्चिम दिशा में होता है।

वास्तुसिद्धान्तानुसार जलमल व्यवस्था नगर के उत्तर एवं वायव्य दिशा में होना उपयुक्त होता है। सागर नगर में मध्य भाग के जल का विसर्जन वास्तुनियमों के प्रतिकूल लेकिन पर्यावरणीय दृष्टि से प्रतिकूल हैं; क्योंकि जो गंदा पानी सागर तालाब में विसर्जित होता है वह संपूर्ण तालाब के जल को प्रदूषित कर देता है; क्योंकि तालाब के आसपास निवास करने वाले लोग इस जल का उपयोग अपने दैनिक कार्यो के लिए करते हैं। इसी प्रकार वर्षा का जल जो कि मुख्य रूप से उत्तर पश्चिम में स्थित नाले द्वारा होता है, वास्तुनुकूल है। मल विसर्जन एवं ठोस अवशिष्ट पदार्थो का विसर्जन भी स्थापत्य वेद के सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं है।

❑ मनोरंजन के साधन :

वर्तमान में नागरिकों का उद्देश्य अधिकाधिक धनोपार्जन कर वैभवपूर्ण जीवन तक ही सीमित रह गया हैं। मानव का संपूर्ण विकास केवल शारीरिक एवं आर्थिक विकास तक ही सीमित हो गया है; जिससे जीवन के अन्य विकास जैसे– सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आदि इससे दूर होते जा रहे हैं। इसी कारण वर्तमान में नगरीय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवन मात्र जीवकोपार्जन तक ही सीमित हो गया है। वर्तमान मे धनप्राप्ति ही संपूर्ण सुख एवं आनंद का पर्याय बन गया है। इसीलिये वर्तमान में नगरीय जीवन के लिये नगर के समस्त आयु वर्ग के व्यक्तियों को मनोरंजन के उत्कृष्ट साधनों की उपलब्धता एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है; जिससे मनुष्य न केवल शारीरिक एवं आर्थिक विकास करें, वरन् आधिदैविक, आध्यात्मिक एवं आधिभौतिक विकास कर अपना चहुँमुखी विकास कर सके। मनुष्य के शारीरिक एवं पर्यावरणीय विकास के लिये मनोरंजन के साधन अत्यंत महत्वपूर्ण होते है। इस वर्ग में गार्डन, पार्क स्टेडियम, खुले स्थल, पिकनिक केन्द्र एवं स्वीमिंग पूल आदि आते है। मनोरंजन स्थलों को नगर का फेफड़ा कहा जाता है, जिस प्रकार फेफड़े हृदय का शुद्ध वायु प्रदान कर शरीर को नवस्फूर्ति एवं नवजीवन प्रदान करते हैं ,उसी प्रकार मनोरंजन के साधन मानव जीवन को सकारात्मकता प्रदान करते हैं। आज की भागदौड़ व उबाऊ जिन्दगी से थका हुआ नीरस व्यक्ति जब इन मनोरजंन के स्थलों में पहुँचता है, तो अपने को तनावमुक्त महसूस करता है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर के मास्टर प्लान में ऐसे क्षेत्र आरक्षित हैं, जहाँ पर नगरीय व्यक्तियों को नगरीय कोतूहल एवं तनाव से आराम मिल सके। वर्तमान में नगर में दो छोटे उद्यान स्थित है। एक उद्यान कन्या महाविद्यालय के सामने एवं एक उद्यान सिविल लाइन में स्थित है। इसके अतिरिक्त स्टेडियम कन्या महाविद्यालय के समीप स्थित है। इसके साथ–साथ छावनी क्षेत्र में एक छोटा उद्यान स्थित है, जो कि नगर के ईशान में स्थित है। इसके अतिरिक्त नगर में तालाब के किनारे विकसित पट्टीनुमा उद्यान है। नगर के पूर्व में विश्वविद्यालय पहाड़ी के नीचे तिली मार्ग पर क्रीडांगन है। सागर नगर के ईशान कोण में ही पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय का भी एक क्रीडांगन एवं पीली कोटी से बस स्टैण्ड मार्ग पर स्टेट बैंक के सामने खेल परिसर स्थित है। स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार नगर का अधिकांश खुला क्षेत्र या मनोरंजन के साधन उत्तर एवं पूर्व दिशा में होना चाहिए। अध्ययन से यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, कि नगर के लगभग सभी मनोरंजन स्थल ईशान एवं पूर्व में स्थित हैं, जो कि नगरीय विकास पर अनुकूल–प्रभाव डालते हैं,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिससे नगरवासी अधिकाधिक मानसिक शांति का अनुभव करते है। इसीलिये यह नगर शांतिप्रिय नगर है।

❑ **प्रशासनिक व्यवस्था** :

किसी भी नगर के सुनियोजित विकास के लिये वहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योकि सुनियोजित प्रशासनिक व्यवस्था के बिना नगर बिना मस्तिष्क के शरीर के समान हैं। जिस प्रकार संपूर्ण शरीर का संचालन मस्तिष्क द्वारा होता हैं उसी प्रकार संपूर्ण नगर में संचालित समस्त कार्यो एवं नियमों कानूनों का आधार वहाँ का प्रशासन तंत्र होता है। स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार नगर का मध्यवर्ती भाग प्रशासकीय कार्यालयों के लिये सर्वोत्तम कहे गये है।[5] इसके अलावा वास्तुशास्त्रीय सिद्धातों में नगर में प्रशासनिक कार्यालय के लिए पूर्व का मध्य क्षेत्र, पश्चिम का मध्यक्षेत्र एवं उत्तर व दक्षिण का मध्यक्षेत्र उपयुक्त माना गया है। ईशान में औद्योगिक क्षेत्र का हृदय स्थल प्रशासनिक कार्य के लिये अनुपयुक्त होता है। यदि इन क्षेत्रों में प्रशासनिक कार्यालय बनाया जाता है, तो हमेशा गलत निर्णयों का शिकार होना पड़ता है एवं तनाव बना रहता है। प्रशासन से असंतुष्ट होकर कर्मचारीगण हड़ताल करके कंपनी को बंद भी करवा देते है।

सागर राजस्व संभाग का संभागीय मुख्यालय होने के कारण, नगर में संभागीय एवं जिला स्तर के अनेक शासकीय एवं अर्द्ध शासकीय कार्यालय स्थित हैं। इसके साथ–साथ नगर में केन्द्र शासन उपक्रम एवं स्वायत्त संस्थाओं के भी कार्यालय स्थित है। अधिकाश कार्यालयों का एक ही स्थान पर स्थित होना नगर का अहोभाग्य है। यहाँ तक कि विश्वविद्याालय कार्यालय, पुलिस लाईन, छावनी क्षेत्र में स्थित कार्यालय, सिविल लाईन एवं गोपालगंज में स्थित कार्यालय भी जिला कार्यालय के समीप स्थित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है , कि नगर के समस्त कार्यालय सागर निवेश क्षेत्र सीमा से नगर के मध्य भाग में स्थित हैं एवं नगर निगम सीमा से नगर के ईशान कोण के मध्य एवं दक्षिणी भाग में स्थित हैं, जो कि वास्तुनियमानुसार है। यह नगर की प्रशासनिक व्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव डालने वाले

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। इसका सर्वोत्तम उदाहरण नगर में स्थित पुलिस प्रशिक्षण संस्थान एवं उसका कार्यालय, विश्वविद्यालय व उसका कार्यालय एवं छावनी क्षेंत्र में स्थित कार्यालय हैं, जो अपनी अलग पहचान बनाये है। कहने का तात्पर्य है, कि प्रशासनिक कार्यालय हेतु निर्दिष्ट दिशा एवं कोण में स्थित स्थलों में निर्माण किया जाना चाहिए। सर्वोच्च अधिकारी के बैठने की व्यवस्था हर हाल में दक्षिण पश्चिम एवं दक्षिण पूर्व में होना चाहिए। तकनीकि सहायक एवं लेखाकार आदि को उनसे पूर्व, उत्तर या दक्षिण–पूर्व की ओर बैठाये जाने चाहिए। विक्रय अधिकारी, चौकीदार एवं अस्थाई कर्मचारी आदि के बैठने का स्थान कार्यालय के उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में होना चाहिए।

❑ औद्योगिक एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति :

सागर नगर औद्योगिक एवं व्यापारिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। नगर के उत्तरी भाग में स्थित कटरा बाजार, गुजराती बाजर, जवाहर गंज, सुभाष मार्केट आदि थोक एवं फुटकर व्यापार का केन्द्र है। जहां पर मामूली सुई से लेकर फ्रिज तक का समस्त समान मिलता है। वर्तमान में थोक फल एवं सब्जी मंडी नगर के उत्तर में स्टेशन के पास स्थित मंडी प्रांगण में स्थित है, जो कि वास्तु अनुकूल है ; क्योंकि स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार नगर के ईशान एवं उत्तर दिशा में फल सब्जी एवं किराना आदि स्थित होना चाहिए ।[6] इसका कारण यह है , कि अन्य दिशाओं की अपेक्षा ईशान एवं उत्तर दिशा में तापमान कम होता है, जिससे ये वस्तुएं शीघ्र खराब नहीं होती है। कृषि उपज मंडी नगर के वायव्य कोण में खुरई मार्ग पर स्थित है, जो कि वास्तुसिद्धान्तों के अनुकूल है। नगर में कृषि से संबंधित व्यवसाय में प्रगति होने का कारण मंडी की अनुकूल वास्तुस्थिति होना है। आभूषण, रत्न आदि से संबंधित व्यवसाय नगर में उत्तर दिशा में शुभ माना जाता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर में स्थित बड़ा बाजार नगर की उत्तर दिशा में है, जहाँ सोने व चांदी से संबंधित आभूषणों की दुकाने हैं। नगर में उत्तम कोटि के सोने व चांदी के आभूषण मिलने का कारण यहाँ की अनुकूल वास्तु स्थिति है। लोहे से संबंधित वस्तुओं के निर्माण जैसे टैक्टर, अलमारी, मशीनरी आदि नगर के दक्षिण–पश्चिम कोण में करना शुभ माना गया है, नगर की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तर दिशा में भगवानगंज एवं तिलक गंज में लोहे से संबंधित व्यवसाय होता है, जो कि स्थापत्य वेद में वार्णित सिद्धान्तों के प्रतिकूल होने के कारण विकास की गति मंद है। औषधि से संबंधित व्यवसाय–दवाईयाँ, मेडिकल स्टोर आदि नगर की उत्तर और ईशान के मध्य के खंड में करना उपयुक्त होता है। नगर में तीनबत्ती से लेकर गौरमूर्ति चौराहा तक अनेक मेडीकल स्टोर्स है, जो कि अच्छी स्थिति में हैं इसी स्थान पर स्थित लाल दुकान यहाँ का माना हुआ मेडीकल स्टोर है जहाँ सभी प्रकार की दवाईयाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती है इसका कारण दुकान की अनुकूल वास्तुस्थिति है। सागर नगर निगम सीमा से दूर ईशान कोण में सिद्धगुवाँ औद्योगिक क्षेत्र स्थापित है। वास्तुसिद्धान्तानुसार नगर की पश्चिम–दक्षिण दिशा में फैक्ट्री या औद्योगिक क्षेत्र का होना शुभफलदायक होता है। नगर में स्थापित औद्योगिक क्षेत्र वास्तु सिद्धान्तों के प्रतिकूल है, इसीलिए यह नगर औद्योगिक रूप से पिछड़ा है।

❖ ❖ ❖

1. Mumford L. The culture of cities, London 1938 P. 480
2. पाठक, गणेशदत्त (टीकाकार), विश्वकर्मा प्रकाश, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ी गली, वाराणसी 1995 1/15
3. शुक्रनीति 226/1
4. शर्मा सुरेश्वर (संपादक) विज्ञान भारती प्रदीपिका अप्रैल 1997 पृष्ठ 69
5. शुक्रनीतिः 1/218
6. मयमतम् 10/80

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

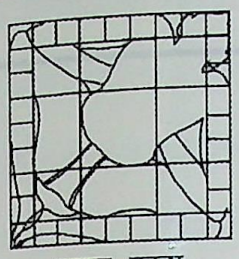

वास्तु पुरुष

वास्तुशस्त्रद्वते तस्य न स्याल्लक्षणनिश्चयः।
तस्माल्लोकस्य कृपया शास्त्रमेतदुदीर्यते॥
समराङ्गण सुत्रधार १/५

अध्याय सप्तम

सागर नगर की समस्यायें

- आवास समस्या
- जल समस्या
- यातायात समस्या
- असंगत भूमि उपयोग
- जल निकासी समस्या
- पर्यावरणीय समस्या
- स्वास्थ्य समस्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

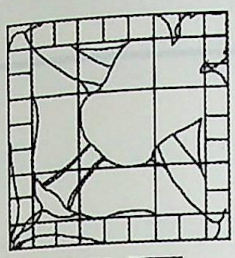

वास्तु पुरुष

वास्तुशास्त्रज्ञते तस्य न स्यात्लक्षणनिश्चयः।
तस्मात्लोकस्य कृपया शास्त्रमेतदुच्चियते॥
समराङ्गण सुत्रधार १/५

अध्याय सप्तम

सागर नगर की समस्यायें

- आवास समस्या
- जल समस्या
- यातायात समस्या
- असंगत भूमि उपयोग
- जल निकासी समस्या
- पर्यावरणीय समस्या
- स्वास्थ्य समस्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर की समस्यायें

आज का मानव समाज औद्योगिक एवं प्रौद्योगिक क्रांतियों के साथ–साथ नगरीय क्रांति के दौर से गुजर रहा है । यही कारण है, कि विश्व में नगरीकरण के साथ–साथ नगरों की संख्या में वर्तमान सदी के उत्तरार्द्ध में तीव्र वृद्धि हुई है । किसी भी नगर का विकास मात्र किसी एक तत्व या कारक या वस्तु का परिणाम नहीं होता ; बल्कि किसी भी नगर का विकास नगर से संबंधित समस्त भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक तत्वों के सामन्जस्य का परिणाम होता है। अतः किसी नगर का अध्ययन एवं नियोजन करते समय नगर से संबंधित समस्त पहलुओं का ध्यान रखते हुये अध्ययन करना बहुत आवश्यक होता है , ताकि नगर का सर्वांगीण विकास हो सके । किंतु वर्तमान समय में प्रत्येक नगर की अपनी कुछ न कुछ समस्यायें होती हैं। समस्या को हम निम्न प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं "व्यवहार में जिन परिस्थितियों को किसी समय बहुत से सदस्य आपत्तिजनक या अवांछनीय मानते हैं, उन्हें समस्यायें कहा जाता है। नगरीय समस्याओं को प्रधानतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

1. आंतरिक समस्यायें
2. बाह्य समस्यायें

नगर की आंतरिक समस्याओं में नगरीय सीमा के अंदर आवासीय, गमनागमन, नागरिक सेवायें एवं सुविधाएं, खुली भूमि और पर्यावरणीय समस्याएं प्रमुख हैं ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाह्य समस्याओं में ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में अनियंत्रित जनसंख्या प्रवाह, नगरीय सीमा के बाहर अनियोजित नगर विस्तार, कृषि भूमि का अपहरण तथा नगरों के सेवा क्षेत्रों के विकास के लिये नगर आधारित विकास योजना का अभाव आदि विशेष उल्लेखनीय हैं । वर्तमान में सागर नगर में निम्नलिखित समस्यायें हैं–

❑ **आवास समस्या :**

नगरों में बढ़ती जनसंख्या की तुलना में आवासीय गृहों का निर्माण नहीं हो पाता; क्योंकि नगरों में पूंजी निवेश का मुख्य उद्देश्य अधिकाधिक लाभ प्राप्त करना होता है। पूर्व के अध्याय में सागर नगर की जनसंख्या परिवर्तन सारणी को देखकर यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, कि सागर नगर में 19 वीं सदी के प्रारंभ में नगर की जनसंख्या 43,420 थी । वर्ष 1901 से 1911 तक की कालावधि तक जनसंख्या में अपेक्षाकृत बहुत कम वृद्धि देखी गई; जबकि वर्ष 1921 में नगर की जनसंख्या अकाल एवं महामारी के कारण घटकर 39,319 हो गई, वर्ष 1921 के पश्चात् नगर की जनंसख्या बढ़कर 39310 होकर धीमी गति से वृद्धि होकर 1991 में नगर की जनसंख्या जनगणना के अनुसार 2.57 लाख हो चुकी है; जिसमें छावनी क्षेत्र की जनसंख्या भी सम्मिलित है । इस प्रकार वर्ष 1981–91 के दशक में नगरीय जनसंख्या में 23.97 प्रतिशत की वृद्धि होना पाई गई है। इस प्रकार सागर की जनसंख्या में वृद्धि के परिणामस्वरूप नगर में स्थान की कमी,मकानों की कमी, झुग्गी झोपड़ियाँ एवं गंदी बस्तियों का उदय आदि समस्याओं का उद्भव हुआ ।

अ. स्थान की कमी :

जैसा कि पिछले अध्याय में ही बताया जा चुका है, कि नगर में आवासीय क्षेत्र के अंतर्गत सर्वाधिक 62.3 प्रतिशत भाग शामिल है । पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण नगर का धरातल असमान है, इसलिये भूमि उपयोग में सर्वाधिक भाग होने के बावजूद भी यहां स्थान की कमी है, क्योंकि यहाँ का धरातल कहीं ऊँचा, कहीं नीचा, तो कहीं ढालू हैं। नगर की सर्वाधिक जनसंख्या नगर निगम सीमा के मध्य क्षेत्र के उत्तर, पूर्व एवं ईशान भाग में निवास

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करती है । इसका प्रमुख कारण सागर तालाब है; क्योंकि पानी की उपलब्धता के कारण प्रारंभ में नगर के इसी भाग में मानव निवास प्रारंभ हुआ; जिससे जनसंख्या वृद्धि होने के कारण स्थल की कमी महसूस होती गई । परिणामस्वरूप निवासी नगर के चारों ओर अव्यवस्थित रूप से फैलने लगे । अव्यवस्थित रूप से आवास गृहों के निर्माण के कारण ही नगर में वर्तमान में स्थान की समस्या बढ़ती जा रही है ।

ब. आवासों / मकानों की कमी :

सागर के प्रशासनिक एवं शैक्षणिक स्वरूप के कारण, नगरीय जनसंख्या में जिस गति से वृद्धि हो रही है, उसकी तुलना में मकानों का निर्माण नहीं हो पा रहा है । इसके फलस्वरूप आवास की समस्या उत्पन्न हुई है । नगर के अधिकांश मकान एक मंजिली एवं सीमित कमरों वाले हैं, जो अधिक जनसंख्या धारण करने में अक्षम हैं । सागर नगर में प्रमुख रूप से काली मिट्टी पाई जाती है काली मिट्टी में मकानों को शीघ्र क्षति होती है ।

स. निवास क्षेत्र एवं कार्य क्षेत्र का स्थान एक होना :

नगर में वर्तमान में निवास क्षेत्र एवं कार्य क्षेत्र दोनों एक ही स्थान पर हैं; जिसके कारण नगर में आवास की समस्या है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि नगर में वर्तमान में स्थान की कमी, आवास की कमी तथा निवास क्षेत्र एवं कार्यक्षेत्र दोनों एक स्थान पर होने के कारण ही वर्तमान में नगर में आवास की समस्या है।

❑ जल समस्या :

नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में जलीय स्रोत महत्वपूर्ण कारक हैं । भारतीय नगरों में बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में जलापूर्ति व्यवस्था का विकास नही हो पा रहा है; जिसके परिणामस्वरूप ऐसे जल को प्रयोग करने की बाध्यता है, जिसे सुरक्षित जल नहीं कहा जा सकता है । सागर नगर सदैव से ही जलीय समस्या से ग्रसित रहा है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसका प्रमुख कारण भौगोलिक दृष्टि से सागर नगर की आंतरिक संरचना बेसाल्ट चट्टान की बनी है । बेसाल्ट चट्टान में पानी शोषित करने की क्षमता कम रहती है; जिसके कारण ही नगर का भूमिगत जल स्तर काफी गहराई पर प्राप्त होता है । इसीलिए नगर में पानी की अत्यधिक समस्या है । नलकूप एवं कुंए कठोर चट्टान के कारण या तो खोदे ही नहीं जाते और यदि खोदे भी जाते हैं, तो उनके असफल होने का भय सदैव बना रहता है । जल समस्या का दूसरा कारण नगर में प्राकृतिक रूप से औसतन 1100 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा होती है; किन्तु कृत्रिम बांधों के अभाव के कारण प्राकृतिक वर्षा का जल एकत्रित नहीं हो पाता; जिससे भी नगर में जलापूर्ति नगर से 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित बेवस नदी पर स्थित संग्राहक जलाशय द्वारा की जाती है, जो कि पर्याप्त नहीं है; जिसके कारण यह नगर एक जल समस्यामूलक क्षेत्र है । फलस्वरूप नगर का चहुमुखी विकास नहीं हो पा रहा है । ऐसी स्थिति में यहां से जन साधारण के पलायन की संभावना भी हो सकती है ।

❑ यातायात समस्या :

नगरीय जीवन की उत्कृष्टता सहज और सुव्यवस्थित यातायात में निहित होती है; क्योंकि कार्य संपादन में यातायात की अह्म भूमिका होती है। नगर की जनसंख्या बढ़ने से वाहन यातायात एवं परिवहन की गतिविधियाँ तेजी से बढ़ रही हैं; जिसके लिये मुख्य रूप से व्यापारिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियाँ उत्तरदायी हैं । नगर में सड़कों का अरीय प्रतिरूप है । नगर में उपलब्ध परिवहन तंत्र पर क्षमता से अधिक यातायात के दबाव के फलस्वरूप अनेक यातायात समस्यायें उभरकर सामने आ रहीं हैं जो निम्नानुसार हैं –

क. यातायात संकुलता :

वर्तमान में नगर के मध्य क्षेत्र में, राधा टॉकीज–गौरमूर्ति मार्ग पर सबसे अधिक यातायात संकुलता है । इसका प्रमुख कारण वाणिज्यिक गतिविधियाँ, मार्ग पर क्षमता से अधिक यातायात, सड़क पर पार्किंग इत्यादि हैं । इसके अतिरिक्त नगर के गौरमूर्ति–बड़ा बाजार मार्ग, भण्डारी तिगड्डा, परकोटा मार्ग, भगवानगंज–राधा टॉकीज तिराहा आदि मार्ग पर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यातायात संकुलता है । संकुलता के फलस्वरूप यातायात समय बढ़ जाता है और इसके साथ ही वाहन चालन मूल्य भी बढ़ जाता है ।

ख. वाहन विराम स्थल(पार्किंग) :

नगर में वाहन विराम स्थल हेतु कोई विशेष स्थल उपलब्ध नहीं है । मध्य क्षेत्र तथा नगर के अन्य वाणिज्यिक क्षेत्रों में पार्किंग मुख्य रूप से मार्गों के किनारे पर की जाती है परिणामस्वरूप मार्ग क्षमता कम होने से यातायात संकुलता की स्थिति निर्मित होती है ।

ग. असुविधाजनक मार्ग संगम :

नगर की वर्तमान परिभ्रमण संरचना में यातायात की दृष्टि से कई सुविधाजनक एवं खतरनाक मार्ग संगम स्थित है जो निम्नानुसार हैं :

1. मस्जिद चौराहा
2. गौर टॉवर तिराहा
3. तीन मड़िया तिराहा
4. मकरोनिया चौराहा
5. राहतगढ़ तिराहा
6. मोतीनगर थाना
7. माता मंदिर तिराहा
8. पीली कोठी तिराहा

घ. भारी वाहन यातायात :

राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 26, राजमार्ग क्रमांक 14एवं 15 के कारण नगर के संकुचित क्षेत्र, भगवानगंज से अत्यधिक मात्रा में भारी वाहनों का आवागमन होता है; जिसके परिणामस्वरूप दुर्घटनायें तथा यातायात में बाधाएं उत्पन्न होती हैं। साथ ही पर्यावरण प्रदूषित होता है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ड. दुर्घटनाएं :

यातायात संकुलता, असुविधाजनक मार्ग संगम, भारी वाहन यातायात एवं पार्किंग की उचित व्यवस्था न होने के कारण नगर में दुर्घटनाओं की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है । गुजराती बाजार, तीन बत्ती एवं कोतवाली मार्ग पर सबसे अधिक घातक एवं अघातक दुर्घटनाएं होती हैं ।

इसके साथ ही साथ नगर में मुख्य वाणिज्यिक वस्तुओं का विपणन, क्रय विक्रय एवं परिवहन का एक ही होना आदि समस्याएं हैं । संपूर्ण वाणिज्यिक गतिविधियाँ कटरा बाजार, सुभाष मार्केट, गुजराती बाजार एवं जवाहरगंज आदि से होने के कारण यातायात संकुलता की स्थिति निर्मित होती है, जो सागर नगर के यातायात की प्रमुख समस्या है ।

❑ असंगत भूमि उपयोग :

नगरों में असंगत भूमि उपयोग अनेक नगरीय समस्याओं का कारण बनती है । यह प्रवृति विश्वव्यापी है; क्योंकि नगर विस्तार के साथ इसको नियंत्रित करने के लिये कठोर निर्णय नहीं लिये जाते हैं । भूमि उपयोग का विस्तृत सर्वेक्षण तथा नगर में आवासीय यातायात परिस्थिति आदि के संबंध में अध्ययन करने पर यह दृष्टिगोचर होता है, कि नगर में कुछ स्थानों पर असंगत भूमि उपयोग है । असंगत भूमि उपयोग निर्धारित करते समय उस उपयोग की कार्य संपादित विशेषतायें, जैसे– पर्यावरण प्रदूषण, यातायात में होने वाली रूकावटें, नगरीय भूमि का दुरूपयोग, आसपास के क्षेत्रों से बेमेल आदि बातों का अध्ययन किया जाता है। अतः असंगत भूमि अपयोग को उपयुक्त स्थानों पर स्थानान्तरित करना आवश्यक हो जाता है। उपर्युक्त मापदंडो के आधार पर मुख्य रूप से 14 कार्यरत गतिविधियों को असंगत भूमि उपयोग के रूप में चयनित किया गया है । इन भू उपयोगों का स्थानांतरण आवश्यक हो गया है । ये असंगत भूमि उपयोग निम्न हैं–[1]

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ जल निकासी समस्या :

जल निकासी समस्या दो प्रकार की होती है, पहली मल जल निकासी और दूसरी वर्षा जल निकासी । सागर नगर में ये दोनों समस्यायें दृष्टिगोचर होती है; क्योंकि नगर पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण यहाँ वर्षा जल निकासी की समस्या है इसका कारण नगर के उत्तर–पश्चिम भाग का जल प्रवाह तो नाले द्वारा हो जाता है; लेकिन मध्यवर्ती भाग में जल निकास शीघ्र नहीं हो पाता; जिससे समान्य वर्षा में भी यह भाग जलमग्न हो जाता है। नगर में वर्तमान में मल विसर्जन घरों में बनाये गये सेप्टिक टैंकों द्वारा किया जाता है जो कि दीर्घकालीन व्यवस्था नहीं है। नगर में जल मल निकासी की आधुनिक परियोजना आवश्यक है।

❑ पर्यावरणीय समस्या :

नगरों में पर्यावरणीय समस्यायें विश्वव्यापी हो गई हैं । पर्यावरणीय समस्याओं के लिये अत्यधिक मोटर वाहनों का प्रयोग, अधिक ईंधन का उपयोग, औद्योगिक एवं व्यापारिक इकाईयों का जमघट आदि है। नगर में वृक्षों का अभाव वायु प्रदूषण का एक कारण है। वनों का कटाव होने से वर्षा की अल्पता, तापमान वृद्धि, उपजाऊ भूमि कटाव एवं अभाव आदि समस्यायें पैदा होता हो रही हैं। नगर के मध्य क्षेत्र में गंदे पानी के निकास की उपयुक्त व्यवस्था न होने पर घरों का गंदा पानी नालियों के द्वारा तालाब में ही जाता है, जो तालाब के जल को प्रदूषित करता है । इसके साथ–साथ सागर नगर वायु प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण आदि समस्याओं से भी ग्रसित हैं ।

❑ स्वास्थ्य समस्या :

नगर में आधुनिक सुविधाओं से उपलब्ध महिला चिकित्सालय की कमी है । सार्वजनिक स्तर पर स्वास्थ्य सुविधा में कमी ने नगर में निजी अस्पतालों एवं नर्सिंग होम को बढ़ावा दिया है । जहाँ केवल साधन संपन्न वर्ग ही स्वास्थ्य खर्च वहन कर पाता है । नगर में ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या भी पर्याप्त संख्या में स्वास्थ्य सुविधा के लिये आती है,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिसके कारण चिकित्सा संस्थाओं की मांग निरंतर बढ़ रही है । घरेलू बजट के कारण स्वास्थ्य खर्च बढ़ने के कारण मानव जीवन की गुणवत्ता का क्षरण होना स्वाभाविक है। इसीलिये वर्तमान में नगर में आधुनिक सुविधाओं से उपलब्ध महिला चिकित्सालय की आवश्यकता है । अन्य नगरों की तुलना में सागर नगर का विकास जिस गति से होना चाहिए उस गति से नहीं हो रहा है । इसके लिये जितनी नगर की भौगोलिक परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं, उतनी ही वास्तुशास्त्रीय । अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर का मध्य भाग सर्वाधिक घना बसा है एवं समस्त नगरीय कार्यों का संपादन मध्य, उत्तरी पूर्वी एवं ईशान कोण में होता है। वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतानुसार नगर का मध्य भाग खुला एवं उत्तर पूर्वी भाग में निर्माण कार्य दक्षिण पश्चिम भाग से कम होना चाहिए ; किन्तु नगर के उत्तर पूर्वी एवं मध्य भाग पर सर्वाधिक निर्माण हुआ है या सघन बसा है, जो कि वास्तु सिद्धांतों के प्रतिकूल है । इसी प्रकार नगर का विकास तालाब के चारों ओर हुआ है, जो कि गलत है। इसीलिये नगर में जल समस्या विद्यमान है। वास्तुनुरूप नगर का विकास तालाब से दक्षिण पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए , ताकि नगर का उत्तर पूर्वी भाग ज्यादा से ज्यादा खुला रहे । एवं जल स्थान अर्थात् तालाब के उत्तर पूर्वी भाग में आ जाये । इसी प्रकार नगर औद्योगिक रूप से पिछड़ा हुआ है इसका प्रमुख कारण नगर के ईशान कोण में नगर–निगम सीमा से बाहर सिद्धगुंवा औद्योगिक क्षेत्र का स्थित होना है जो कि वास्तुसिद्धांतों के प्रतिकूल है; क्योंकि वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतानुरूप नगर के दक्षिण–पश्चिम दिशा में उद्योगों की स्थापना होना चाहिए । नगर का औद्योगिक रूप से विकास न होने का प्रमुख कारण वास्तु प्रतिकूल औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना है । नगर में यातायात की समस्या भी है, नगर में सड़कों का अरीय प्रतिरूप है, जो कि गलत है ; क्योकि वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतानुरूप सड़कें आयताकार या वर्गाकार होना चाहिए जो एक–दूसरे को समकोण पर काटे । किन्तु सागर नगर में ऐसा नहीं है इसलिये यहाँ सड़क दुर्घटनायें अधिक होती हैं ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

• सागरः असंगत भूमि उपयोग

क्र.	भूमि उपयोग का वर्ग	वर्तमान स्थल	स्थानांतरण का कारण
1	2	3	4
1.	**आवासीय** आवासीय भवन	गौरभवन के पास तिराहा के शासकीय आवास	कार्यालय भवन स्थापना हेतु उपयुक्त
2.	**पशुपालन (डेरियॉ)**	गोपालगंज, परकोटा, कृष्णगंज, रविशंकर बल्लभनगर, सिंधी कॉलोनी	पर्यावरण एवं यातायात समस्या
3.	**वाणिज्यिक**		
अ.	परिवहन अभिकरण	भगवानगंज, गुजराती बाजार, एवं मध्यवर्ती क्षेत्र	यातायात में रूकावट
ब.	अनाज मंडी	टंकी मार्ग	अपर्याप्त स्थान एवं यातायात समस्या
स.	पशु एवं घास मंडी	राहतगढ़ नाका	यातायात समस्या
द.	थोक फल एवं सब्जी बाजार एवं फुटकर सब्जी	नया बाजार,कटरा मार्ग एवं मस्जिद से विजय टॉकीज	अपर्याप्त स्थान एवं यातायात में अवरोध
इ.	कबाडी बाजार	नयाबाजार एवं मकरोनिया तिगड्डा	अपर्याप्त स्थान एवं यातायात अवरोध
4.	**औद्योगिक**		
अ.	रिपेयर वर्कशाप	भगवानगंज, तिलकगंज, बल्लभनगर	यातायात समस्या
ब.	आरा मशीनें	भोपालमार्ग, भगवानगंज, स्टेशन मार्ग, तिलकगंज, पगारा मार्ग	पर्यावरण से संबधित समस्यायें
स.	दाल एवं तेल मिलें	तिलकगंज, भगवानगंज, कटरा	पर्यावरण से सबंधित समस्यायें, यातायात में अवरोध
द.	बीड़ी गोदाम	गुजराती बाजर, कटरा	यातायात समस्या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

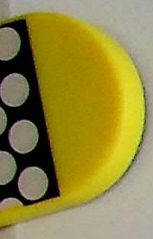

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5. सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक		
अ. पुलिस प्रशिक्षण संस्थान	किला	भूमि अपर्याप्त
ब. सेन्ट्रल कोतवाली पुलिस चौकी	चकराघाट कटरा मस्जिद के पास	अपर्याप्त स्थान, यह स्थान यातायात पुलिस चौकी हेतु अनुपयुक्त है।
6. यातायात एवं परिवहन		
अस्थाई बस स्टैण्ड निजी बस स्टैण्ड	राहतगढ़ रेल्वे क्रासिंग के पास	अपर्याप्त स्थान एवं यातायात में अवरोध

❖ ❖ ❖

1. सागर विकास योजना(प्रारूप) पृ. क्र. 21 – 23

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

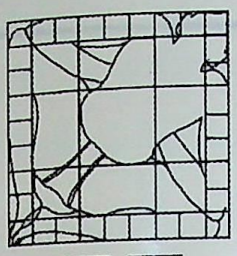

वास्तु पुरुष

नगस्यामस्खेटादिच्छविराणि च भूभृताम्।
स्थपतिर्वेशतपदविभागेनैव मापयेत्॥ ३४२॥

वास्तुसौख्यम्

अध्याय अष्टम

सागर नगर नियोजन

- भारत में नगर नियोजन
- सागर नगर नियोजन
- निवेश इकाईयाँ
- आवासीय
- वाणिज्यिक
- औद्योगिक
- आमोद-प्रमोद
- कार्यालय एवं प्रशासकीय केन्द्र
- पुलिस प्रशिक्षण संस्थान (महाविद्यालय)
- इकाईवार अनुमानित जनसंख्या एवं घनत्व
- प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना एवं नगरीय अधोसंरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

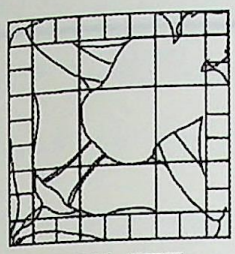

वास्तु पुरुष

नगस्यामखेटादिच्छविराणि च भूभृताम्।
स्थपतिर्वेशतपदविभागेनैव मापयेत्।। ३४२।।

वास्तुसौख्यम्

अध्याय अष्टम

सागर नगर नियोजन

- भारत में नगर नियोजन
- सागर नगर नियोजन
- निवेश इकाईयाँ
- आवासीय
- वाणिज्यिक
- औद्योगिक
- आमोद-प्रमोद
- कार्यालय एवं प्रशासकीय केन्द्र
- पुलिस प्रशिक्षण संस्थान (महाविद्यालय)
- इकाईवार अनुमानित जनसंख्या एवं घनत्व
- प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना एवं नगरीय अधोसंरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

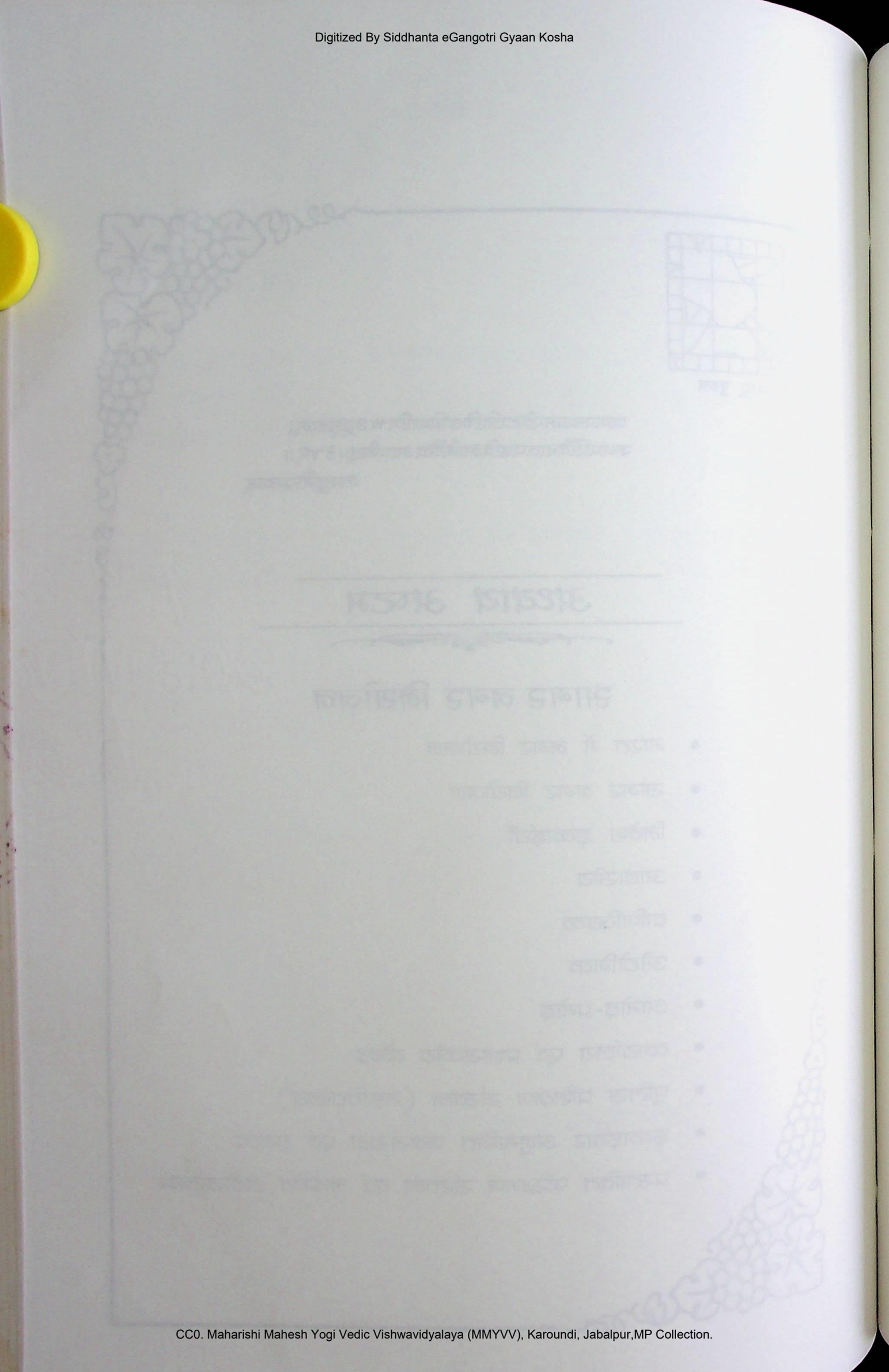

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर नियोजन

मनुष्य ने अपनी सुरक्षा एवं समुदाय में रहने की इच्छा के कारण ही नगरों का निर्माण किया । नगर नियोजन से ही नगर की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति निरंतर होती रही है। नियोजित नगर विकास की अवधारणा हमारे वैदिक कालीन समाज की देन है, जब सुविकसित एवं योजनाबद्ध अधिवासों का उदय हुआ। भारत में आदिकालीन नगर हड़प्पा मोहनजोदड़ों, लोथल, धौलावीरा, कालीवंगा आदि नगर ईसा से पांच हजार वर्ष पूर्व अस्तित्व में आ गये थे। ये नगर सुनियोजित बंसाव के प्राचीनकालीन उदाहरण है।

आदिकाल में किसी नगर के नियोजन में वास्तुशस्त्रीय सिद्वांतों को अपनाकर उसके नियमों का पालन करके ही संपूर्ण नगर की भूमि का उपयोग किया जाता था। किसी भी स्थान का राजा जिन सिद्धांतों के अन्तर्गत अपनी राजधानी बनाने के पूर्व उस स्थान की स्थिति, भूमि, मिट्टी का स्वरूप, गंध, स्वाद, शुभदिशाओं, जलवायु, मौसम, चयनित क्षेत्र का ढ़ाल, चयनित क्षेत्र पर पानी की सुविधा, खनिज साधनों की आपूर्ति आदि तत्वों पर ध्यान देता था तथा उस चयनित क्षेत्र पर ग्रह नक्षत्रों के प्रभावों की शंति कराकर शुभ मुहूर्त में ही प्रत्येक कार्य प्रारंभ करता था ; जिससे उसके राज्य में हमेशा, सुखशांति, समृद्धि बनी रहे । जनता सुखी रहे व वह भूमि का अधिकाधिक उपयोग व लाभ प्राप्त कर सके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

किंतु वर्तमान में नगरों का नियोजन वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुरूप नहीं हो रहा है; क्योंकि कुछ नगर बसाये जाते है और कुछ स्वयं बस जाते हैं; उनमें से कुछ नियोजित एवं कुछ अनियोजित क्षेत्र होते है जहाँ की भूमि का उपयोग भिन्न – भिन्न कार्यो के लिये किया जाता है।जैसे चण्डीगढ़ जिसे स्वतत्रंता प्राप्ति के बाद पं. जवाहरलाल जी ने पाश्चात्य शैली का उपयोग कर एक सुन्दर एवं भव्य नगर के रूप में बसाने का सपना तो साकार किया था; किंतु वास्तु सिद्धांतों की ओर ध्यान न होने के कारण विदेशी पद्धति में ही उसका नियोजन हुआ है। यदि इस नये नगर की रचना सड़कों को उत्तर–दक्षिण व पूर्व पश्चिम में रखकर की जाती तो वह एक समृद्ध शाली एवं शांत नगर बन सकता था।

नियोजन का अर्थ उद्देश्य बनाकर काम करना, चुनना या निर्णय करना है। वर्तमान समय में नियोजन शब्द अधिक प्रचलित है। इसकों वाक्यों में परिभाषित करना कठिन है। मानव जब किसी कार्य को बिना सोचे समझे करता है, तो उसे उस कार्य में अनिश्चितता एवं दुःखद परिणाम प्राप्त होते हैं; किन्तु उसी कार्य को करने के पूर्व उसके प्रत्येक पहलू पर ठीक ढ़ंग से चिंतन, मनन एवं अध्ययन करके विवेकपूर्ण निर्णय होता है तो यह कार्यप्रणाली नियोजित कही जाती है। उदाहरणार्थ – उद्योगपति यदि उद्योग प्रारंभ करने के पूर्व– स्थान, कच्चे माल की प्राप्त दशा, शक्ति के साधनों की स्थिति श्रम प्राप्ति के साधन, पूंजी की दशा, बाजार, लागत मूल्य, मांग, यातायात के साधन, प्रतिस्पर्धा आदि पर विचार कर उद्योग धंधा लगाता है, तो कार्य कभी असफल नहीं होता । इसे योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना कहते है भौगोलिक भाषा में इसे नियोजन कहा जाता है।[1]

नियोजन का अर्थ किसी निश्चित लक्ष्य को निर्धारित कालावधि में प्राप्त करने का क्रमबद्ध प्रयास है।[2] नियोजन में वर्तमान आर्थिक संरचना को दृष्टिगत रखते हुये भविष्य के लिये लक्ष्य निर्धारित किये जाते है।ये निर्धारित लक्ष्य उस स्थान में प्राप्त होने वाले संसाधनों को ध्यान में रखकर तय किये जाते है तभी उन्हें निश्चित अवधि में प्रस्तावित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कार्यक्रमों के अनुरूप प्राप्त किया जा सकता है। अतः नियोजन के लिये लक्ष्य संसाधन, निश्चित अवधि एवं प्रस्तावित कार्यक्रम जेसे महत्वपूर्ण तत्वों को सम्मिलित किया जाता है।[3]

प्रारंभिक रूप में नियोजन मूलतः अर्थतंत्र के समन्वयक एवं सम्मिलित विकास के रूप में था इसलिये अर्थशस्त्रियों ने नियोजन के संबंध में अनेकों संकल्पनायें एवं परिभाषायें प्रस्तुत की है। **डिकिन्सन** के अनुसार– नियोजन आर्थिक निर्णय की एक ऐसी प्रक्रिया है; जिसमें अर्थतंत्र का साम्यक मूल्यांकन करके नीति निर्देशांकों द्वारा यह निर्णय किया जाता है, कि भविष्य में किस प्रकार का आर्थिक उत्पादन हो तथा उसका वितरण किस प्रकार किया जाये।[4]

उपरोक्त परिभाषा से यह स्पष्ट होता है, कि नियोजन एक ऐसी प्रक्रिया है, जो किसी भी क्षेत्र या समाज में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर लक्ष्य निर्धारित करके साम्यक उपयोग का ढ़ॉचा बनाना है तथा इसी प्रक्रिया द्वारा भविष्य के उपयोग की संभावना का स्पष्टीकरण करना है। इस तरह इसका भौतिक उद्देश्य ही वर्तमान और भविष्य के संदर्भ में मानव का कल्याण करना है। इसके लिये जो भी संसाधन उपलब्ध है, उनके साम्यक उपयोग की रूपरेखा तैयार की जाये, ताकि मानव समाज का प्रत्येक अंग उस उपयोग से लाभान्वित हो सके।

नगर मानव की सांस्कृतिक उपलब्धियों का विशिष्ट उत्पाद होता है। यह एक विशिष्ट स्थान पर जनसंख्या के एक ऐसे वृहद् समूह को प्रदर्शित करता है; जिसमें सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक विभिन्नता पाई जाती है। इस विभिन्नता के कारण ही नगर के विभिन्न भागों में भूमि उपयोग कार्यात्मक विशेषताओं, इमारती विन्यास और संघटन में अंतर पाया जाता है। नगरीय नियोजन नगर की आर्थिक, सामाजिक एवं भौतिक विशेषताओं में एकाकी एवं सामूहिक दोनों रूपों में सुधार का प्रयास करता है, ताकि नगर का एक ऐसा ढ़ॉचा तैयार किया जा सके, जो उसके भैतिक पर्यावरण हेतु अनुकूलन तथा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वछंनीय हो। इस प्रकार नगरीय नियोजन नगर की उपलब्ध भूमि का उत्कृष्टतम उपयोग करने की योजना बनाता है। **एन.पी.लेविस** के विचारानुसार– " नगर नियोजन मात्र एक दूरदर्शी प्रयास है, जो नगर एवं उसके पर्यावरण के ऐसे व्यवस्थित और प्रेक्षणीय विकास को अभिप्रेरित करता है; जिसमें विवेकपूर्ण ढ़ंग से स्वास्थ्य, नागरिक आवश्यकताओं, सुविधाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रगति का समुचित ध्यान रखता है। "[5]

नगर नियोजन का मुख्य उद्देश्य उपलब्ध साधनों के आधार पर नगर का इस प्रकार विकास करना है, कि वह देखने में आकर्षक एवं सुन्दर लगे, उसमें सफाई और प्रदूषण नियंत्रण की समुचित व्यवस्था हो ताकि उसमें रहने वाले लोग स्वस्थ्य रह सकें तथा नगर में उपयोग होने वाली वस्तुओं का पर्याप्त और समुचित भण्ड़ारण हो, जिससे लोगों को इन्हें प्राप्त करने में किसी असुविधा का सामना न करना पड़े।

किसी भी नगर का नियोजन करते समय कुछ प्रमुख तथ्यों के अनुरूप ही नगर का सही रूप से नियोजन किया जा सकता है। जो विशेषताएँ हर नगर के निर्माण एवं विकास के लिए उपयुक्त होती हैं उन्हे ही प्रमुखता दी जाती है। इन्हीं सिद्धांतों को प्रमुखता देते हुये वर्तमान में नगरों का नियोजन किया जा रहा है। नगरीय नियोजन अनेक सिद्धांतों पर आधारित है, जिसमें समयानुरूप परिवर्तन होता रहा है। उदाहरणार्थनगरीय नियोजन के प्रांरभिक काल में नगर की भौतिक विशेषताओं भवनों के विन्यास, सड़कों की स्थिति, सड़कों की चौड़ाई, पानी की उपलब्धता आदि बातों पर अधिक ध्यान दिया जाता था, परंतु आज भौतिक विशेषताओं के साथ–साथ आर्थिक और सामाजिक पहलू भी नगरीय नियोजन के महत्वपूर्ण अंग बन गये हैं इसके अन्तर्गत नगरों में उचित कार्यक्षेत्र विभाजन (रिहायशी, व्यापारिक व औद्योगिक, प्रशासनिक, शिक्षा क्षेत्र) कल–कारखानों की उचित स्थानों पर व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, गंदी बस्ती सुधार, सार्वजनिक स्थानों की व्यवस्था (पार्क, खेलका मैदान, धार्मिक स्थल, क्लब आदि) नगरीय भूमि उपयोग नियंत्रण, स्कूल, अस्पताल, हरित पेटी, खुले स्थान प्रदूषण नियंत्रण रोजगार एवं आपदा नियंत्रण आदि पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इन सिद्धांतों का प्रयोग नगर नियोजन संबंधी कार्यो में दो प्रकार के नगरों में किया जा सकता है। प्रथम पुराने नगरों के पुनिनिर्माण की योजनाऐं बनाना एवं द्वितीय नये नगरों के नियोजन के समय उपयोग में लाकर ।

❑ भारत में नगर नियोजन

जैसा कि पिछले अध्याय में भी वर्णन किया जा चुका है, कि नियोजित नगर बसाव की कला सबसे पहले वैदिक काल में विकसित हुई ; जिसमें आयताकार विन्यास का अनुसरण कर परकोटा बनाकर नगर बसाये गये इसलिये नगर नियोजन या वास्तुशिल्प या गृहशिल्प भारत की प्राचीनतम उपलब्धि है। पश्चिमी देशो के विद्वान भी वैदिक कालीन नगरीय खण्डहरों के निरीक्षण से यह मानने के लिए बाध्य हो गये है, कि नगर नियोजन में भारत सबसे अग्रणी देश है। गुजरात से लेकर पंजाब, उत्तरप्रदेश तक अनेकों नगरों के प्राचीन खण्डहर पाये गये है, जो नियोजित नगर बसाव के प्रमाण है। इन नगरों के खण्डहरों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया, कि इन नगरों की सड़कें, गलियॉ, बाजार, मनोरंजन स्थल, धार्मिक स्थल, सार्वजनिक इमारतें, आवासीय क्षेत्र, कृषि उत्पाद और पशु संरक्षण केन्द्र एवं राजमहल परकोटा के अंदर सुव्यवस्थित ढंग से निर्मित किये गये थे। हाल ही में गुजरात तट पर पाये गये धौलावीरा नगर के खण्डहर से पूर्व नियोजित बन्दरगाह नगर की रूपरेखा प्रकाश में आई है। यह भी उल्लेखनीय है, कि अधिकांश वैदिक कालीन नगर नदियों के तट पर बसाये गये थे, ताकि यातायात एवं पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो सके और साथ ही साथ जल निकास भी हो सके।

उत्तर वैदिक काल में नगर नियोजन की कला अधिक विकसित रूप में प्रकट हुई। जब अयोध्या, काशी, श्रावस्ती, जनकपुरी जैसे उत्कृष्ट वास्तुशिल्प के आधार पर इन नगरों को बसाया गया। इसकाल खण्ड में अधिकांश नगर राजधानी नगर के रूप में बसाये गये। महाभारतकालीन उत्कृष्ट नियोजित नगरों में हस्तिनापुर, मथुरा, इन्द्रप्रस्थ,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वारिका, तक्षशिला कान्यकुब्ज, दण्डक, पंचाल, प्रयाग, इत्यादि प्रसिद्ध नियोजित राजधानी नगर थें इन समस्त नगरों की अभियोजना वैदिक वास्तुशिल्प पर आधारित थी। मेगस्थनीज ने पाटली पुत्र के संबंध में लिखा है, कि यह नगर गंगा तट पर दस मील लम्बा और दो मील चौड़ा, खाई और दीवाल से घिरा पूर्ण नियोजित ढ़ग से बसाया गया था। ऐतिहासिक काल में पाटलीपुत्र के समान ही गंगा के दायें तट पर वैशाली भी बसाया गया था। इसके अतिरिक्त नालन्दा, नंदगढ़ पावापुरी जैसे नियोजित नगर भारत की वास्तुकला के प्रतीक है।

भारत पर मुगल साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् मुगलशासन काल में नियोजित नगरों के बसाव पर मुगलकालीन शिल्पकला का प्रभाव बढ़ने लगा। फलतः नगर नियोजन मिश्रित रूप धारण करने लगा, जिसमें किला, मस्जिद, इबादतगाह जैसे निर्माणों के लिये विशेष योजना बनाई जाने लगी। आगरा, दिल्ली, हैदराबाद, जहानाबाद, श्रीनगर, काबुल, फतहपुरसीकरी, कन्धार, पेशावर, मैसूर अहमदाबाद जेसे नगर मुगल शासकों द्वारा नियोजित ढ़ंग से बसाये गये। मुगलों के पूर्व राजपूत रजवाड़ों द्वारा भी राजधानी नगर परकोटा बनाकर किला नगर के रूप में बसाये गये। इस युग के नगर अधिकांशतः सुरक्षा के दृष्टिकोंण से ऊँचें स्थलों या नदियों के किनारे बसाये गयें। मुगलकालीन नगरों को भव्य बनाने के लिये अलीशान इमारतें, खुली भूमि, चौड़ी सड़कें जलाशय, बाग बगीचे आदि को प्रमुखता दी जाती थी सन् 1728 में बसाया गया जयपुर नगर भारत में नियोजित नगर का सर्वश्रेष्ठ प्रतीक माना जाता है, जो पूर्णतः वैदिक वास्तुशिल्प के आधार पर बसाया गया।

भारत में अंग्रेजों का आधिपत्य स्थापित होने के पश्चात् नगर नियोजन में यूरोपीय प्रभाव बढ़ने लगा। भारत में अंग्रेजों द्वारा नगर बसाने के लिये दो पद्धतियॉ अपनाई गई। पहली पद्धति के अनुसार नये नियोजित नगरों का बसाव यूरोपीय ढ़ंग से किया गया और दूसरी पद्धति में पुराने नगरों के बाहर नियोजित सिविल लाइन्स का बसाव खण्डीय पद्धति से किया गया। मुम्बई, कलकत्ता, बडोदरा, चेन्नई, भुवनेश्वर जैसे नये नगर नियोजित ढ़ंग से बसाये गये; जिनका मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक था। इन नियोजित नगरों में सबसे बड़ा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिवर्तन परकोटा का लोप था। जो मुगलकाल तक कायम था। ब्रिटिश कालीन नगरों में सबसे महत्वपूर्ण नियोजित विकास सिविल लाइन्स, रेल्वे कालोनी एवं छावनी क्षेत्र के रूप में हुआ जहाँ कार्य सम्पादन के लिये नई भूमि पर नगर का बसाव नियोजित ढंग से किया गया। भारत में पुराने नगरों का प्रशासनिक कार्यो के अनुकूल बनाने के लिये नगर के बाहर नियोजित सिविल लाइन्स का विकास सर्वाधिक प्रचालित हुआ।[6]

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय नगरों की बढ़ती समस्याओं के कारण उनके विकास और पुननिर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। पुराने नगरों के विकास के लिये जहाँ एक ओर विकास प्राधिकरणों की स्थापना की गई, वहीं लगभग सभी नगरों के मास्टर प्लान तैयार कराये गये "किसी नवीन नगर के निर्माण अथवा वर्तमान नगर के सुधार हेतु व्यापक और विस्तृत नियोजन को मास्टर प्लान कहते है।"[7] मास्टर प्लान संपूर्ण नगर को एक इकाई रूप में देखता है। यह एक दीर्धावधि योजना है; जिसमें नगर की वर्तमान समस्याओं और भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकास योजनाएं बनाई जाती है। यह एक आदर्श है; जिसके कुछ उद्देश्य है, जो अधिकांशतः अधूरे रह जाते है। मास्टर प्लान का सामान्यतया उपयोग पुराने नगरों के सुधार हेतु किया जाता है; किन्तु नये नगरों के बसाने के लिये भी मास्टर प्लान काम में लाये जाते है। मास्टर प्लान एक बहुउद्देशीय योजना है ; जिसका उद्देश्य नगर की मलिन बस्तियों का सुधार करना, नगरों में अनियंत्रित विकास को निश्चित दिशा प्रदान करना, नगरों में परिवहन, पेयजल, जलव्यवस्था, जल निकास, जल–मल निस्तांरण एवं प्रदूषण की समस्याओं का निदान करना, आवासों जिससे कमियों को दूर किया सके तथा चिकित्सालयों, स्कूलों एवं सामाजिक सुविधाओं की कमी को दूर करना, ग्रामीण अंचलों से नगरों की जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना आदि है। इस प्रकार संक्षेप में हम कह सकते है, कि मास्टर प्लान का उद्देश्य नगर को आकर्षक एवं सुन्दर तथा नगर वासियों के रहने योग्य बनाना है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ सागर नगर नियोजन :

सागर नगर के नियोजन में नगर की भावी आवश्यकताओं का आकलन, वर्तमान एवं भावी नगरवासियों हेतु आवश्यक मूलभूत सुविधाएं जैसे – आवास सार्वजनिक सेवा एवं सुविधाऐं, आमोद–प्रमोद के निर्धारित मापदण्डों के आधार पर करना है। इसके अतिरिक्त नगर के मुख्य कार्यकलाप, नगर तथा आसपास के क्षेत्र में हो रहे आर्थिक औद्योगिक एवं सामाजिक परिवर्तन तथा शासन की औद्योगिक नीतयों को दृष्टिगत रखते हुये भी आवश्यकताओं का आंकलन करना है। **(मानचित्र क्र. 11)**

अतः सागर नगर की वर्तमान समस्याओं का विश्लेषण कर वर्तमान आवश्यकताओं का आंकलन करना है, साथ ही साथ नगर की भावी जनसंख्या एवं भावी स्वरूप आदि के आधार पर भावी आवश्यकताओं का निर्धारण करना भी है। विकास योजना में वैज्ञानिक एवं तकनीकि दृष्टिकोण से, नगर का भावी स्वरूप निर्धारित कर, नगर के विकास का आधार तय करना है, ताकि नगरो को सुनियोजित एवं संतुलित विकास की दिशा मिल सके।

नगर के भावी स्वरूप, कार्यकलाप, जनसंख्या को दृष्टिगत रखते हुये भावी आवश्यकताओं का आंकलन निम्नालिखित बिन्दुओं के आधार पर किया गया है –

अ. विकास योजना हेतु कालावधि

ब. योजना कालावधि में भावी जनसंख्या तथा विभिन्न आवश्यकताऐं ।

स. प्रमुख कार्यकेन्द्र एवं कार्यकलाप हेतु भूमि की आवश्यकताऐं

द. वाणिज्यिक, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक सेवा सुविधाएँ, औद्योगिक क्षेत्र हेतु भूमि की आवश्यकता।

इ. दक्ष यातायात एवं परिवहन व्यवस्था हेतु परिभ्रमण संरचना।

प. निवेश क्षेत्र में उपलब्ध नैसर्गिक संसाधनों एवं संवेदनशील क्षेत्रों का पर्यावरण संरक्षण।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

❑ सागर नगर नियोजन :

सागर नगर के नियोजन में नगर की भावी आवश्यकताओं का आकलन, वर्तमान एवं भावी नगरवासियों हेतु आवश्यक मूलभूत सुविधाएं जैसे – आवास सार्वजनिक सेवा एवं सुविधाऐं, आमोद–प्रमोद के निर्धारित मापदण्डों के आधार पर करना है। इसके अतिरिक्त नगर के मुख्य कार्यकलाप, नगर तथा आसपास के क्षेत्र में हो रहे आर्थिक औद्योगिक एवं सामाजिक परिवर्तन तथा शासन की औद्योगिक नीतयों को दृष्टिगत रखते हुये भी आवश्यकताओं का आंकलन करना है। **(मानचित्र क्र. 11)**

अतः सागर नगर की वर्तमान समस्याओं का विश्लेषण कर वर्तमान आवश्यकताओं का आंकलन करना है, साथ ही साथ नगर की भावी जनसंख्या एवं भावी स्वरूप आदि के आधार पर भावी आवश्यकताओं का निर्धारण करना भी है। विकास योजना में वैज्ञानिक एवं तकनीकि दृष्टिकोण से, नगर का भावी स्वरूप निर्धारित कर, नगर के विकास का आधार तय करना है, ताकि नगरो को सुनियोजित एवं संतुलित विकास की दिशा मिल सके।

नगर के भावी स्वरूप, कार्यकलाप, जनसंख्या को दृष्टिगत रखते हुये भावी आवश्यकताओं का आंकलन निम्नालिखित बिन्दुओं के आधार पर किया गया है –

अ. विकास योजना हेतु कालावधि

ब. योजना कालावधि में भावी जनसंख्या तथा विभिन्न आवश्यकताऐं ।

स. प्रमुख कार्यकेन्द्र एवं कार्यकलाप हेतु भूमि की आवश्यकताऐं

द. वाणिज्यिक, सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक सेवा सुविधाऍं, औद्योगिक क्षेत्र हेतु भूमि की आवश्यकता।

इ. दक्ष यातायात एवं परिवहन व्यवस्था हेतु परिभ्रमण संरचना।

प. निवेश क्षेत्र में उपलब्ध नैसर्गिक संसाधनों एवं संवेदनशील क्षेत्रों का पर्यावरण संरक्षण।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

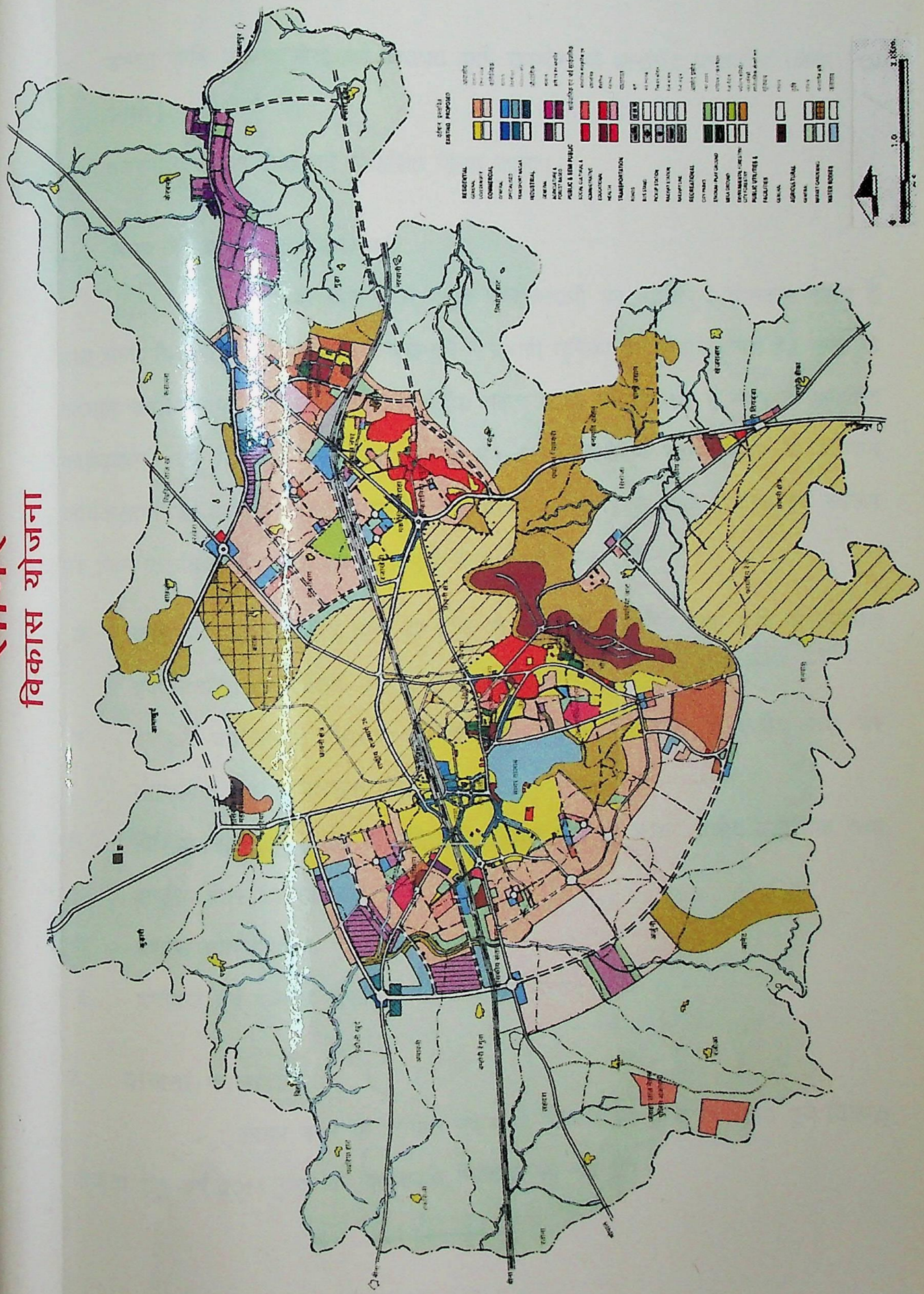

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

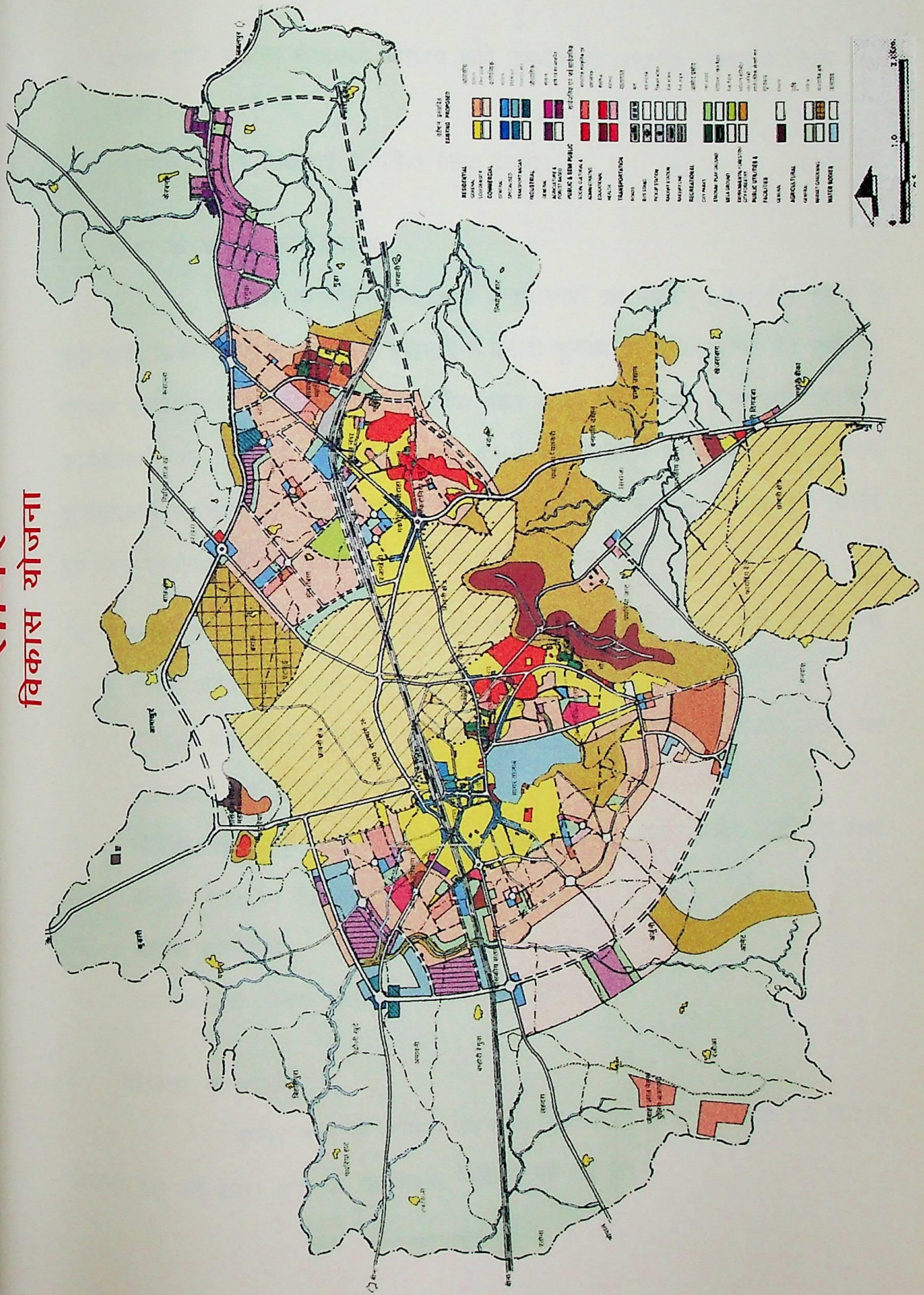

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फ. उन्नत कृषि उत्पाद क्षेत्रों को यथावत कृषि उपयोग के अन्तर्गत प्रस्तावित किया जाना।

उ. वनस्पति उद्यान क्षेत्रों को विकसित किया जाना।

1. नगर के प्रमुख कार्यकलाप :

नगर के विकास में प्रमुख कार्यकलापों का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा भावी विकास एवं नियोजन की पृष्ठभूमि में प्रभावी भूमिका का निर्वाह करते है। नगर के वर्तमान कार्यकलाप, क्षेत्रीय धन संपदा, क्षेत्रीय महत्व आदि के परिप्रेक्ष्य में नगर के अपेक्षित कार्यकलापों का निर्धारण किया जा सकता है। इस परिवेश में सागर नगर के वर्तमान कार्यकलापों का अध्ययन किया गया है। इस आधार पर नगर के भावी विकास एवं स्वरूप पर जिन कार्यकलापों का प्रभाव महत्वपूर्ण होगा वे इस प्रकार हैं –

अ. कृषि पर आधारित क्षेत्र होने की दृष्टि से कृषि पर आधारित तथा कृषि से संबंधित इंजीनियरिंग तथा खाद्य उत्पाद उद्योगों की स्थापना।

ब. वस्तुओं का संग्रह, वितरण, परिवहन एवं विपणन की दृष्टि से क्षेत्रीय स्तर पर व्यापारिक एवं वाणिज्यिक केन्द्र।

स. विशिष्ट संस्थाओं तथा विश्वविद्यालय स्थित होने के कारण क्षेत्रीय प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर का शैक्षणिक केन्द्र।

द. प्रशासनिक केन्द्र।

इ. वनोपज एवं खनिज संसाधन पर आधारित उद्योग।

2. योजना कालावधि

सागर नगर के वर्तमान एवं भावी विकास को दृष्टिगत रखते हुये विकास योजना हेतु वर्ष 2011 तक की कालावधि निश्चित की गई है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

तालिका 8.1

सागर : निवेश इकाईवार भू – उपयोग वितरण

निवेश इकाई क्रमांक	आवासीय	वाणिज्यिक	औद्योगिक	सार्वजनिक अर्द्धसार्वजनिक एवं उपयोगिता	आमोद – प्रमोद	यातायात	योग	अन्य भूमि	महायोग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	285	114	85	75	55	148	762	3774	4536
2	380	45	30	95	18	78	646	2344	2990
3	250	20	10	137	69	82	568	1818	2386
4	190	13	6	71	33	62	375	2758	3133
5	300	27	3	42	160	70	602	2470	3072
6	95	09	158	69	15	60	406	2349	2755
7	300	52	28	31	50	180	641	2324	2965
योग	1800	280	320	520	400	680	4000	17837	21837

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्र. 8.2

सागर भूमि आबंटन 2011 (क्षेत्रफल हेक्टेयर में)

क्र.	भू– उपयोग	वर्तमान 1998			प्रस्तावित 2011		
		क्षेत्रफल	प्रतिशत	भूउपयोग दर	क्षेत्रफल	प्रतिशत	भूआबंटन
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	आवासीय	845	62.3	3.02	1800	45.0	3.60
2.	वाणिज्यिक	66	4.9	0.23	280	7.0	0.56
3.	औद्योगिक	40	3.0	0.14	320	8.0	0.64
4.	सार्वजनिक,अर्द्ध सार्वजनिक एवं उपयोगिता	126	9.3	0.45	520	13.0	1.04
5.	आमोद–प्रमोद	38	2.8	0.14	400	10.0	0.80
6.	यातायात एवं परिवहन	240	17.7	0.86	680	17.0	1.36
	योग	**1355**	**100.00**	**4.84**	**4000**	**100.0**	**8.00**

टीप – भू उपयोग दर एवं भू आबंटन हेक्टेयर प्रति 1000 जनसंख्या में दिये गये है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. योजना का उद्देश्य एवं लक्ष्य

विकास योजना का मुख्य उद्देश्य नगर को संतुलित एवं सुनियोजित विकास की दिशा प्रदान करना है।

सागर नगर को पूर्ण विकसित तथा नियोजित बनाने हेतु, सागर नगर की भौतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निवेश इकाई स्तर पर निम्न प्रस्ताव दिये गये है।[8]

निवेश इकाई क्रंमाक 1 – 5 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 3 – 2 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 4 – 2.5 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 7 – 2 हेक्टेयर

- **निवेश इकाईयाँ :**

सम्पूर्ण निवेश क्षेत्र को भावी क्रियाकलापों के आधार पर सात निवेश इकाईयों में विभक्त किया गया है। विकास योजना मे विभिन्न निवेश इकाईयों को आधार मानकर प्रस्ताव दिये गये है। इन निवेश इकाईयों में कार्य केन्द्र स्थापित करना प्रस्तावित है तथा वे वाणिज्यिक, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आमोद–प्रमोद सुविधाओं की दृष्टि से आत्मनिर्भर होंगी। प्रत्येक निवेश इकाई को प्रमुख कार्य केन्द्र, वाणिज्यिक केन्द्र, उच्च श्रेणी की सेवा सुविधा केन्द्र एवं यातायात अवसान केन्द्रों से समुचित रूप से जोड़ा गया हैं प्रत्येक निवेश इकाई को खंडों में विभाजित कर खण्ड एवं उपखण्ड स्तरीय सेवा सुविधाओं का प्रावधान किया गया है। प्रस्तावित निवेश इकाईयों का वर्णन निम्नानुसार है – **(मानचित्र क्र. 12)**

निवेश इकाई क्रमांक 1.

इस इकाई के दक्षिण दिशा में बीना की ओर रेल लाइन, उत्तर – पश्चिम में निवेश क्षेत्र सीमा तथा पूर्व में छावनी क्षेत्र की पश्चिमी सीमा स्थित है। इसमें प्रमुख रूप से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिन्धी कैंप , भगवानगंज , बिट्ठल नगर आदि आवासीय क्षेत्र, खुरई मार्ग तथा झांसी खुरई वायपास पर स्थित औद्योगिक क्षेत्र आते है। इस इकाई में 4536 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है।

निवेश इकाई क्रंमाक 2.

इस इकाई के उत्तर में बीना की ओर की रेल लाईन, दक्षिण–पश्चिम में निवेश क्षेत्र सीमा तथ दक्षिण पूर्व में धरमसी मार्ग एवं छावनी क्षेत्र स्थित हैं। इसमें वर्तमान नगर का मध्यक्षेत्र (गुजराती बाजार, कटरा, बड़ा बाजार, शुक्रवारी, शनीचरी) तथा अन्य पुरानी बसाहट है; जिनमें मुख्यतः वाणिज्यिक, आवासीय तथा अन्य मिश्रित भूमि उपयोग विद्यमान है। इस इकाई में 2990 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है।

निवेश इकाई क्रंमाक 3

इस इकाई के उत्तर – पश्चिम में धरमसी मार्ग, दक्षिण में निवेश क्षेत्र सीमा तथा पूर्व में तिली अस्पताल मार्ग स्थित है। इसमें मुख्यतः काकागंज , तिली ग्राम आवसीय क्षेत्र के रूप में सागर तालाब स्थित है। इस इकाई में 2386 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है।

निवेश इकाई क्रंमाक 4

इस इकाई के उत्तर में तिली अस्पताल मार्ग दक्षिण एवं उत्तर में छावनी क्षेत्र सीमा तथा पूर्व में नरसिंहपुर मार्ग स्थित है। इसमें गोपालगंज, सिविल लाइन, विश्वविद्यालय न्यू कॉलोनी, मनोरमा कॉलोनी, आवसीय क्षेत्र तथ जिलाधीश, आयुक्त जिला न्यायालय जैसे प्रशासकीय कार्यालय समाविष्ट है। इस इकाई में 3133 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है।

निवेश क्रंमाक 5

इस इकाई के पश्चिम में नरसिंहपुर मार्ग, दक्षिण एवं पूर्व में निवेश क्षेत्र सीमा तथा उत्तर में कटनी की ओर रेललाइन स्थित है। इसमें मुख्यतः मकरोनिया, पद्माकर नगर, झांसी मार्ग का आवासीय क्षेत्र तथा एस. एस. एस. एवं मध्यप्रदेश विद्युत मंडल कार्यालय स्थित है। इस इकाई का कुल क्षेत्रफल 3072 हेक्टेयर है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निवेश इकाई क्रंमाक 6

इस इकाई के दक्षिण में कटनी की ओर की रेल लाइन पूर्व में निवेश क्षेत्र सीमा तथा उत्तर पश्चिम में छतरपुर मार्ग स्थित है। इसमें मुख्यतः गंभीरिया स्थित इंजीनियरिंग कॉलेज तथा सिद्धगुवॉ स्थित औद्योगिक क्षेत्र है इस इकाई में कुल 2755 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है।

निवेश इकाई क्रंमाक 7

इस इकाई के दक्षिण पूर्व में छतरपुर मार्ग, उत्तर में निवेश क्षेत्र सीमा , दक्षिण पश्चिम में छावनी क्षेत्र तथा दक्षिण में रेल्वे लाइन स्थित है। इस इकाई का कुल क्षेत्रफल 2965 हेक्टेयर है। इसमें मुख्यतः कृषि क्षेत्र सम्मिलित है।

- **प्रस्तावित भूमि उपयोग एवं आबंटन :**

नगर के भावी स्वरूप,भावी जनसंख्या तथा उसकी आवासीय वाणिज्यिक, औद्योगिक अधोसंरचना सेवा, सुविधाओं आमोद–प्रमोद की आवश्यकताओं का आंकलन विभिन्न भूमि उपयोगों के अन्तर्गत भूमि आवश्यकता का निर्धारण किया गया हैं। वर्तमान में भूमि उपयोग विश्लेषण के आधार पर प्रति 1000 जनसंख्या के पीछे 4.84 हेक्टेयर का क्षेत्र उपयोग में लाया जा रहा है। प्रस्तावित विकास योजना में भावी आवश्यकताओं तथा वर्तमान में कमी के आधार पर प्रति 1000 जनंसख्या के पीछे 8.00 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। आगामी तालिका क्रंमाक 9.2 में भूमि उपयोग का विवरण दर्शाया गया है।

4.1 आवासीय :

वर्तमान में नगर नियोजन का औसत आवासीय घनत्व 332 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर है। नगर की सघन बसाहट मुख्यतः मध्यक्षेत्र में ही है। इस क्षेत्र में बसे हुये व्यक्तियों द्वारा वर्तमान में उपलब्ध भवन का ही विस्तार कर नियोजन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त नगर का मध्य क्षेत्र वाणिज्यिक गतिविधियों का प्रमुख क्षेत्र बना हुआ है; जिसमें सभी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकार के थोक एवं फुटकर व्यापार सम्मिलित है। वर्तमान में व्यापारियों द्वारा निवास में ही वाणिज्यिक गतिविधियॉ संचालित हो रही है; जिसके कारण वर्तमान भवन का विस्तार एवं आवासी घनत्व में वृद्धि हो रही है। नगर के मध्य क्षेत्र से वाणिज्यिक एवं आवासीय घनत्व के दबाव को कम करने के लिये इनका विकेन्द्रकरण कर नगर के बाहरी क्षेत्रों में किया जा रहा है।

विकास योजना में 278 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर के आधार पर आवासीय भूमि की आवश्यकता का निर्धारण किया जा रहा है। इस आधार पर प्रति 1000 व्यक्ति हेतु लगभग 3.60 हेक्टेयर आवासीय भूमि का प्रावधान प्रस्तावित किया गया है। अतः 5.0 लाख की अनुमानित जनसंख्या हेतु 1800 हेक्टेयर आवासीय भूमि की आवश्यकता होती है।

विकास योजना में ग्राम रजौआ, बघोना एवं अर्जुनी में लगभग 450 हेक्टेयर भूमि को निम्न घनत्वीय आवासीय विकास हेतु प्रदर्शित किया गया है। ये ऐसा क्षेत्र है, जो भावी विकास हेतु संस्पर्शी है तथा इस भूमि पर भावी विकास का दबाव होना स्वाभाविक है।

4.2 वाणिज्यिक :

नगर का सर्वांगीण विकास, नगर की व्यापारिक एवं वाणिज्यिक तथा अन्य व्यापारिक केन्द्रों के साथ उसके संबंध आदि पर निर्भर करता है। सागर नगर के क्षेत्रीय व्यापार एवं वाणिज्यिक केन्द्र मुख्य रूप से वर्तमान में कार्यरत हैं तथा भविष्य में इन गतिविधियों की ओर तेजी से बढ़ने की संभावना हैं। इसी आधार पर इसे नगर के भावी मुख्य कार्यकलाप के अन्तर्गत समाविष्ट किया गया है।

वर्तमान में वाणिज्यिक भूमि उपयोग हेतु उपयोगिता दर 0.23 हेक्टेयर भूमि प्रति हजार व्यक्ति पाई गयी है, जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अपर्याप्त प्रतीत होती है। सागर में वर्तमान में 8235 वाणिज्यिक इकाइयॉ है; जिनमें 10,151 श्रमिक कार्यरत है तथा इसके अंतर्गत 66.0 हेक्टेयर भूमि है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगर की भावी व्यापारिक वाणिज्यिक गतिविधियों को दृष्टिगत रखते हुये , इसे पर्याप्त भूमि उपलब्ध करायी जाना आवश्यक है। भावी जनसंख्या के आधार पर इस उपयोग हेतु भूमि की आवश्यकता 0.56 हेक्टेयर प्रति 1000 जनसंख्या के आधार पर अनुमानित की गई है। इस आधार पर वाणिज्यिक उपयोग हेतु 280 हेक्टेकर भूमि का प्रावधान किया गया है।

- **कृषि उपज मंडी :**

वर्तमान में कृषि उपज मंडी का विकास एवं निर्माण झांसी खुरई वायपास मार्ग संगम पर स्थानांतरित कर नियोजन किया गया है। इसके अतिरिक्त मंडी के भावों विस्तार हेतु 10.0 हेक्टेयर क्षेत्र इसी स्थल से संलग्न क्षेत्र में प्रस्तावित किया गया है।

- **उपमंडी :**

कृषि उपजमंडी के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुये, उपमंडियाँ निवेश इकाई 3 एवं 7 में प्रस्तावित की गई है। निवेश इकाई क्रंमाक 3 में तिली–पथरिया जाट मार्ग पर 6 हेक्टेयर तथा निवेश इकाई क्रंमाक 7 में छतरपुर – झांसी वायपास मार्ग पर 12 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है।

- **साप्ताहिक बाजार :**

निवेश इकाई क्रंमाक 1 ,3, 6 एवं 7 में साप्ताहिक बाजार प्रस्ताव उपयुक्त स्थल पर दिया गया है। निवेश इकाई क्रंमाक 1 में सब्जी फल मंडी के साथ , निवेश इकाई क्रंमाक 3में, उपमण्डी के साथ निवेश इकाई क्रंमाक 6 में ग्राम रजाखेड़ी मार्ग पर तथा इकाई क्रंमाक 7 में छतरपुर झांसी वायपास मार्ग पर इन्हें प्रस्तावित किया गया है।

- **गोदाम/शीत गृह :**

निवेश इकाई क्रंमाक 1 में 12 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित किया गया है। इस स्थान का चयन वर्तमान कृषि उपज मंडी से समन्वय स्थापित करने की दृष्टि से किया गया

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा स्थल का वर्तमान में बने वायपास मार्ग पर होने से इसका विकास तत्काल प्रभाव से संभावित है। इसके अतिरिक्त निवेश इकाई क्रंमाक 7 में भी 12 हेक्टेयर क्षेत्र इस हेतु प्रस्तावित किया गया है, जो छतरपुर–झांसी वायपास मार्ग पर स्थित है, इसे विकसित किये जाने में पहुँच मार्ग अवरोध नहीं है तथा व्यवहारिक दृष्टि से भी यह अत्यंत उपयुक्त है।

- **घास मंडी एवं पशु बाजार :**

यातायात समस्या एवं आसपास के भू–उपयोग से असंगतता के कारण पशु बाजार एवं घासं मण्डी को सागर–भोपाल मार्ग पर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कृषि अनुसंधान केन्द्र की भूमि में से 5.00 हेक्टेयर भूमि पर प्रस्तावित किया गया है।

- **भवन निर्माण सामग्री प्रांगण एवं माल गोदाम :**

वर्तमान में यह गतिविधि नगर के मध्य में स्थित गुजराती बाजार एवं अन्य आसपास के क्षेत्रों से संचालित होती है। भावी आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुये , निवेश इकाई क्रंमाक 1 में 18 हेक्टेयर भोपाल खुरई वायपास एवं रेल लाइन के मध्य प्रस्तावित किया गया है।

- **वर्गीकृत बाजार**

अ. कबाड़ी बाजार

इससे संबंधित गतिविधियॉ वर्तमान में मध्यवर्ती क्षेत्र के नया बाजार में संचालित होती हैं। इसे निवेश क्रंमाक 1 में 8 हेक्टेयर क्षेत्र वर्तमान में बने खुरई – भोपाल वायपास मार्ग पर प्रस्तावित किया गया है।

ब. यातायात नगर

वर्तमान में परिवहन गतिविधियॉ एवं अभिकरण संबंधी व्यवसाय प्रमुखतः भगवानगंज बाजार में होता है। इस प्रकार की गतिविधियाँ मकरोनिया मार्ग संगम के पास भी स्थापित हो रही है ; जिससे क्षेत्रीय यातायात में बाधा उत्पन्न हो रही है। भगवानगंज क्षेत्र में भी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिवहन गतिविधियों के कारण यातायात में बाधा उत्पन्न होती है अतः परिवहन संबंधी समस्त गतिविधियों को संगठित करने तथा यातायात को सुगम बनाने की दृष्टि से दो यातायात नगर प्रस्तावित किये गये है ; जिनमें से एक, निवेश इकाई क्रंमाक 1 में वर्तमान भोपाल, खुरई वायपास मार्ग पर ग्राम इमावनी की शासकीय भूमि में 15 हेक्टेयर इस हेतु प्रस्तावित किया गया है तथा दूसरा यातायात नगर ग्राम बामोरा में निवेश इकाई क्रंमाक 7 में वर्तमान में बने झांसी छतरपुर वायपास मार्ग पर शासकीय भूमि में 12 हेक्टेयर क्षेत्र में प्रस्तावित किया गया है। इन स्थानों पर यातायात नगर के प्रस्ताव शासन की गठित समिति द्वारा अनुशंसित है।

4.3 औद्योगिक

प्रमुख शहरों से रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा संबंधित होने के बावजूद भी यह नगर औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है तथा वर्तमान मे मुख्यतः विभिन्न उद्योगों से संबंधित छोटी इकाइयॉ कार्यरत है; जिसके अन्तर्गत मात्र 40 हेक्टेयर भूमि है। इस प्रकार भू–उपयोगिता दर 0.14 हेक्टेयर प्रति एक पाई गई है। वर्तमान में सागर के निकट, सिद्धगवॉ ग्राम में औद्योगिक विकास केन्द्र द्वारा 180 हेक्टेयर का औद्योगिक प्रक्षेत्र विकसित किया गया है। तथा इसमें लगभग 13 हेक्टेयर भूमि पर ही उद्योगों की स्थापना हुई है। इस प्रकार वर्तमान में भूमि औद्योगिक उपयोग हेतु उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त नगर में भविष्य में कृषि उत्पाद पर आधारित उद्योगों तथा कृषि से संबंधित इंजीनियरिंग उद्योगों की स्थापना होने की संभावना है। इस उपयोग हेतु कुल 280 हेक्टेयर भूमि विकास योजना में प्रस्तावित की गई है।

- **प्रस्तावित औद्योगिक कार्य केन्द्र**

नगर में औद्योगिक विकास की गति लगभग नगण्य है। वर्तमान में कार्यरत औद्योगिक इकाइयॉ खुरई मार्ग पर स्थित है। कृषि पर आधारित उद्योग एवं आरामशीन झाँसी मार्ग पर एवं भोपाल मार्ग पर विभिन्न क्षेत्रों में स्थित हैं। औद्योगिक विकास को गति देने की दृष्टि से सामान्य उद्योग , कृषि आधारित एवं कृषि इंजीनियरिंग उद्योग, वनऊपज पर आधारित इकाइयॉ विभिन्न निवेश इकाइयों में प्रस्तावित की गई है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्र. 8.3

आवासीय भूखण्डों के विकास मापदण्ड

क्रं.	भूखण्ड का आकार मीटर में	क्षेत्रफल वर्गमीटर में	विकास का प्रकार	भूतल पर निर्मित क्षेत्र प्रतिशत	सीमित खुला क्षेत्र मीटर में			
					अग्र	पृष्ठ	आजू	बाजू
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	4.0 X 8.0	32	पंक्ति	60	3.0	0.0	0.0	0.0
2.	4.0 X 12.0	48	पंक्ति	60	3.0	1.5	0.0	0.0
3.	5.0 X 15.0	75	पंक्ति	60	3.0	1.5	0.0	00
4.	7.0 X 15.0	105	पंक्ति	50	3.0	1.5	0.0	0.0
5.	9.0 X 15.0	135	अर्द्धपृथक्कृत	50	3.0	1.5	2.5	0.0
6.	11.10 X 18.0	200	अर्द्धपृथक्कृत	50	3.0	2.5	2.5	0.0
7.	11.10 X 18.0	200	पृथक्कृत	42	3.5	2.5	3.0	1.5
8.	12.10 X 18.0	216	पृथक्कृत	42	3.5	2.5	3.0	1.5
9.	12.0 X 24.0	288	पृथक्कृत	40	4.5	2.5	3.0	1.5
10.	15.0 X 24.0	360	पृथक्कृत	3.5	6.0	2.5	3.0	3.0
11.	15.0 X 27.0	405	पृथक्कृत	33	7.5	3.0	3.5	3.0
12.	18.0 X 30.0	540	पृथक्कृत	33	8.0	3.0	4.0	3.0
13.	20.0 X 30.0	600	पृथक्कृत	33	9.0	3.0	4.5	3.0
14.	25.0 X 30.0	750	पृथक्कृत	30	12.0	4.5	4.5	4.5

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तालिका क्र. 8.4

सागर : निवेशइकाईवार जनसंख्या एवं आवासीय घनत्व

क्र.	आवासीय क्षेत्र			जनसंख्या (लाख में)			औसत आवासीय घनत्व
	वर्तमान प्रस्तावित	अतिरिक्त	योग	वर्तमान अनुमानित	अतिरिक्त	योग	
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	127	150	277	0.47	0.24	0.71	256
2.	280	130	410	1.35	0.35	1.70	414
3.	73	180	253	0.23	0.23	0.46	182
4.	107	45	152	0.36	0.24	0.60	395
5.	212	80	292	0.26	0.36	0.62	212
6.	20	75	95	0.06	0.15	0.21	212
7.	26	295	321	0.07	0.63	0.70	218
	845	955	1800	2.80	2.20	5.00	278

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अ. सिद्धगुवॉ औद्योगिक क्षेत्र :

सिद्धगुवॉ औद्योगिक क्षेत्र, जबलपुर मार्ग पर नगर से 12 किलोमीटर की दूरी पर इस औद्योगिक क्षेत्र का 54.54 हेक्टेयर क्षेत्र वर्तमान में विकसित हो चुका है, तथा शेष 126 हेक्टेयर क्षेत्र जो अविकसित है, उसे यथावत विकास योजना में प्रस्तावित किया गया है। यह औद्योगिक क्षेत्र, निवेश इकाई क्रंमाक 6 में स्थित है एवं इसका विकास मध्यप्रदेश औद्योगिक विकास निगम द्वारा किया जा रहा है।

ब. कृषि आधारित उद्योग :

नगर एवं क्षेत्र के कृषि प्रधान स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुये, कृषि आधारित उद्योग को बढ़ावा देने हेतु निवेश इकाई क्रंमाक 1 एवं 7 में प्रस्तावित किये गये है। निवेश इकाई क्रंमाक 1 में 17 हेक्टेयर क्षेत्र खुरई – झॉसी वर्तमान वायपास मार्ग पर प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त निवेश इकाई क्रंमाक 7 में भी 5 हेक्टेयर क्षेत्र छतरपुर – झॉसी वर्तमान वायपस मार्ग पर प्रास्तावित है।

स. सेवा उद्योग :

निवेश इकाई क्रंमाक 1 में खुरई वर्तमान मार्ग पर 12 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त निवेश इकाई क्रंमाक 5 में रेलमार्ग के किनारे 5 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित हे। इस क्षेत्र को मकरोनिया रेल्वे स्टेशन, यार्ड की सुविधा प्राप्त होगी।

द. टिम्बर इस्टेट एवं टिम्बर मार्केट :

वर्तमान में नगर में आरा मशीन उद्योग विभिन्न क्षेत्रों में स्थित है। इन सभी को संगठित करने की दृष्टि से निवेश इकाई क्रंमाक 1 में 25 हेक्टेयर क्षेत्र, खुरई–भोपाल वर्तमान वायपास मार्ग पर प्रस्तावित किया गया है। मकरोनिया उपनगर को भी इस सुविधा की अत्यंत आवश्यकता होगी ; क्योंकि यह क्षेत्र भी लगभग डेढ़ लाख जनसंख्या का क्षेत्र होगा। इस क्षेत्र को इमारती लकड़ी सुगमता से उपलब्ध हो तथा परिवहन में उन्हें अधिक व्यय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ने करना पड़े, इन समस्त बातों को दृष्टिगत रखते हुये निवेश इकाई क्रंमाक 5 में रेल्वे मार्ग के किनारे 10 हेक्टेयर का क्षेत्र टिम्बर इस्टेट एवं टिम्बर मार्केट हेतु प्रस्तावित किया गया है।

4.4 आमोद–प्रमोद :

वर्तमान सागर नगर के आमोद–प्रमोद के स्थान के रूप में सिविल लाइन चौराहे के पास शासकीय बाल उद्यान हैं ; जिसका क्षेत्रफल लगभग 0.5हेक्टेयर है। इसके अतिरिक्त नगर पालिका के दो उद्यान जो क्रमशः गोपालगंज तथा म. प्र. राज्य परिवहन बस स्टैण्ड के पास स्थित है, जो सागर नगर की वर्तमान आवश्यकताओं को देखते हुये नगण्य है। डफरिन अस्पताल के सामने तालाब से लगकर लाखा बंजारा उद्यान जो पट्टीनुमा है, भी विकसित किया गया है। आधुनिक युग में आमोद–प्रमोद की अहम् भूमिका को दृष्टिगत रखते इसके अन्तर्गत उद्यानों खेल के मैदानों, स्टेडियम, तरनताल, प्राणी उद्यान, एवं पिकनिक स्थल आदि का प्रस्ताव कर प्रस्तावित किया गया है। इस उपयोग के अन्तर्गत 400 हेक्टेयर भूमि प्रस्तावित की गई है, जो कुल प्रस्तावित भूमि का 10 प्रतिशत हे।

विकास योजना में विभिन्न निवेश इकाई केन्द्र स्तर पर नगर उद्यान प्रस्तावित किये गये हैं । इसके अतिरिक्त आमोद–प्रमोद गतिविधियों हेतु निम्न प्रस्ताव दिये गये हैं –

अ. आमोद–प्रमोद स्थल :

खुरई–भोपाल बायपास मार्ग पर प्राकृतिक जलाशय के समीप आमोद–प्रमोद स्थल प्रस्तावित किया गया है ।

ब. मेला मैदान/प्रदर्शिनी स्थल :

निवेश इकाई क्रं. 7 में 20 हेक्टेयर क्षेत्र मकरोनिया उपनगर की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तावित किया गया है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स. प्राणी उद्यान :

प्राणी उद्यान विकसित करने की दृष्टि से निवेश इकाई क्रं. 5 में शासकीय भूमि पर प्रस्ताव दिये गये हैं ।

द. पर्यावरण वानिकी :

सागर तालाब के दक्षिण में 42 हेक्टेयर क्षेत्र पर्यावरण वानिकी हेतु प्रस्तावित किया गया है । यह नगर के पर्यावरण सुधार एवं तालाब के जल ग्रहण संरक्षण, संवर्द्धन की दिशा में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता होगा ।

इ. नगर वन/वृक्षारोपण/हरित पट्टिका :

सागर नगर चारों दिशाओं में पहाड़ियों से घिरा हुआ है । इन पहाड़ियों पर, सघन वृक्षारोपण द्वारा पर्यावरण उन्नयन के साथ–साथ पहाड़ियों का भूदृश्यीकरण भी होगा। विकास योजना में निम्नलिखित पहांड़ियों पर वृक्षारोपण प्रस्तावित है –

1. विश्वविद्यालय पहाड़ी
2. पथरिया जाट
3. आमेट पहाड़ी
4. भैंसा पहाड़ी
5. बमोरी पहाड़ी
6. जल तटीय विकास

तिली नगर के प्रमुख नाले जो प्रस्तावित भूमि उपयोग क्षेत्र से गुजरते हैं उनमें दोनों ओर म.प्र. भूमि विकास नियम 1984 के प्रावधान अनुसार कम से कम 1 मीटर चौड़ी हरित पट्टी के रूप में तटीय विकास हेतु प्रस्तावित है ।

प. सामुदायिक खुले स्थल :

भूतेश्वर मंदिर के धार्मिक महत्व को दृष्टिगत रखते हुए उसके आसपास

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का 6 हेक्टेयर क्षेत्र सामुदायिक खुले स्थल के रूप में धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन हेतु रखा गया है ।

फ. वनस्पति उद्यान :

निवेश इकाई क्रं. 5 एवं क्रं. 7 में शासकीय भूमि पर प्रस्ताव दिये गये हैं ; जिससे नगर के विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी ।

4.4. सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक सेवा सुविधाएँ :

सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक सेवा सुविधाओं में वर्तमान कमी एवं भावी आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए इस हेतु नगर स्तर, स्तर एवं सेक्टर स्तर पर निवेश इकाई प्रस्ताव दिये गये हैं ; जिससे नगर के विभिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी–

अ स्वास्थ्य :

नगर की भावी स्वास्थ्य संबंधी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए जिला स्तरीय चिकित्सालय हेतु निवेश इकाई क्रं. 6 में 20 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है । इसके द्वारा मकरोनिया उपनगर को स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध हो सकेंगी । निवेश इकाई स्तर पर सुविधाएं हेतु निम्नानुसार क्षेत्र प्रस्तावित हैं –

निवेश इकाई क्रमांक–1 – 8 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रमांक–6 –20 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रमांक–7 – 2 हेक्टेयर

ब. शैक्षणिक :

इन सागर नगर की वर्तमान एवं भावी शैक्षणिक आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए निवेश इकाईयों में अग्रलिखित प्रस्ताव दिये गये हैं–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निवेश इकाई क्रमांक–1 –10 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रमांक–3 – 4 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रमांक–5 – 4 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रमांक–7 – 4 हेक्टेयर

इस प्रस्तावित क्षेत्रों में दो महिला महाविद्यालय गृहविज्ञान महाविद्यालय कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय आदि के रूप में प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त बालक एवं बालिकाओं हेतु उच्चतर माध्यमिक एवं प्राथमिक शालायें एवं पूर्व प्राथमिक शालायें निवेश इकाइयों की आवश्यकतानुसार प्रस्तावित है।

सागर का मूल स्वरूप कृषि प्रधान है। यहॉ के ग्रामीण अंचलों में शिक्षित युवकों को कृषि आधारित प्रशिक्षण की प्रबल आवश्यकता है ; जिससे ग्रामवासियों द्वारा उन्नत कृषि की जा सके तथा कृषि उपज का उत्पादन बढ़ाया जा सके। इससे बेराजगारी की समस्या का भी समाधान हो सकेगा। तथा ग्रामीण युवकों के पलायन को रोका जा सकता है। सागर में कृषि महाविद्यालय की नितांत आवश्यकता को देखते हुये वर्तमान में भोपाल मार्ग पर जवाहरलाल नेहरू कृषि विद्यालय जबलपुर के अन्तर्गत कार्यरत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र जो कि लगभग 150 हेक्टेयर क्षेत्र का उपयोग कृषि महाविद्यालय एवं कृषि प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में किया जाना प्रस्तावित है। सागर में मेडीकल कॉलेज की स्थापना हेतु निवेश इकाई क्रंमाक 3 में लगभग 30 हेक्टेयर क्षेत्र भी प्रस्तावित किया गया है।

4.5 कार्यालय एवं प्रशासकीय केन्द्र :

सागर राजस्व संभाग का मुख्यालय है। यहाँ संभागीय एवं जिला स्तर के अनेक कार्यालय कार्यरत है। वर्तमान में स्थित कार्यालय , नगर के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में किराये के भवनों में कार्यरत है। इन समस्त कार्यालयों को संयुक्त एवं संगठित रूप से समायोजित करने की दृष्टि से, निवेश इकाई क्रमांक 4 में कचहरी पहाड़ी पीली कोठी के सामने एक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रशासकीय परिसर (संयुक्त जिला कार्यालय) हेतु 7.0 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। इस परिसर में जिला एवं संभागीय स्तर के कार्यालय स्थापित करना प्रस्तावित है इसका अनुमोदन शासन द्वारा गठित समिति द्वारा किया जा चुका है यह पूर्णतया शासकीय भूमि है तथा वर्तमान में रिक्त अवस्था में है।

नगर पालिका निगम के कार्यालय हेतु, खुरई मार्ग पर ग्राम करीला में 2 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। नगर निगम कार्यालय वर्तमान में नगर के मध्य क्षेत्र से अन्य भवनों में स्थानांतरित हो चुका है तथा पूर्व के कार्यालय भवन को तोड़कर वाणिज्य परिसर का निर्माण नगरपालिका निगम द्वारा किया जा चुका है।

नगर की भावी आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुये, प्रशासकीय प्रक्षेत्र का प्रावधान, मकरोनिया उपनगर में छतरपुर मार्ग पर इंजीनियरिंग कॉलेज के समीप 18.0 हेक्टेयर क्षेत्र में प्रस्तावित किया गया है। समस्त निवेश इकाइयों में भी निवेश इकाइयों की आवश्यकताओं के अनुरूप, निवेश इकाई स्तर के प्रशासकीय परिसर प्रस्तावित किये गये है–

निवेश इकाई क्रंमाक 1 – 25 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 3 – 4 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 4 – 5 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 5 – 8 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 6 – 18 हेक्टेयर

निवेश इकाई क्रंमाक 7 – 6 हेक्टेयर

4.6 पुलिस प्रशिक्षण संस्थान (महाविद्यालय) :

यह नगर के मध्य परकोटा स्थित किले में कार्यरत है। जहाँ उनकी आवश्यकतानुसार स्थान का अभाव है। तथा वर्तमान कार्याकलापों के लिये पूर्णतया अनुपयुक्त है। इसे ग्राम रतौना एवं ग्राम बदौना में 90 हेक्टेयर शासकीय भूमि प्रदान करने का प्रस्ताव शासन को भेजा जा चुका है, जिसे सागर विकास योजना में यथावत् समाहित किया गया है

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

- **आवासीय भूखण्डों के विकास मापदण्ड :**

मध्यप्रदेश भूमि विकास नियम 1984 के परिशिष्ट एम. (नियम 9.4) में निहित प्रावधानों के अनुरूप विशेषतः अल्प आय वर्ग का अभिन्यास तैयार किया जाना चाहिए। तालिका 9.3 में भूखण्ड विकास की अतिरिक्त श्रेणियाँ दर्शायी गई हैं –

4.7 इकाईवार अनुमानित जनसंख्या एवं घनत्व :

विकास योजना हेतु अनुमानित जनसंख्या 5 लाख जनसंख्या को समाहित करने के लिये सातों निवेश इकाईयों में आवासीय प्रस्ताव दिये गये है। प्रत्येक निवेश इकाई में आवासीय सेक्टर लगभग 15000 जनसंख्या के मान से प्रस्तावित किये गये है। प्रत्येक निवेश इकाईवार जनसंख्या एवं आवासीय घनत्व का प्रस्तावित विवरण निम्न तालिका में दर्शाया गया है –

अ. असंगत भूमि उपयोग :

नगर में विद्यमान असंगत उपयोग वर्तमान परिवेश में यातायात पर्यारवरण, स्थान की कमी, आसपास की भूमि उपयोग में असंगतता की दृष्टि से असंगत उपयोग के रूप में चयन किये गये है। इन भूमि उपयोगों को स्थानांतरित कर पुर्नस्थापना तथा रिक्त हुये स्थान को अधिक सक्षम रूप से उपयोग प्रस्तावित किया गया है। इन भू उपयोगों का यथाशीघ्र स्थानातरंण आवश्यक है अपितु इसके लिये म. प्र. नगर तथा ग्राम निवेश अधिनियम 1973 की धारा 25 के प्रावधानन्तर्गत युक्ति युक्त समयावधि दी जा सकेगी। तालिका क्रमांक 9.5 में असंगत भूमि उपयोगों की पुर्नस्थापना एवं रिक्त भूमि के विकास को दर्शाया गया है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर : असंगत भूमि उपयोगों की पुर्नस्थापना एवं रिक्त भूमि का विकास

स्थानांतर हेतु प्रस्तावित	वर्तमान स्थल	प्रस्तावित स्थल	रिक्त होने पर भूमि का उपयोग
2	3	4	5
1. आवासीय आवासीय भवन	गौरभवन के पास तिराहा के शासकीय आवास	न्यूकॉलोनी और मकरोनिया	सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक (शा. कार्यालय)
2. पशुपालन (डेरियाँ)	गोपलागंज, परकोटा कृष्णगंज,रविशंकर बल्लभ भवन, सिंधी कॉलोनी	निवेश इकाई क्रमांक 1	आवासीय क्षेत्र
3. वाणिज्यिक अ. परिवहन अभिकरण	भगवानगंज, गुजराती बाजार	निवेश क्रंमाक 1एवं निवेश इकाई क्रं.7 में वायपास मार्ग पर	आवासीय तथा वाणिज्यिक
ब. अनाजमंडी	टंकी मार्ग	निवेश इकाई क्रं.1 में वायपास मार्ग पर	अनाज और किराना बाजार
स. पशु एवं घास मंडी	राहतगढ़ नाका	निवेश क्रं 1	रिपेयर से संबंधित वर्कशॉप
द. फल एवं सब्जी थोक बाजार	नया बाजार	निवेश क्रं 1	फुटकर सब्जी बाजार
इ. कबाड़ी बाजार	नया बाजार	निवेश क्रं 1	आवासीय तथा वाणिज्यक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थानांतर हेतु प्रस्तावित	वर्तमान स्थल	प्रस्तावित स्थल	रिक्त होने पर भूमि का उपयोग
2	3	4	5
4. औद्योगिक			
अ. रिपेयर्स वर्कशॉप	भगवानगंज तिलक गंज बल्लभ नगर	राहतगढ़ बस स्टैण्ड के स्थान पर	आवासीय तथा वाणिज्यिक
ब. आरा मशीनें	भोपाल मार्ग, स्टेशन मार्ग, भगवानगंज तिलकगंज	निवेश इकाई क्रं.1	आवासीय तथा वाणिज्यिक
स. दाल एवं तेल मिल	तिलकगंज,भगवानगंज कटरा	निवेश इकाई क्रं.1	आवासीय तथा वाणिज्यिक
5. बीड़ी गोदाम	गुजराती बाजार, कटरा	निवेश इकाई क्रं. 1 एवं क्रं. 7	आवासीय तथा वाणिज्यिक
6.. सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक			
अ. पुलिस प्रशिक्षण संस्थान	किला	निवेश इकाई क्रं. 2	आमोद–प्रमोद एवं सांस्कृतिक
ब. सेन्ट्रल कोतवाली पुलिस चौकी	चकराघाट	भूतेश्वर मंदिर के सामने निवेश क्रं. 1	यातायात पुलिस चौकी
7. यातायात एव परिवहन			
8. अस्थाई बस स्टैण्ड , निजी बस स्टैण्ड	राहतगढ़ क्रांसिग के पास	रेल्वे स्टेशन के समीप प्रस्तावित स्थल	वाणिज्यिक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4.8 प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना एवं नगरीय अधोसरंचना :

प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना, नगर के भावी आकार एवं स्वरूप का निर्धारण करती है। दक्ष यातायात एवं परिभ्रमण व्यवस्था के माध्यम से यात्रा का समय, दूरी तथा वाहन चालन मूल्य आदि कम किया जा सकता है। उपरोक्त बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तावित परिभ्रमण सरंचना निम्नलिखित अवधारणा पर आधारित है –

1. क्षेत्रीय यातायात एवं नगरीय यातायात का पृथ्ककरण ।
2. भावी यातायात घनत्व के आधार पर, मार्गो की श्रेणी का निर्धारण।
3. नगर कार्य केन्द्र तथा अन्य कार्यकेन्द्र के बीच परस्पर सपंर्क स्थापित करना।
4. नगर में दो मार्गो के मध्य टूटे हुये सड़क सम्पर्क को जोड़ने हेतु नये मार्गो का प्रस्ताव एवं उन्नयन।
5. नगर की सड़कों का सक्षम बनाने हेतु ग्रेड क्रांसिग तथा रेल्वे ओव्हर ब्रिज।

(मानचित्र क्र. 13)

1. क्षेत्रीय यातायात

अ. रेलमार्ग

यह नगर रेल यातायात के कटनी–बीना खण्ड पर स्थित होने के कारण, देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार इसकी क्षेत्रीय यातायात की आवश्यकता की पूर्ति वर्तमान रेलमार्ग से हो सकेगी । वर्तमान में सागर रेल्वे स्टेशन को विस्तारित करने हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। इसको दृष्टिगत रखते हुये इसे दो मुखी रेल्वे स्टेशन तथा भविष्य के लिये मकरोनिया स्टेशन का विकास प्रस्तावित किया गया है।

ब. सड़क मार्ग

सागर से माल का आवागमन मार्ग यातायात द्वारा देश एवं प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में होता है। इस प्रकार क्षेत्रीय मार्गो पर यातायात का काफी दबाब रहता है। भावी क्षेत्रीय यातायात को दृष्टिगत रखते हुये क्षेत्रीय मार्गों की दशा में सुधार लाना आवश्यक है तथा साथ ही साथ इन्हें चौड़ा करना भी प्रस्तावित है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर

प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स. सीधा यातायात

सागर नगर से भोपाल, झांसी जबलपुर, कानपुर, नरसिंहपुर, बीना की ओर जाने वाले मार्गो पर बहुतायत से सीधा मार्ग गुजरता है। अतः इन सभी मार्गो को वायपास द्वारा आपस में जोड़ा जाना प्रस्तावित है। वर्तमान में झॉसी खुरई तथा खुरई भोपाल वायपास निर्मित हो चुका है तथा छतरपुर झॉसी वायपास का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त भोपाल नरसिंहपुर तथा नरसिंहपुर जबलपुर मार्ग हेतु वायपास प्रस्तावित किया गया है, ताकि क्षेत्रीय यातायात का नगरीय यातायात से पृथ्ककरण हो सके।

2. नगर परिभ्रमण संरचना :

नगरीय परिभमण संरचना, नगर के प्रमुख कार्य केन्द्र तथा यातायात अवसान केन्द्र को दृष्टिगत रखते हुये प्रस्तावित की गई है। इसके द्वारा क्षेत्रीय यातायात एवं नगरीय यातायात का पृथककरण संभव हो सकेगा। साथ ही ग्रेड क्रांसिंग निर्मित होने से नगरीय यातायात सुगम हो सकेगा तथा साथ–साथ नगर की वर्तमान एवं भावी आबादी को जोड़ना संभव हो सकेगां इस प्रकार यात्रा, समय तथा दूरी, ईधन की खपत कम करने हेतु नगर की परिभ्रमण संरचना प्रस्तावित की गई है। प्रस्तावित परिभ्रमण संरचना स नगर के प्रमुख कार्य के जैसे – कृषि उपज मंडी, यातायात नगर, औद्योगिक प्रक्षेत्र वाणिज्य केन्द्र सें सीधा संपर्क हो सकेगा।

3. मार्गो का श्रेणी क्रम :

1. क्षेत्रीय मार्ग :

सागर नगर से राष्ट्रीय राजमार्ग क्रंमाक 26 , राज्य राजमार्ग क्रमांक 14 एवं 15 प्रमुख जिला मार्ग सागर भोपाल एवं सागर–रहली आदि मार्ग गुजरते है। इन मार्गो द्वारा क्षेत्रों के विभिन्न नगरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पर्क स्थापित होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

2. वायपास मार्ग :

राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 26 एवं राजमार्ग क्रमांक 14.15 एवं क्षेत्रीय मार्ग को आपस में जोड़ने हेतु 60 मीटर चौड़ा वायपास प्रस्तावित है। इनके द्वारा विकास योजना में प्रस्तावित प्रमुख गतिविधियों को भी पहुँच सुलभ होगी।

3 प्रमुख नगर मार्ग :

नगर का प्रमुख यातायात तथा नगर केन्द्र, प्रमुख कार्यकेन्द्र, शिक्षा संस्थाएं स्वास्थ्य केन्द्र, इन्हीं मार्गो पर स्थित होगें। इन मार्गो की यातायात क्षमता को दृष्टिगत रखते हुये इनकी चौड़ाई प्रस्तावित की गई है।

4 वृत्त खण्ड मार्ग :

ये मार्ग आवासीय खण्डों एवं भूमि उपयोग क्षेत्र की सीमा पर प्रस्तावित किये गये है। ये विभिन्न आवासीय क्षेत्रों के मध्य परस्पर संबंध स्थापित करेंगें। इनकी चौड़ाई 30 मीटर प्रस्तावित है।

5. उपवृत्त खण्ड मार्ग :

इन मार्गो द्वारा खण्ड में स्थित जनसंख्या की यातायात विषयक आवश्यकताएं पूरी होती रहेंगी तथा इन मार्गो को वृत्त खण्ड स्तरीय मार्गो से जोड़ा जायेगां इनकी चौड़ाई 24 मीटर प्रस्तावित है।

6 स्थानीय मार्ग :

ये मार्ग मुख्यतः आवासीय खण्डों में परिभ्रमण उपलब्ध करवाने हेतु प्रस्तावित हे। इन मार्गो के किनारे जल प्रदाय, भूमिगत मल निकास एवं विद्युत प्रदाय हेतु लाईन स्थित होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

4. रेल्वे ओव्हर ब्रिज :

राहतगढ़ रेल्वे क्रांसिग के मध्य में स्थित होने के कारण , यहॉ का यातायात अधिकांश समय अवरूद्ध रहता है। यहॉ पर रेल्वे ओव्हर ब्रिज के निर्माण संबंधी योजना स्वीकृत हो चुकी है। तदनुसार इस स्थल पर रेल्वे ओव्हर ब्रिज को प्रस्तावित किया गया है।

मकरोनिया क्षेत्र, सागर के एक उपनगर के रूप में विकसित हो रहा है। इसका विस्तार बहेरिया वायपास मार्ग संगम तक है। इस उपनगर तथा पुराने सागर नगर के मध्य सुगम यातायत एवं जनसाधारण की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुये मकरोनिया रेल्वे क्रांसिग पर ओव्हर रेल्वे ब्रिज निर्माण अतिआवश्यक है। नगर में बस स्थानक होने के कारण भी इसकी आवश्यकता प्रतिदिन होती है। तदनुसार विकास योजना में इस हेतु प्रस्ताव दिये गये है।

5. यातायात अवसार केन्द्र (माल)

1 रेल्वे गुड्स यार्ड :

वर्तमान रेल्वे गुड्स यार्ड में पर्याप्त स्थान उपलब्ध होने के कारण यह यथावत कार्यरत रहेगा। इस हेतु रेल्वे लाइन के दोनों ओर पर्याप्त स्थान सुरक्षित रखा गया है। इसके अतिरिक्त मकरोनिया में स्थित गुड्स यार्ड सिद्धगवॉ औद्योगिक क्षेत्र तथा छावनी क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा।

2 ट्रक स्थानक :

ट्रक स्थानक हेतु खुरई–भोपाल मार्ग पर ग्राम अमावनी की शासकीय भूमि तथा झांसी छतरपुर वायपास मार्ग पर ग्राम बमोरा की शासकीय भूमि पर प्रस्तावित यातायात नगर में प्रावधान कर प्रस्तावित किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

6. अवसान केन्द्र (यात्री)

1. हवाई पट्टी :

नगर से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ढ़ाना में उपलब्ध हवाई पट्टी का विस्तार एवं उन्नयन किया जाना प्रस्तावित है, ताकि भविष्य में इसे संयुक्त रूप से सेवा तथा सार्वजनिक उपयोग हेतु लाया जा सके।

2. रेल्वे स्टेशन :

वर्तमान में सागर रेल्वे स्टेशन नगर के उत्तर में स्थित है, जिसकी पहुॅच नगर के मध्यक्षेत्र से लेबल क्रांसिग तथ अप्सरा टॉकीज के समीप स्थित अण्डरपास के द्वारा उपलब्ध है।

विकास योजना में द्विमुखी रेल्वे स्टेशन का प्रावधान किया गया है। इस हेतु काफी स्थान उपलब्ध है। अतः रेल्वे स्टेशन की दूसरी ओर प्रतीक्षालय, उपहारगृह पार्किंग, टिकिट घर आदि सुविधायें उपलब्ध कराये जाने पर स्टेशन की दूरी, यातायात समय आदि में बचत हो सकेगी।

3. क्षेत्रीय बस स्टैण्ड एवं बस डिपो :

वर्तमान में सागर का क्षेत्रीय बस स्टैण्ड तालाब के किनारे कार्यरत है। इस स्थल पर बस स्टैण्ड विकास हेतु काफी स्थान उपलब्ध हे। इसके अतिरिक्त भविष्य की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुये राहतगढ़ रेल्वे क्रांसिंग के समीप नए बस स्टैण्ड का विकास किया जाना प्रस्तावित है।

4. नगर बस यातायात अवसार केन्द्र :

नगर में यातायात अवसान केन्द्र निम्नालिखित स्थानों पर प्रस्तावित है–

1. तिली ग्राम चौराहा
2. गृह निर्माण मण्डल की आवासीय कॉलोनी छतरपुर सागर मार्ग पर ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

3. खुरई मार्ग पर कृषि उपज मंडी के पास
4. मोतीनगर थाना संगम
5. नरसिंहपुर मार्ग – एम.पी. बी. ई. कॉलोनी के पास

इ. वाहन विराम स्थल :

वर्तमान में वाहन विराम स्थल की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुये निम्न स्थलों पर प्रस्तावित किये गये है–

1. वक्षी खाना शॉपिंग कामपलेक्स – गुजराती बाजार
2. दीनदयाल शॅपिंग काम्पलेक्स –सुभाष मार्केट के पास
3. नमकमंडी मार्ग।
4. चमेली चौक – बड़ा बाजार
5. बस स्टैण्ड शॉपिंग काम्पलेक्स के सामने।
6. भगवानगंज क्षेत्र
7. सिविल लाइन (दीपकहोटल से लगकर)
8. मकरोनिया चौराहे से 150 मीटर की दूरी पर
9. तीन बत्ती चौराहा से कटरा मस्जिद मार्ग।
10. मनोहर टॉकीज से बंदना होटल

7. जन उपयोगिताएँ :

नगर की भावी जनसंख्या हेतु जल प्रदाय, विद्युत प्रदाय, जल मल निकास संबंधी नगरीय अधोसरंचना प्रणाली एवं ठोस अवशिष्ट विसर्जन व्यवस्था आदि के संबंध में विस्तृत योजना तैयार की जाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क. जल प्रदाय :

सागर नगर जल समस्या मूलक क्षेत्र है। वर्तमान में पेयजल व्यवस्था नगर की प्रमुख समस्या हे। जल के अभाव में नगर के विकास को उचित गति नहीं मिल पा रही है। साथ ही औद्योगिक गतिविधियॉ भी नाममात्र है। अतः जल समस्या का समुचित समाधान किया जाना आवश्यक है, ताकि विकास को गति प्रदान की जा सके।

नगर की भावी पेयजल योजना हेतु लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा एक योजना क्रियान्वित की जा रही है। जिसका कार्य प्रगति पर है। इसकी अनुमानित लागत 7521 लाख है। इस योजना के क्रियान्वन से वर्ष 2006 तक की पेयजल आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी। इस योजना के अंतर्गत बेवस नदी पर बांध प्रस्तावित है, जिसके समीप जल शुद्धिकरण जल संयत्र स्थापित किया जावेगा। योजना के अनुसार वर्ष 2011 में 95.00 एम. एल. डी. जल की आवश्यकता होगीं नगर में जल प्रदाय उच्च स्तरीय सात टंकियों द्वारा किया जाना प्रस्तावित है, जो निम्न क्षेत्रों में प्रस्तावित की जावेगीं –

1	पुख्याऊ	25 लाख लीटर
2	इतवारी	25 लाख लीटर
3	केन्टोमेन्ट	35 लाख लीटर
4	विट्ठल नगर	35 लाख लीटर
5	पंतनगर	40 लाख लीटर
6	मकरोनिया	45लाख लीटर
7	केन्टोमेंन्ट सम्प	20 लाख लीटर

ख भूजलस्तर संवर्द्धन :

सागर एक जल समस्यामूलक क्षेत्र है। यहॉ की भूगर्भीय सरंचना के कारण ही पानी एक ज्वलंत समस्या है, जिससे वर्तमान में नगर का समुचित विकास संभव नहीं हो पा रहा है। विकसित कॉलोनियों एवं नगर के अन्य हिस्सों का सीमित संसाधनों के कारण

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पानी के स्त्रोत के रूप में नलकूप, ट्यूबवेल पर निर्भर है, जिससे नगर के विभिन्न क्षेत्र में नलकूप खनन के कारण भू–जल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है अतः नगर में भावी आबदी की बसाहट, औद्योगीकरण, व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकास को दिशा प्रदान करने हेतु भू–जलस्तर संवर्धन किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इस हेतु ग्रामों में स्थित तालाबों के गहरीकरण एवं मौसमी नालों में स्टापडेम बनाना प्रस्तावित है।

ग. सागर तालाब पर्यावरण सुधार योजना :

1. सागर तालाब में पानी की आवक सुनिश्चित करने जल संग्रहण क्षमता बढ़ाने एवं जल ग्रहण क्षेत्र का विकास करने हेतु पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन म. प्र. द्वारा एक योजना वर्तमान में क्रियान्वित की जा रही है; जिसकी अनुमानित लागत 73.00 लाख है। इस योजना में कनेरा नहर का सुधार कार्य, कनेरा नहर के तट पर पिचिंग कार्य, जल संग्रहण के विकास कार्य, तालाब का बेस्ट वेयर का मजबूतीकरण, चकराघाट, बरियाघाट आदि से संबंधित कार्य किया जाना प्रस्तावित है।
2. मध्यप्रदेश जल संसाधन विभाग द्वारा भी सागर तालाब के पर्यावरण सुधार तथा डिसिलटिंग की विस्तृत योजना तैयार कर क्रियान्वयन हेतु प्रस्तुत की जा चुकी है इसकी अनुमानित लागत रूपये 350 लाख है।

घ जल/मल निकास–

नगर में वर्तमान में भूमिगत जल/ मल निकास एवं विसर्जन की व्यवस्था उपलब्ध नही हैं। इसके फलस्वरूप नगर का पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। कई क्षेत्रों का मल विसर्जन नालों में होता हे जो कि तालाब में मिलते है ; जिससे तालाब जल प्रदूषित हो रहा है। इस संबंध में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी द्वारा एक योजना प्रस्तावित है ; जिसमें ऐसे नालों की पहचान कर उनके पानी को नगर से दूर विसर्जित किया जावेगा। इसके अतिरिक्त नगर के मध्यक्षेत्र एवं निचले क्षेत्र के जल मल निकास एवं विसर्जन व्यवस्था की योजना भी अत्यंत आवश्यक है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ड. ठोस अवशिष्ट प्रबंधन :

नगर में वर्तमान में ठोस अवशिष्ट विसर्जन हेतु कोई विशेष व्यवस्था उपलबध नहीं है। नगर निगम द्वारा अवशिष्ट एकत्रित कर विभिन्न क्षेत्रों मे बाहरी मार्गो के किनारे विसर्जित किया जाता है। जो नगर की सुन्दरता में बाधक होने के साथ–साथ आसपास के क्षेत्र में गंदगी , दुर्गन्ध, संक्रामक रोग तथा पर्यावरण को दूषित करने में सहायक होते है। भावी आबादी की बसाहट औद्योगिक एवं शहरीकरण से यह समस्या एक विकराल रूप ले सकती है, जो पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से अत्यंत घातक होगी। ठोस अवशिष्ट के मुख्य स्त्रोत घरेलू, व्यवसायिक , व्यापारिक, अस्पताल एवं नर्सिग होम, फल एवं सब्जी बाजार, औद्योगिक क्षेत्र आदि होते हैं गऔसतन विभिन्न स्त्रोतों के प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकलने वाली कचरें की मात्रा लगभग 800 ग्राम के आधार पर आंकलन किया जा सकता है।

प्रबंध प्रणाली के अन्तर्गत पुनर्चक्रीकरण प्रणाली अपनाई जा सकती है जो स्थानीय संस्थाओं के प्रबंध में होने वाले व्यय को पूरा कर, आय का स्त्रोत एवं भविष्य में एक उपलब्धि सिद्ध होगी। प्रणाली द्वारा ठोस अवशिष्ट से कागज, लौह, अलौह धातु को ढ़ालकर धातु का निर्माण कांच, रबर , प्लास्टिक जैसे उत्पादों को प्राप्त कर विभिन्न उद्योगों द्वारा पुनः उपयोग में लिया जा सकता है। इस प्रकार छोटे उद्योगों की स्थापनाओं की संभावना सुदृढ़ होगी, साथ ही क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। ठोस अवशिष्ट के अन्य शेष अंशों का उपयोग ऊर्जा एवं जैविक खाद उत्पादों में किया जा सकता है जो आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिये कृषि कार्य के लिये उत्यंत उपयोगी सिद्ध होंगें। समस्त औद्योगिक स्थापनाओं का ठोस अवशिष्ट विसर्जन के पहले पुनर्चक्रीकरण प्रणाली अपनाने से भी प्रबंधन योजनाओं को काफी सहायता मिल सकती है।

उपरोक्त आधार पर ठोस अवशिष्ट प्रबंधन आर्थिक दृष्टि से पूर्णतः उपयोगी सिद्ध होगा। अतः नगरों के लिये इस संबंध में नीति निर्धारण कर दीर्धकालीन योजना

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तैयार कर, कार्यरूप दिया जा सकता है। प्रबंधन प्रक्रिया अपनाने से नगर का पर्यावरण स्वच्छ होगा, जो नगर के सैलानियों, व्यापारियों, व्यापारिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों को अधिक आकर्षित करेगा। ठोस अवशिष्ट की ढुलाई में होने वाले व्यय को देखते हुये नगर की चारों दिशाओं में विकास योजना में जो भूमि कृषि उपयोग हेतु प्रस्तावित की गई है उससे उपयुक्त स्थल को चयन कर ठोस अवशिष्ट विसर्जन करने का प्रस्ताव है।

ण. विद्युत प्रदाय :

नगर की भावी विद्युत आवश्यकताओं का आंकलन 2500 घरेलू कनेक्शन प्रतिवर्ष पर किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त नगर में भावी औद्योगिक स्थापनाओं को दृष्टिगत रखते हुये उद्योगों द्वारा अनुमानित विद्युत खपत को निर्धारण कर विद्युत उप–केन्द्रों , विद्युत वितरण व्यवस्था हेतु उचित प्रावधान किया जाना प्रस्तावित है। मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल द्वारा भावी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तीन 11 के . व्ही. फीडर तथा छह 1000 के. व्ही. ए. क्षमता के विद्युत उपकेन्द्र प्रस्तावित है।

- **अन्य सुविधाएँ :**

क अग्नि शमन केन्द्र :

अग्निशमन केन्द्र, नगर के मध्य , पूर्व नगर पालिका निगम कार्यालय परिसर में स्थित है। इसके अतिरिक्त एक केन्द्र मकरोनिया उपनगर में सिद्धगुवॉ औद्योगिक केन्द्र की आवश्यकताओं को दृष्टि रखते हुये निवेश इकाई क्रंमाक 7 में प्रस्तावित किया गया है।

ख पुलिस स्टेशन :

वर्तमान सेन्ट्रल कोतवाली का उपयोग, यातायात पुलिस स्टेशन के रूप में प्रस्तावित है।सेन्ट्रल कोतवाली, यातायात पुलिस स्टेशन कार्यालय निवेश इकाई क्रंमाक 1 में प्रस्तावित किया गया है इसके अतिरिक्त समस्त निवेश इकाई केन्द्रों में पुलिस थानों की स्थापना प्रस्तावित प्रशासकीय क्षेत्रों में की जा सकेगी।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग शमशान घाट :

नगर में वर्तमान में जो शमशानघाट विद्यमान है वे तब तक उपयोग में रहेंगें जब तक ये पर्यावरण की दृष्टि से अनुपयुक्त न हो जायें। नगर के भावी विकास को देखते हुये विकास योजना में जो भूमि कृषि उपयोग हेतु प्रस्तावित हे, उनमें जिलाध्यक्ष एवं स्थानीय संस्था की सहमति से स्थान चयनकर नवीन शमशान निर्धारित किये जा सकेंगे।

घ डेरियॉ :

वर्तमान में नगर के विभिन्न आवासीय क्षेत्रों में दूध–डेरियॉ स्थित है; जिससे पर्यावरण एवं अन्य समस्यायें उत्पन्न हो रहा है। डेरियों को एक स्थान पर संगठित करने की दृष्टि से 8.0 हेक्टेयर क्षेत्र निवेश इकाई क्रमांक 1 में प्रस्तावित किया गया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रों में प्रस्तावित कृषि भूमि उपयोग अंतर्गत सक्षम अधिकारी की अनुज्ञा से डेरियॉ स्थापित की जा सकती है।

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

1. शर्मा नंदेश्वर, प्रादेशिक नियोजन और संतुलित विकास 1997 , वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर पृ. क्र. 2

2. ओझा, रघुनाथ, प्रादेशिक नियोजन का भूगोल 1995, किताब घर कानपुर पृ. क्र. 20

3. Planing commition goverment of India gide line for the farmolation of distic plan New Delhi .

4. बेन्जामिन हिग्स नेशनल डब्लपमेंट एण्ड रीजनल पॉलिसी 1962 एडिट – B प्लानटीला पृ. क्र. 45– 46

5. Lewis N,. P - " City planing is simply the exericise of such fore sight as will promte the arderly and singhtly development of a city and is environs along retional lines with due regard for health, amenity and convenience and commercial and industrial advancement ,"

6. Smailes, R.E. Indian city structure, Urban Geography in Development Countries, op. city , pp. 54-57

7. तिवारी आर. सी. अधिवास भूगोल 1997 प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद , पृ. क्र. 331

8. सागर विकास योजना (प्रारूप) पृ क्र. 45 – 46

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

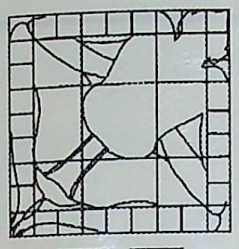

वास्तु पुरुष

नगरग्रामखेटादिच्छिन्नविराणि च भूभृताम्।
स्थपतिर्वेशतपदविभागैर्मेव मापयेत्॥ ३४२॥

वास्तुसौख्यम्

अध्याय नवम्

उपसंहार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

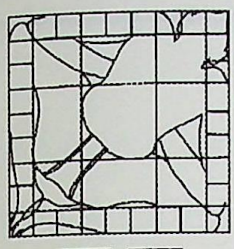

वास्तु पुरुष

नगरग्रामखेटादिच्छिन्नविराणि च भूभृताम्।
स्थपतिर्वेशतपदविभागैर्नैव मापयेत्॥ ३४२॥

वास्तुसौख्यम्

अध्याय नवम्

उपसंहार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपसंहार

मानव बस्तियाँ मानव की महत्वपूर्ण रचनाओं में से प्राचीनतम अनुपम एवं बहुपयोगी कृतियां हैं; इनमें से नगरीय बस्तियाँ मानवीय विकास क्रम को प्रदर्शित करती हैं। वर्तमान में संपूर्ण विश्व साधन नगरीयकरण के दौर से गुजर रहा है, किन्तु नगरीय भूगोल एवं वास्तुशास्त्र के पूर्ण ज्ञान के अभाव में निर्मित ये बस्तियाँ मानव को सुखी बनाने के स्थान पर और ज्यादा दुःखी बना रही हैं। वर्तमान समय में इन समस्त बस्तियों के समग्र एवं संतुलित विकास हेतु इनके अनुसंधान की आवश्यकता महसूस हो रही है । आजकल नगर के संपूर्ण विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं अन्य प्रकार के विचार तो किये जाते हैं; परंतु वास्तुशास्त्रीय विचारों को कोई महत्व प्रदान नहीं किया जाता । वर्तमान में संपूर्ण नगरीय विकास के लिये एक ऐसे विषय की आवश्यकता है, जो संपूर्ण नगरीय विकास हेतु समग्र आवासीय भूमि तथा गैर आवासीय भूमि दोनों का प्राकृतिक एवं अप्राकृतिक तत्वों के संदर्भ में अध्ययन प्रस्तुत कर सकें । इन समस्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए, आज आवश्यकता इस बात की है, कि नवीन वैज्ञानिक तकनीकी तथा शाश्वत प्राचीन ज्ञान में उचित सामंजस्य स्थापित कर प्रत्येक नगर में समग्र एवं संतुलित नियोजन द्वारा वर्तमान मानवीय समस्याओं का समाधान किया जा सके । इस परिप्रेक्ष्य में नगरीय भूगोल एवं स्थापत्य वेद के सिद्धांतों के आधार पर निर्मित आधुनिक किंतु आदर्श नगरों का अध्ययन एवं निर्माण आवश्यक हो गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मानव की तीन मूलभूत आवश्यकताएं भोजन, वस्त्र एवं आवास हैं; इनमें से तीसरी आवश्यकता स्थापत्य वेद से संबंधित है। प्राचीनकाल में न केवल व्यक्तिगत भवन वास्तुशास्त्रानुरूप निर्मित होते थे, वरन् समस्त वास्तु रचनाएं स्थापत्य वेद के अनुसार ही निर्मित होती थीं, फिर चाहे वह ग्राम हो या नगर हो या राजप्रसाद हो अथवा देवालय । सभी प्राचीन वैदिक नियमों के अंतर्गत निर्मित किये जाते थे । वर्तमान में भले ही भवन, ग्राम एवं नगर निर्माण हेतु विभिन्न वैज्ञानिक विधियां अपनाईं जा रही हों, इंजीनियर भले ही भवनों के निर्माण हेतु नई पद्धतियों को खोज रहे हों; किन्तु इन सभी में प्राचीन वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों के अभाव में सुख एवं शांति की प्राप्ति नहीं हो रही है । यही कारण है, कि इस उलझन को सुलझाने के लिए आज भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में स्थापत्य वेद के समग्र चिंतन के लिए व्याकुल हो गये हैं; क्योंकि मनुष्य के जीवन पर न केवल आस–पास के वातावरण का ही प्रभाव पड़ता है, वरन् जमीन के उस भूखंड का तथा उस पर बने मकान का भी प्रभाव पड़ता है । मानव विकास की इस यात्रा में अधिवास मानव की प्राचीन, बहुपयोगी एवं अनुपम कृति है । वर्तमान में मनुष्य अपने जीवन को सुखी, शांत एवं सुरक्षित बनाने के लिए जितने साधन जुटाने का प्रयत्न कर रहा है, उनमें सफलता प्राप्त कर एवं उनका उपभोग कर स्वयं को उतना ही दुःखी, अशान्त और असुरक्षित अनुभव कर रहा है। वैदिक काल में ऋषि मनीषि इस तथ्य से भंलि–भांति परिचित थे । भारतीय संस्कृति में मुख्यतः चार वेद माने गये हैं, जिनमें से स्थापत्य वेद, अथर्ववेद का उपवेद माना गया है । "स्थापत्य वेद का शाब्दिक अर्थ स्थापित करने का विज्ञान है; लेकिन विस्तृत अर्थ में "भारतीय स्थापत्य वेद एक विशुद्ध विज्ञान है, यह विज्ञान है, अव्यक्त से व्यक्त होने का । यह विज्ञान है, निराकार ऊर्जा का साकार ऊर्जा में परिवर्तन का । यह विज्ञान है, सूक्ष्म ऊर्जा के सचेतन ऊर्जा में परिवर्तन का । यह विज्ञान है, वस्तु के वास्तु रूप में आकार लेने का ।" इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि स्थापत्य वेद मात्र निर्माण का पदार्थजन्य ज्ञान न होकर भवन निर्माण से संबंधित समस्त मानवीय एवं प्राकृतिक तथ्यों के सामंजस्य का विज्ञान है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्तमान समय में स्थापत्य वेद और वास्तुशास्त्र को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है, किंतु वास्तुशास्त्र स्थापत्य वेद की एक शाखा मात्र है । जिस प्रकार राजप्रसाद, भवन और देवालय आदि का निर्माण वास्तुशास्त्र के अंतर्गत किया जाता है, किंतु उन वास्तु रचनाओं में मूर्तियों और चित्रों आदि की स्थापना , स्थापत्य वेद की अन्य शाखाओं के आधार पर होती है । इस प्रकार स्थापत्य वेद की शाखाओं को चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला आदि भागों में विभक्त किया गया है । स्थापत्य वेद का विषय – क्षेत्र अत्यंत व्यापक है ; क्योंकि विश्व की समस्त शिल्पकलाओं का संग्रहित ज्ञान स्थापत्य वेद के अंतर्गत आता है । स्थापत्य वेद की विषय – वस्तु के अंतर्गत ज्योतिष, भूगोल, भूगर्भ विद्या, खगोल, पुरातत्व, मनोविज्ञान, शिल्पकला, वनस्पति विज्ञान, आयुर्वेद, प्राकृतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, रसायन शास्त्र, सामुद्रिक ज्ञान, वायुयान वास्तुकला, उपग्रह वास्तुकला एवं जलयान वास्तुकला आदि आते हैं।

वर्तमानकाल में स्थापत्य वेद को ही वास्तुशास्त्र के रूप में जाना जाता है; लेकिन वास्तुशास्त्र, स्थापत्यवेद की मात्र एक शाखा है। 'वास्तु' शब्द 'वस्तु' से बना है । जितनी भी सृष्टि है, वह सभी वास्तु है और इससे संबंधित शास्त्र 'वास्तुशास्त्र' है। कहने का तात्पर्य है, किसी भी प्रकार का सृजन या निर्माण (भवन, नगर, मंदिर) 'वास्तु' है । इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि "वास्तुशास्त्र प्राचीन कला व विज्ञान है, जिसकी किसी भी प्रकार के (भवन) निर्माण हेतु नियमित परिपाटी है। इससे व्यक्ति और प्रकृति के मध्य एकरूपता व संतुलन सुनिश्चित किया जा सकता है ; जिससे प्रत्येक व्यक्ति को अधिकाधिक सुख, शांति, स्वस्थता, लाभ व समृद्धि प्राप्त हो सके ।"प्राचीनकाल में किसी भी निर्माण कार्य से पहले उसका एक सूत्र होता था, जिसे हम वास्तुमंडल या वास्तु पुरूष मंडल कहते हैं । वास्तु पद विन्यास(वास्तुपुरूष) वास्तु शास्त्र का मूल है । 'वास्तुपुरूषमंडल' का शाब्दिक अर्थ है– 'वास्तु' यानि चारों ओर की परिस्थिति या परिवेश या पदार्थ या प्रकृति से है । संस्कृत में प्रकृति को 'वास्तु' कहा गया है । 'पुरूष' का अर्थ है– ऊर्जा या कार्यशक्ति बल या आत्मा । संस्कृत में 'पुरूषमंडल' यानि ज्योतिषीय ग्रह नक्षत्रों की वह स्थिति जो दिशा निर्धारण से संबंधित है

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात् चारों ओर के प्राकृतिक परिवेश की परिस्थिति जो कार्य, ऊर्जा, शक्ति व ग्रह नक्षत्रों के दिशा निर्धारण से संबंधित है, 'वास्तुपुरूष मंडल' कहलाता है । आज आवश्यकता इस बात की है, कि हमें भारतीय स्थापत्य के प्रमुख अंग वास्तुपुरूष मंडल के मर्म को पूरी तरह समझना होगा । भारत की सबसे बड़ी विशेषता यह है , कि हमने स्थापत्य वेद के माध्यम से निराकार ब्रह्म को साकार रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है अर्थात् वास्तुपुरूष को स्थापत्य से भौतिक विज्ञान में परिवर्तित कर भारतीय संस्कृति के दर्शन को समाहित कर लिया है । यही कारण है, कि जिन भवनों (देश, नगर, ग्राम, कॉलोनी) की रचना वास्तुपुरूष मंडल के सिद्धांतों के अनुरूप होती है, वे सभी भवन सार्वदेशिक और सार्वकालिक होते हैं । वास्तुशास्त्र का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है, क्योंकि वास्तु सिद्धांत हमारी जीवन पद्धति के पक्षधर हैं, यदि मानव का आवास प्रकृति के अनुकूल है, तो आस–पास का वातावरण स्वस्थ होगा और मनुष्य इन अव्यक्त ऊर्जाओं का अधिकाधिक लाभ उठाकर अपना चहुंमुखी विकास कर सकता है ।

प्राचीनकाल से लगातार भवनों का निर्माण स्थापत्यवेद के अनुरूप होता चला आ रहा है, तथापि अनेकों नगर स्थापत्यवेद के प्रतिकूल सिद्धांतों पर बने हैं । नगरीय भूगोल बस्ती भूगोल का एक अंग है। नगरीय भूगोल शब्द अंग्रेजी के 'अरबन ज्योग्राफी' शब्द का हिंदी रूपान्तरण है ; जिसका अर्थ नगर या नगर से संबंधित अथवा नगर में घटने वाला है । भूगोल शब्द का अर्थ –"पृथ्वी और उस पर दिखाई देने वाली समस्त बातों या तथ्यों का वर्णन करना या उसके बारे में लिखना है"। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नगरीय भूगोल नगरों का व्यापक अर्थ में अध्ययन करने वाला विज्ञान है । नगरीय भूगोल की परिभाषाओं के संबंध में विद्वानों में मतभेद प्राप्त होता है तथापि नगर और उसके भौगोलिक पर्यावरण के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करना ही नगरीय भूगोल है । नगरीय भूगोल में नगर के भीतर की क्षेत्रीय विभिन्नताओं को ढूंढने और उनकी व्याख्या करने का प्रयत्न किया जाता है । इसके साथ–साथ नगरीय भूगोल नगर से संबद्ध समस्याओं के कारणों और उनके निदान का भी प्रयत्न करना है । अतः इससे स्पष्ट होता है, कि नगरीय भूगोल नगर के अंदर तथा बाहर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थित सभी पक्षों और भविष्यगत सम्भावनाओं का अध्ययन करने का विज्ञान है । अन्य विषयों की तरह नगरीय भूगोल के भी मूल आधार के रूप में कुछ संकल्पनायें हैं। संकल्पनाओं से हमारा तात्पर्य उन सामान्य कारणों से है, जिन्हें हमने नगर तथा उसके अध्ययन के विभिन्न पक्षों के बारे में चुना है । एक संकल्पना के भीतर कई छोटी–छोटी संकल्पनायें भी होती हैं। ये सभी संकल्पनायें एक दूसरे से संबंधित हैं । प्राथमिकता के आधार पर प्रमुख संकल्पनाओं का वर्णन निम्नानुसार है जैसे –प्रथम संकल्पना"नगर और उसके भिन्न–भिन्न रूप की संकल्पना " है– इस संकल्पना के अंतर्गत नगर के अर्थ को स्पष्ट किया गया है । दूसरी संकल्पना "नगर तथा नगरीय स्थान की संकल्पना" है । इस संकल्पना के अन्तर्गत नगर तथा उसके आसपास स्थित ग्रामीण क्षेत्रों एवं नगरीय जनसंख्या का घनत्व व मकानों आदि का वर्णन किया गया है । तीसरी संकल्पना"नगरों की स्थिति, स्थल एवं परिस्थिति की संकल्पना " है । इस संकल्पना के अंतर्गत नगर कहाँ स्थित है उसकी स्थिति कहॉ है नगर जिस धरातल को घेरे हुए है या स्थित है वह उसका स्थल है तथा वह जिन भौतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के बीच का संबंध आदि उसकी परिस्थिति है इन समस्त बातों को स्पष्ट किया गया है । अगली संकल्पना "नगर और उसके विविध रूप की संकल्पना" है, इस संकल्पना के अंतर्गत नगरीय भूगोल की छोटे आकार से लेकर वृहद् आकार तक जैसे ग्रागर केन्द्र, कस्बा, महानगर, सन्नगर, वृहद् महानगर आदि शब्दावलियों का प्रयोग विशेष अर्थ में कर वर्णन किया गया है । नगरीय भूगोल के अध्ययन में क्रमबद्ध उपागम तथा प्रादेशिक उपागम दोनों विधियों को समान महत्व प्रदान किया गया है ये दोनों विधियाँ एक–दूसरे की पूरक हैं । नगरीय भूगोल के अध्ययन का उद्देश्य नगर को छोटे–छोटे क्षेत्रों में विभक्त कर उनका सर्वांगीण अध्ययन करना है । यह अध्ययन क्रमानुसार किया जाना चाहिए । सागर नगर के नगरीय भूगोल का अध्ययन भी इसी प्रकार किया गया है ।

नगर नियोजन एक व्यवहारिक विषय है, जिसके अंतर्गत वर्तमान नगर और उसके आसपास के क्षेत्रों के विकास, सुधार, पुनर्निर्माण एवं उसमें नये नगरीय क्षेत्रों के निर्माण संबंधी समय बद्ध योजनायें निर्मित एवं क्रियान्वित की जाती हैं । नगर नियोजन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नगरीय जीवन के 'आदर्श' को अधिकाधिक निकट पहुँचाने का प्रयास है ; जिससे वर्तमान के साथ–साथ भविष्य में नगर के अधिकतम विकास के संदर्भ में नगरीय जीवन को अच्छा बनाया जा सके । "नियोजन का आशय उद्देश्य बनाकर काम करना, चुनना या निर्णय करना है। इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि नियोजन का अर्थ "किसी निश्चित लक्ष्य को निर्धारित कालावधि में प्राप्त करने का क्रमबद्ध प्रयास है ।" नगर नियोजन नगर की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व भैतिक विशेषताओं को सामूहिक एवं एकांकी दोनों रूप में देखता है । नगर नियोजन द्वारा नगर का ढाँचा इस तरह से तैयार किया जाता है; जिससे वह उसके भौतिक वातावरण के अनुकूल हो। नगर नियोजन के संबेध में भिन्न–भिन्न विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोणों से भिन्न–भिन्न सिद्धांत निर्धारित किये हैं । भूगोल में भी नगर नियोजन के अपने मौलिक सिद्धांत है ; जिनमें समयानुसार परिवर्तन होता रहा है । जैसे नगरों के प्रारंभिक काल में नगर की भौतिक विशेषताओं(भवनों के विन्यास, सड़कों की स्थिति एवं चौड़ाई आदि) पर अधिक ध्यान दिया जाता है, किंतु वर्तमान में भौतिक विशेषताओं के साथ–साथ आर्थिक एवं सामाजिक पहलू भी नगरीय नियोजन के महत्वपूर्ण अंग बन गये हैं । नगर नियोजन से संबंधित भौगोलिक सिद्धांत निम्नानुसार हैं –

नगरीय विकेन्द्रीकरण के सिद्धांत के अनुसार नगरों में जनसंख्या दबाव, भीड़–भाड़ एवं प्रदूषण आदि को कम करने के लिये उद्योगों और जनसंख्या के दबाव को विकेन्द्रित किया जाता है ।उपवन, उपनगर एवं उपवन नगर के सिद्धांत का श्रेय ऐबेनेजर होवार्ड को जाता है होवर्ड ने उपवन नगर को कई वार्डों अथवा पड़ोसी इकाइयों में विभाजित कर अरीय ढंग से व्यवस्थित किया है । इनके अंदर की ओर पार्कों एवं नगर के केन्द्र में स्कूल का प्रावधान रखा है नगरों के आावासीय वार्डों के चारों ओर परिधीय रूप में रेलमार्ग, सीमांत क्षेत्रों में उद्योग धंधे तथा नगर की बाह्य सीमा के रूप में हरित पेटी का निर्माण करना उपवन नगर की विशेषतायें हैं । होवर्ड के अनुसार उपवन नगर लोगों को स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुंदर नगरीय वातावरण प्रदान करते हैं, जिसे एक पूर्णतया आदर्श नियोजित नगर का रूप कहा जा सकता है । नगर नियोजन के पूर्व समस्त पर्यावरणीय पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है ; जिससे पर्यावरणीय समस्यायें कम से कम उत्पन्न हों । इन पर्यावरणीय पक्षों में जलवायु, वनस्पति और धरातलीय संरचना के सूक्ष्म ज्ञान के साथ–साथ हवा की दिशा का भी ध्यान रखा जाता है ताकि नगर को कारखानों के धुआँ, धूल व गैस से बचाया जा सके।

नगर नियोजन का प्रमुख उद्देश्य उचित भौतिक सुख सुविधाओं (आवासीय गृह, सार्वजनिक स्थल, यातायात) का विकास करके नगरवासियों को सुखी एवं समृद्धशाली बनाना है । नगर में भिन्न–भिन्न कार्यों के अनुरूप विभिन्न कार्य क्षेत्र का विभाजन कर नगर नियोजित किया जाता है । नगरों में जिस तीव्रता से जनसंख्या वृद्धि हो रही है, उस तीव्रता से आवासीय गृहों का विकास नहीं हो पा रहा है । परिणामस्वरूप मलिन बस्तियों का प्रसार हो रहा है । मलिन बस्तियों के प्रसार के परिणामस्वरूप नगरों की सुंदरता में कमी के साथ–साथ सामाजिक एवं आर्थिक बुराइयों का सामना करना पड़ रहा है; जिससे अध्ययन क्षेत्र (सागर) का विकास अवरूद्ध हो रहा है। अतः इन मलिन बस्तियों पर नियंत्रण आवश्यक है । नगर के क्रमबद्ध विकास के लिये भविष्य में नगर में होने वाले विकास एवं परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए योजना बनाना चाहिए । किसी भी नगर के नियोजन के अंतर्गत नगर के समस्त मानवीय तत्वों (जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक) एवं भौतिक तत्वों (जैसे जलवायु, आकार, स्थिति एवं आकृति) को ध्यान में रखते हुये नियोजन करना चाहिए । नगरों को सुंदर, स्वस्थ और सुविधाजनक बनाने के लिये वहाँ समस्त नगरीय सुविधाओं जैसे– मनोरंजन स्थल, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधा, जल स्रोत, जल मल निकासी व्यवस्था, सामाजिक संस्था आदि की उचित व्यवस्था करना चाहिए ।

लेकिन आधुनिक नगर अनेक प्रकार की समस्याओं जैसे–मानवीय एवं पर्यावरण प्रदूषण, गंदी बस्तियों का प्रसार, प्राकृतिक आपदायें अशांति आदि से ग्रसित हैं । इसके विपरीत वैदिक कालीन नगर पूर्णतः वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों पर आधारित होने के कारण उनमें बहुत कम समस्यायें होती थीं । नगर नियोजन से संबंधित वास्तुशास्त्रीय सिद्धांत अग्रानुसार हैं–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिशाओं का सही ज्ञान प्राप्त करने को दिक् विन्यास या दिक् निर्धारण कहते हैं । दिक् निर्धारण ब्रह्माण्ड से किसी भी वास्तु को प्राप्त होने वाली धनात्मक ऊर्जा के अधिकतम उपयोग एवं ऋणात्मक ऊर्जा के दुष्परिणाम से सुरक्षा की दृष्टि से किया जाता है । दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जिस दिशा में ऊर्जापुंज स्थित होता है, उसी दिशा से ऊर्जायें प्रभाव डालती हैं। जैसे – सूर्य की ऊर्जा प्रकाश के माध्यम से पूर्व से पश्चिम एवं पश्चिम से पूर्व की ओर प्रभावित करती हैं । इसी प्रकार उत्तरी ध्रुव से चुम्बकीय ऊर्जा दक्षिण की ओर तथा दक्षिण ध्रुव की चुम्बकीय ऊर्जा पृथ्वी के अंदर से उत्तर की ओर प्रवाहित होती है । अतः मनुष्य द्वारा किये जाने वाले निर्माण में दिशाओं का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए; क्योंकि मनुष्य द्वारा निर्मित भवन की दिशाएँ, उसका आकार, निर्माण सामग्री आदि अलग–अलग ऊर्जा के क्षेत्र निर्मित करते हैं। ये नव निर्मित ऊर्जा के क्षेत्र मनुष्य की ऊर्जा के साथ या तो धनात्मक या ऋणात्मक तारतम्य स्थापित करते हैं; जिसका सीधा प्रभाव मनुष्य के शरीर, मन एवं विचारों पर पड़ता है, क्योंकि जब हम ऋणात्मक वातावरण में रहते हैं, तो सदा तनावपूर्ण महसूस करते हैं। हानिकारक वातावरण हमारी निर्णय क्षमता पर प्रभाव डालता है और परिणाम हानि के होते हैं ।

वास्तुशास्त्रीय सिद्धांत इस प्रकार बनाये गये हैं, कि प्राकृतिक स्रोतों द्वारा हमें अधिकाधिक ऊर्जा प्राप्त हो सके क्योंकि मानव जाति की जीवन रूपी प्रकृति (पंचमहाभूतों पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश) से ही निर्मित है । इसीलिये वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों में प्रकृतिवाद को प्राथमिकता दी गई है । हमारे यहाँ वैदिक काल से ही वर्णानुसार आवास व्यवस्था रही है । प्राचीनकाल में वर्ण का आशय जन्म से न होकर कर्म से होता था । हमारी भारतीय संस्कृति में मुख्यतः चार वर्ण हैं और चारों वर्णों की चार अलग–अलग दिशायें (उत्तर में ब्राह्मण, पूर्व में क्षत्रिय, दक्षिण में वैश्य तथा पश्चिम में शूद्र वर्ण) हैं। वैदिक काल में नगर का नियोजन करते समय वर्णानुसार आवास व्यवस्था को ध्यान में रखा जाता था, किन्तु वर्तमान समय में वर्णानुसार आवास व्यवस्था संभव नहीं है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि वास्तुशास्त्रीय सिद्धांत इस प्रकार बनाये गये हैं कि हमें प्राकृतिक स्रोतों द्वारा अधिकाधिक ऊर्जा व लाभ प्राप्त हो सके ; क्योंकि पृथ्वी पर समस्त तत्वों का संचरण होता है, किंतु उपभोग की दृष्टि से जिस तत्व की जो दिशा शास्त्रों में निर्धारित है, उस दिशा से उस तत्व विशेष को प्राप्त करना अधिक लाभकारी व फलदायक होता है । नगर नियोजन के भौगोलिक सिद्धांत वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों का परिवर्तित रूप है । इन दोनों ही प्रकार के सिद्धांतों में बाह्य रूप से अंतर दृष्टिगोचर होता है; किंतु दोनों का लक्ष्य समस्त नगरवासियों को अधिकाधिक सुखी एवं समृद्धशाली बनाना है। कार्यात्मक वर्गीकरण की दृष्टि से भौगोलिक एवं वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों में मुख्य अंतर यह है , कि वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों में कार्यात्मक वर्गीकरण कार्य की प्रकृति एवं दिशाओं पर आधारित होता है; जबकि भौगोलिक सिद्धांतों में केवल भौतिक दृष्टि से वर्गीकरण किया जाता है । वास्तुशास्त्रीय नगर नियोजन के सिद्धांत पूर्णतः प्रकृति पर आधारित हैं ; जबकि भौगोलिक नगर नियोजन के सिद्धांत प्राकृतिक शक्तियों की उपेक्षा कर केवल उपभोगवादी प्रकृति एवं सौन्दर्य को ध्यान में रखते हुये निर्धारित किये गये हैं । वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतानुसार नगर में वर्णानुसार आवास व्यवस्था की जाती है; जबकि भौगोलिक सिद्धांतों में वर्णानुसार आवास व्यवस्था का पूर्णतः अभाव देखने को मिलता है । इसी प्रकार वैदिक कालीन भारतीय नगरों एवं अर्वाचीन नगरों की आकारिकी में पर्याप्त अंतर दृष्टिगोचर होता है, जहाँ वैदिक कालीन नगरों को सुरक्षा की दृष्टि से परकोटा एवं गहरी खाई द्वारा आवृत्त किया जाता था, वहाँ अर्वाचीन नगरों में इसका पूर्णतः अभाव देखने को मिलता है । इसी प्रकार वैदिक कालीन वास्तु रचनाओं में ब्रह्म स्थान के महत्व को दृष्टिगत रखते हुये निर्माण किया जाता था, किंतु वर्तमान में इसकी पूर्णतः उपेक्षा की जाती है । इसी प्रकार अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि वास्तुशास्त्र में नगर के बाहर एवं भीतर अलग–अलग दिशाओं में अलग–अलग देवताओं के निवेश्य के अनुरूप देवालयों के निर्माण का विधान है । इसी प्रकार जल तत्व की अपनी दिशा एवं अपना महत्व है। इसके विपरीत अर्वाचीन नगरों में इसका सर्वथा अभाव देखने को मिलता है, क्योंकि वर्तमान में मनुष्य द्वारा अपनी आवश्यकता एवं सुविधानुसार कहीं भी किसी भी दिशा में कुंआ, हेण्डपंप एवं मंदिर आदि में देवता की स्थापना कर दी जाती है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधुनिक कालीन नगरों का गहराई से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है, कि आज भी समाज में अप्रत्यक्ष रूप से वर्ण व्यवस्था देखने को मिलती है । वर्तमान समय में प्रमुख चार वर्णों को उच्चतर, उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्गों में विभाजित किया गया है । अंतर केवल इतना है, कि इस वर्ण व्यवस्था का आधार कार्यानुसार न होकर आर्थिक या प्रशासनिक है । वैदिक कालीन नगरों की तुलना में आधुनिक कालीन नगरों की आकारिकी भिन्न होने का कारण यह है, कि वैदिक काल में जहाँ जनसंख्या कम थी, वहीं तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ आधुनिक काल से भिन्न थीं । अतः हम कह सकते हैं, कि भले ही भौगोलिक सिद्धांत के कुछ पहलू वास्तुशास्त्रीय सिद्धांत से भिन्न हैं; लेकिन भौगोलिक सिद्धांतों के मूल में वास्तुशास्त्रीय सिद्धांत ही हैं। आधुनिकता की होड़ में इनका मूल रूप विकृत हो गया है । आज आवश्यकता इस बात की है, कि आधुनिक नगरीय विकास वैदिक कालीन ज्ञान को आधार बनाकर भौगोलिक विज्ञान में परिवर्तित करके किया जाये, क्योंकि समस्त ज्ञान के पार्श्व में सृष्टि की ऐसी प्राकृतिक व्यवस्था है, जिसमें सभी वस्तुएं एक–दूसरे पर अन्योनाश्रित है, इस व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है, कि हम सृष्टि की व्यवस्था को समझकर अपना जीवन इसके अनुरूप व्यवस्थित करें ; क्योंकि भारतीय दर्शन समस्त ज्ञान के पीछे आत्म विकास की बात करता है और जहां आत्म विकास होता है वहाँ के ग्राम, नगर एवं राष्ट्र का विकास स्वतः ही हो जाता है । इस प्रकार नगर के प्रमुख अंगों, आकार, आकृति, आवास व्यवस्था,ब्रह्म स्थान, परिवहन व्यवस्था, अपवाह तंत्र (जलव्यवस्था) , नगरीय संवायें एवं सुविधायें, व्यापारिक क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र, हरित पट्टिका का विकास वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतानुरूप करके आदर्श व्यक्ति, आदर्श समाज, आदर्श राष्ट्र व आदर्श विश्व का निर्माण कर सकते हैं ।

वास्तुकला का जितना धार्मिक महत्व है, उतना ही वैज्ञानिक भी । वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों को आधुनिक नगर नियोजक एवं वैज्ञानिक उसकी वैज्ञानिकता के कारण सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं । वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों में दिक् निर्धारण सर्वाधिक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महत्वपूर्ण हैं । वास्तुशास्त्र के अनुसार सभी आठ दिशाओं के अधिपति देवता, स्थान विशेष के निवासियों को सुरक्षा प्रदान कर उनका विकास करते हैं । वास्तुशास्त्र में पूर्व दिशा को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है । इसके पीछे वैज्ञानिक कारण यह है, कि प्रातःकालीन सूर्य रश्मियाँ लाभदायक होती हैं एवं मध्याह्न व सूर्यास्त कालीन रश्मियाँ हानिकारक होती हैं इसीलिए भूमि का ढ़ाल दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व होने का प्रावधान है । सूर्य की हानिकारक किरणों से बचने के लिये दक्षिण पश्चिम भाग ऊंचा , मोटी दीवार व बड़े वृक्षों को लगाया जाता है। इसी प्रकार वास्तुशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुसार हमेशा सोते समय सिर दक्षिण की ओर करके सोना चाहिए । मनुष्य के सिर को उत्तरी तथा पैर को दक्षिणी ध्रुव माना गया है। । सोते समय सिर दक्षिण की ओर रखने से दो विपरीत ध्रुव होने के कारण मनो मस्तिष्क तनाव रहित रहता है और नींद गहरी आती हे । इसी तरह उत्तर की तरफ मुंह करके पढ़ने, व्यापारिक वार्ता करने या परामर्श करने के पीछे वैज्ञानिकता यह है, कि इस ओर चुम्बकीय तरंगें विद्यमान होने से मस्तिष्क की कोशिकायें सक्रिय रहती हैं और शुद्ध वायु के कारण ऑक्सीजन अधिक मिलती है, जो मस्तिष्क को सक्रिय करके स्मरण शक्ति बढ़ाती हैं; जिससे प्रत्येक कार्य में सफलता एवं व्यापार में उन्नति प्राप्त होती है। इसी प्रकार यदि गहराई से अध्ययन किया जाये तो प्रत्येक नियम वास्तु–पद विन्यास,मान नियोजन, भूमि परीक्षण, आयादि निर्णय व छंदस पताका आदि के पीछे कुछ न कुछ वैज्ञानिक कारण छुपा हुआ है, जिसका वर्णन पूर्व के अध्याय में किया जा चुका है । इस प्रकार हम कह सकते है, कि वास्तुशास्त्र के सिद्धांत मात्र कल्पनाओं पर आधारित न होकर वैज्ञानिकता के ठोस धरातल पर भी खरे उतरते हैं । ये आज भी उतने ही उपयोगी है ;जितने वैदिक काल में थे । इस प्रकार कहा जा सकता है, कि वास्तुशास्त्रीय सिद्धांत सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक हैं, जिनका अनुसरण कर प्रत्येक मानव अधिकाधिक विकास कर सुख, शांति, ऐश्वर्य व प्रगति प्राप्त कर सकता है ।

सागर बुंदेलखंड का प्रमुख नगर होने के साथ–साथ बुंदेलखण्ड का प्रवेश द्वार एवं राजस्व संभाग का मुख्यालय भी है। सागर नगर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिये

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रसिद्ध है । इस नगर की जलवायु स्वास्थ्यप्रद है । सागर नगर की प्रमुख पहचान यहाँ पर स्थापित डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, बीड़ी उद्योग एवं पुलिस प्रशिक्षण संस्थान है।

इस शहर का नाम हिन्दी शब्द 'सागर' के आधार पर पड़ा । सर हरीसिंह गौर के अनुसार "सागर, सागर इसलिये कहलाता है, क्योंकि यह एक विशाल झील के इर्द गिर्द बसा है ।" सागर नगर मध्यप्रदेश के उत्तर मध्य भाग में स्थित है । यह नगर, मध्य रेल्वे के बीना कटनी रेलमार्ग पर बीना से 75 किमी. दूरी पर स्थित मुंबई, दिल्ली, कोलकाता एवं भोपाल जैसे प्रमुख नगरों से जुड़ा है। यह सड़क मार्ग से 195 किमी. की दूरी पर राज्य की राजधानी भोपाल से तथा 184 किमी. की दूरी पर जबलपुर से जुड़ा है। सागर नगर 23^0 50' उत्तरी अक्षांश और $78^0$45' पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है । इसकी ऊँचाई समुद्र तल से 540 मीटर है । सागर जिले के उत्तर में झांसी, दक्षिण में नरसिंहपुर और रायपुर, पश्चिम में विदिशा तथा पूर्व में दमोह जिला स्थित है । सागर को सन् 1981 में नगरपालिका निगम की श्रेणी प्राप्त हुई । वर्तमान में नगरीय सीमा के अन्तर्गत 3375 हेक्टेयर क्षेत्र सम्मिलित है, जिसमें 48 वार्ड हैं । इसमें से मात्र 624.5 हेक्टेयर क्षेत्र विकसित हैं, जो कुल क्षेत्र का 18.0प्रतिशत है । यह नगर दक्कन ट्रेप और विन्ध्य चट्टानों पर स्थित है। तहसील का सबसे ऊँचा भू–भाग पथरिया पहाड़ी है, जिसकी ऊँचाई लगभग 615 मीटर है । इसके अतिरिक्त नगर में पुख्याऊ, शुक्रवारी, शनीचरी, इतवारी आदि पहाड़ियाँ हैं । भूगर्भिक संरचना की दृष्टि से सागर शहर गुलाबी रंग के रेत, पत्थर पर क्वार्टजाइट पर स्थित है तथा दक्कन ट्रेप बेसाल्टिक लावा का प्रवाह है । एक दो स्थानों पर चूना पत्थर पतले बंधन के रूप में पाया जाता है । सागर नगर की भूगर्भिक संरचना को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है– प्रथम विंध्यन शैल समूह और दूसरा दक्कन ट्रेप।

सागर नगर की जलवायु सामान्यतया सुखद स्वास्थ्यप्रद एवं आनंददायक मानी जाती हैं । सागर नगर में मानसूनी प्रकार की जलवायु पायी जाती है । यहाँ प्रमुख रूप से तीन ऋतुयें–ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु एवं शीत ऋतु होती हैं । मानसूनी जलवायु होने के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण यहाँ मई माह सबसे गर्म तथा जनवरी माह सबसे ठंडा होता है । नगर में वर्षाकाल में औसतन 1100 मिलीलीटर वार्षिक वर्षा होती है । सामाजिक एवं व्यापारिक रूप से वनों का अत्याधिक महत्व है। सागर के वन ' उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती' प्रकार के हैं, जिनमें सागौन की बहुलता है। इसके अतिरिक्त तेंदू, सेजा, टिन्सा, साल, बेल, महुआ, पलास, सेमल, आंवला, चिरोल, बहेड़ा, शीशम, बीजा, अमलतास, अर्जुन, हरसिंगार आदि वृक्ष पाये जाते हैं । सागर नगर खनिज संपदा की दृष्टि से धनी नहीं है । नगर में खनिज संपदा पर आधारित प्रमुख उद्योग रॉक फास्फेट, रोलिंग शटर, प्रिंटिंग प्रेस, सीमेंट जाली व सीमेंट पोल बनाना आदि हैं । सागर नगर में 90 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या एक भाषा अर्थात् हिन्दी बोलती है । यह नगर बुंदेलखंड के पश्चिमी भाग पर स्थित है इसलिए इसमें पश्चिमी हिन्दी की 'बुन्देली बोली' बोली जाती है । बुन्देली लिखते समय देवनागरी तथा सजातीय कैथी वर्णमाला का प्रयोग किया जाता है । नगर और उद्योग एक सिक्के के दो पहलू हैं, क्योंकि जब किसी स्थान पर उद्योग की स्थापना होती है, तो उसके आसपास नगर निर्मित हो जाता है । सागर नगर औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है वर्तमान में नगर में गृह उद्योग तथा कुछ छोटे उद्योग विद्यमान है । नगर के दो परंपरागत उद्योग बीड़ी तथा अगरबत्ती ही प्रमुख रोजगार मूलक उद्योग हैं इसके अतिरिक्त लकड़ी चीरने के कारखाने, तेलमिल एवं दालमिल एवं चमड़ा उद्योग तथा अन्य उद्योग हैं।

नगरीय आकारिकीय, नगर से संबंधित एक अतिमहत्वपूर्ण पक्ष है; क्योंकि इसमें नगर का इतिहास, विकासक्रम, कार्यात्मक प्रारूप, विन्यास तथा प्रकारात्मक एवं अवस्थागत स्वरूप की अभिव्यक्ति होती है । किसी भी नगर के विभिन्न उपयोगों में आवासीय उपयोग के अन्तर्गत सबसे अधिक क्षेत्र समाहित होता है । सागर के वर्तमान आवासीय संरचना के संख्यात्मक अध्ययन के अनुसार नगर निगम क्षेत्र में औसत आवासी घनत्व 422 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर पाया गया है। इससे स्पष्ट होता है, कि आवासीय दर अधिक होकर भवन घने बसे हैं । नगर में वर्तमान में तीन शासकीय चिकित्सालय हैं, जिसमें एक तिली में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थित जिला चिकित्सालय, ,खुरई मार्ग पर स्थित इंदिरा गांधी नेत्र चिकित्सालय एवं सागर तालाब के सामने महिला एवं शिशु के लिए डफरिन चिकित्सालय है । इसके अतिरिक्त नगर में 8 औषधालय हैं । छावनी एवं केन्टोमेन्ट जनरल अस्पताल सदर क्षेत्र में स्थित है । नगर में जलापूर्ति व्यवस्था, नगर से 8 किमी. की दूरी पर स्थित बेबस नदी पर निर्मित संग्राहक जलाशय द्वारा की जाती है । शिक्षा नगर का एक अनिवार्य कार्य है; क्योंकि नगरीय जनसंख्या के लिये सभी स्तरों की शिक्षा सुविधा प्रदान करना नगर का दायित्व होता है । आजादी के पूर्व से ही सागर नगर का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है । संपूर्ण राष्ट्र में सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं जवाहर लाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय की पहचान है । इसके अतिरिक्त नगर में इंजीनियरिंग महाविद्यालय, महिला पॉलीटेकनिक, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान तथा 18 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, 61 माध्यमिक विद्यालय एवं 84 प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक शालायें स्थित हैं।

नगर के आसपास तथा नगर में अनेक ऐतिहासिक एवं नवीन धार्मिक स्थल हैं, जिनमें से गढ़पहरा, बाघराज मंदिर, पीली कोठी, महाकाली मंदिर, बीजासेन मंदिर गोवर्धन मंदिर, वृन्दावन बाग मंदिर, गोपाल मंदिर, रामबाग मंदिर, सिद्धधाम मंदिर, ठाकुर मंदिर, गेंडा जी का मंदिर, चकराघाट स्थित मंदिर, भूतेश्वर मंदिर परेट मंदिर आदि प्रमुख व कामनापूर्ण करने वाले मंदिर हैं। राजस्व संभाग का संभागीय मुख्यालय होने के कारण, सागर में संभागीय एवं जिला स्तर के अनेक शासकीय एवं अर्द्धशासकीय कार्यालय स्थित हैं । इस नगर में व्यापारिक एवं वाणिज्यिक वस्तुओं का विपणन, परिवहन, क्रय व विक्रय आदि होता है । नगर के उत्तरी क्षेत्र में स्थित कटरा, गुजराती बाजार, जवाहर गंज, तिलकगंज सुभाष मार्केट आदि में मिश्रित व्यापारिक गतिविधियाँ हैं । सागर नगर में वर्तमान में वर्षाकालीन जल का प्रवाह उत्तर–पश्चिम में स्थित नाले द्वारा इसके विपरीत विभिन्न क्षेत्रों का पानी तालाब में विसर्जित होता है, जिससे तालाब का जल प्रदूषित हो जाता है । नगर में मल निकास विभिन्न क्षेत्रों में स्थित स्वतंत्र टैंकों द्वारा किया जाता है । मनोरंजन के साधन मनुष्य के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शारीरिक एवं पर्यावरणीय विकास के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं । वर्तमान में नगर में दो छोटे उद्यान सिविल लाइन्स एवं कन्या महाविद्यालय के समीप स्थित हैं । इसके अतिरिक्त छावनी क्षेत्र में एक छोटा उद्यान, तालाब के किनारे विकसित पट्टीनुमा उद्यान, तिली मार्ग पर क्रीडांगन गोपालगंज में पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय का एक खेल का मैदान, बस स्टैण्ड मार्ग पर स्टेट बैंक के सामने खेल परिसर आदि हैं एवं राहतगढ़ से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित जलप्रपात एवं राहतगढ़ स्थित प्रसिद्ध दुर्ग आदि है ।

वास्तुकला के सिद्धान्त, भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप बनाये गये है और यह ध्यान रखा गया है, कि प्राकृतिक स्त्रोंतों द्वारा लोक कल्याण हेतु ऊर्जा को समुचित ढ़ंग से ग्रहण करते हुये भवन, गांव, नगर में इसका उपयोग किस प्रकार किया जा सके। वस्तुतः प्राकृतिक स्त्रोतों से सूक्ष्म से सूक्ष्मतम शक्ति को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करने के लिये वास्तु नियमों का प्रतिपादन किया गया है ; जिससे इस का सर्वाधिक उपयोग किया जा सके। सागर नगर के मानिचित्र को देखकर यह स्पष्ट होता है, कि नगर का ईशान कोंण बढ़ा हुआ है, जो कि वास्तुसिद्धान्तानुसार अनुकूल प्रभाव डालता है, किन्तु नगर का आग्नेय नैऋत्य एवं वायव्य कोण कटा हुआ है, जो कि अशुभ फलदायक है। सागर नगर की आकृति कटोरे के समान है, जो कि नगर की प्रगति के लिये उपयुक्त नहीं है।

वास्तुसिद्धान्तानुरूप नगर का मध्यभाग खुला होना चाहिए तथा नगर के मध्यभाग में किसी भी प्रकार का निर्माण या गड्ढा वर्जित माना गया है। सागर नगर के अध्ययन स्पष्ट होता है, कि नगर के मध्यभाग में तालाब, कटरा, गुजराती बाजार, तीनबत्ती , बसस्टैण्ड , बड़ाबाजार, गर्ल्स कॉलेज एवं पार्क आदि स्थान आते हैं। लगभग संपूर्ण नगरीय क्षेत्र की ढ़ाल मध्यभाग की ओर है जो कि वास्तुसिद्धान्तों के प्रतिकूल है। यह नगर को प्रगति के स्थान पर गर्त की ओर ले जाने वाला है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारत में वैदिक काल से ही वर्णानुसार आवास व्यवस्था रही है। इसी आधार पर स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुरूप आवास व्यवस्था का निर्धारण किया गया है। यहॉ वर्ण व्यवस्था का आशय व्यक्ति के जीवकोपार्जन के लिये किये जाने वाले कर्म से है। वैदिक काल से ही समाज को प्रमुख चार वर्णो में विभाजित किया गया है ये चार वर्ण है – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। सागर नगर में ब्राह्मण वर्ण के अंतर्गत गौर नगर, सिविललाइन्स, जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय परिसर, इंजीनियरिंग महाविद्यालय परिसर पॉलीटेकनिक महाविद्यालय परिसर (तिली रोड), केन्द्रीय विद्यालय परिसर, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय परिसर, शासकीय विद्यालय परिसर (बस स्टैण्ड), चकराघाट, सिद्धधाम एवं पीली कोठी आदि क्षेत्र आते हैं। क्षत्रिय वर्ण के आवासीय परिसरों में नगर निगम सीमा के बाहर स्थित छावनी क्षेत्र, सागर जेल एवं सिविल लाइन्स में पुलिस के आवासीय परिसर, सेंट्रल कोतवाली , गोपालगंज थाना, कटरास्थित थाना, मोतीनगर थाना, केन्टोमेन्ट थाना, पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय (परकोटा) आदि आते है। इसके अतिरिक्त वैश्य वर्ण ये संबंधित व्यक्ति कटरा बाजार, गुजराती बाजार, जवाहारगंज, भगवानगंज, सुभाष मार्केट तिलकगंज आदि में निवास करते है। शूद्रवर्ण से संबंधित व्यक्तियों के आवास काकागंज, केशवगंज, भगवान गंज, विट्ठलनगर मोती नगर, सुभाषनगर, संतकॅवरराम, अम्बेडकर, संतरविदास एवं संत कबीर नगर आदि क्षेत्रों में है। स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार नगर की उत्तरदिशा में ब्राह्मण , पूर्व दिशा में क्षत्रिय , दक्षिण में वैश्य और पश्चिम में शुद्र वर्ण के व्यक्तियों के आवास होना चाहिए। सागर नगर निगम सीमा के पूर्व में गौर नगर, ईशान में जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय परिसर, शासकीय केन्द्रीय विद्यालय परिसर (बसस्टैण्ड) महिला पॉलीटेकनिक महाविद्यालय परिसर पीली कोठी आदि स्थित है। नगर निगम सीमा के बाहर ईशान कोण में ही इंजीनियंरिंग महाविद्यालय उत्तर में शासकीय विज्ञान महाविद्यालय एवं वायव्य में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र स्थित है। शासकीय विज्ञान महाविद्यालय जो कि निर्माणाधीन है वास्तुसिद्धांतों के अनुकूल है। इसके अतिरिक्त समस्त आवासीय क्षेत्र वर्णानुसार आवास व्यवस्था के प्रतिकूल है। इसके साथ ही क्षत्रिय वर्ण के आवासीय परिसर, नगर निगम

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सीमा के बाहर स्थित छावनी क्षेत्र, सागर जेल, पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय सिविललाइन्स में स्थित पुलिस आवासीय परिसर गोपालगंज थाना आदि नगर के ईशान में स्थित है एवं सेन्ट्रल कोतवाली, कटरा में स्थित थाना आदि नगर के उत्तर में स्थित है, जो स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। इसी प्रकार वैश्य वर्ण से संबंधित व्यक्ति नगर के उत्तरी भाग में निवास करते हैं, जो कि वास्तु नियामों के प्रतिकूल है। इसी प्रकार शूद्रवर्ण से संबंधित आवासीय परिसरों में भी वास्तुदोष दृष्टिगोचर होता है।

कहने का तात्पर्य है, कि सागर नगर की आवासीय व्यवस्था बहुत कम वास्तु नियमों का पालन करती हे। वास्तुनियमों के प्रतिकूल आवासीय व्यवस्था के परिणामस्वरूप ही नगर का विकास जिस गति से होना चाहिए, उस गति से नहीं हो रहा है। वर्तमान में नगरों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक एवं सामाजिक प्रदूषण के कारण मनुष्यों में रोग प्रतिरोधक क्षमता दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है ; जिससे चिकित्सालयों की आवश्यकता होती है। नगरों में चिकित्सालयों की व्यवस्था इस प्रकार होना चाहिए , कि आवश्यकतानुसार प्रत्येक नगरवासी को इसका लाभ शीघ्रतिशीघ्र प्राप्त हो ; जिससे वह शीघ्र स्वस्थ्य हो जाये। स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार चिकित्सालय वायव्य दिशा में होना शुभफलदायक होता है। सागर नगर में जिला चिकित्सालय नगर के पूर्व एवं डफरिन चिकित्सालय नगर की उत्तर दिशा में स्थित हैं। जिला चिकित्सालय स्थापत्यवेद के सिद्धान्तों के अनुकूल होने के कारण यह जिले का प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय चिकित्सालय है। इसके विपरीत डफरिन चिकित्सालय वास्तुसिद्धान्तों के विपरीत होने के कारण जीर्णशीर्ण अवस्था मे है। आजादी के पूर्व से ही शिक्षा के क्षेत्र में सागर नगर को संपूर्ण राष्ट्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। सर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय प्रदेश का प्राचीनतम विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय नगर के पूर्व में पथरिया पहाड़ी पर स्थित हैं जो कि शुभफल दायक है, क्योंकि स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुसार शिक्षा क्षेत्र का नगर के उत्तर, पूर्व एवं ईशान आदि दिशाओं में होना शुभ माना गया हैं। इसके अतिरिक्त पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय नगर के उत्तर , महिला महाविद्यालय नगर के ईशान , महिला पॉलीटेकनिक महाविद्यालय पूर्व में ,औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र नगर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की वायव्य दिशा में , गर्ल्स स्कूल बालक स्कूल एवं केन्द्रीय विद्यालय नगर के ईशान तथा इंजीनियरिंग महाविद्यालय नगर निगम सीमा से बाहर ईशान में स्थित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर में स्थित शैक्षणिक केन्द्रों की स्थिति वास्तुसिद्धान्तानुरूप है, क्योंकि उत्तर पूर्व एवं ईशान दिशायें ज्ञानबर्द्धक दिशायें कहलाती है। एवं इन दिशाओं में शिक्षा क्षेत्र होने से विद्याबल बढ़ता है। शिक्षा केन्द्रों की वास्तुनुकूल स्थिति के कारण ही नगर को शिक्षा के क्षेत्र में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।

जल प्रकृति प्रदत्त पंचमहाभूतों में से एक है, जल जीवन का प्रतीक है। यही कारण है, कि अधिकांश प्राचीन सभ्यताऐं जल स्त्रोतों के समीप विकसित हुई है। नगर में जलापूर्ति की उचित व्यवस्था होना चाहिए ; क्योंकि जल जहाँ एक ओर मानव जीवन का आधार हे, वहीं दूसरी ओर जल प्रदूषित होने पर जीवन के लिये घातक सिद्ध हो सकता है। इसीलिए स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार जलापूर्ति व्यवस्था नगर के ईशान में उत्तम मानी गई है। नगर में जलापूर्ति वर्तमान में नगर से 8 कि.मी. की दूरी पर बेवस नदी पर स्थित संग्राहक जलाशय द्वारा की जाती है, जो कि नगरीय सीमा के बाहर पूर्व दिशा में स्थित है– एवं वाटर फिल्टर भी नगर की पूर्व दिशा में पथरिया पहाड़ी पर पूर्व दिशा में स्थित है जो कि अनुकूल प्रभाव डालने वाला है। सागर नगर के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि अधिकांश पूजा स्थल नगर के उत्तर , पूर्व एवं ईशान दिशा में स्थित हैं, जो कि शुभफलदायक है। इसीलिये सागर नगर में अधिकांश लोग संतोषी, शांतिप्रिय एवं धार्मिक प्रवृत्ति के लोग निवास करते है।नगरीय मनुष्य को पर्यावरण प्रदूषण से बचाने के लिये एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिये नगर में जल मल निकासी की उचित व्यवस्था अत्यंत आवश्यक हैं सागर नगर में जलमल निकासी का पर्याप्त अभाव है ; क्योंकि वर्षाकाल में जलप्रवाह मुख्य रूप से उत्तर–पश्चिम में स्थित नाले द्वारा होता है, जो कि वास्तुसिद्धान्तों के अनुकूल है ; जबकि विभिन्न क्षेत्रों का प्रदूषित जल नगर के उत्तर एवं मध्यभाग में स्थित सागर तालाब में होता है वास्तुसिद्धान्तानुरूप जलमल व्यवस्था नगर के उत्तर एवं वायव्य दिशा में होना उपयुक्त होता है। सागर नगर में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्यभाग के जल का विसर्जन वास्तुसिद्धान्तों के प्रतिकूल नहीं है; लेकिन पर्यावरणीय दृष्टि से प्रतिकूल है; क्योंकि प्रदूषित जल संपूर्ण तालाब के जल को प्रदूषित कर देता है।

मनुष्य के शारीरिक एवं पर्यावरणीय विकास के लिये मनोरंजन के साधन अत्यंत महत्वपूर्ण होते है। मनोरंजन स्थलों को नगर का फेंफड़ा कहा जाता है, जिस प्रकार फेफड़े हृदय को शुद्ध वायु प्रदान कर शरीर को नवस्फूर्ति एवं नवजीवन प्रदान करते है; उसी प्रकार मनोरंजन के साधन मानव जीवन को सकारात्मकता प्रदान करते है। अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर में वर्तमान में दो छोटे उद्यान स्थित है। एक उद्यान कन्या महाविद्यालय के सामने एवं एक उद्यान सिविल लाइन में स्थित है। इसके अतिरिक्त स्टेडियम, कन्या महाविद्यालय के समीप स्थित है। इसके साथ ही साथ छावनी क्षेत्र में एक छोटा उद्यान स्थित है। साथ ही नगर के पूर्व में विश्वविद्यालय पहाड़ी के नीचे तिली मार्ग पर क्रीडांगन एवं ईशान में पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय का एक क्रीड़ागन एवं पीली कोठी से बस स्टैण्ड मार्ग पर स्टेट बैंक के सामने खेल परिसर स्थित है। स्थापत्यवेद के सिद्धान्तानुरूप नगर में मनोरंजन के साधन उत्तर एवं पूर्व दिशा में होना चाहिए। नगर के अध्ययन से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, कि अधिकांश मनोरंजन स्थल नगर के ईशान एवं पूर्व में स्थित हैं, जो कि नगरीय विकास पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं, इसीलिये यह नगर शांतिप्रिय नगर है।

किसी भी नगर के सुनियोजित विकास के लिये वहॉ की प्रशासनिक व्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि जिस प्रकार संपूर्ण शरीर का संचालन मस्तिष्क द्वारा होता है, उसी प्रकार संपूर्ण नगर के कार्यों एवं नियमों का संचालन वहॉ के प्रशासन तंत्र से होता है। स्थापत्येवद के सिद्धान्तानुसार नगर का मध्यवर्ती भाग प्रशासकीय कार्यालयों के लिये सर्वोत्तम कहा गया है। इसके अतिरिक्त नगर का पूर्व का मध्यक्षेत्र, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण का मध्यक्षेत्र, प्रशासनिक कार्यालयों के लिये उपयुक्त कहे गये है। अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि सागर नगर के समस्त कार्यालय सागर निवेश क्षेत्र सीमा से नगर के मध्य भाग में स्थित है एवं निगमनिगम सीमा से नगर के ईशान कोण के मध्य एवं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दक्षिणी भाग में स्थित हैं, जो कि वास्तुसिद्धान्तानुरूप होकर नगर की प्रशासनिक व्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव डालने वाले है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण नगर में स्थित पुलिस प्रशिक्षण संस्थान एवं उसका कार्यालय , विश्वविद्यालय व उसका कार्यालय एवं छावनी क्षेत्र व उसका कार्यालय है, जो देश में अपनी अलग पहचान बनाये हैं। सागर नगर औद्योगिक एवं व्यापारिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है, स्थापत्यवेद में वर्णित सिद्धान्तानुसार नगर के उत्तर एवं ईशान में फल सब्जी किराना आदि से संबंधित दुकान, दक्षिण–पश्चिम में लोहे से संबंधित उद्योग (दुकान)कृषि से संबंधित व्यवसाय वायव्य में , आभूषण , रत्न आदि से संबंधित व्यवसाय उत्तर दिशा में औषधि से संबंधित व्यवसाय उत्तर और ईशान के मध्य खण्ड में होना शुभदायक होता है अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि नगर में लगभग समस्त व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्थिति वास्तुसिद्धान्तों के अनुकूल है; लेकिन सिद्धगुवॉ औद्योगिक क्षेत्र नगर के ईशान में एवं लोहे से संबधित व्यवसाय नगर के उत्तर में (भगवानगंज व तिलकगंज) में है, जो कि वास्तुसिद्धन्तों के प्रतिकूल है। यही कारण है, कि सागर नगर औद्योगिक रूप से पिछड़ा है।

आज का मानव समाज औद्योगिक एवं प्रौद्योगिक क्रान्तियों के साथ–साथ नगरीय क्रान्तियों के दौर से गुजर रहा है। यही कारण है, कि वर्तमान सदी के उत्तरार्द्ध में विश्व में नगरीकरण के साथ–साथ नगरों की संख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है। अनियंत्रितविकास के परिणामस्वरूप प्रत्येक नगर किसी न किसी प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है। इस प्रकार हम कह सकते है, कि व्यवहार में जिन परिस्थितियों को किसी समय बहुत से सदस्य आपत्तिजनक या अवांछनीय मानते हैं, उन्हें समस्यायें कहा जाता है। नगरीय समस्याओं का प्रमुख रूप से दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता है – 1. आंतरिक समस्यायें 2. बाह्य समस्यायें। आंतरिक समस्याओं के अन्तर्गत नगरीय सीमा के अंदर आवासीय गमनागमन नगरीय सेवायें और सुविधायें, पर्यावरणीय समस्यायें और खुली भूमि आदि प्रमुख हैं। बाह्य समस्याओं के अतंर्गत ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में अनियंत्रित जनसंख्या प्रवाह, नगरीय सीमा के बाहर अनियोजित नगर विस्तार, कृषि भूमि का अपहरण तथा नगरीय सेवा क्षेत्रों के विकास

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हेतु नगर आधारित योजना का अभाव आदि विशेष उल्लेखनीय है। सागर नगर का वास्तुशास्त्रीय एवं भौगोलिक दृष्टि से अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है, कि सागर नगर भी अन्य नगरों के समान अनेक समस्याओं से ग्रसित है, जो वर्तमान में सागर नगर में भी बढ़ती जनसंख्या की तुलना में आवासीय गृहों का निर्माण न होने के कारण आवास की समस्या है। पूर्व के अध्याय में सागर नगर की जनसंख्या की सारणी को देखकर यह स्पष्ट होता है, कि 19 वीं सदी के प्रारंभ में नगर की जनसंख्या जहॉ 43,420 थी, वहीं वर्ष 1991 में नगरीय जनसंख्या बढ़कर 2.57 लाख हो गयी है। इस प्रकार 1981–91 के दशक में नगरीय जनसंख्या में 23.97 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप नगर में स्थान की कमी मकानों की कमी, झुग्गी झोपड़ियॉ एवं गंदी बस्तियों का उदय आदि समस्याओं का उदय हुआ। नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में जलीय स्त्रोत महत्वपूर्ण कारक है।

सागर नगर सदैव से ही जलीय समस्या से ग्रसित रहा है। इसका प्रमुख कारण भौगोलिक संरचना है। भौगोलिक दृष्टि से सागर नगर की आंतरिक संरचना बेसाल्ट चट्टान की बनी है। बेसाल्ट चट्टान में पानी शोषित करने की क्षमता कम होती है, जिसके कारण नगर का भौगोलिक जलस्तर काफी गहराई पर प्राप्त होता है। इसीलिए नगर में पानी की अत्याधिक समस्या है। जल समस्या का दूसरा कारण नगर में प्राकृतिक रूप से औसतन 1100 मिलीमीटर वार्षिक वर्षा प्राप्त होती है ; किंतु प्राकृतिक वर्षा का जल कृत्रिम बांधो के अभाव में एकत्रित नहीं हो पाता ; जिससे भी नगर में जलापूर्ति नहीं हो पाती है। नगरीय जीवन की उत्कृष्टता सहज एवं सुव्यवस्थित यातायात में निहित होती है ; क्योंकि कार्य सम्पादन में यातायात की अहम् भूमिका होती है। नगर की जनसंख्या वृद्धि से वाहन यातायात एवं परिवहन गतिविधियों में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है ; जिसके लिये मुख्य रूप से व्यापारिक एवं वाणिज्यिक गतिविधियॉ उत्तरदायी है। नगर में सड़कों का अरीय प्रतिरूप है। उपलब्ध परिवहन क्षमता के फलस्वरूप नगर में अनेक यातायात समस्यायें जैसे यातायात

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संकुलता, वाहन विराम स्थल, असुविधाजनक मार्ग संगम, भारीवाहन यातायात , दुर्घटनायें आदि प्रमुख है।

नगरों में असंगत भूमि उपयोग अनेक नगरीय समस्याओं का कारण बनती हैं। यह प्रवृत्ति विश्व व्यापी है ; क्योंकि नगर विस्तार के साथ इसको नियंत्रित करने के कठोर निर्णय नहीं लिये जाते है। नगर में भूमि उपयोग का विस्तृत सर्वेक्षण तथा आवासीय यातायात परिस्थिति आदि के संबंध में अध्ययन करने पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है, कि नगर में कुछ स्थानों पर असंगत भूमि उपयोग है और इसे उपयुक्त स्थानों पर स्थानांतरिक करना आवश्यक है। जल निकासी समस्या दो प्रकार की होती है, पहली मलजल निकासी और दूसरी वर्षा जल निकासी। सागर नगर में ये दोनों समस्यायें दृष्टिगोचर होती है ; क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण नगर में वर्षा जल निकासी की समस्या है। नगर के उत्तर–पश्चिम भाग का जल निकास तो नाले द्वारा हो जात है, किंतु मध्यवर्ती भाग में जल निकास शीघ्र नहीं हो पाता परिणामस्वरूप सामान्य वर्षा में भी यह भाग जलमग्न हो जाता है। वर्तमान नगर में मल विसर्जन घरों में बनाये सेप्टिक टैंकों द्वारा किया जाता है, जो कि दीर्घकालीन व्यवस्था नहीं हैं नगर में जल मल निकासी की आधुनिक परियोजना की आवश्यकता है।

नगरों में पर्यावरणीय समस्यायें विश्वव्यापी हे। सागर नगर में वनों के कटाव से वर्षा की अल्पता, तापमान वृद्धि, उपजाऊ भूमि का अभाव एवं कटाव आदि समस्यायें पैदा हो रही है। नगर के मध्यक्षेत्र में गंदे पानी के निकास की उपयुक्त व्यवस्था न होने के कारण गंदा पानी नालियों द्वारा तालाब में विसर्जित होता है, जो तालाब के जल का प्रदूषित करता है। इसके साथ–साथ नगर वायुप्रदूषण एवं ध्वानि प्रदूषण आदि समस्याओं से ग्रसित है। वर्तमान में नगर में आधुनिक सुविधाओं से उपलब्ध महिला चिकित्सालय की कमी है, सार्वजनिक स्तर पर स्वास्थ्य सुविधा की कमी ने नगर में निजी अस्पतालों एवं नर्सिंग होम को बढ़ावा दिया है। अतः वर्तमान में नगर में आधुनिक सुविधाओं से उपलब्ध महिला चिकित्सालय की आवश्यकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुसंधान क्षेत्र के अध्ययन से स्पष्ट होता हे, कि अन्य नगरों की तुलना में नगर का विकास जिस गति से होना चाहिए, उस गति से नहीं हो रहा है। इसके लिये जितनी भौगोलिक परिस्थितियॉ उत्तरदायी हैं, उतनी वास्तुशास्त्रीय भी । जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है, कि सागर नगर का आकार वास्तुनुरूप नहीं है। नगर का आग्नेय, नैर्ऋत्य और वायव्य कोंण कटा हुआ है, जो कि नगर की प्रगति में बाधक है, तो सर्वप्रथम सागर नगर निगम सीमा में समीपवर्ती ग्रामों का सम्मिलित करके नगर का आकार आयताकार या वर्गाकार करना चाहिए। इसके साथ ही साथ वर्तमान में नगर की निवेश सीमा के आधार पर नगर का मध्य भाग जो, कि सर्वाधिक सघन बसा हुआ है अर्थात् समस्त नगरीय कार्यो का संचालन नगर के मध्य भाग से होता है। नगर के आवासीय , प्रशासनिक कार्यालय एवं वाणिज्यिक गतिविधियों का विकेन्द्रीकरण कर पूर्व में बताये सिद्धांतों के आधार पर नगर का नियोजन करना आवश्यक है। प्रस्तावित इकाई वार नियोजन मानचित्र के आधार पर नगर में आवासीय, पशुपालन, परिवहन, अनाजमंडी विश्वविद्यालय, घास एवं सब्जी मण्डी वास्तुसिद्धान्तों के अनुकूल है। इसके अतिरिक्त प्रस्तावित इकाई में आरा मशीन दाल एवं तेल मिल, बीड़ी गोदाम, सिद्धगुवॉ औद्योगिक क्षेत्र, मेडीकल कॉलेज, कबाडी बाजार वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के प्रतिकूल होने के कारण प्रगति नहीं कर पा रहे है। इसके अतिरिक्त प्रस्तावित इकाईवार भूमि उपयोग वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुकूल है। प्रस्तावित इकाईयों को संशोधित कर आरा मशीन को इकाई क्र. 2 या 3 में, दाल एवं तेल मिल को इकाई क्र. 1 या 2 में, सिद्धगुवॉ औद्योगिक संस्थान को इकाई क्र. 2 या 3 में मेडीकल कॉलेज इकाई क्र. 2 में एवं कबाड़ी बाजार इकाई क्र. 2 या 3 में स्थानांतरित कर नगर नियोजन करना चाहिए। इसी प्रकार वर्तमान नगर की सड़को का प्रतिरूप अरीय है, जो कि वास्तुसिद्धान्तानुरूप नहीं है। नगर की समस्त सड़कें आयताकार या वर्गाकार कर नगर का नियोजन करना उपयुक्त रहेगा; जिससे समस्त सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटें। इससे नगरीय यातायात सुचारू रूप से होगा। साथ ही साथ दुर्घटनायें भी कम होंगी । इकाई क्र. 4 का विस्तार सीमित होने का कारण फायरिंग रेंज एवं गौर विश्वविद्यालय है तथा इकाई क्र. 7 का विस्तार सीमित होने का

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण छावनी क्षेत्र एवं रजाखेड़ी उपनगर का होना है। नगर के जिला चिकित्सालय, कन्या महाविद्यालय डफरिन चिकित्सालय, जो कि वास्तुसिद्धान्तों के प्रतिकूल है, उन्हें किसी सुयोग्य वास्तुविद् की सहायता से नियोजित करना आवश्यक है। इसके साथ – साथ नगर के क्षेत्रीय महत्व को दृष्टिगत रखते हुये, यहॉ आधुनिक सुविधाओं से युक्त अस्पताल एवं चिकित्सा महाविद्यालय की व्यवस्था करना चाहिए। कृषि पर आधारित क्षेत्र होने के कारण यहॉ के युवकों एवं किसानों के स्वरोजगार हेतु कृषि एवं पशुपालन संबंधी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय व कृषि महाविद्यालय की व्यवस्था करना चाहिए, ताकि नगर से संबंधित समस्त नागरिक आत्मनिर्भर हो सकें। जल समस्या के निदान हेतु तालाब का गहरीकरण एवं वर्षाकालीन जल का संग्रहण नगर के आसपास के प्रमुख नालों पहाड़ी की घाटी एवं निचले क्षेत्रों में जल स्त्रोतों का संवर्द्धन करके स्थान – स्थान पर इन जल स्त्रोतों के साथ जलाशय का निर्माण एवं विकास किया जाना चाहिए। पर्यावरण उन्नयन हेतु नगर एवं पहाड़ियों पर वृक्षारोपण करना चाहिए। कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण नगर में कृषि पर आधारित उद्योगों का बढ़ावा देना चाहिए। यातायात की समस्या के निदान हेतु मार्गो की क्षमता में सुधार एवं पार्किग की उचित व्यवस्था करना एवं भारी वाहन यातायात को सभी गुजरने वाले राष्ट्रीय एवं राज्य मार्गो को आपस में वायपास की सहायता से जोड़ना चाहिए ताकि दुघर्टनाओं व प्रदूषण से बचा जा सके। इसके साथ–साथ गंदी बस्तियों और झुग्गी झोपड़ियों के उद्धार हेतु नियोजन एवं पर्यावरण की दृष्टि से यहॉ निवास करने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति के अनुरूप उचित आवास की व्यवस्था करना चाहिए।

इस प्रकार हम कह सकते हैं , आज के इस भौतिकवादी युग में हमें अपनी प्राचीन कला के मोती 'वास्तु' को उसके सूक्ष्म रूप मे समझने की आवश्यकता है। ताकि मानव समाज स्वस्थ्य एवं समृद्धि प्राप्त कर सके।'वास्तु' का अर्थ है, समन्वय। 'समन्वय' प्रकृति का मनुष्य के साथ। जब तक मनुष्य प्रकृति के साथ सामन्जस्य बैठाकर चलेगा, तब तक स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेगा ; लेकिन प्रकृति से दूर होकर, जीवन को कृत्रिम बनाने पर वह दुःखी रहेगा। अतः सागर विकास योजना के अंतर्गत प्रस्तावित समस्त योजना मे सुयोग्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तुविद् के परामर्शानुरूप नगर का नियोजन करें, ताकि सागर नगर एक आदर्श व सुनियोजित नगर के रूप में अधिकाधिक प्रगति करें और न केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही, वरन् प्रशासनिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में भी अपना अलग स्थान व पहचान बनाये।

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

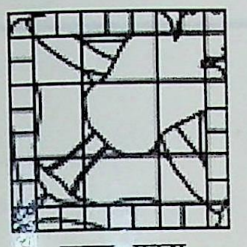

वास्तु पुरुष

परिशिष्ट

- संदर्भ ग्रन्थ सूची
- प्रपत्र
- प्रश्नावली

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

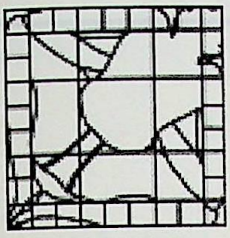

वास्तु पुरुष

परिशिष्ट

- संदर्भ ग्रन्थ सूची
- प्रपत्र
- प्रश्नावली

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संदर्भ ग्रंथ सूची

आहिताग्नि, : ऋग्वेद, नागप्रकाश, 11ए/यूए, जवाहर नगर नई दिल्ली, 1991

आप्टे, वामन शिवराम : संस्कृत–हिन्दी शब्द कोष नागप्रकाशन, दिल्ली

अग्रवाल, के.सी. : भारतीय वास्तु कला, भारतीय वास्तु कला अनुसंधान केन्द्र, भोपाल, 1996

अग्रवाल, इ. पंकज : वास्तु, वैदिकवास्तु संस्था एवं शोध संस्थान केन्द्र, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल, 2001

अग्रवाल, हिमा : वास्तुशास्त्र ज्योतिष एवं समृद्धि, तुलसी पब्लिकेशन, मेरठ

आचार्य, प्रसन्न कुमार : मानसार,मुंशीराम मनोहरलाल, न्यू दिल्ली, 1834

उपाध्याय,डॉ. वादेव : प्राचीन भारतीय भूमि विज्ञान, चौखम्बा विद्या, भवन, वाराणसी, 1969

उपाध्याय, डॉ. वासुदेव : प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1970

उपाध्याय,महामह, पद्भूषण एवं सातवलेकर पं, श्रीपाद दामोदर : ऋग्वेद का सुबोध भाष्य (तीसरा भाग) भारत मुद्रणालय, पारडी (गुजरात राज्य), 1978

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करन, महेश्वर प्रसाद : अधिवास भूगोल, किताबघर, कानपुर, 1995

कादरी, एम.एम. : हिन्दु मुस्लिम स्थापत्य कला शैली, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 1963

कुन्द्रा, ओम प्रकाश : म.प्र. विकास वार्षिकी, राधिका प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल, 1992–93

कुलश्रेष्ठ अर्चना एवं गहराना, जिनेन्द्र : क्रियात्मक वास्तशास्त्र,(बिना तोड़ फोड़ वास्तु के निदान),दीप पब्लिकेशन, आगरा, 1997

कौशिक,डॉ. एस.डी : मानव भूगोल रस्तोगी पब्लिकेशन्स शिवाजी रोड, मेरठ, 1997

खरे, पी.एन. : नगरीय समाज शास्त्र, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा, 1968

खेमक राधेश्याम : स्कंद पुराण, कल्याण प्रेस गोरखपुर, 1993

खेमक राधेश्याम : रामचरितमानस कल्याण गीता प्रेस गोरखपुर, 1999

खेमराज , मिहिरचंद्र : विश्वकर्मा प्रकाश खेमराज कृष्णदास, बम्बई, 1996

गुप्त परमेश्वरी :भारतीय वास्तुकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन लाल चौक वाराणसी, 1999

गोयन्दा हरिकृष्ण दास : मुडकोपनिषद, गोविंद भवन कार्यालय,गीता प्रेस, गोरखपुर, 1995

गोयन्दा, हरिकृष्ण दास : कठोपनिषद्, गोविंद भवन कार्यालय,गीता प्रेस,गोरखपुर पन्द्रहवां संस्करण, 1995

गोयन्दाका, जयदयाल : महाभारत, गोविन्द्र भवन, गोरखपुर, 1995

गोयन्दका, जयदयाल : महाभारत, गोविंद भवन , गोरखपुर, 1915

गोयनंदाका जयदयाल : पदम्पुराण, गोविंद भवन कार्यालय, गीता प्रेस , गोरखपुर, 1988

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोरेला, वाचस्पति : कौटिल्य का अर्थशास्त्र , चौखम्बा विद्याभवन , चौक बनारस, 1991

गौड, निकेतन आनंद : वैदिक वास्तु विद्या एवं रोग कारक वास्तु दोष गुप्ता पब्लिकेशिंग हाऊस नई दिल्ली

गौड, रामस्वरूप : अर्थवेद, चौखम्बा प्रकाश वाराणसी, 1992

गोड़, निकेतन आनंद : वास्तुविद्या एवं रोगकारक वास्तुदोष गुप्ता पब्लिकेशिंग हाऊस,नई दिल्ली

चावला, राकेश : सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र, दिलशाह पॉकेट जी.टी.रोड दिल्ली, 1999

चौधरी दत्त, मजूमदार राय : भारत का वृहद् इतिहास इंडिया लिमिटेड जबलपुर, 1954

जनगणना, संचालनालय : जिला जनगणना पुस्तिका भोपाल (प्रकाशक), 1981

जनगणना संचालनालय : जनगणना पुस्तिका भाग–II ए 1991

जैन निशा : बीड़ी मजदूर : जीवन स्तर एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (सागर जिले के बीड़ी मजदूरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन), 1987

जैन अनीता : म.प्र. के सागर संभाग के औद्योगिकीकरण एवं प्रमुख उद्योगःएक आर्थिक विवेचना, 1989

जोशी पंडित केवल आंनद : सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र, मनोज पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1999

जोशी, जयशंकर : हलायुधकोशः, हिन्दी सामिति, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, द्वितीय संस्करण, 1967

झा. तरणीश : मत्स्यपुराण, डॉ. प्रभान मिश्र, शास्त्री 12, सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, 1910–1988

झा. तरणीश : अग्नि महा पुराण, नागप्रकाशन, दिल्ली

झा. तरणीश : स्कन्द महा पुराण, नागप्रकाशन, दिल्ली

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झा. तरणीश : बाल्मीकि रामायण

झा. तरणीश : रामचरित मानस, गीता प्रेस, गोरखपुर

झा, श्री मद्च्युतानन्द : वास्तु रत्नावली, चौखम्बा अमर भारतीय प्रकाशन, वाराणसी, 1981

झा. रविकांत : वास्तु कला का इतिहास, 1972

झा पं. विश्वनाथ : अमरकोष, द्वितीय काण्ड, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1976

झा तारिणीश : अग्नि पुराण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद, 1985

झा तारिणीश : मत्स्यपुराण, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग इलाहाबाद, 1989

झा, आचार्य तारिणीश : ब्रह्म पुराण, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहबाद, 1993

झा पंडित अच्युतानंद : वृहत् संहिता, चौखम्बा, विद्याभवन प्रकाशन, वाराणसी, 1998

झा तारिणीश : कर्मपुराण, 1915

झा तारिणीश : ब्रह्मपुराण, 1915

झा तारिणीश : वायु पुराण, 1909

झाझरिया, नन्द किशोर : भारतीय भवन निर्माण योजना, मिथुन प्रकाशन, तिलक नगर, कानपुर, 1996

ठाकुर, डॉ. बी. एस. : अधिवास एवं जनसंख्या किताब घर, कानपुर, 1990

तारखेडकर ए. आर : प्रकृति नियम और हमारी वास्तुरचना, कास्मो पब्लिकेशन्स हाउस, महाराष्ट्र, 1996

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिवारी, रामचन्द्र : अधिवास भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, 1997

दम्मानी,ब्रजमोहन : भारतीय वास्तुकला,कामेश्वर प्रकाशन तेलीबाड़ा चौक, बीकानेर, 1995

दम्मगी,बृजमोहन : भारतीय वास्तुकला,कामेश्वर प्रकाशन बीकानेर, 1994

द्विवेदी, श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद : वास्तु रत्नाकर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1997

दिनकर,रामाधार सिंह : संस्कृति के चार अध्याय, उदयाचल, आर्य कुमार रोड, पटना, 1962

द्विवेदी ,भोजराज : सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र , डायमण्ड पाकेट बुक्स , प्रावेट लिमिटेड,नई दिल्ली, 1996

द्विवेदी, श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद : मुहूर्त चिन्तामणि, चौखम्बा सुरभारती वाराणसी, 1990

द्विवेदी, भोजराज : रेमेडियल वास्तुशास्त्र, डायमंड पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1996

द्विवेदी, भोजराज : वास्तु जिज्ञासाएं एवं समाधान डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2001

द्विवेदी, श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद : वास्तुरत्नाकर, चौखम्बा सुरभारती, वाराणसी, 1992

हुगड़, उम्मेद सिंह : वास्तुरहस्य, बी जी पब्लिशर्ज प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1916

दुबे विजयलक्ष्मी : विश्वविद्यालयीन प्रशासकीय एवं शैक्षणिक व्यवस्था का अध्ययन, 1993

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्विवेदी, श्री विन्ध्वेश्वरी प्रसाद : वास्तुरत्नाकरः, चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी, 1997

द्विवेदी, पं. भोजराज : संपूर्ण वास्तुशास्त्र,डायमंड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, 1997

नेने, पं. गोपाल : शब्द कौस्तुभ, चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, 1991

नेगी, डॉ. बलवीर : मानव भूगोल मीनाक्षी प्रकाशन बेगम ब्रिज, सिंह मेरठ

पाण्डे, पं. रामतेज : वास्तुमाणिक्य रत्नाकर श्री विश्वेश्वर प्रेस, वाराणसी, 1993

पाठक,गणेशदत्त टीकाकार : श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भंडार कचौड़ी गली, वाराणसी, 1995

पाण्डयेन,प. रामतेज : वास्तुमाणिक्य रत्नावली, बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, वारणसी, 1993

पुरोहित पं. माधव प्रसाद सूर्य सिद्धांत, संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 1997

प्रसाद, गायत्री : सांस्कृतिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1986

बाहरी, हरदेव : प्राचीन भारतीय संस्कृति कोष, विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली, 1985

बाजपेयी,कृष्ण दत्त : भारतीय वास्तु कला का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1990

ब्लास,डीला : मानव भूगोल के सिद्धांत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड क., आगरा, 1962

बाबा भिंडे : वास्तुसंगम, वास्तुसंगम प्रकाशन, सुरेश फिल्म्स 188 रामनगर नागुपर, 1998

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मय, द्वारा रचित	मयमतम् (प्रथम भाग), इंदिरा गांधी नेशनल सेन्ट्रल एवं मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन नई दिल्ली, 1997
मिश्र, सुरेश चन्द्र	वृहत् संहिता, रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997
मिश्र अनूप	श्री मण्डनसूत्रधारविरचितो वास्तुराज वल्लभः मास्टर खिलाड़ी लाल, कचौड़ी गली, वाराणसी, 1996
मिश्र, आचार्य रामजन्य	नारद संहिता, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1995
मिश्र, डॉ. कृष्ण कुमार	अधिवास भूगोल, कुसुम प्रकाशन, अतर्रा, 1994
मालवीया,डॉ. सुधाकर	पारस्कर गृह्यसूत्रम् चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1995
रामन, वी.वी	वास्तुशास्त्र,विद्याभवन चौड़ा रास्ता जयपुर, 1998
राय, डॉ. उदय नारायण	प्राचीनभारत में नगर तथा नगर जीवन, राममंजिला इलाहाबाद, 1905
राघवन पी.	सागर विरासत एवं विकास, शारदा पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1992
राव पी.पी. एवं शर्मा नन्देश्वर	नगरीय भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन,गोरखपुर, 2000–01
राजौरिया, रामकृष्ण	सागर जिले के लघु एवं कुटीर उद्योग विकास एवं संभावनाएं, 1984
वर्मा, डॉ. विश्वनाथ	: भारतीय दर्शन ज्ञानदा प्रकाशन गोविन्दा पटना, 1977
वर्मा, लक्ष्मी नारायण	: अधिवास भूगोल राजस्थान हिन्दी ग्रंथ रचना अकादमी, जयपुर, 1993

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्मा, राम : भारत का भौगोलिक विवेचन, किताब घर विलास आचार्य नगर कानपुर –3, 1984

वराह मिहिर : वृहद् संहिता,

वाजपेयी सुरेश : सागर जिला की प्राचीन वास्तु एवं चंद्र मूर्तिकला का अध्ययन, 1994

विश्वकर्मा : विश्वकर्मा प्रकाश, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन, बम्बई, 1996

विशुद्धमती, माताजी : वत्थुमिज्जा, आचार्य शिवसागर दि.जैन ग्रंथमाला, शान्तिवीरनगर, श्री महावीर जी राजस्थान, 1996

विद्यालंकार,सत्यकेतु : भारतीय संस्कृति का विकास श्री सरस्वती सरन मंसूरी ,नई दिल्ली, 1997

वंसल,डॉ.सुरेशचंद्र : नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1999

व. सु कृष्णन : जिला गजेटियर, सागर जिला गजेयिर विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, 1970

स्वामी चिन्नादास : श्री वाल्मीकि रामायण गीता प्रेस गोरखपुर, 1958

सिंह उजागर : नगरीय भूगोल, उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1974

सिंह, काशीनाथ एवं जगदीश : मानव और आर्थिक भूगोल, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी, 1975

सिंह रामप्रवेश एवं कुमार अनिल : मानव उद्भव तथा प्रजातीय अध्ययन, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1976

सातवलेकर, प. श्री पाद : रामायण,बसन्त श्रीपाद सातवलेकर पारडी, 1983

शर्मा, रामस्वरूप : अथर्व वेद, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी, 1992

शर्मा सतीश : वास्तुविद्या, ज्योतिष मंथन प्रकाशन, जयपुर, 2001

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शर्मा, पी.एन. : जनसंख्या एवं अधिवास भूगोल प्रकाशन मालिक एण्ड क. जयपुर, 1967

शर्मा, राजीव लोचन : प्रादेशिक एवं नगरीय नियोजन,किताबघर आचार्य नगर कानपुर – 3, 1972

शर्मा, रामनाथ : सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, राजहंस प्रकाशन मंदिर, मेरठ, 1975

शर्मा,प्रो. सुरेश्वर : विज्ञान भारती प्रदीपिका, वास्तुशास्त्र विशेषांक (खण्ड 1) विज्ञान भारती प्रकाशन 'उदयाचल' गुप्तेश्वर, जबलपुर, 1996

शर्मा, रामस्वरूप : अर्थवेद, चौखम्बा, विद्या भवन, वाराणसी, 1990

शास्त्री, रामकृष्ण : शुक्ल, यजुर्वेद संहिता, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1992

शास्त्री, आचार्य उमेश : वास्तु विज्ञानम्, व्यास वालावक्ष शोध संस्थान, दीनानाथ मार्ग, जयपुर, 1996

शास्त्री, आचार्य चतुरसेन : वैदिक संस्कृति पर दृग स्पर्स, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1983

शास्त्री, आचार्य चतुरसेन : भारतीय संस्कृति का गौरव, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1985

शास्त्री, आचार्य चतुरसेन : भारतीय संस्कृतिः पौराणिक प्रभाव, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, 1986

शास्त्री, आचार्य चतुरसेन : भारतीय संस्कृति का गौरव, सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, 1995

शास्त्री, पं. जगदीश : भारतीय वास्तु विज्ञान विद्याभवन, जयपुर, 1996

शास्त्री, रामप्रताप त्रिपाठी : वायु पुराण,हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,1943

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शास्त्री आचार्य रमेश : वाणिज्य वास्तुशास्त्रम् व्यास वालापक्ष शोध संस्थान, जयपुर, 1996

शुक्ल द्विजेन्द्र नाथ : समराङ्गण सूत्रधार, भवन निवेष, मेहरचन्द लक्ष्मन दास पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1965

शुक्ल डी.एन. : भारतीय वास्तुशास्त्र, मेहरचन्द लक्ष्मन दास पब्लिकेशंस, दिल्ली, 1968

शुक्ल, डॉ. द्विजेन्द्रनाथ : समराङ्ण सूत्रधार मेहरचंद लच्छनदास, पब्लिकेशन, नईदिल्ली, 1965

शुक्ल, डॉ. द्विजेन्द्रनाथ प्रसाद निवेश वास्तुवाङ्मय प्रकाशन लखनऊ, 1968

शुक्ल आचार्य द्विजेन्द्रनाथ समराङ्ण सूत्रधारवास्तुशास्त्रम् भवन निवेश (द्वितीयपटल), मेहरचन्द्र लक्ष्मनदास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1965

शुक्ल, श्री कमलकान्त वास्तुसौरव्यम्, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, 1996

शुक्ल डी. एन भारतीय वास्तुशास्त्र, मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1968

हरगोविन्द, श्री पं. अमरकोष चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी, 1993

त्रिपाठी,डा. ब्रम्हानंद महोदय वृहद्वास्तुमाला, चौखम्बा, सुरभारती ग्रंथमाला, वाराणसी, 1995

श्रीवास्तव, शिव कुमार : भारत वर्ष का सांस्कृतिक गौरव एवं अवस्थी, रामदुलारे, 1949

श्रीमद्भगवत गीता : गोविन्द भवन कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर, 1992

श्रीवास्तव,डॉ. बलराम : रूपमंडन मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, 1989

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोध ग्रंथ :

चौरसिया भगवान : म.प्र. के सागर संभाग में पान उद्योग, 1977

चौरसिया, शिव प्रसाद : सागर संभाग में कृषि यंत्रीकरण समस्यायें एवं संभावनाएं, 1985

दुबे विजयलक्ष्मी : विश्वविद्यालयीन प्रशासकीय एवं शैक्षणिक व्यवस्था का अध्ययन, 1993

जैन निशा : बीड़ी मजदूर : जीवन स्तर एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (सागर जिले के बीड़ी मजदूरों का समाजशास्त्रीय अध्ययन), 1987

जैन अनीता : म.प्र. के सागर संभाग के औद्योगिकीकरण एवं प्रमुख उद्योगःएक आर्थिक विवेचना, 1989

राजौरिया, रामकृष्ण : सागर जिले के लघु एवं कुटीर उद्योग विकास एवं संभावनाएं

पालीवाल, अरूण : प्रशासकीय भागों में संगठनात्मकः डॉ. कुमार हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.) के प्रशासकीय विभागों का संगठनात्मक एवं प्रबंधात्मक विश्लेषण, 1994

पाठक, प्रदीप : सर हरीसिंह गौर व्यक्तित्व एवं कृतित्व कुमार ऐतिहासिक दृष्टि में, 1992

पत्र–पत्रिकाएं :

1. सागर विकास योजना (प्रारूप
2. मध्यप्रदेश नगर तथा ग्राम निवेश
3. अधिनियम, 1973 के प्रावधानान्तर्गत प्रकाशित
4. संचालनालय नगर तथा ग्राम निवेश मध्यप्रदेश, भोपाल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Acharya, P.K., Manshar, : Loprice Publication, Delhi, 1995

Beaujeu Garnier J. and chabat G. : Urban Geography, Langmans London, 1969

Carter, Harald, : The study of Urban Gepgraphy

Clapham, Frances M., : The Great World Encyclopedia, crisewood and dempsey Ltd. 22-22, 1981

Danger, Brouno : Mayamatem, Delhi, 1992

Davis.K. : Urbanization in India. Past & Future in Roy Turner (ed.); India's Urban Future, Oxford University Press, Bombay, pp. 1, 1962

Davis, K. : "The Urbanization of the Human Population ", Scientific American, vol.213,pp. 40-53, in Breese, G. (ed.). The city in Newly Developing Countries, 1969, pp.55-20, 1965

Edward, L.Inskeep : "The Geographer in planning", Prof.Geog vol. XTV., 1962

Ganguli, B.N. : "Classification of Indian Cities" town groups and Towns, in Eassays in Geogrphy Calcutta, pp. 82-92., 1955

Ghurye, G. : Cities in India, Socio Bull vol. 11, 1963

Hoiford. H. G. : "Geography and Town planning". Geography, vol. xxxviy, pp, 291 - 98., 1952

Hoalits, pert, p. : The cities of India and their probleme, A Review Article, AAAG , vol. II., 1959

Hunt A. J. and Moisey, : "Population mapping in urban Areas", H. P. Geog. vol, Xlv, pp. 79 -89., 1960

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Jauhari, A. S. : The grewth and Development of urban sottlesents in the sutleg - Yamuna Divider Landon university ph. D. Dessertation., 1961

Koenigsberger,O.H. : New Town in India- Town Planner Rev. Vol.XXIII, pp. 94-132, 1952

Sharma, R.C. : Settlement Geography of the Indian Decert., New Delhi., 1972

Smalies, A.E. : The Geography of Towns, London., 1953

Thesis :

Agnihotri, P. : A Geographical Study of slum Districts in class I cities of Madhya Pradesh., 1986

Ahmad, Majtanedi : Population and Nutrition in Gram, The Geographer, Aligurh Vol. 24, No.2, pp. 31-36, 1977

Ayyar, N.P. : Geography of Nutrition, pp.105-109 in V.C. Mishra & others (eds.), Essays in applied Geography, Sagar : University of Sagar., 1976

Taylor,C. : Urban Geography- A study of State, Evolution, Pattern and classification in villages Towns and cities, London., 1951

Tiwari, P.S. : Urban pattern in Madhya Pradesh- Unpublished Ph.D. Thesis, B.H.U., Vanarasi. 1969

Wood,J. : "Development of urban and Regional planning in India", Land Econ. Vol. XXXIV., 1958.

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

I

जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय

जिला कलेक्ट्रेट कार्यालय के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है, कि जिला कलेक्ट्रेट के पूर्व दिशा, दक्षिण दिशा एवं उत्तर दिशा में रोड है कलेक्ट्रेट कार्यालय पूर्वमुखी है, अर्थात् प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में है। कलेक्टर की सीट पश्चिम दिशा में है एवं कलेक्टर ऑफिस में पूर्वमुखी होकर बैठते है। भेटकक्ष में कलेक्टर जहॉ आम जनता से मिलते हें, वहॉ भी कलेक्टर की सीट पश्चिमी दीवाल के सहारे स्थित है, यहॉ ब्रह्म स्थान खाली है एवं कलेक्टर पूर्वमुखी होकर बैठते एवं चर्चा करते है, जबकि जनता की सीट पूर्व, उत्तर तथा दक्षिण की तरफ है। तात्पर्य है, कि कलेक्ट्रेट कार्यालय वास्तुशास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुरूप है।

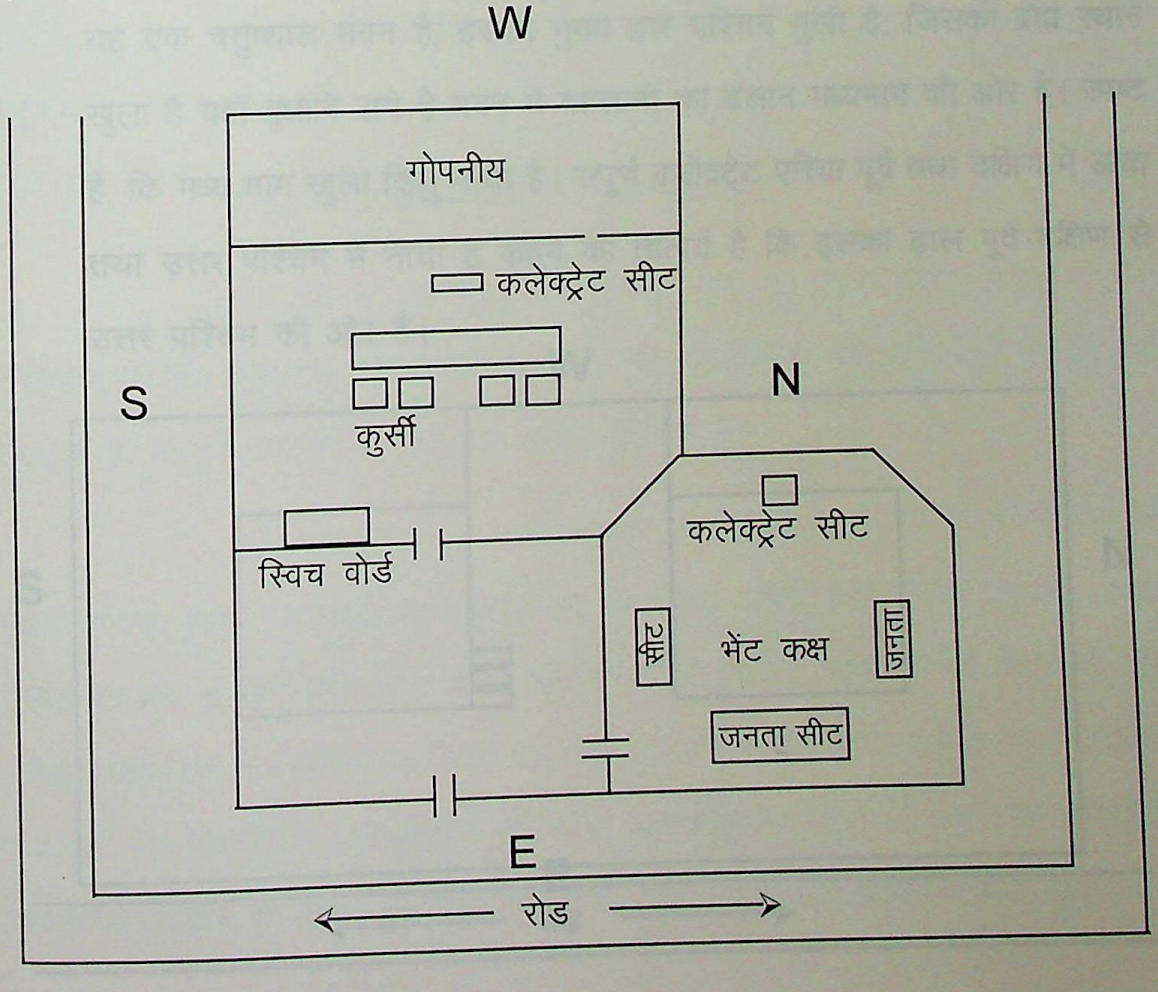

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

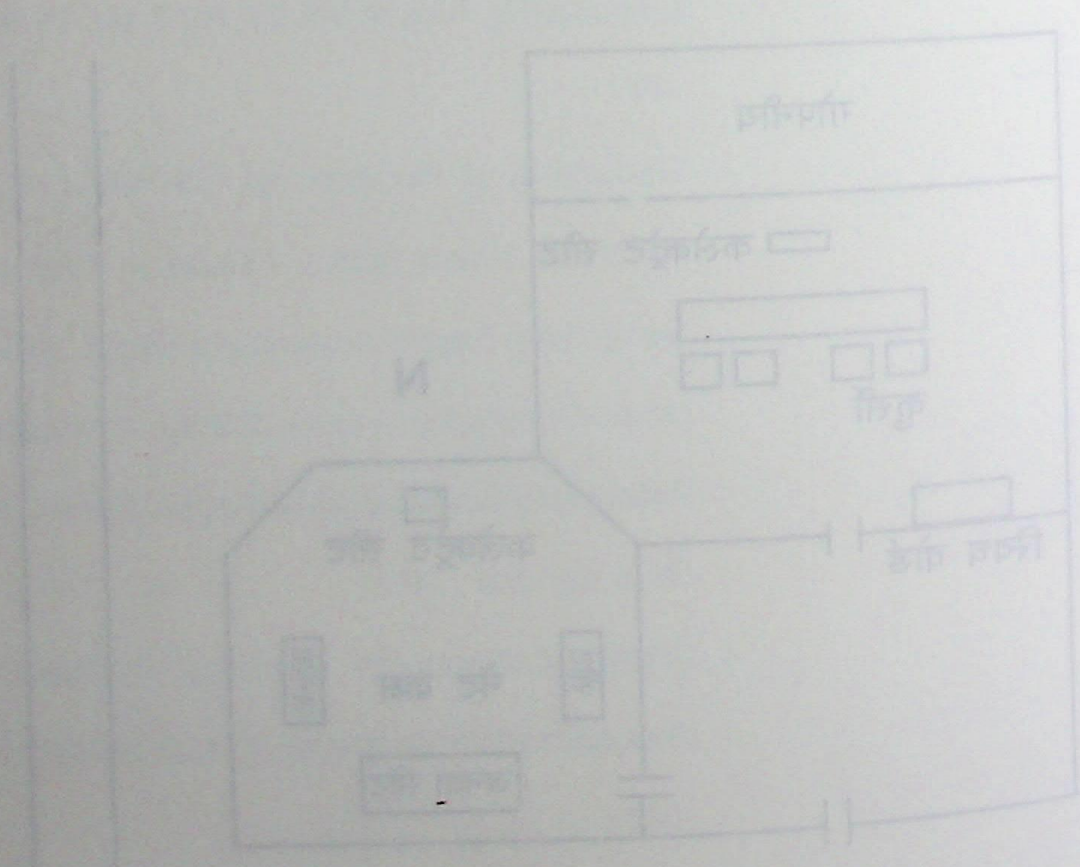

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

II

जिला न्यायालय

जिला न्यायालय के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है, कि नवीन जिला न्यायालय भवन पूर्णतः वास्तु सिद्धान्तों के प्रतिकूल है।

1. न्यायालय भवन, सड़क से नीचे बसा हुआ है। न्यायधीश न्याय करते समय दक्षिण की ओर मुख करके बैठते है।
2. जिला न्यायालय पूर्व मुखी है। न्यायालय भवन के मध्य भाग में निर्मित है, यहॉ ब्रह्म स्थान (मध्य भाग) में सीढ़ियॉ हैं, जो कि प्रतिकूल है प्रभाव डालती हैं। सम्पर्क करने पर मालूम चला यहॉ कार्यरत अधिकांश कर्मचारी असंतुष्ट है।
3. इसके विपरीत पुराना जिला न्यायालय भवन एक प्राचीन भवन है। (ब्रिटिश कालीन) यह एक चतुष्शाल भवन है, इसका मुख्य द्वार पश्चिम मुखी है; जिसका ब्रह्म स्थान खुला है यहॉ वृक्षादि लगे है भवन में दहलानों का ढ़लान मध्यभाग की ओर है। स्पष्ट है, कि मध्य भाग खुला किंतु नीचा है। संपूर्ण कलेक्ट्रेट एरिया पूर्व तथा दक्षिण में ऊंचा तथा उत्तर पश्चिम में नीचा है कहने का तात्पर्य है कि इसका ढ़ाल पूर्व दक्षिण से उत्तर पश्चिम की ओर है।

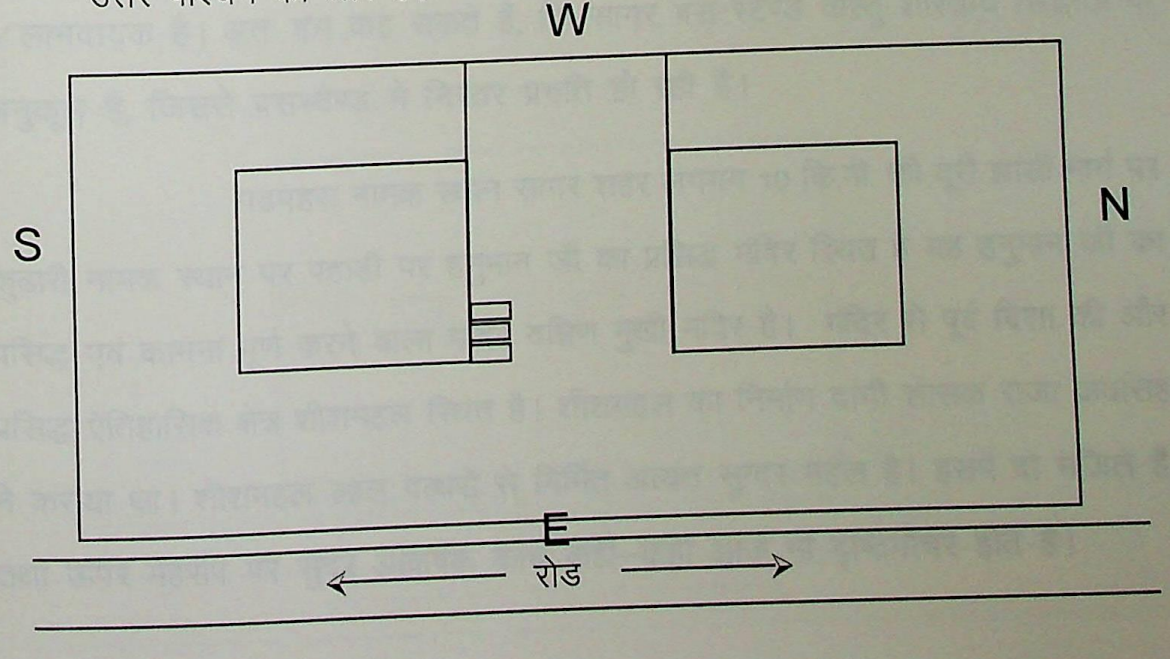

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

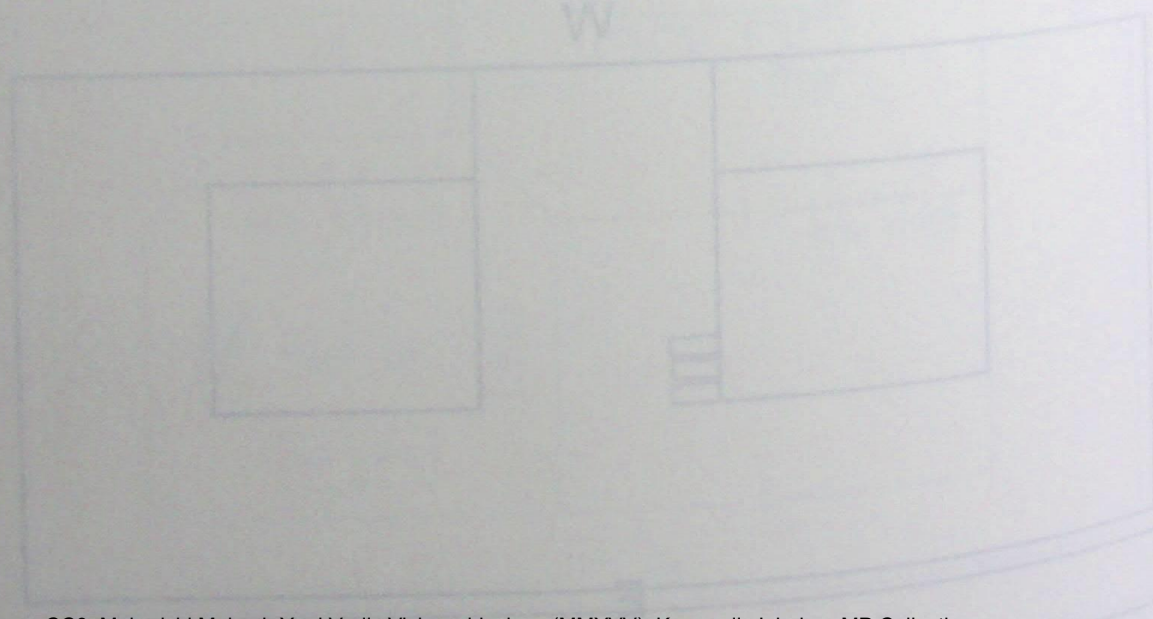

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

III

बस स्टैण्ड

सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है, कि नगर का बस स्टैण्ड वास्तुसिद्धान्तों के अनुकूल है, क्योंकि बस स्टैण्ड के एक ओर अर्थात् दक्षिण दिशा में तालाब स्थित है, एवं उत्तर दिशा में गर्ल्स कॉलेज पार्क एवं उत्तर पूर्व में संगीत महाविद्यालय स्थित है।
बस स्टैण्ड का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा में है।

बस स्टैण्ड परिसर का संपूर्ण निर्माण दक्षिण दिशा में है। जो कि वास्तु सिद्धान्तों के अनुकूल है।

कार्यालय दक्षिण दिशा में पूर्वमुखी होकर अनुकूल प्रभाव डालता है।

बुकिंग ऑफिस एवं दुकान दक्षिण दिशा में किन्तु उत्तरमखी है जो कि अनुकूल प्रभाव डालता है।

ट्वायलेट दक्षिण–पश्चिम में उत्तरमुखी है।

बस स्टैण्ड का मध्य एवं उत्तरी भाग का खुला होना शुभफलदायक /लाभदायक है। अतः हम कह सकते हैं, कि सागर बस स्टैण्ड वास्तु शास्त्रीय सिद्धांतों के अनुकूल है, जिससे बसस्टैण्ड में निरंतर प्रगति हो रही है।

गढपहरा नामक स्थान सागर शहर लगभग 10 कि.मी. की दूरी झांसी मार्ग पर कुढ़ारी नामक स्थान पर पहाड़ी पर हनुमान जी का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है यह हनुमान जी का प्रसिद्ध एवं कामना पूर्ण करने वाला मंदिर दक्षिण मुखी मंदिर है। मंदिर से पूर्व दिशा की और प्रसिद्ध ऐतिहासिक क्षेत्र शीशमहल स्थित है। शीशमहल का निर्माण दांगी शासक राजा जयसिंह ने कराया था। शीशमहल लाल पत्थरों से निर्मित अत्यंत सुन्दर महल है। इसमें दो मंजिलें हैं, तथा ऊपर मेहराप पर सुंदर आकर्षक कांच कही–कही आज भी दृष्टिगोचर होते है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

IV

शीशमहल के सामने रंगमहल स्थित है। इस महल के पश्चिमी द्वार पर आज भी घुड़साल जीर्ण–शीर्ण अवस्था में एक विस्तृत क्षेत्र में फैला है। रंगमहल का पश्चिमी द्वार वर्तमान का मुख्य प्रवेश द्वार है। रंगमहल का मध्य क्षेत्र अर्थात् बह्म स्थान खुला है। यह चतुष्शाला भवन का एक उत्तम उदाहरण हैं रंगमहल की उत्तरदिशा में इस महल का मुख्य दरवाजा है, कहा जाता है, इसी दरवाजे से राजा महल में प्रवेश करते थे। यह दरवाजा वर्तमान में बंद कर दिया गया है। उत्तर दिशा में ही प्रवेश द्वार के बाद ऊपर दूसरी मंजिल पर राजारानी महल है। राजारानी महल के सामने दक्षिण दिशा में चित्रशाला है इस चित्रशाला में आज भी शिवजी, के चित्र लड़ाई के चित्र एवं रंगमहल के चित्र दिखाई देते है। लोगों द्वारा चित्रशाला के चित्र या जो मिटा दिये गये हैं या खोद दिये गये हैं। सिर्फ यही तीन चार चित्र बकाया है। रंगमहल से हटकर आग्नेय कोंण में मंत्रीमहल है जहां मंत्री आदि रहते थे। रंगमहल के पश्चिम दिशा में पहाड़ी पर नटनीमहल है, जो कि अब टूट गया है, लेकिन यहॉ नटनी की उपाधि बनी है। हनुमान मंदिर से करीब एक किलोमीटर की दूरी पर पूर्व में पहाड़ी के ढ़ाल से नीचे उतरकर अनगढ़ माता का मंदिर है । यह मंदिर एक गुफा में है। इस मंदिर के नीचे या पहाड़ी के नीचे एक ताल है, जिसे मोतीलाल कहा जाता है वर्तमान में सूख गया है लेकिन तालाब की टूटी बाउन्ड्री यहॉ तालाब होने का आज भी संकेत देती है। कहा जाता है इस तालाब के आसपास प्राचीनकाल में बस्ती थी, पुराना सागर यहीं बसा था। बस्ती एवं तालाब के होने के अवशेष आज भी दृष्टिगोचर होते हैं । वर्तमान में पास के गांव के लोग तालाब एवं बस्ती की जमीन पर कृषि करने लगे है। यहॉ काली भुरभुरी मिट्टी पायी जाती है।इस पहाड़ी पर लाल रंग के पत्थर दिखाई देते है।

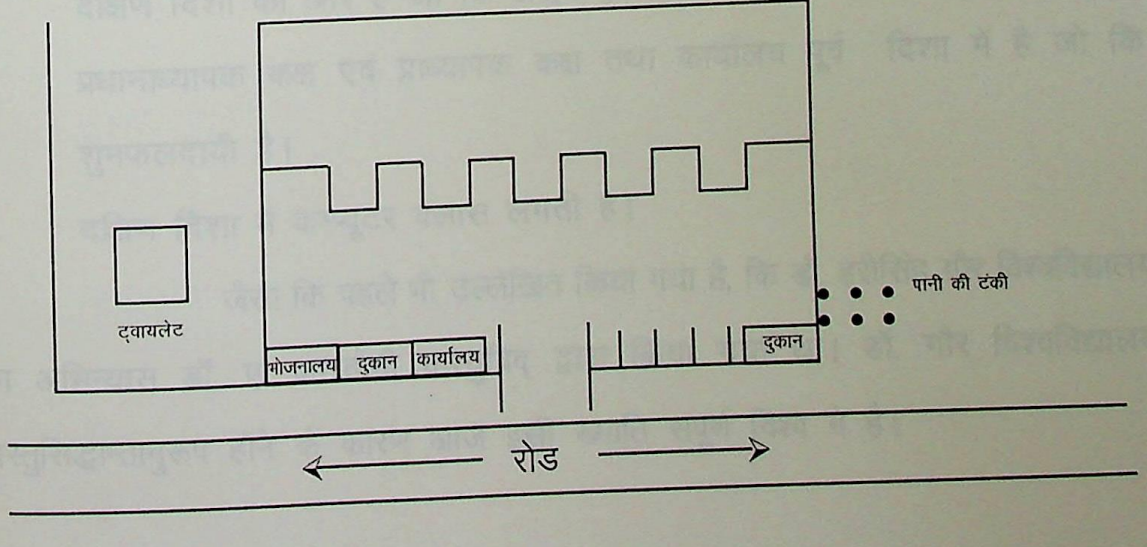

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

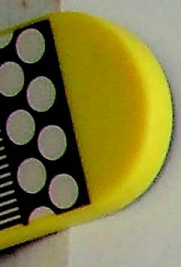

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

V

कन्या महाविद्यालय

सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है, कि कन्या महाविद्यालय के मध्य भाग में प्राचीन बिल्डिंग स्थित है, जिसमें वर्तमान समय में क्लास लगती है। वास्तुसिद्धान्तानुसार मध्य भाग में किसी भी प्रकार का निर्माण वर्जित है । इस महाविद्यालय के मध्य भाग में स्थित ऐतिहासिक भवन का होना महाविद्यालय पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है या कहा जाये वसकी प्रगति में बाधक है। कॉलेज का मुख्य दरवाजा पूर्व–दक्षिण दिशा में है।

- ऑफिस पूर्व दिशा में किंतु पश्चिमीमुखी है।
- कॉलेज के दक्षिण–पश्चिम भाग में किसी प्रकार का निर्माण नहीं है यह स्थान एकदम खाली पड़ा है, जो कि वास्तु नियमों के प्रतिकूल है।
- ट्वालेट ईशान एवं पूर्व दिशा में है, यह भी वास्तु सिद्धांतों के प्रतिकूल है।
- कॉलेज के मध्य, उत्तर एवं पश्चिम भाग मे क्लासेस लगती हैं मध्यभाग (ब्रह्म स्थान) में निर्माण कार्य गलत हैं , किंतु उत्तर एवं पश्चिम में क्लास का लगना एवं विद्यार्थियों का पूर्वमुख होकर पढ़ना शुभफलदायक है। तात्पर्य है, कि पूर्व की दीवाल पर ब्लैक बोर्ड है तो पढ़ते समय विद्यार्थियों का मुह पूर्व दिशा की तरफ होना शुभ है।
- अधिकांश निर्माण उत्तरी दिशा में होने के कारण उत्तरी भाग ऊंचा हैं भूमि का ढ़ाल दक्षिण दिशा की ओर है जो कि अशुभ है।
- प्रधानाध्यापक कक्ष एवं प्राध्यापक कक्ष तथा कार्यालय पूर्व दिशा में है जो कि शुभफलदायी है।
- दक्षिण दिशा में कम्प्यूटर क्लास लगती है।

जैसा कि पहले भी उल्लेखित किया गया है, कि डॉ, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय का अभिन्यास डॉ. ए. कारवोनी वास्तुविद् द्वारा किया गया था। डॉ. गौर विश्वविद्यालय वास्तुसिद्धान्तानुरूप होने के कारण आज इसी ख्याति संपूर्ण विश्व मे है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

VI

शासकीय कन्या महाविद्यालय

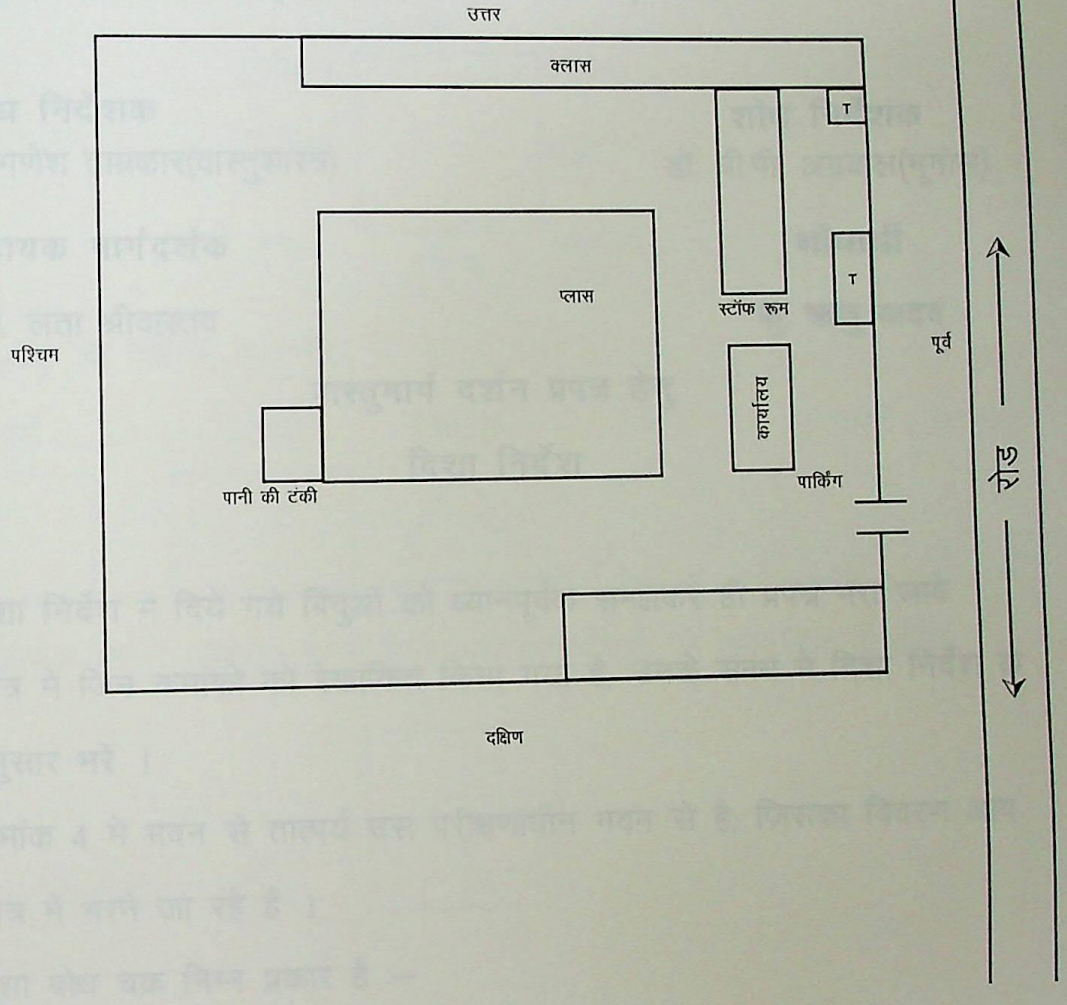

❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

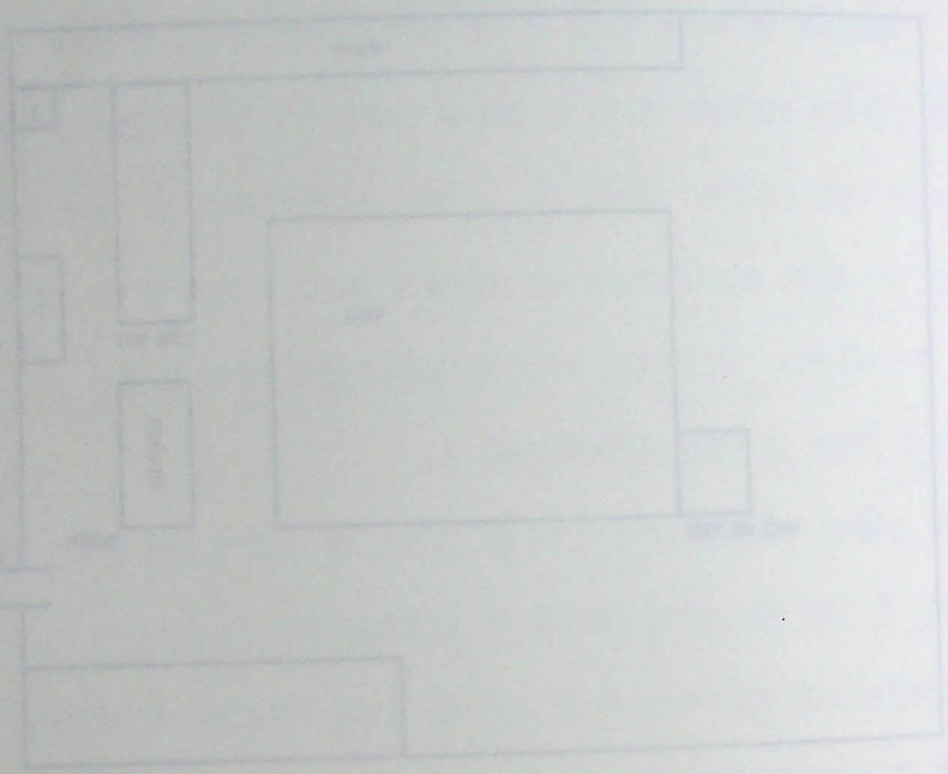

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"जयगुरूदेव"

"सागर के नगरीय भूगोल का वास्तुशास्त्रीय अध्ययन"

(स्थापत्य वेद के संदर्भ में)

शोध निर्देशक
श्रीमान् गणेश ताम्रकार(वास्तुशास्त्र)

शोध निर्देशक
डॉ. बी.पी. अग्रवाल(भूगोल)

सहायक मार्गदर्शक
डॉ. लता श्रीवास्तव

शोधार्थी
कु. ऋतु यादव

वास्तुमार्ग दर्शन प्रपत्र हेतु

दिशा निर्देश

1. दिशा निर्देश में दिये गये बिंदुओं को ध्यानपूर्वक समझकर ही प्रपत्र भरा जावे ।
2. प्रपत्र में जिन क्रमांकों को रेखांकित किया गया है, उनके संबंध में दिशा निर्देश के अनुसार भरें ।
3 .क्रमांक 4 में भवन से तात्पर्य उस परीक्षणाधीन भवन से है; जिसका विवरण आप प्रपत्र में भरने जा रहे हैं ।
4. दिशा बोध चक्र निम्न प्रकार है :–

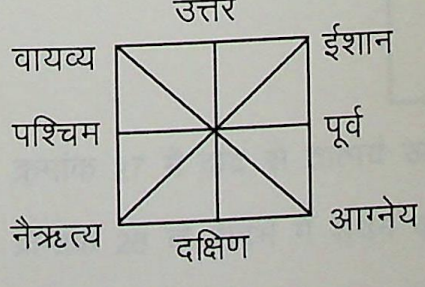

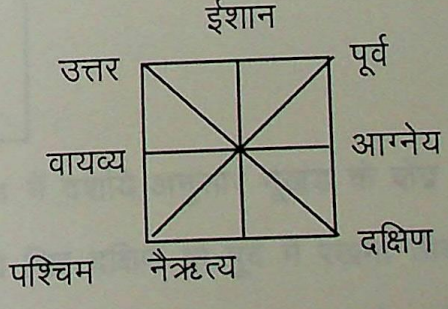

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

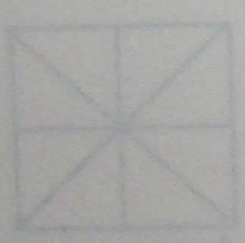

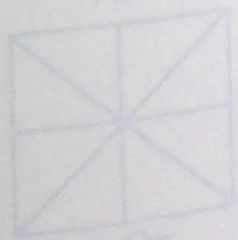

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

5. क्रमांक 17 में मुख्य द्वार की स्थिति से तात्पर्य है, द्वार सुंदर, आकर्षक है या टूटा/जीर्ण /जालीदार आदि।

6. भूखंड में प्रवेश की दिशा निम्न चित्र की सहायता से लिखें (क्रमांक 16 व 17 के लिये)

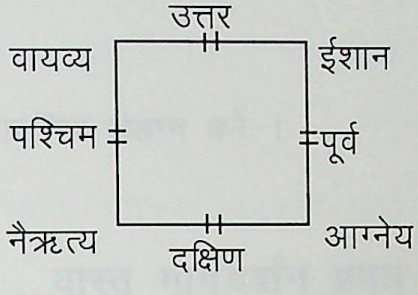

7. भूखंड की विभिन्न आकृतियां –

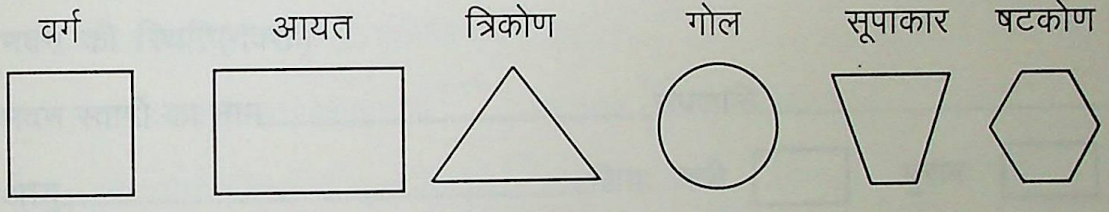

8 .क्रमांक 23 अ और 23 ब के लिये आपेक्षित दूरियाँ जो वास्तविक हों लिखें–

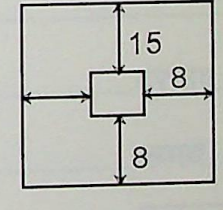

9 .ढाल की आदर्श स्थिति(क्रमांक 24 के संदर्भ में)

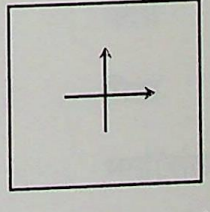

10. क्रमांक 27 में केंद्र से तात्पर्य ऊपर बिंदु 4 में दर्शाये अनुसार भूखंड के केंद्र से है।

11. क्रमांक 28 के संदर्भ में शयन करते समय सिर दक्षिण या पूर्व में रखना ठीक है ।

12. जनस्रोत (29 क्रमांक) स्थान भवन के केंद्र दक्षिण, आग्नेय, नैऋत्य में नहीं होनी चाहिए। छत पर पानी की टंकी, पश्चिम, दक्षिण–पश्चिम में ठीक है ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

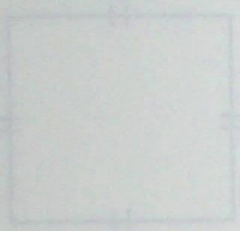

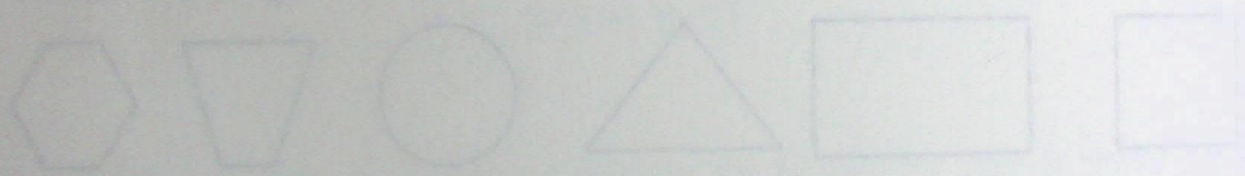

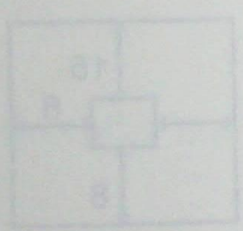

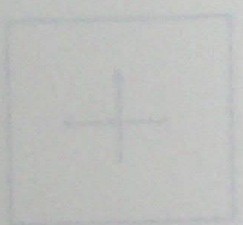

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

13. रसोई, शौचालय एवं सीढ़ियाँ ईशान में नहीं बनाना चाहिए।(क्रमांक 27 के संदर्भ में)

14. संदर्भ क्रमांक 30 लताएँ, मोगरा, चमेली, गुलाब, हरसिंगार, मालती, अशोक, नीम, नारियल आदि शुभ एवं कटीले वृक्ष जैसे– कैथा, बेर, बबूल तथा पीपल आदि अशुभ होते हैं ।

15. प्रपत्र में भवन का मानचित्र संलग्न करें ।

वास्तु मार्गदर्शन प्रपत्र

1. भवन की स्थिति(नक्शा)

2. भवन स्वामी का नाम.....उपजाति.....

3. आयु.....लिंगः स्त्री ☐ पुरूष ☐

4. भवन स्वामी का नाम एवं पता.....

.....

5. जिला.....पिन.....दूरभाष.....फैक्स.....

6. भवन स्वामी की जन्म तिथि.....समय.....स्थान.....राशि.....

7. जन्मकुंडली.....भवन पैत्रिक ☐ निर्मित ☐ कीत ☐

8. व्यवसाय.....मासिक आय.....

9. घर के सदस्यों की संख्या : माता

पिता

भाई(संख्या)

बहिन(संख्या)

पति / पत्नी

संतान

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

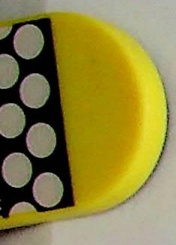

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

10. भवन का उपयोग निवास ☐ व्यवसाय ☐ दोनों ☐

11. क्या भवन का निर्माण वास्तु के आधार पर किया गया है। हाँ ☐ नहीं ☐

12. नवनिर्माण हाँ ☐ नहीं ☐ परिवर्तन हाँ ☐ नहीं ☐

13. भवन निर्माण किस माह में किया गया माह, दिनांक दिन.....

14. भवन किस क्षेत्र में है नगरीय ☐ ग्रामीण ☐

15. क्या भूमि पूजन शिलान्यास, गृहप्रवेश, अनुष्ठान मुहूर्त के साथ हुआ है

हाँ ☐ नहीं ☐

16. भूखंड में प्रवेश की दिशा.....

17. मुख्य भवन के मुख्य द्वार की स्थिति एवं दिशा.....

18. भूखंड की आकृति आयताकार ☐ वर्गाकार ☐ त्रिकोणीय ☐ अन्य ☐

19. भूखंड की किस दिशा में मार्ग है पूर्व ☐ पश्चिम ☐ उत्तर ☐ दक्षिण ☐

20. मुख्य प्रवेश द्वार के सामने यदि इनमें से कोई

वृक्ष ☐ देवालय ☐ जलाशय ☐ स्तम्भ ☐ अन्य ☐

(विवरण दें).....

21. क्या सीमा दीवाल के चारों कोण 90^0 अंश हैं हाँ ☐ नहीं ☐

22. क्या नेऋत्य कोण 90^0 अंश का है सीमा दीवाल

हाँ ☐ नहीं ☐ भवन (दीवाल) हाँ ☐ नहीं ☐

23. अ. भूखण्ड और भवन के बीच खुली जगह की दिशा है

पूर्व ☐ पश्चिम ☐ उत्तर ☐ दक्षिण ☐

ब. दिशा के क्रम में खुली जगह का मापः

पूर्व ☐ पश्चिम ☐ उत्तर ☐ दक्षिण ☐

24. अ. भूखण्ड का ढाल किस दिशा में सबसे ऊँचा है :

पूर्व ☐ पश्चिम ☐ उत्तर ☐ दक्षिण ☐

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

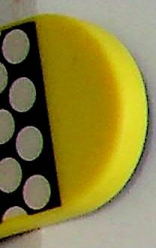

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब. भूखण्ड का ढाल किस दिशा में सबसे नीचा है :

पूर्व ☐ पश्चिम ☐ उत्तर ☐ दक्षिण ☐

25 भवन तल मंजिल संख्या तहखाना हाँ ☐ नहीं ☐

26. तहखाना किस दिशा में बना है———————————————————

27. केन्द्र से दिशा (मानचित्र में दर्शायें)

पूजा रसोई भोजनकक्ष शयनकक्ष स्नान शौच सीढ़ियाँ भण्डार गैरेज पशुशाला

गृहस्वामी बच्चों

28. शयन करते समय सिर किस दिशा में रखते हैं

29. जलस्त्रोत स्थान किस दिशा में है

नलकूप ☐ कुँआ ☐ हैडपंप ☐ पानी की टंकी ☐ भूतल में ☐ छत के ऊपर

30. भूखण्ड में लगे वृक्षों के नाम एवं दिशा

1..... 2..... 3..... 4.....

31. भवन में विद्युत मीटर का स्थान भवन के ऊपर से विद्युत तार जाता है

हाँ ☐ नहीं ☐

32. भवन भूमि की अन्य विशेषताएं हों तो वर्णन कीजिए ।

33. भवन निर्माण से भवन प्रवेश के बीच निर्माण कार्य में अथवा क्रय/विक्रय में आने वाली कठिनाई, सुविधायें अर्थात शुभ/अशुभ का वर्णन करो ।———————————————————

———————————————————

34. भवन रहते हुए किसी दुर्धटना, स्वास्थ कष्ट, आर्थिक हानि, मानसिक तनाव या अन्य परेशानी हो तो उसका उल्लेख कीजिए।

35. भवन रहते हुए उत्तम स्वास्थ्य समृद्धिकारक स्थिति रही हो तो उल्लेख करो

———————————————————

———————————————————

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

36. भवन रहते हुए अन्य समस्याओं का वर्णन

_____

_____

37. परिवार का वातावरण धार्मिक ☐ तनावपूर्ण ☐ अन्य ☐

38. भवन में रहते हुए आप कैसा अनुभव करते है।

प्रसन्नता ☐ तनावपूर्ण ☐ सामान्य ☐

❖ ❖ ❖

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर

जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण संस्थान, सागर

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर

जवाहरलाल नेहरू पुलिस प्रशिक्षण संस्थान, सागर

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केन्द्रीय ग्रंथालय सागर

सागर नगर (नया)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

MP Collection.

केन्द्रीय ग्रंथालय सागर

सागर नगर (नया)

Gangotri Gyaan Kosha

CC-0. Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सागर नगर (पुराना)

सागर तालाब

Mahatma Gandhi Vishwavidyalaya (MMYVV), Karaundi, Jabalpur, MP

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karqu Collection.

सागर नगर (पुराना)

सागर तालाब

Jain Gyaan Kosha

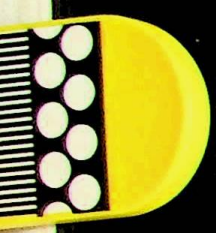

CC-0. Jain Education International. For Private & Personal Use Only. www.jainelibrary.org

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला न्यायालय, सागर (नया)

जिला न्यायालय सागर (पुराना)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kabolbodi, Jabalpur,M

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Bhopal, M.P. Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिला न्यायालय, सागर (नया)

जिला न्यायालय सागर (पुराना)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kareundi, Jabalpur.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

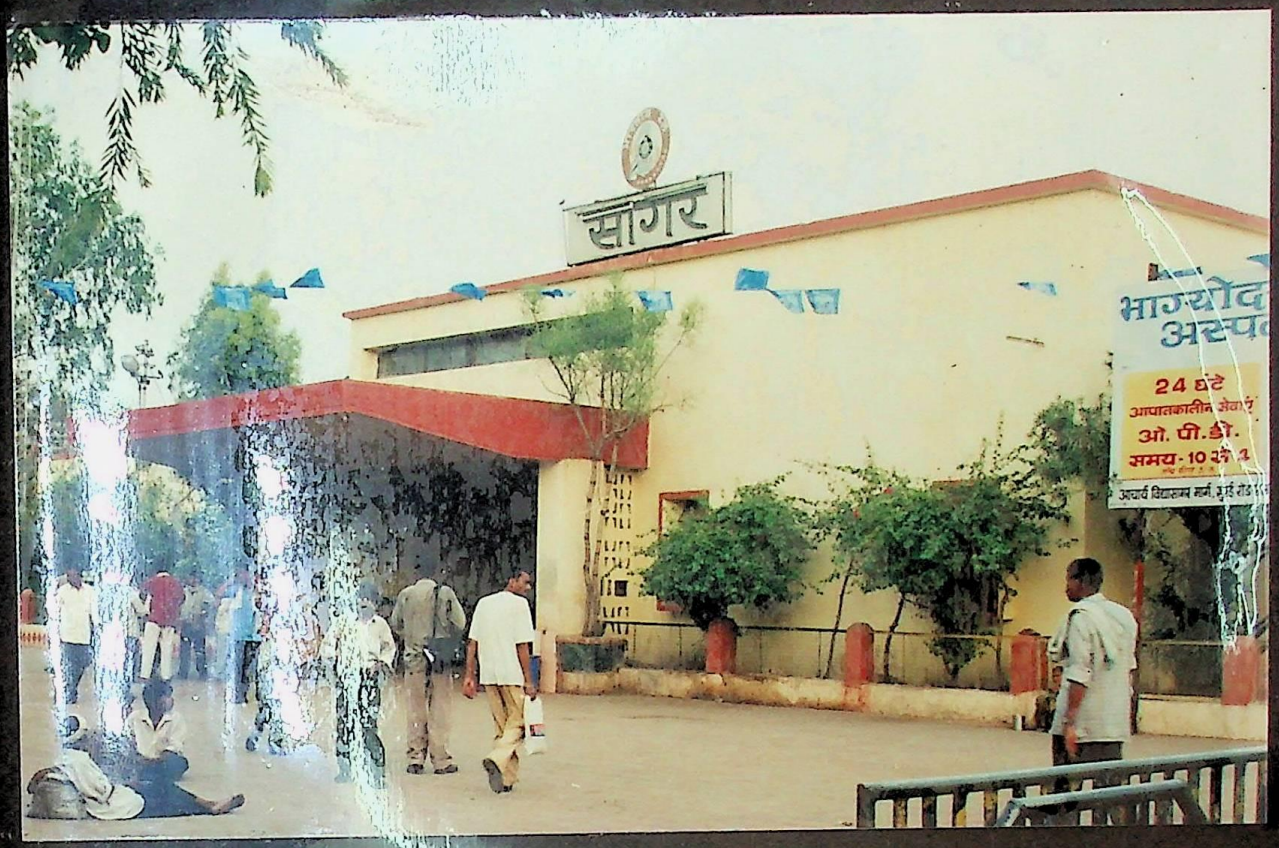

रेल्वे स्टेशन, सागर

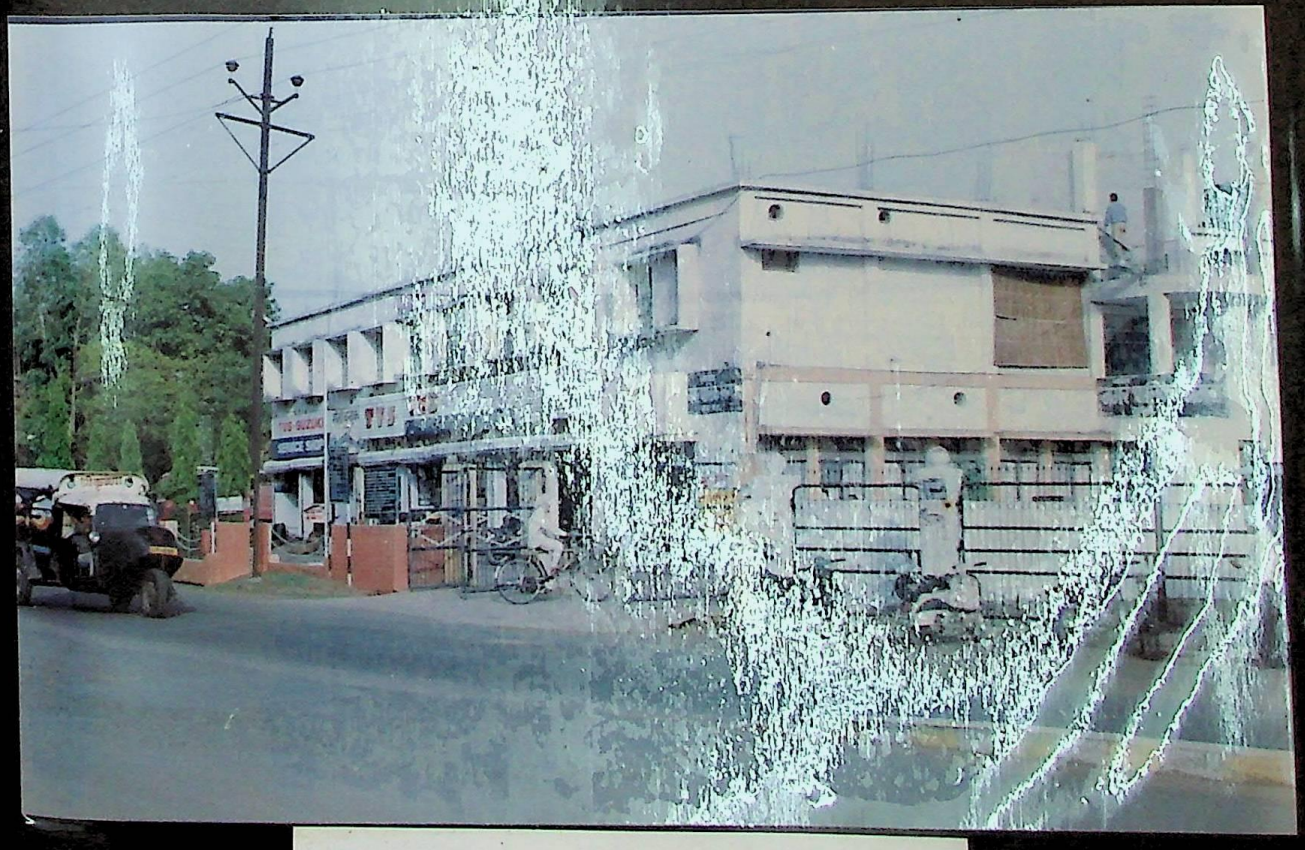

नगरपालिका निगम, सागर

...i Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कलेक्ट्रेट कार्यालय, सागर

आदर्श संगीत महाविद्यालय, सागर

Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kharoundi, Jabalpur, MP Collection

कलेक्ट्रेट कार्यालय, सागर

आदर्श संगीत महाविद्यालय, सागर

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMVV), Katni, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Maharishi Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), K[illegible] Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बस स्टैण्ड, सागर

रवीन्द्र भवन, सागर

sh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur, MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डफरिन चिकित्सालय, सागर

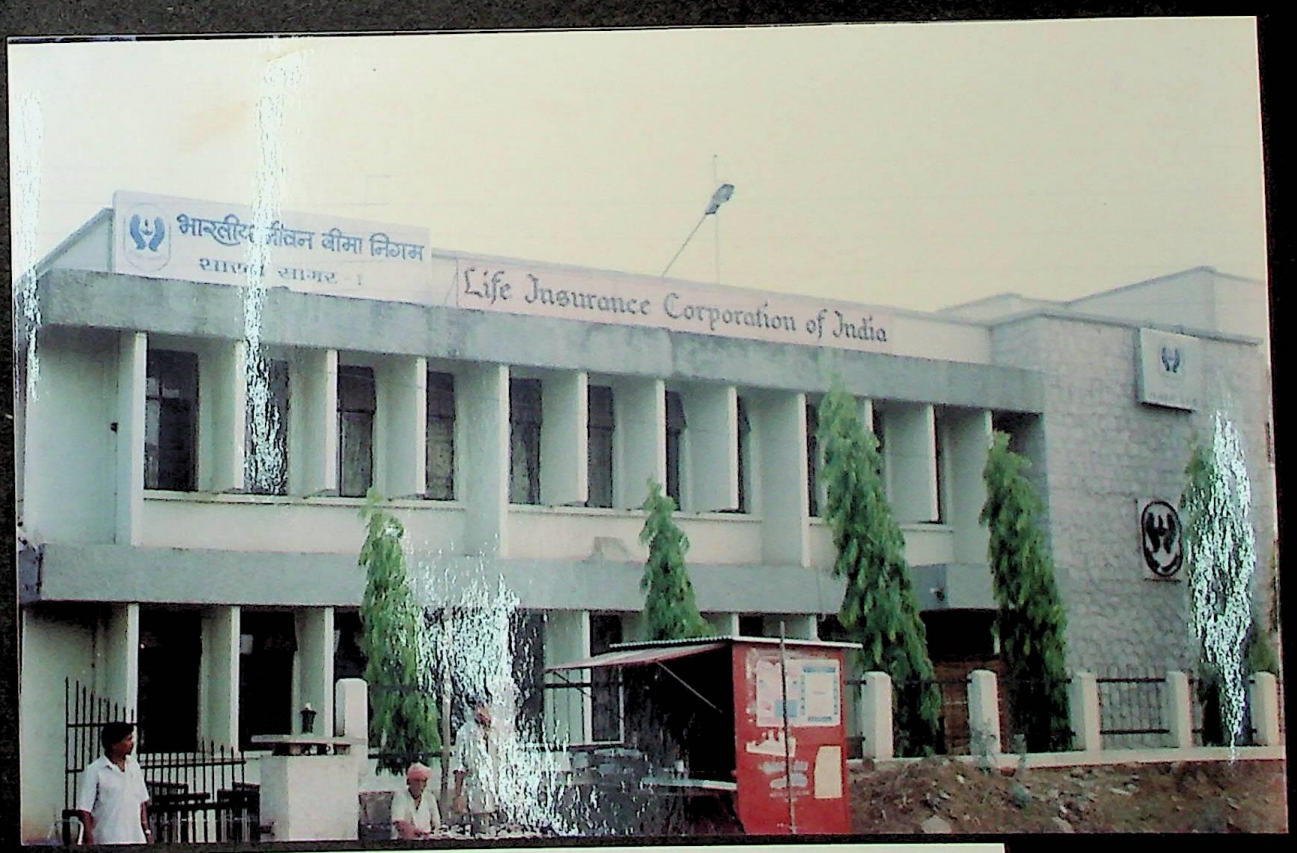

भारतीय जीवन बीमा निगम, सागर

0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Colle

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV) : K[illegible] MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विश्राम गृह, सागर

हनुमान मंदिर, गढ़पहरा, सागर

Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV) Karoundi Jabalpur MP C

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रंगमहल, गढ़पहरा सागर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collec

राजारानी महल गढ़पहरा (नया प्रवेश द्वार)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राजारानी महल, गढ़पहरा (पुराना प्रवेश द्वार)

Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MM

मंत्रीमहल, गढ़पहरा

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Jabalpur. Jabalpur MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रंगमहल, गढ़पहरा सागर

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.